# केंद्रीय विद्यालय संगठन

# KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

# क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

# Regional Office, Ranchi

# अध्ययन सामग्री

## STUDY MATERIAL

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

## कक्षा – बारहवीं

### विषय – हिंदी (आधार)

### शिक्षण सत्र - 2023-24

**केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा जारी नवीनतम पाठ्यक्रम एवं प्रतिदर्श प्रश्नपत्र पर आधारित**

**श्री डी.पी.पटेल**
**मुख्य संरक्षक**
उपायुक्त, के.वि.सं., राँची संभाग

**श्री सुरेश सिंह**
**संरक्षक**
सहायक आयुक्त केविसं,
राँची संभाग

**श्रीमती सुजाता मिश्र**
**संरक्षक**
सहायक आयुक्त केविसं,
राँची संभाग

**श्री बालेन्द्र कुमार**
**संरक्षक**
सहायक आयुक्त केविसं,
राँची संभाग

**डॉ. नीरज कुमार**
**सहायक संयोजक**
**पीजीटी (हिंदी) के.वि. नामकुम**

**ओम प्रकाश जोशी**
**संयोजक**
**उप प्राचार्य के.वि.रामगढ़ कैंट**

# अनुक्रमणिका

| क्र.सं. | विषयवस्तु | संकलन कर्ता | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1 | निर्धारित पाठ्यक्रम 2023-24 | | 4 |
| 2 | प्रश्नपत्र प्रारूप 2023-24 | | 5 |
| 3 | अंक विभाजन 2023-24 | | 6 |
| अपठित बोध | | | |
| 1. | अपठित गद्यांश | श्री राजीव रंजन | 7 |
| 2. | अपठित काव्यांश | श्रीमती कुमारी बेबी | 18 |
| पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2 | | | |
| 1 | आत्म परिचय, दिन जल्दी जल्दी ढलता है-हरिवंश राय बच्चन | डॉ. विद्यासागर साह | 27 |
| 2 | पतंग - आलोक धन्वा | श्री प्रदीप कुमार ठाकुर | 34 |
| 3 | कविता के बहाने, बात सीधी थी पर-कुँवर नारायण | श्री राम किशोर मीना | 39 |
| 4 | कैमरे में बंद अपाहिज-रघुवीर सहाय | डॉ. सीता राम सुवन | 44 |
| 5 | उषा-शमशेर बहादुर सिंह | डॉ. सीता राम सुवन | 50 |
| 6 | बादल राग-सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' | श्रीमती अनुराधा पाण्डेय | 53 |
| 7 | कवितावली, लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप-तुलसीदास | श्री बी.कृष्णा,श्री दीपंकर बोस | 58 |
| 8 | रुबाइयाँ- फ़िराक गोरखपुरी | श्रीमती अनुराधा कुजूर | 67 |
| 9 | छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख-उमा शंकर जोशी | श्रीमती शशि ममता तिग्गा | 70 |
| 10 | भक्तिन- महादेवी वर्मा | डॉ.नीरज कुमार | 76 |
| 11 | बाजार दर्शन-जैनेन्द्र कुमार | डॉ.नीरज कुमार | 82 |
| 12 | काले मेघा पाने दे-धर्मवीर भारती | श्री वी.पी.विमल | 87 |
| 13 | पहलवान की ढोलक-फणीश्वर नाथ रेणु | सुश्री अनुपमाशिष किरण केरकेट्टा | 91 |
| 14 | शिरीष के फूल शिक्षण -हजारी प्रसाद द्ववेदी | श्री प्रदीप कुमार ठाकुर | 96 |
| 15 | श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा,<br>मेरी कल्पना का आदर्श समाज- भीम राव अम्बेडकर | श्रीमती अनुराधा कुजूर | 100 |
| पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 | | | |
| 1 | सिल्वर वैडिंग मनोहर श्याम जोशी | श्री योगेन्द्र कुमार | 105 |
| 2 | जूझ-आनंद यादव | श्री मनीष कुमार पाण्डेय | 110 |
| 3 | अतीत में दबे पाँव - ओम थानवी | डॉ.नीरज कुमार | 115 |
| अभिव्यक्ति और माध्यम | | | |
| 1 | विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन | श्रीमती कुमारी बेबी | 125 |
| 2 | पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया | श्रीमती राजश्री सिंह | 131 |
| 3 | विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार | श्रीमती राजश्री सिंह | 137 |
| 4 | कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण | श्री राजीव रंजन | 145 |
| 5 | कैसे बनता है रेडियो नाटक | श्री राजीव रंजन | 147 |
| 6 | नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन | श्रीमती राजश्री सिंह | 150 |
| आदर्श प्रश्न पत्र | | | |
| 1 | आदर्श प्रश्न पत्र अंक योजना सहित - 1 | | 155 |
| 2 | आदर्श प्रश्न पत्र अंक योजना सहित - 2 | | 168 |
| 3 | आदर्श प्रश्न पत्र अंक योजना सहित - 3 | | 181 |

# निर्धारित पाठ्यक्रम (सत्र 2023-24)

**हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा - 12 सत्र 2023-24**

## पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2

**काव्य खंड-**

1.आत्म-परिचय, एक गीत
2.पतंग
3.कविता के बहाने, बात सीधी थी पर
4.कैमरे में बंद अपाहिज
5.उषा
6.बादल राग
7.कवितावली, लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप
8.रुबाइयाँ
9.छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख

**गद्य खंड-**

10.भक्तिन
11.बाजार दर्शन
12.काले मेघा पानी दे
13.पहलवान की ढोलक
14.शिरीष के फूल
15.श्रम-विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज

## पाठ्यपुस्तक वितान भाग – 2

1.सिल्वर वैडिंग
2. जूझ
3. अतीत में दबे पाँव

## पाठ्यपुस्तक -अभिव्यक्ति और माध्यम

1. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन
2. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया
3. विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार
4. कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण
5. कैसे बनता है रेडियो नाटक
6. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

# प्रश्न-पत्र प्रारूप

**हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा - 12 सत्र 2023-24**

- प्रश्न-पत्र दो खंडों – खंड 'अ' और 'ब' का होगा।
- खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएंगे जिनमें से सभी 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएंगे।

**भारांक- 100** **निर्धारित समय- 3 घंटे**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)** | | | |
| विषयवस्तु | | | भारांक |
| **1** | **अपठित बोध** | | **15** |
| | अ | एक अपठित गद्यांश (अधिकतम 300 शब्दों का) (1 अंक X 10 प्रश्न) | 10 |
| | ब | दो अपठित पद्यांश में से एक पद्यांश (अधिकतम 150 शब्दों का) (1 अंक X 5 प्रश्न) | 5 |
| **2** | **पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित** | | **5** |
| | बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक X 5 प्रश्न) | | 5 |
| **3** | **पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न** | | **10** |
| | अ | पठित काव्यांश पर पांच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक X 5 प्रश्न) | 5 |
| | ब | पठित गद्यांश पर पांच बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक X 5 प्रश्न) | 5 |
| **4** | **पूरक पुस्तक वितान भाग – 2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न** | | **10** |
| | अ | पठित पाठों पर दस बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक X 10 प्रश्न) | 10 |
| **खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न)** | | | |
| **5** | **पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ 3, 4, 5, 11, 12,13 पर आधारित** | | **16** |
| | 1 | तीन अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (6 अंक X 1 प्रश्न) | 6 |
| | 2 | कहानी का नाट्यरूपांतरण / रेडियो नाटक / अप्रत्याशित विषयों पर लेखन पर आधारित दो प्रश्न (2 अंक X 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में) | 4 |
| | 3 | पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न (3 अंक X 2 प्रश्न) (लगभग 60 शब्दों में) | 6 |
| **6** | **पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 2** | | **20** |
| | 1 | काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्न के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक X 2 प्रश्न) | 6 |
| | 2 | काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्न के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक X 2 प्रश्न) | 4 |
| | 3 | गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्न के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक X 2 प्रश्न) | 6 |
| | 4 | गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्न का उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक X 2 प्रश्न) | 4 |
| **7** | **पाठ्यपुस्तक वितान भाग – 2** | | **4** |
| | 1 | पाठों पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक X 2 प्रश्न) | 4 |
| **8** | **अ** | **श्रवण तथा वाचन** | **10** |
| | **ब** | **परियोजना कार्य** | **10** |
| **कुल अंक** | | | **100** |

# अंक विभाजन

**हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा - 12 सत्र 2023-24**

| **बहुविकल्पी प्रश्न** | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क्रम संख्या | प्रश्न खंड | प्रश्नों की संख्या | प्रश्न करने हैं | निर्धारित अंक |
| 01. | अपठित बोध (गद्यांश) | 10 | 10 | 1x10=10 |
| 02. | अपठित बोध (पद्यांश) | 05 | 05 | 1x5=05 |
| 03. | अभिव्यक्ति और माध्यम | 05 | 05 | 1x5=05 |
| 04. | पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 से पठित काव्यांश | 05 | 05 | 1x5=05 |
| 05. | पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 से पठित गद्यांश | 05 | 05 | 1x5=05 |
| 06. | पाठ्य पुस्तक वितान भाग 2 | 10 | 10 | 1x10=10 |
| | योग | **40** | **40** | **40** |
| **वर्णनात्मक प्रश्नोत्तर** | | | | |
| 07.. | रचनात्मक लेखन(3 विषय में से एक) | 01 | 01 | 6x1=6 |
| 08. | कहानी, नाटक और अप्रत्याशित लेखन(विकल्प सहित) | 02 | 02 | 2x2=4 |
| 09. | पत्रकारिता जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन | 03 | 02 | 3x2=6 |
| 10. | पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 पद्य खंड | 03 | 02 | 3x2=6 |
| 11. | पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 पद्य खंड | 03 | 02 | 2x2=4 |
| 12. | पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 गद्य खंड | 03 | 02 | 3x2=6 |
| 13. | पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 गद्य खंड | 03 | 02 | 2x2=4 |
| 14. | पाठ्य पुस्तक वितान भाग 2 | 03 | 02 | 4x1=4 |
| | योग | **21** | **15** | **40** |
| **आन्तरिक मूल्याङ्कन** | | | | |
| 1. | श्रवण तथा वाचन | | | 10 |
| 2. | परियोजना कार्य | | | 10 |
| | योग | | | **20** |
| **कुल योग** | | | | **100** |

# अपठित गद्यांश

**अपठित गद्यांश को हल करने के लिए आवश्यक बिंदु –**

*1)* विद्यार्थी को गद्यांश ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि उसका अर्थ स्पष्ट हो सके।

*2)* गद्यांश से संबंधित प्रश्नों का अध्ययन करें।

*3)* प्रश्नों के संभावित उत्तर गद्यांश में खोजें।

*4)* प्रश्नों के उत्तर गद्यांश पर आधारित होने चाहिए।

*5)* उत्तरों की भाषा सहज, सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।

## अपठित गद्यांश -1

**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :- (1x10=10)**

भाषा का एक प्रमुख गुण है-सृजनशीलता । हिंदी में सृजनशीलता एक अद्‌भुत गुण है,अद्‌भुत क्षमता है,जिससे वह निरंतर प्रवाहमान है। हिन्दी ही ऐसी भाषा है,जिसमें समायोजन की पर्याप्त जादुई शक्ति है।अन्य भाषाओं और संस्कृतियों के शब्दों को हिन्दी जिस अधिकार और सहजता से ग्रहण करती है,उससे हिन्दी की संभावनाएं प्रशस्त होती हैं। हिन्दी के लचीलेपन ने अनेक भाषाओं के शब्दों को ही नहीं,उसके सांस्कृतिक तेवरों को भी अपने में समेट लिया है ।यही कारण है कि हिन्दी सामाजिक संस्कृति की तथा विविध भाषा-भाषियों और धर्मावलम्बियों की प्रमुख पहचान बन गई है।अरबी,फ़ारसी,तुर्की अँग्रेजी आदि के शब्द हिन्दी की शब्द-सम्पदा में ऐसे मिल गए हैं,जैसे वे जन्म से ही इसी भाषा परिवार के सदस्य हों। यह समाहार उनकी जीवंतता का प्रमाण है ।

आज हम परहेज़ी होकर, शुद्धतावाद की जड़ मानसिकता में क़ैद होकर नहीं रह सकते।सूचना-क्रांति,तकनीकी विकास और वैज्ञानिक आविष्कारों के दबाव में हमें सबसे संवाद करने के अवसर दिए हैं । विश्व-ग्राम की संकल्पना से हिन्दी को निरंतर चलना होगा । इसके लिए आवश्यक है-आधुनिक प्रयोजनों के अनुरूप विकास और भाषा एवं लिपि से संबन्धित यांत्रिक साधनों का विकास । इन्टरनेट से लेकर बाज़ार तक,राजकाज से लेकर शिक्षा और न्याय के मंदिरों तक हिन्दी को उपयोगी और कार्यक्षम बनाने के लिए उसका सरल होना आवश्यक है और उसकी ध्वनि,लिपि,शब्द-वर्तनी,वाक्य-रचना आदि का मानकीकृत होना भी आवश्यक है।

**(i) हिन्दी के निरंतर प्रवाहमान रहने का क्या कारण है?**

(क) संस्कृति (ख) सृजनशीलता

(ग) सीमित मानसिकता (घ) रूढ़िवादिता

**(ii) हिन्दी की संभावनाएं कैसे प्रशस्त होती गई हैं ?**

(क) अन्य भाषाओं के शब्दो को सहजता से ग्रहण करने से (ख) अपनी सांस्कृतिक स्वरूप से

(ग) अपनी तटस्थता से (घ) अन्य भाषाओं को तुच्छ समझकर ।

**(iii) हिन्दी ने लचीलेपन के कारण क्या किया ?**

(क) केवल अन्य भाषा के शब्दों को ग्रहण किया ।

(ख) अन्य भाषाओं के शब्दों व सांस्कृतिक तेवरों को अपने में समेट लिया ।

(ग) अपनी सामाजिक पहचान को बनाए रखा ।

(घ) दूसरी भाषाओं को अधिक महत्त्व दिया ।

**(iv) हिन्दी भाषा के संदर्भ में शुद्धतावादी होने से क्या तात्पर्य है?**

(क) गैर-हिन्दी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण न करना

(ख) हिन्दी की बोलियों और उनके शब्दों को प्रधानता देकर हिन्दी का विकास करना ।

(ग) 'क' और 'ख' दोनों

(घ) केवल हिन्दी को महत्त्व देना

**(v) आज हमें सबसे संवाद करने के अवसर किसने दिए हैं?**

(क) सूचना क्रांति ने (ख) तकनीकी विकास ने

(ग) वैज्ञानिक आविष्कारों के दबाव ने (घ) उपर्युक्त सभी

**(vi) आधुनिक प्रयोजनों के अनुरूप विकास और भाषा एवं लिपि से संबन्धित यांत्रिक साधनों का विकास करने से क्या होगा ?**

| | |
|---|---|
| (क) विश्व-ग्राम की संकल्पना साकार हो जाएगी | (ख) हिन्दी की उन्नति अवरुद्ध हो जाएगी |
| (ग) मनुष्य यंत्रवत प्राणी बनकर रह जाएगा । | (घ) तकनीकी उन्नति होगी । |

**(vii) हिन्दी को उपयोगी एवं कार्यक्षम बनाने के लिए उसे कैसा होना चाहिए ?**

(क)समृद्ध (ख)क्लिष्ट (ग) सरल-सहज (घ) ये सभी

**(viii) हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं में भारत का प्रतिनिधित्व कब करेगी ?**

(क) जब सरकार की तत्परता होगी,

(ख) जब जनता की इच्छाशक्ति होगी,

(ग) जब सरकार की तत्परता के साथ जनता की इच्छाशक्ति को हिन्दी से जोड़ देंगे,

(घ) जब हिन्दी को अधिक महत्त्व मिलने लगेगा ।

**(ix) हिन्दी ने अन्य भाषाओं के शब्दों को स्वयं में समाहित करते हुए अपना स्वरूप निर्मित करके क्या किया?**

(क) भारत की भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन किया,

(ख) भारत की सामाजिक संस्कृति की पहचान बन गई,

(ग) हिन्दी के स्वरूप को आच्छादित किया,

(घ) हिन्दी के विकास को रोक दिया ।

**(x) प्रस्तुत गद्यांश किस विषय-वस्तु पर आधारित है?**

| | |
|---|---|
| (क) हिन्दी भाषा पर | (ख)हिन्दी भाषा और अन्य भाषा पर |
| (ग) हिन्दी भाषा और तकनीकी युग पर | (घ) हिन्दी के विकास पर |

**उत्तर-**

**(i) (ख) सृजनशीलता**

**(ii) (क) अन्य भाषाओं के शब्दो को सहजता से ग्रहण करने से**

**(iii) (ख) अन्य भाषाओं के शब्दों व सांस्कृतिक तेवरों को अपने में समेट लिया**

**(iv) (क) गैर-हिन्दी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण न करना**

**(v) (घ) उपर्युक्त सभी**

**(vi) (क) विश्व-ग्राम की संकल्पना साकार हो जाएगी**

**(vii) (ग) सरल-सहज**

**(viii) (ग) जब सरकार की तत्परता के साथ जनता की इच्छाशक्ति को हिन्दी से जोड़ देंगे**

**(ix) (ख) भारत की सामाजिक संस्कृति की पहचान बन गई**

**(x) (ग) हिन्दी भाषा और तकनीकी युग पर**

## अपठित गद्यांश-2

हमने अपने को राष्ट्रों में बांट रखा है और प्रत्येक राष्ट्र अपने को स्वतंत्र संप्रभु राज्य के रूप में देखना चाहता है। दो मनुष्य एक ही विचार रखते हैं, एक ही संस्कृति के उपासक हैं, एक को दूसरे से कोई द्वेष नहीं है, फिर भी विभिन्न राष्ट्रों के सदस्य होने के कारण उनके हित टकराते हैं, एक दूसरे से लड़ना पड़ता है, अहं के कारण दूसरे के बाल बच्चों को भूखा मारना पड़ता है।

व्यक्ति को दास बनाना बुरा समझा जाता है, लेकिन संपूर्ण राष्ट्र को दास बनाना, संपूर्ण राष्ट्र के जीवन को अपनी इच्छा के अनुसार चलाना, समूचे राष्ट्र का शोषण करना बुरा नहीं है। बलात् दूसरे के घर का प्रबंध नहीं किया जा सकता, परंतु बलात् दूसरे राष्ट्र का शासन किया जा सकता है। राष्ट्रों और राज्यों के परस्पर व्यवहार में सत्य, अहिंसा तथा सहिष्णुता का कोई स्थान नहीं है। जो मनुष्य दूसरे व्यक्ति की यह एक पाई दबा लेना बुरा समझता है, वह राज्य पुरुष के पद से दूसरे राष्ट्र का गला घोंट देना निंदनीय नहीं मानता।

यह बात श्रेयस्कर नहीं। कुटुंब में व्यक्ति होते हैं, समाज तथा राष्ट्र इसी प्रकार रहें। कुछ बातों में अपना अलग-अलग जीवन भी व्यतीत करें, परंतु सारे मानव समाज की एकता सतत् सामने रहनी चाहिए। युद्ध और कलह समाप्त होना चाहिए। जो राष्ट्र दूसरों की ओर कुद्दष्टि से देखें वह राष्ट्र समुदाय से बहिष्कृत और दंडित किया जाना चाहिए। न्याय और सत्य सामूहिक आचरण के आधार पर स्थापित किए जा सकते हैं। मानव संस्कृति अविभाज्य है; कवि, कलाकार, योगी, वैज्ञानिक आदि चाहे वह किसी भी देश के निवासी हो, मनुष्य समाज-मात्र की विभूति है।

**1. "कुटुंब में व्यक्ति होते हैं, समाज में राष्ट्र इसी प्रकार रहें।" रेखांकित शब्द का बहुवचन क्या होगा?**

क) कुटुंबियों ख) कुटुम्बों ग) बहुत से कुटुंब घ) कई कुटुंब

**2. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द स्त्रीलिंग है-**

क) इच्छा ख) दास ग) राष्ट्र घ) व्यक्ति

**3. मानव संस्कृति एक ओर अविभाज्य है | योगी, कवि, कलाकार, विज्ञानी, चाहे किसी भी देश के निवासी हों, समाज मात्र की विभूति है| रेखांकित शब्द का क्या अर्थ है?**

क) संपत्ति ख) बहुतायत ग) ऐश्वर्य घ) सोना

**4. "कुछ बातों में अपना अलग-अलग ही जीवन बिताएँ ।" यह वाक्य है-**

क) संदिग्ध वर्तमानकाल ख) सामान्य वर्तमानकाल

ग) आज्ञार्थक वर्तमानकाल घ) इनमे से कोई नहीं ।

**5. निम्नलिखित में से 'सहिष्णुता' का विपरीतार्थक होगा-**

क) कट्टर ख) हिंसक ग) असहिष्णुता घ) उदार

**6. 'पुजारी' शब्द का समानार्थी है-**

क) उपासक ख) अनुगामी ग) विरोधी घ) निवेदक

**7. निम्न में से जातिवाचक संज्ञा नहीं है-**

क) कवि ख) विज्ञानी ग) योगी घ) शासन

**8. राष्ट्रों और राज्यों के परस्पर व्यवहार में सत्य, अहिंसा, और सहिष्णुता का स्थान नहीं है, वाक्य में रेखांकित शब्द ...............है-**

क) जातिवाचक संज्ञा ख) भाववाचक संज्ञा

ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा घ) विशेषण

**9.निम्न में से तद्भव शब्द है-**

क) राष्ट्र ख) योगी ग) सत्य घ) घर

**10. 'इत' प्रत्यय से युक्त विकल्प को चुनिए-**

क) भावुक ख) दण्डित ग) ऐतिहासिक घ) सत्यापित

**उत्तर-**

**(i) (ख) कुटुम्बों (ii) (क) इच्छा**

**(iii) (क) संपत्ति (iv) (ग) आज्ञार्थक वर्तमानकाल**

**(v) (ग) असहिष्णुता (vi) (क) उपासक**

**(vii) (घ) शासन (viii) (ख) भाववाचक संज्ञा**

**(ix) (घ) घर (x) (ख) दण्डित**

## अपठित गद्यांश-3

"नम्रता ही स्वतंत्रता की जननी है" यह कथन उचित है। लोग भ्रमवश अहंकार को स्वतंत्रता की जननी मान लेते हैं, किंतु उन्हें इस बात का उचित ज्ञान नहीं होता कि अहंकार स्वतंत्रता का गला ही घोंट सकता है | स्वतंत्रता में स्वाभिमान अवश्य ही अनिवार्य तत्व है किंतु स्वाभिमान को अहंकार तक संकुचित करना उचित नहीं है।

स्वतंत्रता में स्वाभिमान तथा नम्रता दोनों का संयोग जरूरी है | यह बात निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है,उसके लिए स्वाभिमान तथा नम्रता जरूरी है। इससे निर्भरता आती है तथा हमें अपने पैरों पर खड़े होना आता है। आज युवा वर्ग अपनी आकांक्षाओं तथा योग्यताओं के कारण बहुत आगे निकल गया है, लेकिन उसे ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने से बड़ों का सम्मान करे तथा बराबर के लोगों से कोमलता का व्यवहार करे । यह आत्म मर्यादा के लिए आवश्यक है।

इस संसार में जो कुछ हमारा है, उसमें बहुत से अवगुण तथा थोड़े गुण, सब इस बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह देखता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण तथा उसकी प्रज्ञा मंद पड़ जाती है, जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी हम पीछे रह जाते हैं और अवसर आने पर उचित निर्णय नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार मनुष्य का जीवन उसके हाथों में है। सच्ची आत्मा वही है जो विपरीत परिस्थितियों में स्वाभिमान को बनाए रखने में सफल होती है |

**(i) वर्तमान समय में युवा वर्ग की क्या स्थिति है?**

अ) युवा वर्ग अपने से बड़ों की भावनाओं का ध्यान रखता है |

ब) युवा वर्ग अपनी आकांक्षाओं और योग्यताओं के कारण बहुत आगे निकल गया है |

स) युवा वर्ग अपनी स्वतंत्रता का गला घोट सकता है |

द) युवा वर्ग अधिक विनम्र है |

**(II) स्वतंत्रता का नम्रता तथा स्वाभिमान से क्या संबंध है ?**

अ) स्वाभिमान के बिना नम्रता का होना व्यर्थ है |

ब) स्वतंत्रता में स्वाभिमान तथा नम्रता दोनों का संयोग जरूरी नहीं है|

स) स्वतंत्रता में स्वाभिमान तथा नम्रता दोनों का संयोग जरूरी है |

द) केवल स्वाभिमान का होना ही आवश्यक है |

**(III) "सच्ची आत्मा" को किस प्रकार परिभाषित किया गया है ?**

अ) सच्ची आत्मा विपरीत परिस्थितियों में स्वाभिमान तथा नम्रता को बनाए रखती है |

ब) सच्ची आत्मा मर्यादा का पालन नहीं करती है |

स) सच्ची आत्मा आगे बढ़ने के समय भी पीछे रह जाती है |

द) सच्ची आत्मा में कई अवगुण होते हैं |

**(IV) लेखक नम्रता से संबंधित किस गलत धारणा का खंडन करता है?**

अ) नम्रता के कारण मनुष्य दूसरों से बहुत आगे निकल जाता है |

ब) नम्रता से अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है कि हमें दूसरों का मुँह देखना पड़े|

स) नम्रता के कारण हम कई उचित निर्णय ले पाते हैं |

द) आज के समय में नम्रता अनिवार्य है |

**(V) हमें अपनों से बड़ों तथा बराबर वालों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ?**

अ) हमें बड़ों के साथ कोमलता का तथा बराबर वालों के साथ सम्मान का व्यवहार करना चाहिए |

ब) हमें बड़ों के साथ सम्मान का तथा बराबर वालों के साथ कोमलता का व्यवहार करना चाहिए |

स) उपरोक्त दोनों विकल्प सही हैं |

द) उपरोक्त दोनों विकल्प गलत हैं |

**(VI) "स्वतंत्रता" और "दब्बूपन" में प्रयुक्त प्रत्यय लिखें |**

अ) स्वतंत्रता में "स्व" और दब्बूपन में "दब्बू" |

ब) स्वतंत्रता में "तंत्र" और दब्बूपन में "पन" |

स) स्वतंत्रता में "ता" तथा दब्बूपन में "पन" |

द) कोई भी विकल्प सही नहीं है |

**(VII) उपर्युक्त गद्यांश किस विषय वस्तु पर आधारित है ?**

अ) अहंकार ही स्वतंत्रता की जननी है |                ब) नम्रता ही स्वतंत्रता की जननी है |

स) अहंकार स्वतंत्रता के लिए आवश्यक है |        द)कोई भी विकल्प सही नहीं है |

**(VIII) मनुष्य का जीवन किसके हाथ में है ?**

अ)मनुष्य का जीवन अहंकार के हाथ में है |          ब)मनुष्य का जीवन स्वाभिमान के हाथ में है |

स)मनुष्य का जीवन उसके अपने हाथों में है |       द)मनुष्य का जीवन किसी के हाथ में नहीं है|

**(IX)मर्यादापूर्वक जीवन जीने के लिए क्या आवश्यक है ?**

अ)नम्रता और अभिमान दोनो                              ब)केवल स्वाभिमान

स)स्वाभिमान और नम्रता दोनों                           द)इनमें से कोई भी नहीं

**(X) लोग भ्रमवश क्या उचित मान लेते हैं ?**

अ) लोग भ्रमवश अहंकार को स्वतंत्रता की जननी मान लेते हैं |

ब) लोग भ्रमवश स्वतंत्रता को अहंकार की जननी मान लेते हैं |

स) दोनों विकल्प सही है |

द) दोनों विकल्प सही नहीं हैं |

**उत्तर – (I) ब   (II) स  (III) अ   (IV) ब   (V) ब    (VI) स   (VII) ब   (VIII) स   (IX) स   (X) अ**

## अपठित गद्यांश-4

दबाव में काम करना व्यक्ति के लिए अच्छा है या नहीं इस बात पर प्रायः बहस होती है।कहा जाता है कि व्यक्ति अत्यधिक दबाव में नकारात्मक भावों को अपने ऊपर हावी कर लेता है, जिससे उसे अक्सर कार्य में असफलता प्राप्त होती है । वह अपना मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी खो बैठता है। दबाव को यदि ताकत बना लिया जाए तो न सिर्फ सफलता प्राप्त होती है, बल्कि व्यक्ति कामयाबी के नए मापदंड रचता है। ऐसे बहुत सारे उदाहरण हैं, जब लोगों ने अपने काम के दबाव को अवरोध नहीं, बल्कि ताकत बना लिया। सुख-दुख, सफलता-असफलता, शांति-क्रोध और क्रिया-कर्म हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है । **जोस सिल्वा** इस बात से सहमत होते हुए अपनी पुस्तक **'यू द हीलर'** में लिखते हैं कि मन मस्तिष्क को चलाता है और मस्तिष्क शरीर को। इस तरह शरीर मन के आदेश का पालन करता हुआ काम करता है। दबाव में व्यक्ति यदि सकारात्मक होकर काम करें तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब होता है। दबाव के समय मौजूद समस्या पर ध्यान केंद्रित करने और बोझ महसूस करने की बजाय यदि यह सोचा जाए कि हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं, जो एक कठिन चुनौती को पूरा करने के लिए तत्पर है तो हमारी बेहतरीन क्षमताएँ स्वयं जागृत हो उठती है। हमारा दिमाग जिस चीज पर भी अपना ध्यान केंद्रित करने लगता है, वह हमें बढ़ती प्रतीत होती है। यदि हम अपनी समस्याओं के बारे में सोचेंगे तो वह भी बड़ी महसूस होगी। इस बात को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि जीतना एक आदत है, पर अफसोस ! हारना भी आदत ही है।

**(I) दबाव में काम करने से व्यक्ति:**

अ) कार्य में सफलता प्राप्त नहीं करता                    ब) अपना मानसिक स्वास्थ्य खो देता है

स) अपना शारीरिक स्वास्थ्य खो देता है                   द)उपर्युक्त सभी

**(II) दबाव हमारी सफलता का कारण बनता है, जब व्यक्ति-**

अ) दबाव को ताकत बना लेता है                           ब) दबाव में नकारात्मक रूप से काम करता है

स) घबरा जाता है                                              द) उसी भाषा में जवाब देता है

**(III) दबाव में सकारात्मक सोच है :**

अ) समस्या पर ध्यान केंद्रित करना                        ब) कार्य को बोझ न समझना

स) कठिन से कठिन चुनौती के लिए तत्पर रहना          द) उपरोक्त सभी

**(IV) सफलता, सुख-दुख, शांति, क्रोध सब किस पर निर्भर करता है ?**

अ) मनुष्य के व्यक्तित्व पर          ब) मनुष्य के दृष्टिकोण पर

स) मनुष्य की कार्यशैली पर          द )उपरोक्त सभी पर

**(V) कार्य में असफलता प्राप्त होती है जब व्यक्ति -**

अ) नकारात्मक भावों को अपने ऊपर हावी होने देता है   ब) कार्य के प्रति जागरूक होता है

स) संघर्ष के साथ आगे बढ़ता है          द) साहस के साथ काम करते हैं

**प्रश्न (VI) ‘यू द हीलर’ है :**

अ) एक व्यक्ति   ब) एक पुस्तक   स) एक भवन   द) एक संस्थान

**प्रश्न (VII) गद्यांश के अनुसार मस्तिष्क को कौन चलाता है ?**

अ) व्यक्ति   ब) मन   स) तन   द ) दृष्टिकोण

**प्रश्न (VIII) व्यक्ति अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कब करता है ?**

अ) सकारात्मक होकर          ब) दबाव में सकारात्मक होकर

स) अत्यधिक पूंजी लगाकर          द) तनाव में आकर

**प्रश्न (IX) अपनी क्षमताओं को जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका किसकी होती है ?**

अ) पूंजी की   ब) अभिव्यक्ति की   स) सोच की   द) मार्गदर्शन की

**प्रश्न (X)‘शारीरिक स्वास्थ्य’ शब्द में ‘ शारीरिक’ है :**

अ) संज्ञा   ब) सर्वनाम   स) विशेषण   द) क्रिया

**उत्तर – (I) द (II) अ (III) द (IV) ब (V)अ (VI) ब (VII) ब (VIII) ब (IX) स (X) स**

## अपठित गद्यांश-5

बाज़ार ने, विज्ञापन ने हिंदी को एक क्रांतिकारी रूप दिया ,जिसमें रवानगी है ,स्वाद है,रोमांच है,आज की सबसे बड़ी चाहत का अकूत संसार है। इस तरह हिंदी भविष्य की भाषा,समय का तकाज़ा और रोज़गार की ज़रूरत बनती जा रही है। लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ पत्रकारिता है। सूचना – क्रांति ने विश्व को ग्राम बना दिया है। मीडिया की जागरूकता ने समाज में एक क्रांति ला दी है और इस क्रांति की भाषा है हिंदी।इतने सारे समाचार चैनल हैं और सभी चैनलों पर हिंदी अपने हर रूप में नए कलेवर ,तेवर में निखरकर ,संवरकर,लहरकर, बिंदास बनकर छाई रहती है।तुलनात्मक अर्थों में आज अंग्रेजी–पत्रकारिता का मूल्य, बाज़ार,उत्पादन,उपभोग और वितरण बहुत बड़ा है।प्रिंट मीडिया की स्थिति ज्यादा बेहतर है , पत्र-पत्रिकाओं की लाखों प्रतियां रोजाना बिकती है।चीन के बाद सबसे अधिक अखबार हमारे यहाँ पढ़े जाते हैं ,हिंदी के सम्प्रेषण की यह मानवीय, रचनात्मक और सारगर्भित उपलब्धि है।पत्र-पत्रिकाएं हिंदी की गुणवत्ता और प्रचार-प्रसार के लिए कृत संकल्प हैं।यह भ्रम फैलाया गया था कि हिंदी रोजगारोन्मुखी नहीं है | आज सरकारी, गैर-सरकारी क्षेत्रों में करोड़ों हिंदी पढ़े-लिखे लोग आजीविका कमा रहे हैं | भविष्य में हिंदी की बाज़ार – मांग और अधिक होगी।पसीनों में,प्रार्थनाओं में ,सिरहनों की सिसकियों में और हमारे सपनों में जब तक हिंदी रहेगी, तब तक वह बिना किसी पीड़ा या रोग के सप्राण , सवाक और सस्वर रहेगी।

**(I) लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ किसे कहा गया है –**

अ) कार्यपालिका   ब)न्यायपालिका   स)पत्रकारिता   द)व्यवस्थापिका

**(II) तुलनात्मक दृष्टि से हिंदी और अंग्रेजी पत्रकारिता में लेखक ने किसे व्यापक माना है और क्यों ?**

अ) हिंदी पत्रकारिता को क्योंकि वह तीव्र गति से विकास कर रही है

ब) अंग्रेजी–पत्रकारिता को क्योंकि उसका मूल्य ,बाज़ार,उत्पादन,उपभोग और वितरण बहुत बड़ा है

स) क्षेत्रीय भाषायी पत्रकारिता को क्योंकि भारत में विविध भाषाएँ बोली जाती है

द) विकलप अ) और ब) दोनों सही है ।

**(III) प्राय : क्या भ्रम फैलाया जा रहा है ?**

अ) हिंदी रोजगारपरक नहीं है          ब) भारत में हिंदी अधिकांश लोग नहीं समझते

स) हिंदी तकनीकी साधनों में प्रयोग हेतु सुगम नहीं है  द) हिंदी रोजगारपरक है

**(IV) किस देश के बाद अख़बार पढने वालों की संख्या भारत में अधिक है ?**

अ)अमेरिका  ब)ब्रिटेन  स) फ़्रांस  द)चीन

**(V) किस क्रांति ने विश्व को एक गाँव बना दिया है ?**

अ) सूचना क्रांति  ब) औद्योगिक क्रांति  स) वैचारिक क्रांति  द) निम्न में से कोई नहीं

**(VI) प्रिंट मीडिया के अंतर्गत आते है –**

अ)मोबाईल फोन  ब) इन्टरनेट  स) दूरदर्शन  द)पत्र-पत्रिकाएं

**(VII) मीडिया की जागरूकता ने समाज में एक क्रांति ला दी है और इस क्रांति की भाषा है ?**

अ)अंग्रेजी  ब)हिंदी  स) 1) और 2) दोनों ही  द) चीनी भाषा

**(VIII) हिंदी कब तक बिना किसी पीड़ा या रोग के सप्राण,सवाक और सस्वर रहेगी ?**

अ) जब तक वह पसीनों में,प्रार्थनाओं में,सिरहनों की सिसकियों में और हमारे सपनों में रहेगी|

ब) जब वह रोजगार की भाषा बनेगी

स) जब वह दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाएगी

द ) जब वह विद्यालयों में अनिवार्य रूप से पढाई जाएगी ।

**(IX)) समाचार चैनलों पर हिंदी किस रूप में दिखाई दे रही है ?**

अ) नए कलेवर में  ब) तेवर में निखरकर

स) संवरकर, लहरकर  द) उपर्युक्त सभी रूप में

**(X) मानवीय शब्द में प्रत्यय है –**

अ) इय  ब)वीय  स) ईय  द) य

**उत्तर – (I)स (II))ब (III)अ (IV))द (V) अ (VI) द (VII) ब (VIII) अ (IX)द (X) स**

## अपठित गद्यांश-6

राह पर खड़ा है आम का सूखा पेड़, सदा से ठूँठ नहीं है। वे दिन थे जब वह हरा भरा था और उस जनसंकुल चौराहे पर अपनी छतनार डालियों से बटोहियों की थकान अनजाने ही दूर करता था। पर मैंने उसे सदा ठूँठ ही देखा है। पत्रहीन, शाखाहीन, निरवलंब, जैसे पृथ्वी रूपी आकाश से सहसा निकलकर अधर में ही टंग गया हो। रात में वह काले भूत-सा लगता है, दिन में उसकी छाया इतनी गहरी नहीं हो पाती जितना काला उसका जिस्म है और अगर चितेरे को छायाचित्र बनाना हो तो शायद उसका-सा 'अभिप्राय' और न मिलेगा। प्रचंड धूप में भी उसका सूखा शरीर उतनी ही गहरी छाया ज़मीन पर डालता जैसे रात की उजियारी चांदनी में। जब से होश संभाला है, जब से आंख खोली है, देखने का अभ्यास किया है, तब से बराबर मुझे उसका निस्पंद, नीरस, अर्थहीन शरीर ही दिख पड़ा है। पर पिछली पीढ़ी के जानकार कहते हैं कि एक जमाना था जब पीपल और बरगद भी उसके सामने शरमाते थे और उसके पत्तों से, उसकी टहनियों और डालों से टकराती हवा की सरसराहट दूर तक सुनाई पड़ती थी। पर आज वह नीरव है, उस चौराहे का जवाब जिस पर उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारों ओर की राहें मिलती हैं और जिनके सहारे जीवन अविरल बहता है। जिसने कभी जल को जीवन की संज्ञा दी, उसने निश्चय जाना होगा कि प्राणवान जीवन भी जल की ही भांति अविकल, अविरल बहता है। सो प्राणवान जीवन, मानव संस्कृति का उल्लास उपहार लिए उन चारों राहों की संधि पर मिलता था जिसके एक कोण में उस प्रवाह से मिल एकांत शुष्क आज वह ठूँठ खड़ा है। उसके अभागी परंपरा में संभवतः एक ही सुखद अपवाद है – उसके अंदर का स्नेहरस सूख जाने से संज्ञा का लोप हो जाना। संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की अनुभूति कम हो जाती है।

**(I) जनसंकुल का क्या आशय है?**

अ) जनसंपर्क  ब) भीड़-भरा  स) जनसमूह  द) जनजीवन

**(II) आम की छतनार डालियों के कारण क्या होता था?**

अ) यात्रियों को ठंडक मिलती थी  ब) यात्रियों को विश्राम मिलता था

स) यात्रियों की थकान मिटती थी  द) यात्रियों को हवा मिलती थी

**(III) शाखाहीन, रसहीन, शुष्क वृक्ष को क्या कहा जाता है?**

अ) नीरस वृक्ष ब) जड़ वृक्ष स) ठूँठ वृक्ष द) हीन वृक्ष

**(IV) आम के वृक्ष के सामने पीपल और बरगद के शरमाने का क्या कारण था?**

अ) उसका अधिक हरा-भरा और सघन होना ब) हवा की आवाज सुनाई देना

स) अधिक फल-फूल लगना द) अधिक ऊँचा होना ।

**(V) आम के अभागेपन में संभवतः एक ही सुखद अपवाद था –**

अ) उसका नीरस हो जाना ब) संज्ञा लुप्त हो जाना

स) सूख कर ठूँठ हो जाना द) अनुभूति कम हो जाना ।

**(VI) लेखक ने होश संभाला तो पेड़ कैसा था?**

अ) हरा भरा ब) निस्पंद , नीरस, अर्थहीन स) बहुत बड़ा द) छोटे पौधे जैसा।

**(VII) "अगर चितेरे को छायाचित्र बनाना हो तो शायद उसका सा अभिप्राय ना मिलेगा।" यह किस के संदर्भ में कहा गया है।**

अ) पीपल और बरगद के पेड़ के संदर्भ में ब) आम के सूखे पेड़ के संदर्भ में

स) सूखी झाड़ियों के संदर्भ में द) इनमें से कोई नहीं।

**(VIII) 'नीरव' शब्द का अभिप्राय है-**

अ)शब्द रहित ब) सूखा हुआ स) हरा भरा द) शब्द

**(IX) 'सरसराहट' शब्द में प्रत्यय है**

अ)हट ब) राहट स) आहट द) सर

**(X) 'चौराहा' शब्द में समास है-**

अ) द्वन्द्व ब) कर्मधारय स) तत्पुरुष द) द्विगु

**उत्तर – (I)ब , (II) स, ((III) स, (IV)) अ, (V) ब, (VI) ब (VII))ब, (VIII)अ , (IX)स, (X)द**

## अपठित गद्यांश-7

महापुरूष सचमुच सच्चे पारखी होते हैं । द्विवेदी जी ने निराला-सा नगीना परखा । प्रतिभा की जो परख उन्होंने की, उसका लोहा कौन नहीं मानेगा? निराला जी को पाकर सोसाइटी धन्य हुई । स्वामी माधवानंद जी के सामने ज्यों-ज्यों निराला जी का जौहर खुलता गया, त्यों-त्यों वह द्विवेदी जी की सौंपी हुई थाती को अनमोल रत्न की तरह जगाने लगे । निराला जी का शील-सौजन्य ही ऐसा था कि एक बार जिसने उस पारस को परखा वह सोना होकर रहा । 'मतवाला' के संपादक श्री महादेव प्रसाद सेठ का जब उनसे संपर्क हुआ, तब वह निराला जी के हाथों बिक-से गए । उनके समान निराला-भक्त आज तक कोई हुआ ही नहीं ।

निराला जी कुछ दिन काशी में रहे थे । मैं भी उन दिनों वहीं था । प्रसाद जी (जयशंकर प्रसाद) के साथ खूब बैठक होती थी । मध्य गंगा में बजरे पर कविता-पाठ भी हुआ था । निराला जी ने हारमोनियम बजाकर 'श्री रामचंद्र कृपालु भज मन' पद गाया था । प्रसाद जी ने परोक्ष में उनकी बड़ी प्रशंसा की थी । साहित्य और संगीत, दोनों शास्त्रों में उनकी असाधारण गति देखकर प्रसाद जी बहुत प्रभावित हुए थें । प्रसाद जी राग-द्वेष रहित व्यक्ति थें । उन्होंने उसी समय निराला जी को कई बार तौलकर कहा था कि हिंदी को ईश्वर की देन है निराला । वह भविष्यवाणी आज प्रत्यक्ष है । पंचवटी कविता का पाठ करते समय निराला जी की भावभंगी देखकर मुंशी जी (नवजादिक लाल) को बंगीय रंगमंच के कुशल अभिनेताओं की भंगिमा याद हो आती थी ।

हिन्दी संसार में महाकवि निराला के समान त्यागवृत्ति का कोई साहित्य सेवी अब तक देखने में नहीं आया । गीता के भगवद् वाक्य "त्यागाच्छांति अनंतरम्" के अनुसार उन्हें अपने त्याग-बल से ही शांति प्राप्त हो गई थी। वे सब तरह की कठिनाइयों और असुविधाओं को अविचल धैर्य और संतोष के साथ झेलते चले गए ।

निराला जी तो अपने जीते-जी ठीक-ठीक परखे ही नहीं गए । उनकी दीन-बंधुता को इस दुनिया ने विक्षिप्तता की संज्ञा दे डाली । पर कठोर सत्य तो यह है कि निराला जी ने संसार या समाज की कुत्सा पर कभी

कान ही नहीं दिए । ऋणी भी हुए तो परहितार्थ ही । लड़े-झगड़े तो भी न्याय के पक्ष पर अडिग रहकर स्वाभिमान के सर्वोच्च शिखर पर बैठे रहकर फकीरी-बेफिक्री से संसार की ओर उपेक्षा भरी कनखियों से देखा । स्वयं हलाहल का घूँट पीकर दूसरों को अमृत ही पिलाते रह गए । निराला जी की रचनाओं पर विचार करने का यह अवसर नहीं है, पर यह तो विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि वे भाषा के असाधारण पारखी थे । भाषा संबंधी अराजकता उन्हें असह्य थी । निराला जी खड़ी बोली की नई धारा के क्रांतिकारी कवि तो थे ही, ब्रजभाषा के भी रस सिद्ध कवि थे ।

**(i) निराला जी की साहित्य प्रतिभा की परख किसने की ?**

(क) स्वामी माधवानंद जी ने
(ख) नवजादिक लाल ने
(ग) द्विवेदी जी ने
(घ) दुनिया ने

**(ii) निराला जी को पाकर सोसाइटी धन्य हुई ।यहाँ‘सोसाइटी’ शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?**

(क) निवास कॉलोनी के लिए
(ख) अंग्रेजी साहित्य क्षेत्र के लिए
(ग) किसी साहित्यिक संस्था के लिए
(घ) उनके ग्रामीण समाज के लिए

**(iii) 'मतवाला' है -**

(क) साहित्यिक संस्था
(ख) हिन्दी साहित्यिक पत्रिका का नाम
(ग) हिन्दी कवियों का समूह
(घ) इनमें से कोई नहीं

**(iv) हाथों बिक जाना का क्या अर्थ है ?**

(क) कम मूल्य पर बिकना
(ख) अधिक मूल्य पर बिकना
(ग) सहज प्रेम के वशीभूत होना
(घ) मूल्य लगना

**(v) 'हिन्दी को ईश्वर की देन हैं निराला' – ये शब्द किसने कहे?**

(क) जयशंकर प्रसाद ने
(ख) महादेव प्रसाद सेठ
(ग) साहित्यिक मित्रों ने
(घ) स्वयं निराला ने

**(vi) निराला की किस विशेषता को दुनिया ने विक्षिप्तता की संज्ञा दे डाली ?**

(क) साहित्य प्रेम को
(ख) गरीबी को
(ग) फक्कड़पन को
(घ) दीन-बंधुता को

**(vii) निम्न में से निराला की विशेषता है -**

(क) स्वाभिमानी व्यक्ति थे
(ख) भाषा के असाधारण पारखी थे
(ग) न्याय के पक्ष पर अडिग रहते थे
(घ) सभी विकल्प सही हैं

**(viii) निराला को कौनसी बात सहन नहीं होती थी ?**

(क) भाषा संबंधी अराजकता
(ख) झूठ
(ग) संसार या समाज की कुत्सा
(घ) सभी विकल्प सही हैं

**(ix) किनके समान निराला-भक्त आज तक नहीं हुआ ?**

(क) महादेव प्रसाद सेठ समान
(ख) जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी समान
(ग) नवजादिक लाल
(घ) श्री रामचंद्र कृपालु समान

**(x) ‘परोक्ष’ का विलोम शब्द क्या है?**

(क) अप्रत्यक्ष
(ख) प्रत्यक्ष
(ग) अवरोक्ष
(घ) सरोष

**उत्तर-**

(i) (ग) द्विवेदी जी ने
(ii) (ग) किसी साहित्यिक संस्था के लिए
(iii) (ख) हिन्दी साहित्यिक पत्रिका का नाम
(iv) (ग) सहज प्रेम के वशीभूत होना
(v) (क) जयशंकर प्रसाद ने
(vi) (घ) दीन-बंधुता को
(vii) (घ) सभी विकल्प सही हैं
(viii) (क)भाषा संबंधी अराजकता
(ix) (क)महादेव प्रसाद सेठ समान
(x) (ख )प्रत्यक्ष

## अपठित गद्यांश-8 (स्वयं अभ्यास के लिए)

भिखारी की भाँति गिड़गिड़ाना प्रेम की भाषा नहीं है। यहाँ तक कि मुक्ति के लिए भगवान की उपासना करना भी अधम उपासना में गिना जाता है। प्रेम कोई पुरस्कार नहीं चाहता। प्रेम में आतुरता नहीं होती। प्रेम सर्वथा प्रेम के लिए ही होता है। भक्त इसलिए प्रेम करता है कि बिना प्रेम किए वह रह नहीं सकता। जब हम किसी मनोहर प्राकृतिक दृश्य को देखकर उस पर मुग्ध हो जाते हैं तो उस दृश्य से हम किसी फल की याचना नहीं करते और न वह दृश्य ही हमसे कुछ चाहता है; तो भी वह दृश्य हमें बडा आनंद देता है। वह हमारे मन को पुलकित और शांत कर देता है और साधारण सांसारिकता से ऊपर उठाकर एक स्वर्गीय आनंद से सराबोर कर देता है। इसलिए प्रेम के बदले कुछ माँगना प्रेम का अपमान करना है। प्रेम करना नंगी तलवार की धार पर चलने जैसा है क्योंकि स्वार्थ के लिए, दिखाने के लिए तो सभी प्रेम करते हैं, उसे निभाते नहीं। वे पाना चाहते है, देना नहीं। वे वस्तुतः प्रेम शब्द को कलंकित करते हैं।

**(i) प्रेम की भाषा क्या नहीं है-**

(अ) मुक्ति के लिए उपासना (ब) भिखारी की भाँति गिडगिडाना

(स) अधम उपासना (द) पुरस्कार पाना

**(ii) अधम उपासना क्या है-**

(अ) मुक्ति के लिए प्रार्थना करना (ब) आतुरता करना

(स) गिडगिडाना (द) पुरस्कार पाना

**(iii) प्रेम में आतुरता होने से क्या अभिप्राय है-**

(अ) प्रेम करना (ब) याचना करना

(स) जल्दबाजी करना (द) धोखा देना

**(iv) एक भक्त भगवान से प्रेम क्यों करता है?**

(अ) वह स्वार्थी होता है (ब) पुरस्कार पाना चाहता है

(स) वह मुग्ध होना चाहता है (द) वह प्रेम के बिना रह नहीं सकता

**(v) किसी मनोहारी दृश्य को देखकर हम क्या हो जाते हैं?**

(अ) मुग्ध हो जाते है (ब) प्रफ्फुलित हो जाते है

(स) आनंदित हो जाते है (द) उपर्युक्त तीनो

**(vi) प्रेम को तलवार की धार पर चलने के समान क्यों बताया गया है?**

(अ) इस पर चला नहीं जा सकता (ब) तलवार की धार खतरनाक होती है

(स) प्रेम को निभाना बहुत कठिन होता है (द) प्रेम बहुत कठोर होता है

**vii) प्रेम का अपमान कैसे होता है?**

(अ) प्रेम करना कठिन है (ब) प्रेम निभाना कठिन है

(स) हम उसे सराबोर कर देते है (द) प्रेम के बदले प्रेम मांगते है

**viii) कैसे लोग प्रेम को कलंकित करते हैं**

(अ) जो प्रेम निभाना नहीं जानते (ब) जो स्वार्थी होते है

(स) जो पाना चाहते है देना नहीं चाहते (द) उपर्युक्त सभी

**ix) भक्त और भगवान के बीच कैसा प्रेम होना चाहिए-**

(अ) स्वार्थपूर्ण (ब) नि:स्वार्थ

(स) कठोर (द) जिसे निभाना कठिन हो

**x) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए**

(अ) प्रेम की आतुरता (ब) प्रेम की कठिनता

(स) कठिन प्रेम की परिभाषा (द) नि:स्वार्थ प्रेम की परिभाषा

## अपठित गद्यांश-9 (स्वयं अभ्यास के लिए)

तुलसी जैसा कवि काव्य की विशुद्ध, मनोमयी कल्पना प्रवण तथा शृंगारात्मक भावभूमियों के प्रति उत्साही नहीं हो सकता | उसका संत हृदय परम कारूणिक राम के प्रति ही उन्मुख हो सकता है जो जीवन के धर्ममय सौंदर्य, मर्यादापूर्ण शील और आत्मिक शौर्य के प्रतीक है |विजय रथ के रूपक में उन्होने संत जीवन की रूप रेखा उभारी है और अपनी राम कथा को इसी संतत्व का चरितार्थ बना दिया है | उनका काव्य भारतीय जीवन की सबसे बड़ी आकांक्षा मर्यादित जीवन चर्चा अथवा 'संत – रहनि' को वाणी देता है| धर्ममय जीवन की आकांक्षा भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य है| तुलसी के काव्य में धर्म का अनाविल, अनावृत और अक्षुण्ण रूप ही प्रकट हुआ है| मध्ययुग की अध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करते हुए भी उनका काव्य भारतीय आत्मा के चिरंतन सौंदर्य का प्रतिनिधि है जो सत्य, तप, करूणा और मैत्री में ही आरोहण के देवधर्मी मूल्यों को अनावृत करता है | उनके काव्य में श्रेष्ठ कवित्व ही नहीं मिलता, उसके आधार पर हम संत कवित्व की रूप रेखा भी निर्धारित कर सकते हैं | भक्ति उनके संतत्व की आंतरिक भाव साधना भी है | इस भाव साधना की वाणी को अप्रतिम क्षमता देकर उन्होने निष्कंप दीपशिखा की भाँति अपनी काव्य कला को निःसंग और निर्वैयक्तिक दीप्ति से भर दिया है|

**(i) उपर्युक्त गद्यांश किस विषय वस्तु पर आधारित है?**

(क) तुलसी और उनका शील    (ख) तुलसी और उनका काव्य
(ग) तुलसी और उनका जीवन    (ग) तुलसी और उनका बचपन

**(ii) तुलसी जैसा कवि किसके लिए उत्साही नहीं हो सकता?**

(क) वियोगात्मक अनुभूति    (ख) संयोगात्मक अनुभूति
(ग) कारुणिक अनुभूति    (घ) शृंगारात्मक अनुभूति

**(iii) तुलसी का संत हृदय किसके प्रति उन्मुख हो सकता है?**

(क) राम के प्रति    (ख) लोक के प्रति
(ग) जीवन के प्रति    (घ) प्रकृति के प्रति

**(iv) कौन धर्ममय सौंदर्य, मर्यादापूर्ण शील और आत्मिक शौर्य के प्रतीक है?**

(क)तुलसी    (ख) कृष्ण
(ग)राम    (घ) सामान्य जन

**(v) विजय रथ के रूपक में तुलसी ने किसकी रूपरेखा उभारी है?**

(क) संत जीवन की    (ख) गृहस्थ जीवन की
(ग) असंत जीवन की    (घ) सामान्य जीवन की

**(vi) तुलसी के काव्य में किस भाव साधना को वाणी दी गई है?**

(क) समादृत जीवन की भाव साधना को    (ख) मर्यादित जीवन की भाव साधना को
(ग) देव जीवन की भाव साधना को    (घ) सन्यासी जीवन की भाव साधना को

**(vii)भारतीय संस्कृति की क्या विशेषता है?**

(क) सदाचार युक्त जीवन की आकांक्षा    (ख) वानप्रस्थ जीवन की आकांक्षा
(ग) सन्यासी जीवन की आकांक्षा    (घ) धर्ममय जीवन की आकांक्षा

**(viii) तुलसी का काव्य किसका प्रतिनिधित्व करता है?**

(क)मध्ययुग की विशिष्टता का    (ख)मध्ययुग की वैचारिकता का
(ग)मध्ययुग की आध्यात्मिकता का    (घ)मध्ययुग की कार्यकुशलता का

**(ix) 'मर्यादित' शब्द में प्रत्यय है-**

(क)इत    (ख)दित    (ग)इक    (घ)इन में से कोई नहीं

**(x) 'अनावृत' का विलोम शब्द है-**

(क)आनावृत    (ख)आवृत    (ग)अनुवृत    (घ)अन्आवृत

# अपठित काव्यांश

**अपठित पद्यांश को हल करने के लिए आवश्यक बिंदु –**

***1) विद्यार्थी को काव्यांश ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि उसका अर्थ स्पष्ट हो सके।***

***2) काव्यांश से संबंधित प्रश्नों का अध्ययन करें।***

***3) प्रश्नों के संभावित उत्तर काव्यांश में खोजें।***

***4) प्रश्नों के उत्तर काव्यांश पर आधारित होने चाहिए।***

***5) उत्तरों की भाषा सहज, सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।***

## अपठित काव्यांश -1

**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए**

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा मे उसे
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी |
यूँ तो बाहर समुद्र है नदी है झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है
यहाँ कटोरी मे भरा जल गटकना है|
बाहर दाने का टोटा है
यहा चुग्गा मोटा है
बाहर बहेलिये का डर है
यहा निर्द्वन्द्व स्वर है
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंश निकल सकेगा
निकालेगी
हरसू जोर लगाएगी
और पिजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी |

**i) पिजड़े के बाहर के संसार को निर्मम क्यों कहा गया है?**

क) क्योंकि वहां कमजोर को हमेशा दबाने का प्रयास किया जाता है |

ख) क्योंकि वह उसे आकाश मे उड़ने के अवसर मिलते है |

ग) क्योंकि पिजड़े मे उसे दाना-पानी मिलता है |

घ) क्योंकि वहाँ सुविधाए उपलब्ध है|

**ii) पिजड़े मे चिड़िया कैसे रह सकती है?**

क) डर-डर कर ख) निडर हो कर ग) साहसी बना कर घ) प्रसन्न हो कर

**iii) बाहर का संसार निर्मम और सुविधाओ का अभाव होने पर भी चिड़िया बाहर क्यों जाना चाहती है?**

क) क्योंकि उसे बाहर ही रहना था

ख) क्योंकि उसे पिजड़े का दाना-पानी पसंद नहीं है

ग) क्योंकि उसे स्वतंत्र रहना पसंद है|

घ) क्योंकि उसे पिजड़े मे रहना पसंद है|

**iv) 'और पिजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी'—पंक्ति मे किसके बारे मे कहा गया है ?**

क) कवि के　　ख) दुनिया के　　ग) बहेलिये के　　घ) चिड़िया के

**v) काव्यांश का समुचित शीर्षक होगा ---**

क) चिड़िया का स्वप्न　　ख) चिड़िया　　ग) स्वप्न　　घ) मुक्ति

**उत्तर –i) क,　　ii)ख,　　iii)ग,　　iv)घ,　　v)क**

## अपठित काव्यांश -2

जला अस्थियाँ बारी-बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।
अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल

**1. कवि अपनी कलम से किस की जयकार करने की बात कह रहा है?**

(क) बड़े-बड़े राजाओं की　　(ख)प्रख्यात महापुरुषों की

(ग) देशभक्त वीर शहीदों की　　(घ) इन सभी की

**2. इतिहास के बारे में कवि ने क्या नहीं कहा है ?**

(क) इतिहास अंधा है

(ख) इतिहास चकाचौंध से प्रभावित होता है?

(ग) इतिहास में अगणित वीर सपूतों के नाम दर्ज नहीं है

(घ) इतिहास ने जिनकी जय जयकार की है मेरी कलम तुम भी उनकी जयजयकार करो।

**3. 'जल-जलाकर बुझ गए किसी दिन' पंक्ति का आशय क्या है-**

(क) देश की आजादी के लिए अनेक देश भक्तों ने कष्ट सहन किए

(ख) देश की आजादी के लिए अनेक देश भक्तों ने अपनी जान न्योछावर कर दी
(ग) जिन देश भक्तों की शहादत के बारे में इतिहास भरा है
(घ) उपर्युक्त सभी

**4. 'पुण्यवेदी ' शब्द का आशय क्या है?**

(क) औद्योगिक क्रांति (ख)देश का विकास
(ग) आत्मा विकास (घ) देश की आजादी का पवित्र कार्य

**5. अगणित लघु दीप से कवि का आशय किन लोगों से है?**

(क) देश के वैज्ञानिकों से (ख) प्रसिद्ध देश भक्तों से
(ग) गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों से (घ) उपर्युक्त सभी से

**उत्तर 1-(ग), 2-(घ), 3-(ख), 4-(घ) 5-(ग)**

## अपठित काव्यांश -3

रात यों कहने लगा मुझसे गगन का चाँद,
आदमी भी क्या अनोखा जीव होता है!
उलझनें अपनी बनाकर आप ही फँसता,
और फिर बेचैन हो जगता, न सोता है।
जानता है तू कि मैं कितना पुराना हूँ?
मैं चुका हूँ देख मनु को जनमते-मरते;
और लाखों बार तुझ-से पागलों को भी
चाँदनी में बैठ स्वप्नों पर सही करते।
आदमी का स्वप्न? है वह बुलबुला जल का;
आज उठता और कल फिर फूट जाता है;
किन्तु, फिर भी धन्य; ठहरा आदमी ही तो?
बुलबुलों से खेलता, कविता बनाता है।
मैं न बोला, किन्तु, मेरी रागिनी बोली,
देख फिर से, चाँद! मुझको जानता है तू?
स्वप्न मेरे बुलबुले हैं? है यही पानी?
आग को भी क्या नहीं पहचानता है तू?
मैं न वह जो स्वप्न पर केवल सही करते,
आग में उसको गला लोहा बनाती हूँ,
और उस पर नींव रखती हूँ नये घर की,
इस तरह दीवार फौलादी उठाती हूँ।
मनु नहीं, मनु-पुत्र है यह सामने, जिसकी
कल्पना की जीभ में भी धार होती है,
बाण ही होते विचारों के नहीं केवल,
स्वप्न के भी हाथ में तलवार होती है।

**1. गगन का चांद कवि से क्या कहने लगा?**

(क) आदमी एक अनोखा जीव है (ख)आदमी अपनी उलझन स्वयं बनाता है
(ग) अपनी बनाई उलझन में स्वयं फँस जाता है (घ) उपर्युक्त सभी

**2. 'जानता है तू कि मैं कितना पुराना हूँ? पंक्ति में 'मैं' शब्द किसके लिए आया है?**
(क) कवि के लिए (ख)चांद के लिए (ग) मनु के लिए (घ) उपर्युक्त सभी के लिए

**3. कवि की रागनी ने चांद को क्या जवाब नहीं दिया?**
(क) मनुष्य अपने सपनों को आग में जलाकर लोहा बनाता है और उसी पर नए घर की नींव रखता है
(ख)चांद के सामने अब मनु नहीं बल्कि मनु पुत्र है जो अधिक योग्य है
(ग) मनुष्य सिर्फ कल्पनाजीवी प्राणी है
(घ) उपर्युक्त सभी

**4. उपर्युक्त काव्यांश में कवि किस का महत्त्व बता रहा है?**
(क) कल्पना का (ख)सपनों का
(ग) विचारों का (घ) उपर्युक्त सभी का

**5. किस की कल्पना की जीभ में भी धार होती है?**
(क) चाँद की (ख)स्वर्ग के सम्राट की
(ग) मानव जाति (घ) उपर्युक्त सभी को

**उत्तर- 1-(घ), 2-(ख), 3-(क), 4-(घ) 5-(ग)**

## अपठित काव्यांश -4

हेमन्त में बहुधा घनों से पूर्ण रहता व्योम है
पावस निशाओं में तथा हँसता शरद का सोम है
हो जाये अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ
खाते, खवाई, बीज ऋण से हैं रंगे रखे जहाँ
आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत में
अधपेट खाकर फिर उन्हें है काँपना हेमंत में
बरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा
है चल रहा सन सन पवन, तन से पसीना बह रहा
देखो कृषक शोषित, सुखाकर हल तथापि चला रहे
किस लोभ से इस आँच में, वे निज शरीर जला रहे
घनघोर वर्षा हो रही, है गगन गर्जन कर रहा
घर से निकलने को गरज कर, वज्र वर्जन कर रहा
तो भी कृषक मैदान में करते निरंतर काम हैं
किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम हैं
बाहर निकलना मौत है, आधी अँधेरी रात है
है शीत कैसा पड़ रहा, औ' थरथराता गात है
तो भी कृषक ईंधन जलाकर, खेत पर हैं जागते
यह लाभ कैसा है, न जिसका मोह अब भी त्यागते

**1. इन पंक्तियों में किसके विसंगति पूर्ण जीवन का चित्रण है?**
(क) महाजन (ख)किसान (ग) मजदूर (घ) मौसम विज्ञानी

**2. 'पावस निशाओं में तथा हँसता शरद का सोम है' पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**
(क) अनुप्रास (ख)रूपक (ग) मानवीकरण (घ) इनमें से कोई नहीं

**3. अच्छी फसल होने के बाद भी किसानों को लाभ क्यों नहीं मिलता?**
(क) उसकी फसल को लुटेरे लूट लेते हैं (ख) मौसम की मार से फसल खराब हो जाती है

(ग) उचित बाज़ार भाव नहीं मिलता (घ) महाजन का ऋण चुकाने में ही फसल चली जाती है

**4. ''तो भी कृषक मैदान में करते निरंतर काम हैं- पंक्ति का आशय होगा?**

(क) किसान को किसी भी मौसम में आराम नहीं (ख)किसान आराम नहीं करते हैं

(ग) किसान को मौसम में आने वाले बदलावों की परवाह नहीं है (घ) उपर्युक्त सभी

**5. शीत ऋतु की अंधेरी रात किसान कैसे निकालता है?**

(क) मोटा कंबल ओढ़ कर (ख) खेत पर जाकर ईंधन जला कर

(ग) घर पर आराम से सो कर (घ) उपर्युक्त सभी

**उत्तर - 1-(ख), 2-(ग), 3-(घ), 4-(घ) 5-(ख)**

## अपठित काव्यांश -5

दिवसावसान का समय था
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या -सुंदरी परी- सी
तिमिरांचल में चंचलता का कहीं नहीं आभास
मधुर- मधुर हैं दोनों उसके अधर ,
किंतु जरा गंभीर, नहीं है उनके हास-विलास
हंसता है तो केवल तारा एक
गूँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से
हृदय राज्य की रानी वह करता है अभिषेक
आलसता की - सी लता
किंतु कोमलता की वह कली ,
सखी-नीरवता के कंधे पर डाले बांह,
छांह -सी अंबर -पथ से चली|

**(i) कवि ने पद्यांश में किसका मानवीकरण किया है और उसे किसके समान बताया है?**

क) संध्या का, परी के। ख) परी का, संध्या के |

ग) कोमलता का, नीरवता की | घ) आलसता का अंबर के |

**(ii) संध्या के समय वातावरण में किस का आभास नहीं है?**

क) आलसता का। ख) नीरवता का

ग) चंचलता का। घ) निस्तब्धता का

**(iii) दूर टिमटिमाता हुआ तारा किसका अभिषेक कर रहा है ?**

क) गगन का। ख) क्षितिज का

ग) संध्या का। घ) स्वयं का

**(iv) नीरवता को किसकी सखी बताया गया है?**

क)संध्या की। ख) सुंदरी की

ग)परी की घ) तारे की

**(v) 'छांह -सी' में प्रयुक्त अलंकार लिखिए ।**

क)अनुप्रास अलंकार ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

ग)रूपक अलंकार। घ) उपमा अलंकार

**उत्तर–i) क)संध्या का,परी के ii) ग)चंचलता का iii)ग)संध्या का iv) क)संध्या की v) घ) उपमा अलंकार**

# अपठित काव्यांश -6

थका- हारा सोचता मन,सोचता मन |
उलझती ही जा रही है एक उलझन |
अंधेरे में अंधेरे से कब तलक लड़ते रहे
सामने जो दिख रहा है,वह सच्चाई भी कहे
भीड़ अंधों की खड़ी खुश रेवड़ी खाती
अंधेरे के इशारों पर नाचती गाती।
थका हारा सोचता मन-सोचता मन
भूखी प्यासी काना-फूसी दे उठी दस्तक
अंधा बना जा झुका दें तम-द्वार पर दस्तक।
रेवड़ी की बांट में तू रेवड़ी बन जा।
तिमिर के दरबार में दरबार-सा तन जा|
थका हारा, उठा गर्दन –जूझता मन।
दूर उलझन ! दूर उलझन ! दूर उलझन!
चल खड़ा हो पैर में यदि लग गई ठोकर
खड़ा हो संघर्ष में फिर रोशनी होकर
मृत्यु भी वरदान है संघर्ष मे प्यारे
सत्य के संघर्ष मे क्यों रोशनी हारे
देखते ही देखते दिन तोड़ता है दम
और सूरज की तरह हम ठोकते है खम

**i) थके हारे मन की उलझन क्या है?**

क) निराशापूर्ण वातावरण को मजबूती से झेलने की
ख) भ्रष्टाचार के अंधेरे के सामने घुटने टेक कर संसार का सुख प्राप्त करने की
ग) उलझन को झेलने की
घ) विकल्प (क) और विकल्प (ख) सही है

**ii) अंधेरे मे अन्धो की भीड़ क्यो खुश थी?**

क) क्योकि उन्हे खाने के लिए रेवड़ी मिल रही थी|
ख) क्योकि उनका स्वार्थ पूरा हो गया था
ग) क्योकि वे नाच-गा रहे थे
घ) क्योकि वे काना फूसी कर रहे थे

**iii) भूख प्यास की विवशता को क्या परामर्श था?**

क)सर झुकने के स्थान पर संघर्ष करने का
ख)घुटने ना टेकने का
ग) संघर्ष के स्थान पर सर झुकाने का
घ)संघर्ष करने का

**iv) संघर्ष मे विजय किसे मिलती है?**

क)थके हारे को
ख) स्वार्थी व्यक्ति को
ग)रेवड़ी खाने वाले को
घ)द्दढ़ मन वाले को

**v) संघर्ष में किसे वरदान कहा गया है?**

क) मृत्यु को
ख) जीवन को
ग)जन्म को
घ) संघर्ष को

**उत्तर- (घ) i) विकल्प (क) और (ख) सही है ii)(ख) क्योकि उनका स्वार्थ पूरा हो रहा था**
**iii)(ग) संघर्ष के स्थान पर सर झुकने का iv)(घ) द्दढ़ मन वाले की v)(क)मृत्यु को**

## अपठित काव्यांश -7

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो
चट्टानों की छाती से दूध निकालो |
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो |
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे !
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे !
छोडो मत अपनी आन, सीस कट जाए
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाए |
दो बार नहीं यमराज कंठ धरता है
मरता है जो भी एक ही बार मरता है |
नत हुए बिना जो अशनि घात सहती है
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है |

**(i) इन पंक्तियों में कवि क्या प्रेरणा दे रहा है ?**

(क) आन-बान की रक्षा करने की (ख) जीवन की रक्षा करने की
(ग) धन संपत्ति की रक्षा करने की (घ) उपर्युक्त सभी

**(ii) कवि किसके समान जीने को कहता है ?**

(क) योगियों के (ख) भोगियों के
(ग) विजयी व्यक्तियों के (घ) राजाओं के

**(iii) भले व्योम फट जाए' का भावार्थ है –**

(क) कितनी ही मुसीबत आ जाए | (ख) मूसलाधार वर्षा हो जाए |
(ग) आसमान दो टुकड़ों में बंट जाए | (घ) आसमान से फूलों की वर्षा हो जाए |

**(iv) जो बिना झुके मुसीबतों का सामना करते हैं, वे किसका उपभोग करते हैं ?**

(क) दुखों का (ख) सुखों का
(ग) परतंत्रता का (घ) स्वतंत्रता का

**(v) कवि क्या छोड़ने की बात कर रहा है ?**

(क) मोह- माया (ख) वैराग्य
(ग) सांसारिक सुख (घ) बाँहों की शक्ति

**उत्तर- i) (घ)उपर्युक्त सभी ii) (ग) विजयी व्यक्तियों**
**iii) (क)कितनी ही मुसीबत आ जाए iv) (घ)स्वतंत्रता का v) (ख)वैराग्य**

## अपठित काव्यांश -8

लोहे के पेड़ हरे होंगे, तू गान प्रेम का गाता चल,
नम होगी यह मिट्टी जरूर, आँसू के कण बरसाता चल।
सिसकियों और चीत्कारों से, जितना भी हो आकाश भरा,
कंकालों का हो ढेर, खप्परों से चाहे हो पटी धरा।
आशा के स्वर का भार, पवन को लेकिन, लेना ही होगा,
जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दों को देना ही होगा।
रंगों के सातों घट उड़ेल, यह अँधियाली रंग जाएगी,
उषा को सत्य बनाने को जावक नभ पर छितराता चल।

आदर्शों से आदर्श भिड़े, प्रज्ञा प्रज्ञा पर टूट रही,
प्रतिमा प्रतिमा से लड़ती है, धरती की किस्मत फूट रही
आवर्तों का है विषम जाल, निरुपाय बुद्धि चकराती है,
विज्ञान-यान पर चढ़ी हुई सभ्यता डूबने जाती है।
जब-जब मस्तिष्क जयी होता, संसार ज्ञान से चलता है,
शीतलता की है राह हृदय, तू यह संवाद सुनाता चल।

**1. लोहे के पेड़ किसके प्रतीक हैं ?**

(क) नकली पेड़ (ख)मशीनों

(ग) मशीनी संस्कृति (घ) विज्ञान

**2. नम होगी यह मिट्टी जरूर कहकर कवि किस ओर संकेत कर रहा है?**

(क) प्रेम के बल पर शुष्क हृदयों में भाव भरे जा सकते हैं

(ख)वर्षा न होने के कारण सूखी मिट्टी वर्षा आने पर नम जरूर हो जाएगी

(ग) सूखी आंखें फिर आंसुओं से नम हो जाएंगी

(घ) इतने आंसू बहाओ की मिट्टी गीली हो जाए

**3. दुख और निराशा के वातावरण में मनुष्य का क्या कर्तव्य होना चाहिए ?**

(क) सपने देखें और साकार करें (ख)आशा का संचार करें

(ग) मिट्टी नम करें (घ) विज्ञान यान पर सवार हो

**4. प्रेम की भावना से इस भौतिक बौद्धिक संसार पर विजय पाई जा सकती है यह भाव किस पंक्ति से व्यंजित हो रहा है ?**

(क) जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दों को देना ही होगा

(ख)आशा के स्वर का भार पवन को लेकिन लेना ही होगा

(ग) जब जब मस्तिष्क जयी होता संसार ज्ञान से चलता है

(घ) शीतलता की है राह हृदय, तू यह संवाद सुनाता चल

**5. 'विज्ञान यान' में कौन सा अलंकार है?**

(क) अनुप्रास अलंकार (ख)उपमा अलंकार

(ग) रूपक अलंकार (घ) अन्योक्ति अलंकार

**उत्तर 1-(ग), 2-(क), 3-(ख), 4-(घ) 5-(ग)**

## अपठित काव्यांश -9

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।
चिंता-रहित खेलना, खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छंद,
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद?
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिखाते थे।,
बड़े-बड़े मोती से आँसू जयमाला पहनाते थे।
मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी,
नंदन वन-सी फूल उठी यह, छोटी-सी कुटिया मेरी।
माँ ओ! कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आई थी
कुछ मुख में कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने लाई थी
मैंने पूछा-"यह क्या लाई ?" बोल उठी वह- "माँ काओ"
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से मैंने कहा "तुम्हीं खाओ।"

**1. "कवयित्री को बार-बार बचपन की याद आती है " इसका क्या कारण कविता में नहीं बताया गया है?**

(क) बचपन के दिन मधुर होते हैं (ख) बच्चे सबको प्यारे लगते हैं

(ग) बचपन के दिन स्वच्छंद और उल्लासपूर्ण होते हैं (घ) बचपन के दिन चिंता रहित होते हैं

**2. बचपन की कौन सी बात बोली नहीं जा सकती ?**

(क) कोई काम न करना (ख)चिंता रहित जीवन व उल्लासपूर्ण खेलना कूदना

(ग) मचलना (घ) माता-पिता से अपनी हठ पूरी करवाना

**3. नंदनवन का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?**

(क) अपनी बिटिया के लिए (ख)अपने घर के लिए

(ग) स्वयं के लिए (घ) अपने लिए और अपनी पुत्री के लिए

**4. 'बड़े बड़े मोती से आंसू जयमाला पहनाते थे' पंक्ति में निहित अलंकार का नाम बताइए-**

(क) उपमा (ख)रूपक (ग) उत्प्रेक्षा (घ) अनुप्रास

**5. कवयित्री को अपना बचपन किस रूप में वापस मिला -**

(क) बचपन की स्मृतियों के रूप में (ख) अपनी बिटिया के रूप में

(ग) बचपन के फोटोग्राफ्स( छायाचित्र ) के रूप में (घ) उपर्युक्त सभी रूपों में

**उत्तरमाला - 1-(ख), 2-(क), 3-(ख), 4-(क) 5-(ख)**

## अपठित काव्यांश -10

अंबर बने सुखों की चादर, धरती बने बिछौना।
मिट्टी से सोना उपजाओ, इस मिट्टी से सोना।।
यह मिट्टी जगती की जननी, इसको करो प्रणाम्।
कर्मयोग के साधन बनना, ही सेवा का काम।।
हाली उठा हाथ से हल को, बीज प्रेम के बोना।
चना, मटर, जौ, धान, बाजरा और गेहूँ की बाली।।
मिट्टी से सोना बन जाती, भर-भर देती थाली।
दूध-दही पी-पी मुस्काए, मेरा श्याम सलौना।।
हीरा, मोती, लाल, बहादुर, कह-कह तुम्हें पुकारें।
खुशहाली हर घर में लाए, बिगड़ी दशा सुधारें।।

**1. अंबर किसकी चादर बने?**

(क) दुखों (ख)दास्तानों (ग) भावनाओं (घ) सुखों

**2. यह मिट्टी किसकी जननी है?**

(क) जगती (ख)माता (ग) पिता (घ) पुत्र

**3. '.............के साधक बनना।' पंक्ति में रिक्त स्थान की पूर्ति करिए**

(क) हठयोग (ख)भक्तियोग (ग) ज्ञानयोग (घ) कर्मयोग

**4. श्याम सलौना क्या-क्या पीकर मुस्कुराता है?**

(क) लस्सी (ख)शरबत (ग) दही (घ) दूध-दही

**5. खुशहाली हर घर में लाए, बिगड़ी दशा.......।**

(क) सुधारे (ख)संवारे (ग) गाड़े (घ) फोड़े

**उत्तर 1-(घ), 2-(क), 3-(घ), 4-(घ) 5-(क)**

# पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2

## 1. आत्मपरिचय - हरिवंश राय बच्चन

हरिवंश राय बच्चन हालावाद के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। । उन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता की बजाय सीधी-साधी जीवंत भाषा और संवेदना से युक्त गेय शैली में अपनी बात कही। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहजअनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से की है। यही विशेषता हिंदी काव्य-संसार में उनकी प्रसिद्ध का मूलाधार है।

भाषा-शैली-कवि ने अपनी अनुभूतियाँ सहज स्वाभाविक ढंग से कही हैं। इनकी भाषा आम व्यक्ति के निकट है। बच्चन का कवि-रूप सबसे विख्यात है उन्होंने कहानी, नाटक, डायरी आदि के साथ बेहतरीन आत्मकथा भी लिखी है। इनकी रचनाएँ ईमानदार आत्मस्वीकृति और प्रांजल शैली के कारण आज भी पठनीय हैं।

सारांश -कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। वह निरर्थक कल्पनाओं में विश्वास नहीं रखता क्योंकि यह संसार कभी भी किसी की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाया है। कवि सुख-दुख, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक जैसा रहता है। यह संसार मिथ्या है, अत: यहाँ स्थायी वस्तु की कामना करना व्यर्थ है।कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के जरिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना मानता है। संसार उसे कवि कहता है, परंतु वह स्वयं को नया दीवाना मानता है। वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

**काव्यांश - 1**

मैं जग – जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ !
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ !

**1. 'आत्मपरिचय' कविता के रचनाकार हैं-**

(क) जयशंकर प्रसाद (ख)हरिवंशराय बच्चन (ग) रामधारी सिंह दिनकर (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

**2. कवि किस का भार लिए फिरता है?**

(क) घर-बार का (ख)कार्यालय का (ग) जग-जीवन का (घ) आस-पास का

**3. कवि किस सुरा का पान करता है?**

(क) स्नेह (ख)उमंग (ग) उत्साह (घ) द्वेष।

**4. कवि जीवन में क्या लिए फिरता है?**

(क) प्यास (ख)आशा (ग) उल्लास (घ) प्यार

**5 'स्नेह-सुरा' में कौनसा अलंकार है?**

(क) उपमा (ख)उत्प्रेक्षा (ग) रूपक (घ) मानवीकरण

**उत्तर 1.(ख)हरिवंशराय बच्चन 2. (ग) जग-जीवन का 3.(क) स्नेह 4.(घ) प्यार 5.(ग) रूपक**

## काव्यांश - 2

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,
जग भव-सागर तरने की नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

**1. कवि हृदय में क्या जला कर दहा करता है?**

(क) स्मृतियाँ (ख)अग्नि (ग) कल्पनाएँ (घ) स्नेह

**2. कवि कैसा संसार लिए फिरता है?**

(क) यथार्थ (ख)आदर्श (ग) स्वप्निल (घ) सुखी।

**3. कवि के हृदय में कैसे भाव भरे हुए हैं?**

(क) प्रसन्नता (ख)उत्साह (ग) विह्वलता (घ) घृणा

**4. 'उद्गार' शब्द का अर्थ है?**

(क) विचार (ख)चिंतन (ग) सूचनाएँ (घ) शराब

**5 भव-सागर से क्या आशय है ?**

(क) संसार रुपी सागर (ख)भावनाओ का सागर (ग) सागरों का सागर (घ) कोई नहीं

**उत्तर 1.(ख)अग्नि 2. (ग) स्वप्निल 3.(ख ) प्रसन्नता 4.(क) विचार 5.(क) संसार रुपी सागर**

## काव्यांश - 3

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता,
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

**1 कवि अपने रोदन में क्या लिए फिरता है?**

(क) राग (ख)राम (ग) रास (घ) राज़

**2. संसार के लोग पृथ्वी पर क्या जोड़ते हैं?**

(क) धर्म (ख)मोक्ष (ग) अर्थ (घ) काम

**3. कवि कैसे संसार को ठुकराता है?**

(क) ईमानदार (ख)सत्यनिष्ठ (ग) कर्मशील (घ) वैभवशाली

**4 'हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर' रेखांकित पद का अर्थ है ?**

(क) राजा (ख)प्रजा (ग) महल (घ) कोई नहीं

**5. 'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ'में कौन सा अलंकार है -**

(क) यमक (ख) विरोधाभास (ग)उपमा (घ)उत्प्रेक्षा

**उत्तर 1.(क) राग 2. (ग) अर्थ 3.(घ) वैभवशाली 4. (क) राजा 5.(ख) विरोधाभास**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) – 2 अंक

**1.  जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं' – कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?**

उत्तर - कवि मानता है कि संसार में डूबे रहना , रोटी- कपड़ा-मकान में लगे रहना नादानी है , मूर्खता हैं। दाना सांसारिकता का प्रतीक है और उनके पीछे लगे रहना मनुष्य की नादानी है। कवि ने सांसारिक सफलताओं को व्यर्थ बताने के लिए यह कथन कहा है।

**2. शीतल वाणी में आग-के होने का क्या अभिप्राय है?**

उत्तर:'शीतल वाणी में आग 'का तात्पर्य हैं कवि का स्वर और स्वभाव कोमल अवश्य है, किंतु उसके मन में विद्रोह की भावना प्रबल है। वह प्रेम से रहित संसार को अस्वीकार करता है। ऐसे संसार को दुत्कारता है।

**3. आत्म-परिचय कविता में कवि संसार को क्या संदेश देना चाहता है?**

उत्तर:आत्म-परिचय कविता श्री हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित है। इसमें कवि संसार को मस्ती का संदेश देना चाहता है। ऐसी मस्ती जिसमें संपूर्ण संसार मदमस्त होकर आनंद विभोर हो उठे। वह आनंदित होकर नृत्य करने लगे और इसी मस्ती में सदैव लहराता रहे।

**4. कवि ज्ञान की बजाय किसे अपनाना चाहता है और क्यों?**

उत्तर : कवि ज्ञान की अपेक्षा प्रेम को अपनाना चाहता है क्योंकि वह ज्ञान के रास्ते को अत्यंत कठिन एवं दुष्प्राप्य मानता है, जिसे अनादि काल से संसार के बड़े-बड़े महात्मा, मुनि एवं संतजन भी कोटि-कोटि प्रयास करने पर भी नहीं जान सके।

**5.  कवि को  यह संसार अपूर्ण क्यों लगता है?**

उत्तर: यह समस्त संसार स्वार्थी है यहां हर कोई अपने स्वार्थ पूर्ति में डूबा हुआ है। संसार केवल उन्हीं को पूछता है जो उनकी जय-जयकार करते हैं। इसलिए यह प्रेम शून्य संसार कवि को अपूर्ण लगता है।

**6. कवि ने स्वयं को दीवाना क्यों कहा है?**

उत्तर: कवि ने स्वयं को दीवाना इसलिए कहा है क्योंकि वह तो दीवानों का वेश धारण कर अपनी मस्ती में मस्त होकर घूम रहा है साथ ही वे अपने संग मस्ती का , प्रेम का संदेश लेकर घूम रहा है जिसे सुनकर सारा संसार झूम उठेगा,झुक जाएगा और लहराने लगेगा।

**7.  'मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूं ' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर:पंक्ति का आशय यह है कि कवि को संसार के आकर्षणों में कोई रुचि नहीं है। वह सांसारिक विषय वासनाओं के संसार से अलग थलग अपने प्रिय के प्रेम में तल्लीन होकर मस्त रहते हुए सांसारिक लहरों पर बहकर भवसागर को पार करना चाहता है।

**8.  कवि स्वयं को किस तरह के खंडहर का स्वामी मानता है?**

उत्तर:कवि अपनी प्रिया के प्रेमवियोग के कारण विच्छिन्न हो गया जो खंडहर की भांति पड़ा है। लेकिन फिर भी उसका मूल्य अनमोल है इतना सुंदर है कि उसकी शोभा के समक्ष बड़े से बड़े राजा का आलीशान महल भी नगण्य है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1 : मैं और, और जग और, कहाँ का नाता'-पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।**

उत्तर: इस कविता में कवि ने 'और' शब्द का प्रयोग तीन अर्थों में किया है।  "मैं और" में और शब्द का अर्थ है कि मेरा अस्तित्व बिल्कुल अलग है। प्रेम के  संसार में खोया रहता हूँ। "और जग" में और शब्द के माध्यम से कवि ने संसार की संग्रह व स्वार्थ प्रवृति को स्पष्ट  किया है। तीसरे 'और' शब्द योजक चिन्ह है।

**2: संसार में कष्टों को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है?**

उत्तर: सुख और दुख तो मानव जीवन का अभिन्न अंग है। संसार में कष्ट सहना प्रत्येक मानव की नियति है। व्यक्ति इन दुखों में भी खुशी और मस्ती का जीवन जी सकता है। बिना दुखों के सुखों की सच्ची अनुभूति नहीं की जा सकती। अर्थात् दुख ही सुख की कसौटी है। यदि व्यक्ति ऐसा सोच ले तो वह दुख की स्थिति में भी खुश रहेगा तो उसका जीवन मस्ती से भरपूर होगा।

**3: कवि जग को अपने से अलग कैसे मानता है?**

उत्तर: कवि कहता है कि मेरा और जगत दोनों का ही अस्तित्व अलग-अलग है।कवि कहता है कि मैं और हूं अर्थात मैं प्रेम के संसार में खोया रहता हूं। और यह संसार संग्रह में विश्वास करता है . यह मेरी प्रेम भावनाओं को नहीं समझते।दोनों के संबंधों में कोई समानता नहीं इसलिए संसार से मेरा टकराव हो सकता है। यह जग उसकी सोच के अनुरूप नहीं है

**4: आत्मपरिचय' कविता को दृष्टि में रखते हुए कवि के कथ्य को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।**

उत्तर: कवि ने इस कविता में बताया है कि दुनिया को जानना सरल है, किंतु स्वयं को जानना बहुत कठिन है। समाज में रहकर मनुष्य को खट्टे-मीठे, कड़वे सभी तरह के अनुभव होते हैं। शासन और व्यवस्था चाहे जितना उसे कष्ट दे, लेकिन वह उनसे कटकर नहीं रह सकता। व्यक्ति की पहचान तभी है जब वह समाज में रहता है। कवि कहता है कि मेरा जीवन विरुद्धों के सामंजस्य से बना है। मैं विरोधाभासी जीवन जिया करता हूँ।

**5 : कवि कैसे जीवन की कामना करता है?**

उत्तर: कवि ऐसे जीवन की कामना करता है जो प्रेम, मस्ती, आनंद और सौंदर्य से भरपूर हो, जिसमें चारों तरफ सुंदरता हो। प्रेम रूपी मदिरा हो। जहाँ वह केवल प्रेम रूपी मदिरा पीकर उसी में डूबकर आनंद विभोर हो जाए। कहीं कोई ईर्ष्या-द्वेष जैसे कुविचार न हों, जिसमें यौवन को मदमस्त करने वाला उन्माद हो।

**6: आत्म-परिचय कविता के माध्यम से स्पष्ट कीजिए कि कवि क्यों रोया होगा?**

उत्तर : कवि प्रेम एवं मस्ती की कोमल भावनाओं से ओतप्रोत है। उसे अपने जीवन में किसी प्रिया से असीम प्रेमभाव हुआ, किंतु दुर्भाग्य से वह प्रेम पूर्ण नहीं हो सका जिसके बाद कवि को अगाध विरह-पीड़ा को सहन करना पड़ा। यही पीड़ा उसके रोदन के माध्यम से प्रस्फुटित हुई। इसी कारण है कि कवि रोया होगा।

**7.कवि और संसार में क्या भिन्नता है?**

उत्तर : कवि प्रेम एवं मस्ती में मदमस्त रहता है। वह प्रेम रूपी मदिरा पीकर उसी के आनंद में डूबा हुआ है। वह चारों तरफ प्रेम, मस्ती, आनंद एवं सौंदर्य का वातावरण फैलाना चाहता है जबकि यह संसार परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, अहं की भावनाओं में डूबा है। इसे किसी के प्रेम व आनंद से कोई मतलब नहीं है। यह तो प्रेम की मस्ती को भी व्यर्थ समझता है। यह सदैव दूसरों की कोमल भावनाओं से खिलवाड़ करता है और उनका मज़ाक उड़ाता है।

**8: आत्मपरिचय कविता में कवि ने अपने जीवन मे किन परस्पर विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है?**

उत्तर: इस कविता में, कवि ने अपने जीवन की अनेक विरोधी बातों का सामंजस्य बिठाने की बात की है।कवि सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है।कविता में कवि ने अपने जीवन में रोदन में राग,शीतल वाणी में विचारों की प्रखरता,उन्माद में अवसाद तथा बाह्य रूप में प्रसन्न दिखना परन्तु अन्दर से दुखी रह परस्पर विरोधी बातों में सामंजस्य बिठाने की बात की है।

## दिन जल्दी जल्दी ढलता है - हरिवंश राय बच्चन

इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचल तेजी भर सकता है-अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने के अभिशिप्त हो जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

सारांश -कवि कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए व्यक्ति जब अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेजी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती, वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है। अत: रात जीवन में निराशा नहीं, अपितु आशा का संचार भी करती है।

## काव्यांश -1

दिन जल्दी – जल्दी ढलता है !
हो जाए न पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं –
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी – जल्दी चलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

1. '**हो जाए न पथ में**'- **यहाँ किस पथ की ओर कवि ने संकेत किया है**?
**(क)** जीवन पथ की ओर **(ख)**रास्ते की ओर **(ग)** संसार की ओर **(घ)** उपरोक्त सभी **।**

**2. इस पद्यांश में "पथ" किसका प्रतीक है** ?
**(क)** जीवन पथ का **(ख)**मानव जीवन के संघर्ष का **(ग)** कठिन राहों का **(घ)** आसान रास्तों का

3. "**दिन जल्दी-जल्दी ढलता है" पंक्ति के माध्यम कवि क्या संकेत करना चाहता है** ?
**(क)** समय परिवर्तनशील है **(ख)**समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता
**(ग)** उक्त दोनों **(घ)** जल्दी से शाम होने वाली है

4. **पथिक जल्दी जल्दी मंजिल की ओर क्यों बढ़ता है** ?
**(क)** मंजिल समीप है **(ख)**कहीं रास्ते में ही रात ना हो जाए **(ग)**रात होने वाली है **(घ)**उक्त सभी

5. "**जल्दी - जल्दी" में कौन सा अलंकार है** ?
**(क)** उपमा अलंकार **(ख)**रूपक अलंकार **(ग)** यमक अलंकार **(घ)** पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

**उत्तर** - 1.(**क**) 2.(**ग**) 3.(**ग**) 4.(**घ**) 5.(**घ**)

## काव्यांश -2

"बच्चे प्रत्याशा में होंगे ,
नीड़ों से झांक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !"

**1. बच्चे माँ की प्रत्याशा में क्यों होंगे** ?
**(क)** माँ का स्नेह पाने के लिए **(ख)**भोजन पाने के लिए
**(ग)** उक्त दोनों **(घ)** माँ के साथ बाहर घूमने की आशा में

2. "**बच्चे प्रत्याशा में होंगे ,नीड़ों से झांक रहे होंगे" पंक्ति में कौनसा रस है** ?
**(क)** शृंगार रस **(ख)**वीर रस **(ग)** वात्सल्य रस **(घ)** हास्य रस

3. **निम्न में से क्या सोचकर चिड़िया के पंख चंचल नहीं होते हैं** ?
**(क)** बच्चे इंतजार कर रहे है **(ख)**बच्चे भूखे है **(ग)** बच्चों को खाना खिलाना है **(घ)** इनमें से कोई नहीं

4. "**नीड़ों से झांक रहे होंगे" पंक्ति में कौनसा बिम्ब है** ?
क) दृश्य **(ख)**श्रव्य **(ग)** दृश्य गतिशील **(घ)** श्रव्य गतिशील

**5. नीड़ का अर्थ है -**
**(क)** पहाड़ **(ख)** घोंसला **(ग)** पथ **(घ)** नदी

**उत्तर** - 1.(**ग**) 2.(**ग**) 3.(**घ**) 4.(**क**) 5.(**ख**)

## काव्यांश -3

"मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊं किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को , भरता उर में विह्वलता है !
दिन जल्दी – जल्दी ढलता है !"

1. **मुझसे मिलने को कौन विकल**? '**दिन जल्दी-जल्दी ढलता है**' **गीत का यह प्रश्न उर में क्या भरता है**?

**(क)** शिथिलता **(ख)**चंचलता **(ग)** विह्वलता **(घ)** आश्चर्य

2. **कवि के मन में कौनसा प्रश्न नहीं उठता है** ?

**(क)** मुझसे मिलने को कौन व्याकुल है **(ख)**मै किसके लिए जल्दी चलूँ

**(ग)** मेरा कौन इंतजार कर रहा है **(घ)** मेरा कोई इंतजार कर रहा है **।**

3. **कवि की व्याकुलता का क्या कारण है** ?

**(क)** माता से वियोग **(ख)** पिता से वियोग **(ग)** पत्नी से वियोग **(घ)** भाई **-** बहनों से वियोग

4. **दिन जल्दी जल्दी ढलता है कविता में कवि हताश और दुखी क्यों है** ?

**( क)** आर्थिक हानि के कारण **(ख)** परिवार से बिछुड़ने के कारण

**(ग)** अपराध के कारण **(घ)** इनमे से कोई नहीं

5. **घर जाते हुए कवि के पग शिथिल क्यों हो जाते हैं**?

**(क)** घर पर उसका कोई इंतजार नहीं कर रहा **(ख)**घर जाकर वह क्या करेगा**?**

**(ग)** उसे अपने घर जाने की जल्दी नहीं **(घ)** उसे अपना घर अच्छा नहीं लगता

**उत्तर** - 1.(**क**) 2.(**घ**) 3.(**ग**) 4.(**ख**) 5.(**क**)

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**1. नीड़ो से कौन झाँक रहे होंगे और क्यों?**

उत्तर- नीड़ो से चिड़ियों के बच्चे झांक रहे होंगे क्योंकि संध्या के समय उनकी माताएं उनके पास नहीं है और उन्हें आशा है कि उनकी माँ उनके लिए दाना लेकर आएगी|

**2. पथिक के तेज चलने का क्या कारण हैं?**

उत्तर- पथिक तेज इसलिए चलता है क्योंकि शाम होने वाली है। उसे अपना लक्ष्य समीप नजर आता है। रात न हो जाए, इसलिए वह जल्दी चलकर अपनी मंजिल तक पहुँचना चाहता है।

**3. कवि की व्याकुलता का क्या कारण हैं?**

उत्तर- कवि के हृदय में व्याकुलता है क्योंकि वह अकेला है। प्रिया के वियोग की वेदना इस व्याकुलता को प्रगाढ़ कर देती है। इस कारण उसके मन में अनेक प्रश्न उठते हैं।

**4. कवि के कदम शिथिल क्यों हो जाते हैं?**

उत्तर- कवि अकेला है। उसका इंतजार करने वाला कोई नहीं है। इस कारण कवि के मन में भी उत्साह नहीं है, इसलिए उसके कदम शिथिल हो जाते हैं।

**5. मैं होऊँ किसके हित चचल ?' का भाव स्पष्ट कीजिए**

उत्तर- मैं होऊँ किसके हित चंचल' का आशय यह है कि कवि अपनी पत्नी से दूर होकर एकाकी जीवन बिता रहा है। उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है, इसलिए वह किसके लिए बेचैन होकर घर जाने की चंचलता दिखाए।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1. दिन जल्दी जल्दी ढलता है में पक्षी तो लौटने को विकल है, पर कवि में उत्साह नहीं है।ऐसा क्यों?**

उत्तर. दिन जल्दी जल्दी ढलता है कविता में पक्षियों को घोंसलें में उनकी प्रतीक्षा करते अपने बच्चों का स्मरण होने के कारण वे अपने घोंसलें में पहुंचने के लिए व्याकुल है। इसके विपरीत कवि के घर पर उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है। उससे मिलने के लिए ना कोई व्याकुल है और ना ही कोई उत्कंठित है इसलिए वह किसके लिए शीघ्रता करें अतः पक्षी तो लौटने को विकल है पर कवि में कोई उत्साह नहीं है।

**2. दिन जल्दी जल्दी ढलता है कविता में बच्चों की प्रत्याशा को कवि ने किस प्रकार प्रस्तुत किया है?**

उत्तर: इस कविता में चिड़िया संध्या समय अपने नीड़ में लौट रही है। जैसे ही उसे यह ध्यान आता है कि उसके नन्हे बच्चे नीड़ों से झांक रहे होंगे तो चिड़िया के पंखों में थकान की जगह तेजी आ जाती है और वह और अधिक तीव्र गति से उड़ने लगती है।वह चाहती है कि अपने बच्चों की इच्छा को पूरा करें, उन्हें स्नेह से अपने पंखों में ले ले। कवि ने बच्चों की प्रत्याशा को जीवन की गति और आशा की किरण माना है।

**3. 'दिन जल्दी जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर उन स्थितियों को स्पष्ट कीजिए जिनके कारण पथिक जल्दी चलता है?**

उत्तर. पथिक अपना लक्ष्य जानता है और लक्ष्य को पाने के लिए थकान होने पर भी वह दिन भर चलता रहता है।क्योंकि भय है कि यदि वह रुक गया तो दिन ढल जाएगा। दूसरे शब्दों में व्यक्ति का जीवन क्षणिक है और व्यक्ति की इच्छाएं अनगिनत है इसलिए वह उन्हें पूरा करने के लिए जुटा रहता है और दिन के ढल जाने से पूर्व ही वह अपनी मंजिल पाना चाहता है।

**4. दिन जल्दी जल्दी ढलता है की आवृत्ति से कविता में क्या संकेत किया जा रहा है?**

उत्तर. दिन जल्दी जल्दी ढलता है की आवृत्ति के द्वारा कविता में समय की अबाध गति की ओर संकेत किया गया है। कवि स्पष्ट करना चाहता है कि समय तेजी से भाग रहा है। इनकी गति किसी के रोकने से नहीं रुकती। अत: हम सबको अपने सारे कार्य समय पर पूर्ण कर लेने चाहिए क्योंकि बीता हुआ समय फिर लौटकर नहीं आता। कवि ने मानव और चिड़िया का उदाहरण देकर यह बात स्पष्ट की है।

**5. दिन के जल्दी-जल्दी ढलने से क्या प्रेरणा मिलती है स्पष्ट कीजिए?**

उत्तर: दिन जल्दी-जल्दी ढलने के कारण व्यक्ति सजग हो जाता है उसमें स्फूर्ति आ जाती हैं। दिन जल्दी जल्दी ढलता है की आवृत्ति के द्वारा कविता में समय के तेजी से व्यतीत होने का संकेत किया गया है। समय की गति निरंतर प्रवाहित होती रहती है। बीते समय को कभी भी लौटाया नहीं जा सकता | इसलिए समय रहते हमें अपने सभी कार्यों को पूर्ण कर लेना चाहिए |

## 2. पतंग-आलोक धन्वा

सातवें – आठवें दशक के कवि आलोक धन्वा का जन्म सन् 1948 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था| उनकी लोकप्रियता का आधार उनकी कविताएँ हैं ।इनकी पहली कविता जनता का आदमी सन 1972 में प्रकाशित हुई|उसके बाद 'भागी हुई लड़कियाँ' एवं'ब्रूनों की बेटियाँ' कविताओं से इन्हें प्रसिद्धि मिली ।इनकी कविताओं का एकमात्र संग्रह सन 1998 में'दुनिया रोज बनती है' शीर्षक से प्रकाशित हुआ| इनकी साहित्य सेवा के कारण इन्हें राहुल सम्मान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् का साहित्य सम्मान एवं पहल सम्मान से नवाजा गया| इनके काव्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण है| वे बाल मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझते हैं|'पतंग' कविता बालसुलभ इच्छाओं व उमंगों का सुंदर चित्रण है|

**प्रतिपाद्य**- 'पतंग' कविता कवि के 'दुनिया रोज बनती है' व्यंग्य-संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर चित्रण किया है । बाल क्रियाकलापों एवं प्रकृति में आए परिवर्तन को अभिव्यक्त करने के लिए सुंदर बिम्बों का उपयोग किया गया है । पतंग बच्चों की उमंगों का का रंग-बिरंगा सपना है जिसके जरिए वे आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं तथा उसके पार जाना चाहते हैं ।

यह कविता धीरे–धीरे बिम्बों की एक ऐसी दुनिया में ले जाती है जहाँ शरद ऋतु का चमकीला इशारा है,तितलियों की रंगीन दुनिया है,दिशाओं के मृदंग बजते हैं। जहाँ छतों के खतरनाक कोने से गिरने का भय है तो दूसरी ओर भय पर विजय पाते बच्चे हैं जो गिर- गिरकर सँभलते हैंऔर पृथ्वी काहर कोना खुद –ब –खुद उनके पास आ जाता है। बच्चे हर बार नयी –नयी पतंगों को सबसे ऊँचा उड़ाने का हौसला लिए फिर –फिर भादों के बाद शरद(उजाला) की प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

**सार**- 'पतंग' कवितामें आलोक धन्वा कहते हैं कि भादों की तेज बौछार के बाद शरद ऋतु की चमकीली सुबह आ गई ।मौसम साफ़ हो जाने से आकाश मुलायम हो गया ।बच्चे पतंगे उड़ाने लगे एवं सीटियाँ तथा किलकारियाँ मारने लगे । बच्चे कपास की तरह स्वच्छ,निर्मल एवं कोमल होते हैं । बच्चे बैचैन पैरों से पूरी धरती को नाप लेना चाहते हैं । बच्चे मकान की छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं मानो छतें नरम हों । खेलते हुए उनका रोमांचित शरीर उन्हें गिरने से बचाते हैं । बच्चे पतंग के साथ –साथ कभी छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर भी बच जाते हैं ।इसके बाद इनमें साहस और आत्मविश्वास बढ़ जाता है ।

**कला पक्ष**- 1.शरद ऋतु का मानवीकरण किया गया है ।

2.बाल- सुलभ चेष्टाओं का अद्‌भुत वर्णन है ।

3.उपमा,अनुप्रास,श्लेष एवं मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया है ।

4.भाषा बिम्बात्मक एवं खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है ।

### काव्यांश -1

सबसे तेज बौछारें गई भादो गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया फूलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए
घंटी बजाते हुए जोर-जोर से
चमकीले चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उड़ सके -
दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज उड़ सके

दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके-
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके-
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियां और
तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया

1. **खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा-पंक्ति में कौन सा बिम्ब है** ?
(क)दृश्य बिम्ब (ख)श्रव्य बिम्ब (ग)स्पर्श बिम्ब (घ)उपर्युक्त सभी
2. **कवि ने तेज बौछारों के साथ किस महीने के भी चले जाने की बात कही है** ?
(क)सावन (ख)आषाढ़ (ग)भादो (घ)आश्विन
3. **पतंग को दुनिया की सबसे रंगीन चीज क्यों कहा है**?
(क)यह तितलियों के समान दिखाई देती है (ख)यह रंग बिरंगे कागज से बनती है
(ग)सभी बच्चों के अपने रंग के पतंग होते हैं (घ)रंगीन होने के कारण ही पतंग हवा में उड़ती है .
4.'**शरद आया पुलों को पार करते हुए' इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार पहचानिए** ।
(क) रूपक अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार (ग) मानवीकरण अलंकार (घ)अनुप्रास अलंकार
5. **निम्नलिखित पंक्तियों में श्रव्य बिम्ब किसमें निहित है** ?
(क)चमकीले इशारों से बुलाते हुए और (ख)घंटी बजाते हुए जोर-जोर से
(ग)तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया (घ)आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए ।
**उत्तर**- 1.**क** 2.**ग** 3.**ख** 4.**ग** 5.**ख**

## काव्यांश -2

जन्म से ही हुए अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वह दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वह पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर

1. '**जन्म से ही वह अपने साथ लाते हैं कपास' पंक्ति में बच्चों की तुलना कपास से क्यों की गई है**?
(क) दोनों श्वेत और निर्मल होते हैं। (ख)दोनों मुलायम होते हैं
(ग)दोनों मनमानी करते रहते हैं (घ)क एवं ख दोनों।
2. **पृथ्वी बच्चों के बेचैन पैरों के पास कैसे आती है**?
(क) बच्चों की बेसुध दौड़ते देखकर कवि को लगता है कि पृथ्वी अपना पूरा चक्कर लगाकर आ रही हो
(ख) बच्चों को बेसुध दौड़ते देखकर कवि को लगता है कि पृथ्वी में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ इनका पद ना पड़ता हो।
(ग)बच्चों की बेसुध दौड़ देखकर कवि को लगता है कि पृथ्वी ने चक्कर लगाना बंद कर दिया हो
(घ)बच्चों की बेसुध दौड़ देखकर कवि को लगता है कि बच्चे पतंग लेकर पूरी पृथ्वी घूम आते हैं।
3.**छतोंको नरम बनाने से कवि का क्या आशय है**?
(क) छतों पर बार-बार दौड़ने से छत कोमल और नरम बन जाता है
(ख)बच्चे छत पर बड़ी तेजी और बेफिक्री से दौड़ते फिर रहे हैं
(ग)बच्चे इतने बेसुध होकर दौड़ते हैं कि उन्हें छतों की कठोरता का एहसास नहीं होता

(घ) बच्चों को दौड़ने के लिए छतों पर नरम नरम वस्त्र बिछा दी जाती है

4.**दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए से क्या अर्थ बन पड़ता है**?

(क) बच्चे पतंग उड़ाते हुए मृदंग को बजाते हैं

(ख)बच्चों को पतंग उड़ाते देख गाँव वाले मृदंग बजाते हैं

(ग)पतंग उड़ाते उड़ाते बच्चे थक जाते हैं और मृदंग बजाते हैं

(घ)बेसुध होकर पतंग उड़ाते बच्चों की पद चाप मृदंग के समान आवाज करती है

5. '**दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए' में कौन सा अलंकार है** ?

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उपमा अलंकर (ग) रूपक अलंकार (घ) श्लेष अलंकार

**उत्तर – 1.घ 2.ख 3. ग 4 .घ 5.ख**

## काव्यांश -3

छतों के खतरनाक किनारों तक -
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊंचाईयाँ उन्हें थाम लेती है महज एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ-साथ वह भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे

1.**बच्चों को पतंग उड़ाते हुए छतोंके किनारे से कौन बचाता है**

(क)रोमांचित शरीर (ख)उनका मित्र (ग)माता-पिता के निर्देश (घ)स्वविवेक

2.**पतंगों की ऊंचाइयां बच्चों को कैसे थाम लेती है** ?

(क)हाथ के सहारे (ख) धागे के सहारे (ग) शरीर के रोमांच से (घ)स्वविवेक से

3.**पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं पंक्ति में निहित भाव स्पष्ट कीजिए**

(क)वो आत्मिक रूप से जुड़े हैं (ख)वह शारीरिक रूप से जुड़े हैं (ग)दोनों सही है (घ)दोनों गलत

4.**कविता में निहित प्रमुख अलंकार है**

(क)उपमा अलंकार (ख)उत्प्रेक्षा अलंकार (ग)रूपक अलंकार (घ) मानवीकरण अलंकार

5.**खतरनाक शब्द में प्रत्यय है**

(क)नाक (ख)खतर (ग)क (घ) इनमें से सभी

**उत्तर**-1- **क** 2- **ख** 3 – **ग** 4- **घ** 5- **क**

## काव्यांश -4

अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास

1. **बच्चे  निडर होकर किसके सामने आते हैं**?

(क)आसमान के (ख)सूरज के (ग) माता-पिता के (घ) मित्रों के

2.**बच्चे निडर होकर सूर्य के सामने कब आते हैं**?

(क)जब खतरनाक किनारों से चोटिल हो जाते हैं (ख) जब उनका मित्र उनको निर्देश देता है

(ग) जब माता-पिता की नजर नहीं होती (घ) इनमें से कोई नहीं

3 **बच्चों का सूर्य के सामने आने पर क्या होता है** ?

(क)बहुत तेज ऊर्जा प्राप्त होती है (ख) पतंग उड़ाने का मजा और बढ़ जाता है

(ग)पृथ्वी और तेज घूमने लगती हैं (घ) उपर्युक्त सभी

4."**और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं" रेखांकित पद है**

(क) संज्ञा (ख)विशेषण (ग)सर्वनाम (घ)उपसर्ग

5. **उपर्युक्त कविता के कवि हैं** ?

(क)आलोक माथुर (ख)आलोक धन्वा (ग) कुँवरनारायण (घ)कुमार आलोक

**उत्तर** 1.–**ख** 2.–**क** 3 – **ग** 4.-**ख** 5- **ख**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

1.**शरद ऋतु आकाश को मुलायम कैसे बनाती है और क्यों**?

उत्तर- शरद ऋतु में आकाश में नमी रहती है और मंद –मंद वायु चलती है ।आकाश स्वच्छ, साफ- सुथरा रहता है। दिन के समय सुहावनी धूप खिली रहती है। इस प्रकार शरद ऋतु आकाश को मुलायम बनाती है ताकि संसार की सबसे हल्की, रंगीन और पतले कागज तथा कमानी से बनी पतंग आकाश में ऊँची उड़ सके।

2.**बच्चे जब बेसुध होकर दौड़ते हैं तो पृथ्वी किस प्रकार उनके पास आ जाती है**?

उत्तर- बच्चे जब बेसुध होकर पृथ्वी पर इधर से उधर दौड़ लगाते हैं तो उनकी व्याकुल पैरों के पास पृथ्वी का प्रत्येक कोना घूमता हुआ स्वयं उनके पास आ जाता है।उस समय ऐसा लगता है कि पृथ्वी उनकी कोमलता का स्पर्श करने के लिए लालायित होकर, उनके बेचैन पैरों के पास नीचे आ गई है।

3.-**दिशाओं को मृदंगकी तरह बजाने का क्या तात्पर्य है**?

उत्तर-छत पर भागते बच्चों के पैरों की धम- धम की ध्वनि चारों दिशा में गूँजती हुई ऐसी प्रतीत होती है जैसे प्रत्येक दिशा में मृदंग बज रहा हो । उनके पैरों की थाप से दिशाएँ नगाड़ों की तरह बजती हुई प्रतीत होती हैं।

4.- **बच्चों की दौड़ छत को कैसे नरम बनाती हैं**?

उत्तर- बच्चे जब रंग- बिरंगी पतंगों के पीछे कठोर छत पर दौड़ लगाते हैं तो छत उन्हें कठोर प्रतीत नहीं होती। उन्हें कठोर छत भी कोमल और नरम लगती है ।दूसरे शब्दों में, यह बच्चे अपने पैरों की कोमलता से कठोर छत को भी मुलायम और कोमल बना देते हैं।

### लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

1. **बारिशों के बाद,भादों के पश्चात प्रकृति में परिवर्तन का कवि ने किस प्रकार वर्णन किया है**? **पतंग कविता के आधार पर अपने शब्दों में वर्णन करें** ।

उत्तर- भादो मास के दौरान होने वाली घनघोर बारिश समाप्त हो जाती है और शरद ऋतु का आगमन होता है। खरगोश की लाल आँखों जैसी चमकीली धूप निकल आती है ।आकाश साफ और मुलायम हो जाता है और चारों और स्वच्छ वातावरण हो जाता है । शरद ऋतु के आगमन से पतंगबाजी का माहौल बन जाता है। कवि ने शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए उसे साइकिल लेकर आते हुए चित्रित किया है ।

2.**जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास- कपास के बारे में सोचें कि कपास से बच्चों का क्या संबंध बन सकता है**?

उत्तर-कपास श्वेत रंग की होती है और श्वेत रंग स्वच्छता, पवित्रता और निर्मलता का सूचक है इसी प्रकार कपास मुलायम अर्थात कोमल और हल्की होती है बच्चों का बचपन भी स्वच्छ' निर्मल, कोमल और कल्पना लोक में उड़ान भरने वाला होता है बच्चों के मन में किसी प्रकार की कलुषित भावना नहीं होती है इसी कारण बच्चों के बचपन की तुलना कपास से की गई है।

3.**पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं- बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है**?

उत्तर-कवि ने पतंग को बच्चों की बाल सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का रंग- बिरंगा सपना माना है। आसमान में उड़ती हुई पतंग की ऊँचाइयों के साथ बच्चों का बाल मन भी उड़ कर उन ऊँचाइयों को छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है ऊँचाई पर उड़ती हुई पतंग उन्हें ऊँची उड़ान भरने का हौसला देती है।

4. '**महज एक धागे के सहारे पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ**"**उन्हें**(**बच्चों को**)**कैसे थाम लेती है** ?

उत्तर- पतंग बच्चों की उमंगों का रंग –बिरंगा सपना होती है। पतंग केवल एक धागे के सहारे आकाश की ऊँचाइयों को छूती है। पतंग की ऊँची उड़ान के साथ-साथ बच्चों का बाल मन भी उड़ता है। आसमान में उड़ती हुई पतंग की ऊँचाइयों की सीमाएँ हैं जिन्हें बच्चे छूना चाहते हैं और उसके पार जाना चाहते हैं। इस प्रकार एक धागे के सहारे आकाश में ऊँचाइयों पर उड़ती पतंग बच्चों को थाम लेती है।

5.-**पतंग के लिए सबसे हल्की और रंगीन चीज**, **सबसे पतला कागज**, **सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है**?

उत्तर- इस कविता में 'पतंग' बच्चों की उमंगों का रंग -बिरंगा सपना है। बच्चों के सपने रंग-बिरंगे तो हैं,उन्हीं के समान कोमल और नाजुक भी हैं । पतंगों को बच्चों के रंग बिरंगे सपने के समान बताने के लिए कवि ने 'सबसे हल्की और रंगीन''सबसे पतले कागज' और 'सबसे पतली कमानी' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।'सबसे' शब्द का बार -बार प्रयोग कवि अपनी बात पर बल देने के लिए कर रहा है।

# 3. कविता के बहाने(कुँवर नारायण)

## कविता का सार

कविता के बहाने कविता कुँवर नारायण द्वारा रचित है। प्रस्तुत कविता में कविता के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। कविता में बताया गया है कि चिडिया आसमान में दूर-दूर तक उड़ती है, लेकिन चिडियां की उडान की एक सीमा होती है। कविता की तरह फूल की सुगंध भी चारों तरफ फैलती है, लेकिन उसका प्रभाव क्षेत्र भी सीमित होता है। कवि ने बच्चों और कविता में समानता बताई है। जिस प्रकार बच्चों की कल्पना और निस्वार्थ भाव की कोई सीमा नहीं होती है, उसी प्रकार कविता का प्रभाव क्षेत्र भी व्यापक होता है।

### काव्यांश – 1

कविता एक उड़ान है चिडियां के बहाने
कविता की उड़ान भला चिडियां क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
कविता के पंख लगा उडने के माने
चिडिया क्या जाने?

(1) **कविता किसके बहाने एक उड़ान है**-

**(क)** फूल के **(ख)** चिडियां के **(ग)** तूफान के **(घ)**पतंग के

(2) **प्रस्तुत काव्याँश के रचनाकार है**-

**(क)** हरिवंश राय **(ख)**रघुवीर सहाय **(ग)** कुँवर नारायण **(घ)** कोई नहीं

(3) **कवि के अनुसार चिडियां कहाँ-कहाँ उड़ती है**-

**(क)**बाहर भीतर **(ख)**इस घर **(ग)** उस घर **(घ)** उपरोक्त सभी

(4) **कविता के पंख से क्या तात्पर्य है**-

**(क )**मोर के पंख **(ख)**फूल की कलियाँ **(ग)** कवि की कल्पना **(घ)**चिडियां की उडान

(5) **चिडियां क्या जाने**, **पंक्ति में कौनसा अलंकार है**-

**(क)**यमक **(ख)** अनुप्रास **(ग)** मानवीकरण **(घ)** प्रश्न

**उत्तर** – 1-**ख**, 2-**ग**, 3-**घ**, 4-**क**, 5-**घ**

### काव्यांश – 2

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने?

(1)**बिना मुरझाए कौन महकता है**-

**(क)** कवि **(ख)** कविता **(ग)**फूल **(घ)** कलियाँ

(2)**फूल क्या जाने**, **पंक्ति में कौनसा अलंकार है**-

**(क)** यमक **(ख)** श्लेष **(ग)**प्रश्न **(घ)** मानवीकरण

(3)**किसकी महक दूर तक जा सकती है**-

**(क)**कविता की **(ख)**फूल की **(ग)**कवि की **(घ)**उपरोक्त सभी

(4)**प्रस्तुत काव्यांश की भाषा है**-

**(क)**अवधी **(ख)**ब्रज **(ग)**हिन्दी **(घ)**खडी बोली

(5) **कथन** (A)- **कविता का प्रभाव अनंत तथा असीम होता है।**

**कारण** (R)- **चिडियां की उडान सीमित होती है।**

**(क) A**सही है परंतु**R** गलत है। **(ख) A** और**R** दोनों सही है और**R, A** की सही व्याख्या है।

**(ग) R**सही है परंतु **A**गलत है **(घ) A**तथा**R** दोनों सही है परंतु**R, A** की सही व्याख्या नहीं है।

उत्तर – 1-**ख**, 2-**ग**, 3-**क**, 4-**घ**, 5-**घ**

## कविता के आधार पर अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न-

**(1) 'कविता के बहाने', कविता के रचयिता कौन है-**

(क) कुँवर सिंह (ख)कुँवर नारायण (ग)हरिवंश राय (घ)कोई नहीं

**(2) कविता के पंख लगाकर कौन उडता है-**

(क)कवि (ख)पक्षी (ग)फूल (घ)चिडियां

**(3) कवि के अनुसार चिडियां की उडान को कौन जानता है**

(क) फूल (ख)चिडियां (ग)बच्चा (घ)उपरोक्त सभी

**(4) कविता में किसके खेल की चर्चा की गई है-**

(क) खो-खो के खेल की (ख)कबड्डी के खेल की (ग)रंगों के खेल की (घ)बच्चों के खेल की

**(5) कवि के अनुसार कविता किसका खेल है-**

(क) बच्चों का (ख)शब्दों का (ग)बारिश का (घ)फूलों का

**(6) चिडियां की उडान कैसी होती है-**

(क) असीमित (ख)सीमित (ग)वास्तविक (घ)बनावटी

**(7) कविता किसके बहाने खेल रही है-**

(क) फूलों के (ख)बच्चों के (ग)भाषा के (घ)चिडियां के

**(8) कविता की उडान कहाँ तक है-**

(क) सीमाओं से परे (ख)सीमा रहित (ग)असीमित (घ)उपरोक्त सभी

**(9) कविता की तुलना किसके साथ नहीं की गई है-**

(क) फूल (ख)चिडियां (ग)नदी (घ)बच्चे

**(10)'सब घर एक कर देने', का क्या आशय है-**

(क) मारपीट करना (ख)भेदभाव नहीं रखना (ग)खूब शोर मचाना (घ)घर के अंदर रहना

**उत्तर- 1-ख, 2-क, 3-ग, 4-घ, 5-ख 6-ख, 7-ख, 8-घ, 9-ग, 10-ख**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**(1) इस कविता के बहाने बताएं कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है**?

उत्तर- कविता के बहाने कविता में बताया गया है कि छोटे-छोटे बच्चे किसी से भी भेदभाव नहीं करते हैं। वे सबको एक समान समझते हैं। ठीक उसी प्रकार कविता भी किसी प्रकार का धार्मिक और जातिगत भेदभाव नहीं करती है। कविता में सबके कल्याण की भावना निहित होती है।

**(2)कविता और बच्चों को समानांतर क्यों माना है**?

उत्तर- कविता के बहाने कविता में कविता और बच्चों को एक समान माना गया है क्योंकि बहुत सारी बातें एक जैसी है। जिस प्रकार बच्चों के मन में किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं रहती है तथा वे सबको एक समान समझते हैं, उसी प्रकार कविता भी किसी के साथ भेदभाव नहीं करती है।

**(3)कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' से क्या तात्पर्य है**?

उत्तर- कविता का प्रभाव कभी खत्म नहीं होता है। फूल तो खिलने के कुछ समय पश्चात मुरझा जाता है, लेकिन कविता कभी नहीं मुरझाती है। कविता तो लंबे समय तक महकती रहती है अर्थात कविता का संदेश तो कई युगों तक लोगों के लिए प्रेरणादायक बना रहता है।

**(4)कवि ने किस आधार पर फूल की महक को कविता से छोटा बताया है**?

उत्तर-फूल जब खिलता है तो उसकी महक चारों ओर फैलती है, लेकिन उसकी एक सीमा होती है। फूल की महक थोडी दूर तक ही जा पाती है और कुछ समय बाद उसका प्रभाव खत्म हो जाता है। परंतु कविता की महक उसका प्रभाव तो दूर-दूर देशों तक फैलता है तथा उसका प्रभाव तो सदियों तक बना रहता है।

**(5)कवि को किस बात का अंदेशा है**?

उत्तर- कविता के बहाने कविता में कवि को यह चिंता हो रही है कि कहीं इस औद्योगिक प्रधान भागदौड वाले समय में कविता अपना महत्व नहीं खो दे।कवि को अँदेशा है कि कहीं कविता का प्रभाव कम हो जाए।

## बात सीधी थी पर (कुँवर नारायण)

### कविता का सार

यह कविता कुँवर नारायण द्वारा रचित है। कवि ने स्पष्ट किया कि लोग सीधी सरल बात को भी शब्दों के जाल में फँसाकर पेचीदा बना देते हैं। जिससे बात का अर्थ ही बदल जाता है। भाषा के चक्कर में फँसकर बात अपना महत्व ही खो देती है। भाषा का असली उद्देश्य है कि संदेश सही रूप से आगे तक पँहुच जाए। अत: बात को सरल शब्दों के माध्यम से दूसरों तक पँहुचाया जाए ताकि संदेश आगे तक ढंग से पँहुच जाए।

### काव्यांश – 1

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढी फँस गई।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा – मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए-
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई।

(1)**प्रस्तुत कविता के रचयिता है**-

**(क)**हरिवंश राय **(ख)**रघुपति सहाय **(ग)**कुँवर नारायण **(घ)**वीर कुँवर सिंह

(2)**बात पेचीदा कैसे होती चली गई**-

**(क)**उलटा पलटा करने से **(ख)**तोड़ने-मरोड़ने से **(ग)**घुमाने-फिराने से **(घ)**उपरोक्त सभी

(3)**सीधी-सी बात किसके चक्कर में फँस गई**-

**(क)**विचारों के **(ख)**छंद के **(ग)**अलंकार के **(घ)**भाषा के

(4)**किस कारण बात को घुमाया-फिराया जाता है**-

**(क)**सरल बनाने हेतु **(ख)**प्रभावशाली बनाने हेतु **(ग)**कठिन बनाने हेतु **(घ)**कोई नहीं

(5)**कवि किसे पाने की कोशिश करता है**-

**(क)**बात को **(ख)**पेंच को **(ग)**कील को **(घ)**कलम को

**उत्तर** 1-**ग**, 2-**घ**, 3-**घ**, 4-**ख**, 5-**क**

## काव्यांश – 2

हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया।
पर अंदर से
न तो उसमें कसाव था
न ताकत
बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी,
मुझे पसीना पोंछते देख कर पूछा-
"क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?"

(1)**कवि को पसीना क्यों आ गया था**-

**(क)**कील ठोंकने से **(ख)**गर्मी से **(ग)**बात बनाने से **(घ)**उपरोक्त सभी

(2)"**क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा**?" **किसने पूछा**-

**(क)**बात ने **(ख)**कवि ने **(ग)**भाषा ने **(घ)**बच्चों ने

(3)**उल्टे-सीधे प्रयोगों से भाषा कैसी बनेगी**-

**(क)**सरल **(ख)**प्रभावी **(ग)**संजीदा **(घ)**कमजोर

(4)**हमें भाषा को कैसे बरतना चाहिए**-

**(क)**सहूलियत से **(ख)**ताकत से **(ग)**हथौडे से **(घ)**शरारत से

(5)**कील की तरह ठोंकने से क्या अभिप्राय है**-

**(क)**अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग न करना **(ख)**अर्थहीन बनाना **(ग)**जबरदस्ती बात के उलझाना **(घ)**उपरोक्त सभी

**उत्तर** 1-**ग**, 2-**क**, 3-**घ**, 4-**क**, 5-**ग**

## कविता के आधार पर बहुविकल्पीय प्रश्न-

(1) **बात की पेंच खोलना**, **से कवि का क्या तात्पर्य है**-

**(क)**बात का उलझना **(ख)**बात का प्रभावहीन होना **(ग)**बात का स्पष्ट होना **(घ)**बात का तर्कपूर्ण होना

(2) **कवि से शरारती बच्चे की तरह कौन खेल रही थी**-

**(क)**बात **(ख)**भाषा **(ग)**कविता **(घ)**पतंग

**(3)भाषा के चक्कर में बात कैसी हो गई**-

(क)दुष्कर (ख)सरल (ग)बोधगम्य (घ)पेचीदा

**(4)’बात सीधी थी पर’ कविता के रचनाकार कौन है**-

(क)हरिवंश राय (ख)वीर नारायण (ग)कुँवर नारायण (घ)कोई नहीं

**(5) सीधी सी बात किसके चक्कर में फँस गई**-

(क)भाव (ख)छंद (ग)अलंकार (घ)भाषा

**(6)कवि किसे पाने की कोशिश करता है**-

(क)पेंच को (ख)बात को (ग)कील को (घ)कलम को

**(7) ’बात की चूडी मर जाना’ से क्या तात्पर्य है-**

(क)स्पष्ट होना (ख)तर्कपूर्ण होना (ग)प्रभावपूर्ण होना (घ)प्रभावहीन होना

**(8) आडंबरपूर्ण शब्दों से भाषा कैसी हो जाती है**-

(क)अस्पष्ट (ख)स्पष्ट (ग)सहज (घ)सुंदर

**(9) इस कविता में कवि ने बल दिया है**-

(क)भावों की सरसता (ख)भाषा की जटिलता (ग)भाषा की सहजता (घ)उपरोक्त सभी

**(10) बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना है**-

(क)समझ पाना (ख)तर्कपूर्ण होना (ग)समझ नहीं आना (घ)प्रभावी होना

**उत्तर**- 1-**ग**, 2-**क**, 3-**घ**, 4-**ग**, 5-**घ** 6-**ख**, 7-**घ**, 8-**क**, 9-**ग**, 10-**ग**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**(1) भाषा को सहूलियत से बरतने से क्या अभिप्राय है**?

उत्तर- भाषा को सहूलियत से बरतने से अभिप्राय है कि भाषा का सही रूप से इस्तेमाल करना। भाषा का उद्देश्य होता है कि संदेश को सही ढंग से दूसरे तक पँहुचा दे। अत: कवि को बात के अनुसार सरल भाषा और सहज शब्दों का प्रयोग करना चाहिए ताकि संदेश सही ढंग से पँहुच सकें।

**(2) कवि के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती है**?

उत्तर- कवि कुँवर नारायण के अनुसार कुछ लोग या रचनाकार अपनी बात को प्रभावी बनाने के चक्कर में उल्टे-सीधे शब्दों का प्रयोग करते हैं। कठिन शब्दों के जाल में फँसकर साधारण बात भी पेचीदा बन जाती है। बात को समझना मुश्किल हो जाता है।

**(3) बात और भाषा परस्पर जुडें होते हैं, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी कैसे हो जाती है**?

उत्तर- बात और भाषा एक-दूसरे से जुडें हुए हैं क्योंकि भाषा के माध्यम से ही संदेश आगे तक बढ़ पाता है। लेकिन कभी-कभी साधारण-सी बात भी कलिष्ट शब्दों के जाल में फँस जाती है और उसका संदेश बदल जाता है। कवि अपनी रचना को प्रभावशाली बनाने के चक्कर में भारी शब्दों का प्रयोग करते हैं। इससे कभी-कभी सीधी सरल बात भी टेढ़ी हो जाती है।

**(4) कवियों पर प्रशंसा का क्या प्रभाव पड़ता है**?

उत्तर- हम सभी जानते हैं कि प्रशंसा का लोगों पर बहुत प्रभाव पडता है। कुछ लोग और कवि प्रशंसा के भूखे होते हैं। वे प्रशंसा पाने के चक्कर में अपने लेखन में अनावश्यक प्रयोग करते हैं। उनके इसी प्रयास में कभी-कभी संदेश अपना वास्तविक रूप खो देता है।

**(5)बात सीधी थी पर कविता से हमें क्या संदेश मिलता है**?

उत्तर- इस कविता से हमें संदेश मिलता है कि हमें प्रशंसा पाने के चक्कर में झूठा दिखावा नहीं करना चाहिए। हमें संदेश के अनुसार सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए। क्योंकि सीधी -सी बात को भी अगर हम घूमा-फिराकर कहेंगे तो सामने वाले तक उसका अर्थ ही नहीं पँहुच पाएगा। इसलिए हमें सरल और सहज भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

# 4. कैमरे में बंद अपाहिज़ (रघुवीर सहाय)

## कविता का सारांश

कैमरे में बंद अपाहिज कविता रघुवीर सहाय के काव्य-संग्रह 'लोग भूल गए हैं से संकलित की गई है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेलते व्यक्ति से टेलीविजन कैमरे के सामने किस तरह के सवाल पूछे जाएंगे और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उससे कैसी भंगिमा की अपेक्षा की जाएगी इसका लगभग सपाट तरीके से बयान करते हुए एक तरह से पीड़ा के साथ दृश्य संचार माध्यम के संबंध को रेखांकित किया है। साथ ही कवि ने व्यंजना के माध्यम से ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा किया है जो अपनी दुःख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती झेलते हुए लोगों के प्रति संवेदनशीलता व्यक्त की है। कवि ने इस कविता में बताया है कि अपने कार्यक्रम को सफल बनाने तथा किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने के लिए दूरदर्शनवाले किसी दल और शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति को अपने कैमरे के सामने प्रस्तुत करते हैं। उससे अनेक तरह से सवाल पर सवाल पूछते हैं। उसे कैमरे के आगे बार-बार लाया जाता है। बार-बार उससे अपाहिज होने के बारे में सवाल पूछे जाते हैं कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है तथा उस कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए दूरसंचार वाले स्वयं प्रतिक्रिया व्यक्त करके बताते हैं। अनेक ऐसे संवेदनशील सवालों को पूछ-पूछकर वे उस व्यक्ति को रुला देते हैं। दूरदर्शन के बड़े परदे पर उस व्यक्ति की आँसूभरी " आँखों को दिखाया जाता है। इस प्रकार दूरदर्शन वाले बार-बार एक ऐसे अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

### काव्यांश – 1

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं ?
तो आप क्यों अपाहिज है ?
आपका अपाहिजपन तो दुःख देता होगा
देता है ? (कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा)
हाँ तो बताइए आपका दुःख क्या है ?
जल्दी बताइए वह दुःख बताइए
बता नहीं पाएगा

**1. हम दूरदर्शन पर बोलेंगे' में 'हम' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है** ?

(क) प्रशासनिक अधिकारी के लिए (ख)मीडिया के लिए
(ग) सामाजिक संस्था के लिए (घ) चिकित्सक के लिए

**2.समर्थ और शक्तिशाली लोग किसको दूरदर्शन पर लाते हैं** ?

(क)स्वयं से अधिक बलशाली को (ख) दुर्बल को
(ग) दर्शकों को (घ) कैमरामैन को

**3.प्रश्नकर्ता कैमरामैन को क्या निर्देश देता है** ?

(क) ठीक से पकड़ने का (ख) बंद करने का
(ग) बड़ा-बड़ा दिखाने का (घ) फ़ोकस खुद पर डलवाने का

**4.प्रश्नकर्ता अपाहिज़ से कैसे प्रश्न पूछता है** ?

(क) गंभीर (ख) बेतुके (ग) निरर्थक (घ) ख और ग दोनों

**5.प्रश्नकर्ता अपाहिज़ से पूछता है कि–**

(क) क्या आप अपाहिज़ हैं (ख) क्या आपका अपाहिज़पन दुःख देता है **?**
(ग) आप क्यों अपाहिज़ हैं (घ) उपर्युक्तसभी

**उत्तर**- 1-**ख**, 2-**ख**, 3-**ग**, 4-**घ**, 5-**घ**

## काव्यांश – 2

(हम खुद इशारे से बताएंगे कि क्या ऐसा ?)
सोचिए
बताइए
आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है
कैसा
यानी कैसा लगता है
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा)
सोचिए
बताइए
थोड़ी कोशिश करिए
(यह अवसर खो देंगे ?)
आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते
हम पूछ- पूछ कर उसको रुला देंगे
इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का
करते हैं ?
यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा।

**1. काव्यांश में किसकी कार्यशैली पर व्यंग्य किया गया है** ?

| | |
|---|---|
| **(क)** कैमरामैन की | **(ख)** कार्यक्रम संचालक की |
| **(ग)** अपाहिज़ की | **(घ)** दर्शकों की |

**2. अपाहिज़ व्यक्ति को बार-बार उसका दुःख बताने के लिए मजबूर करने का उद्देश्य क्या था ?**

| | |
|---|---|
| **(क)** कार्यक्रम को सफल बनाना | **(ख)** सस्ती लोकप्रियता हासिल करना |
| **(ग)** व्यावसायिक लाभ कमाना | **(घ)** उपर्युक्त सभी |

**3. संचालक अपाहिज़ को अपना दुःख व्यक्त करने का तरीका कैसे बताता है ?**

| | |
|---|---|
| **(क)** संकेत द्वारा | **(ख)** लिख कर |
| **(ग)** बोल कर | **(घ)** चित्र दिखाकर |

**4. संचालक अपाहिज़ को रुलाने के लिए क्या करता है ?**

| | |
|---|---|
| **(क)** स्वयं रोने लगता है। | **(ख)** उसे परेशान करता है। |
| **(ग)** बार-बार प्रश्न पूछता है। | **(घ)** रोने का इशारा करता है। |

**5. उपर्युक्त काव्यांश किस पाठ से लिया गया है ?**

| | |
|---|---|
| **(क)** कमरे में बंद अपाहिज़ | **(ख)** संवेदनशील मीडिया |
| **(ग)** दुःखी अपाहिज़ | **(घ)** कैमरे में बंद अपाहिज़ |

**उत्तर**- 1-**ख**, 2-**घ**, 3-**क**, 4-**ग**, 5-**घ**

## (वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक)

1. **अब मुस्कुरायेंगे हम' इस पंक्ति में 'हम' कौन हैं**?

क. दूरदर्शन वाले ख. अपाहिज ग. दर्शक घ. कवि

2. '**कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी किस की कविता है**?

क. दया की ख. परोपकार की ग. वात्सल्य की घ. क्रूरता की

3. **कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में कैमरा एक साथ क्या दिखाना चाहता है**?

| | |
|---|---|
| क. सामान्य व्यक्ति की दुर्दशा और खुशी | ख. समाचार और खेल |
| ग. दर्शक और अपाहिज रोते हुए | घ. नए और पुराने कार्यक्रम |

4. '**कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में समर्थ शक्तिवान' किसे कहा जाता है**?

क.कैमरामैन को      ख. अपाहिज को      ग. दर्शकों को      घ. दूरदर्शन वालों को

5. **दूरदर्शन वाले बंद कमरे में किसे लाए थे**?

क.अमीर को      ख. सबल को      ग. अपंग को      घ.बीमार को

6. **अपाहिज के होठों पर क्या दिखाई देता है**?

क. उलझन      ख. कसमसाहट      ग. पीड़ा      घ.मुस्कान

7. **कैमरे वाला किन्हें साथ-साथ रूलाना चाहता है**?

क. नायक-नायिका      ख.भाई-बहन      ग.अपाहिज-दर्शक      घ. सखा-सखी

8. '**कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के कवि हैं**-

क. रघुवीर सहाय      ख. रघुवीर सिंह      ग. रघुवीर प्रसाद      घ. रघुवीर प्रकाश

9. **हम किस पर बोलेंगे**-

क. मंच पर      ख. दूरदर्शन पर      ग. रेडियो पर      घ. घर पर

10. **हम क्या हैं**?

क. अशक्त      ख.दुर्बल      ग. समर्थ      घ. निर्जीव

11. **हम किसे लाएँगे**?

क. शक्तिवान को      ख.शासनाध्यक्ष को      ग. सेनापति को      घ. दुर्बल को

12. **दुर्बल को हम कहाँ ले जाएँगे**?

क.मंच पर      ख. बंद कमरे में      ग. घर पर      घ. मेले में

13. **हम..... दूरदर्शन पर बोलेंगे?में रिक्त स्थान की पूर्ति करें।**

क. हम अशक्त और अज्ञानी      ख. हम बेकार और बेकरार<br>
ग. हम समर्थ और शक्तिवान      घ. हम अपंग और लाचार

14. **अपाहिज से दूरदर्शन कार्यक्रम-संचालक किस प्रकार के प्रश्न पूछता है**?

क. अर्थपूर्ण      ख. तर्कसंगत      ग. भावपूर्ण      घ. अर्थहीन

15. **अपाहिज क्या नहीं बता पाएगा**?

क. अपना सुख      ख. अपना दुःख      ग. अपना सामर्थ्य      घ. अपनी शक्ति

16. **कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए हम अपाहिज से क्या चाहते हैं**?

क. रुलाना      ख. हँसाना      ग. नचा देना      घ. गाना गवाना

17. **कैमरेवाले परदे पर अपाहिज की क्या दिखाएँगे**?

क. हँसी      ख. रोने से फूली आँख      ग. अपंगता      घ.नृत्य का दृश्य

18. **कैमरा एक साथ क्या दिखाना चाहता है**?

क. समाचार और खेल      ख. रोशनी और अंधेरा

ग.दर्शक और अपाहिज रोते हुए      घ.प्रस्तुतकर्ता और दर्शक रोते हुए

19. **परदे पर किस की कीमत है**?

क. दर्शक की      ख.अपाहिज की      ग. प्रस्तुतकर्ता की      घ. वक्त की

20. **कार्यक्रम समाप्त करते हुए प्रस्तुतकर्ता क्या करेगा**?

क. मुस्कुराकर धन्यवाद      ख. खेदपूर्ण धन्यवाद

ग. रोते हुए धन्यवाद      घ. कुछ भी नहीं

21. **प्रस्तुतकर्ता दर्शकों को क्या रखने के लिए अनुरोध करता है**?

क. शांति      ख. धैर्य      ग.हिम्मत      घ. दया

22. **प्रस्तुतकर्ता 'बस करो, नहीं हुआ, रहने दो' क्यों कहता है**?

क. अपाहिज और दर्शक नहीं रोए ख. प्रस्तुतकर्ता और दर्शक नहीं रोए
ग. अपाहिज और प्रस्तुतकर्ता नहीं रोए घ. कैमरा खराब हो गया

23. **परदे पर किस की कीमत बताई गई**?

क. अपाहिज की ख. कैमरामैन की ग. वक्त की घ. अभिनेता की

24. **कैमरेवाले एक और कोशिश क्यों करना चाहते हैं**?

क.तस्वीर साफ दिखाने के लिए ख. कार्यक्रम को आकर्षक बनाने के लिए
ग. अपाहिज की अपंगता को उभारने के लिए घ.चमत्कार उत्पन्न करने के लिए

25. '**कैमरे में बंद अपाहिज' कविता किस पर व्यंग्य है**?

क. अपाहिजों पर ख. दर्शक पर ग. व्यवस्था पर घ.दूरदर्शन वालों पर

उत्तर- **1**-क, **2**-घ, **3**-ग, **4**-घ, **5**-ग, **6**-ख, **7**-ग, **8**-क, **9**-ख, **10**-ग, **11**-घ, **12**-ख, **13**-ग, **14**-घ, **15**-ख, **16**-क, **17**-ख, **18**-ग, **19**-घ, **20**-क, **21**-ख, **22**-क, **23**-ग, **24**-ग, **25**-घ।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

1. **अपाहिज से पूछे गए प्रश्न किस बात के परिचायक हैं**? **कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कवि का मानना है कि अपाहिज से जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनका वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं है यह प्रश्न सिर्फ उसे ठेस पहुंचाते हैं, यह प्रश्न समाज की मानसिक विकलांगता के परिचायक हैं।

2. **कार्यक्रम सूत्रधार अपाहिज से कौन-कौन से प्रश्न पूछेगा**? **कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कार्यक्रम सूत्रधार अपाहिज से ऊट-पटांग सवाल पूछता है, वह पूछता है कि आप यह सोच कर बताइए कि अपंग होकर आप कैसा महसूस करते हैं।यदि व्यक्ति नहीं बता पाता तो सूत्रधार संकेत करता है कि कहीं ऐसा तो महसूस नहीं करते, उन्हें सोचने के लिए कहता है कोशिश करने के लिए कहता है, और वह उत्तर नहीं दे पाता तो उसे अवसर खो देने की बात कहता है।

3. **कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए कार्यकम सूत्रधार क्या करेगा**? **कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कार्यक्रम सूत्रधार अपाहिज से बेतुके प्रश्न पूछेगा और उसे रुलाने का प्रयास करेगा, साथ ही दर्शकों को भी रुलाना चाहता है।

4. **फूली हुई आंख से कवि क्या कहना चाहता है**? **कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर - फूली हुई आंख से कवि कहना चाहता है कि मीडिया मजबूर विकलांग की हालत को और भयानक तरीके से प्रस्तुत करता है, ताकि लोगों की सहानुभूति उनसे जुड़ सके। इन पंक्तियों में मीडिया की संवेदनहीनता को बताया गया है। मीडिया दर्शक और विकलांग व्यक्ति को एक साथ रुलाना चाहता हैं, ताकि उनका कार्यक्रम लोकप्रिय हो सके।

5. '**होठों पर एक कसमसाहट ' कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है**?

उत्तर- होठों पर एक कसमसाहट के द्वारा कवि कहना चाहता है कि विकलांग अपनी पीड़ा को बता नहीं पा रहा और यही व्यथा उसके होठों पर देखने को मिलती है।

6. **कैमरे में बंद अपाहिज कविता का सन्देश संक्षेप में लिखिए।**

उत्तर- कविता पत्रकारिता के क्षेत्र में बढ़ती व्यावसायिकता, लोकप्रियता हेतु बढ़ती संवेदनहींनता को प्रकट करते हुए मीडिया का सामाजिक उत्तरदायित्व न निभानेवाले दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1. 'हम दूरदर्शन पर बोलेंगे, हम समर्थ शक्तिवान 'कैमरे में बंद अपाहिज कविता की पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- इस कविता के माध्यम से कवि बताता है कि मीडिया वाले स्वयं को समर्थ तथा शक्तिशाली समझते हैं। वे किसी की करुणा, पीड़ा को बेच सकते हैं। वे ऐसे व्यक्तियों को समाज के सामने लाकर सहानुभूति बटोरना चाहते हैं जो कमज़ोर तथा अशक्त हैं। इससे उनकी लोकप्रियता व आमदनी बढ़ती हैं।मीडिया का झूठा दंभ दृष्टिगत होता है, वे स्वयं को समाज में परिवर्तन लाने वाले समर्थ शक्तिशाली मानते है।

**2. कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता क्या -क्या करता है? 'कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ताअपाहिज से बेतुके, तर्कहीन प्रश्न करके, उसकी मजबूरी को दर्शाता है, वह विकलांग को स्टूडियो में बुलाकर उससे अपनी पीड़ा जल्दी-जल्दी बताने के लिए कहता है। उसकी कमजोरी को बड़ा करके इशारों से खुद दिखाता, वह दर्शकों को एक साथ भी रुलाना चाहता है उसकी सोच है कि इससे समाज की सहानुभूति उसके चैनल को मिलेगी और कार्यक्रम लोकप्रिय हो जाएगा।

**3. कैमरे में बंद अपाहिज कविता में कवि क्या संदेश देना चाहता है?**

उत्तर-. कविता में कवि मानवीय संवेदनहीनता का चित्रण करता है मीडिया लोगों की मजबूरी तथा दुख को बेचने का प्रयास करता है करुणा के मुखौटे में अपाहिज का मजाक उड़ाया जाता है उसके प्रति झूठी सहानुभूति जताई जाती है, उससे ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं कि मानवता भी शर्मसार हो जाती है कवि समाज के क्रूर दृष्टिकोण को व्यक्त करता है।मीडिया की व्यावसायिता को बताया गया है?

**4. यह अवसर खो देंगे'कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।**

उत्तर - प्रश्नकर्ता अपाहिज से बेतुके प्रश्न पूछता है समाज के सामने अपने अनुभव को व्यक्त करने का अवसर देता है इससे अपाहिज को सहानुभूति मिलेगी, यदि वह इस अवसर पर अपनी पीड़ा, दुःख नहीं बता पाता है तो उसे सहानुभूति नहीं मिलेगी और प्रश्न कर्ता कार्यक्रम भी सफल नहीं होगा।इसलिए वह अपाहिज से जल्दी उत्तर देने का आग्रह करता है।

**5. "कैमरे में बंद अपाहिज कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है "इस कथन पर टिप्पणी कीजिए**

उत्तर- कवि ने बताया है कि मीडिया मानवीय करुणा के मुखौटे में क्रूरता को दर्शाता है मीडिया बाहरी सहानुभूति जताता है, वह दुख -दर्द बेचकर यश तथा धन पाना चाहते हैं कविता में अपाहिज व्यक्ति की दशा तथा दुख को प्रस्तुत कर चैनल अपनी लोकप्रियता टी. आर. पी. बढ़ाना चाहते हैं यह क्रूरता की चरम सीमा है। ऐसा संवेदनहीन व्यवहार मीडिया की क्रूरता को उजागर करता है।

**6. कैमरे में बंद अपाहिज कविता को क्या संवेदनहीन कविता कहा जा सकता है? तर्क के आधार पर अपने मत की पुष्टि कीजिए।**

उत्तर- कविता को संवेदनहीन कहा जा सकता क्योंकि कविता में कवि ने मानवीय संवेदनशीलता का चित्रण अवश्य किया है किन्तु साथ ही मीडिया के असली रूप का चित्रण किया है, जो अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए अपाहिज की पीड़ा को कुरेदते है, ऊपर- ऊपर से उसके प्रति झूठी सहानुभूति जताते है, उससे बेतुके प्रश्न पूछेते हैं, कवि संवेदनहीन क्रूर दृष्टिकोण को व्यक्त करता है।

**7. पर्दे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है? कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कवि कहता है कि मीडिया लोगों की सहानुभूति अर्जित करके अपना व्यवसाय बढ़ाना चाहते है, वे चाहते हैं कि विकलांग के रोने के साथ दर्शक भी रोने लगें। वैसे दृश्य को लंबे समय तक दिखाना नहीं चाहते हैं, क्योंकि उनके कार्यक्रम में समय की कीमत होती है, वे उस कीमत को खराब नहीं करना चाहते। परदे पर एक-एक पल का भी मूल्य चुकाना पड़ता है।

**8. यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक, दोनों एक साथ रोने लगेंगे, तो उससे प्रश्न कर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा होगा? कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कवि मीडिया की स्वार्थी मनोवृति को दर्शाता है मीडिया एक विकलांग व्यक्ति को स्टूडियो में बुलाकर उससे उसके कष्टों के बारे में पूछते हैं विकलांग जवाब ना दे पाने की स्थिति में रोने लगेगा साथ ही उसकी पीड़ा से द्रवित

दर्शक भी रोने लगेंगे, दर्शकों के रोने से कार्यक्रम और अधिक सफल होगा। प्रश्नकर्ता का व्यावसायिक उद्देश्य होना, चैनल की टी.आर. पी बढ़ाना।

**9. कैमरे में बंद अपाहिज़' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है- विचार कीजिए ।**

उत्तर-कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में एक असहाय अपाहिज से साक्षात्कार किया गया है और उसके प्रति संवेदनशीलता, करूणा को प्रस्तुत करना इस कविता का मुख्य उद्देश्य रहा है। परन्तु दूरदर्शन कार्यक्रम द्वारा इसके प्रति संवेदनहीनता का चित्र प्रस्तुत हुआ, अपने स्वार्थ व कारोबार की वृद्धि के लिए कमजोर अपाहिज की भावनाओं से खिलवाड़ कर उसकी वेदना, पीड़ा, दुःख दर्द को बेचना मात्र इसका लक्ष्य बन कर रह गया है। इस प्रकार यह कविता करूणा व संवेदनशीलता के मुखौटे में छिपी क्रूरता व स्वार्थ को प्रकट करती है।

**10. आपकी राय में अपंग व्यक्ति के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए** ?

उत्तर-मेरी राय में अपंग व्यक्ति के साथ हमारा व्यवहार सहयोगात्मक, सकारात्मक और सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। उनका मनोबल बढ़ाते हुए प्रोत्साहित करना चाहिए ।

**11. 'कैमरे में बंद अपाहिज़' कविता संवेदनहीनता की कविता है स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- कैमरे में बंद अपाहिज़ कविता संवेदनहीनता की कविता है क्योंकि मीडियावाले अपने आर्थिक लाभ के लिए एक विकलांग व्यक्ति को अपने टीवी चैनल पर लाते हैं और उसके दर्द को कुरेदते हुए उसके दर्द का बाजारीकरण करते हैं । वो चाहते हैं कि जब विकलांग व्यक्ति और दर्शक एक साथ आँसू बहाएं तभी मीडियाकर्मियों का लक्ष्य पूर्ण होगा ।

**12. सामाजिक उद्देश्य से युक्त ऐसे कार्यक्रम को देखकर आपको कैसा लगेगा**?

उत्तर-ऐसे कार्यक्रम को देखकर मेरा मन खिन्न हो जाएगा। मुझे हैरानी होगी ऐसे कार्यक्रम बनाने वालों पर। मैं प्रयास करूँगा कि इस कार्यक्रम की प्रस्तुति बंद करवा सकूँ। इस प्रकार के कार्यक्रम दर्शकों को आनंद दे या न दे लेकिन एक अपंग व्यक्ति को मानसिक रूप में अवश्य अपंग बना सकते हैं। अतः मैं इसका विरोध करूँगा।

**13. हम समर्थ शक्तिवान' और 'हम एक दुर्बल को लाएंगे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है** ?

उत्तर-यह व्यंग्य कवि ने उस मीडिया पर किया है, जो इस प्रकार के कार्यक्रमों का निर्माण करते हैं। समर्थ शक्तिवान कहकर वे अपनी उस शक्ति को प्रदर्शित करते हैं, जिसके माध्यम से वे इसका का दुरुपयोग कर रहे हैं। हम एक दुर्बल को लाएँगे का तात्पर्य है कि हम ऐसे व्यक्ति को लाएँगे, जो शारीरिक रूप से नहीं बल्कि मानसिक रूप में भी कमज़ोर होगा। हम उसे अपने हाथ की कठपुतली बना लेंगे। उससे जो चाहे करवाना होगा करवाएँगे। वह अपनी कमज़ोरी के कारण इतना विवश होगा कि हमारे संकेत मात्र से नाचेगा। अतः कार्यक्रम के संचालक के संकेत मात्र से वह कुछ भी कर लेता है।

**14. परदे पर वक्त की क़ीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है** ?

उत्तर-कवि जानता है कि टी.वी. में जो भी कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। उनका उद्देश्य समाज की भलाई करना नहीं है। उनका उद्देश्य अपने चैनल को प्रसिद्ध करना तथा धन कमाना है। अतः वहाँ पर एक-एक पल की कीमत पहले से तय होती है। अपंग व्यक्ति पर आधारित कार्यक्रम अपंग व्यक्ति का साक्षात्कार नहीं है अपितु उसकी अपंगता को देश के आगे रखकर प्रसिद्धि व धन कमाना है। उन्हें अपंग व्यक्ति के सुख-दुख से कोई लेना-देना नहीं है। अपने हितों को वे शीर्ष पर रखते हैं। उनकी करुणा तथा सहानुभूति सब नाटक होती है। अतः इस पंक्ति को कहकर कवि ऐसे कार्यक्रमों के प्रति अपनी नाराज़गी और क्रोध को व्यक्त करता है।

**15. मीडियाकर्मी किस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपने टीवी चैनल पर एक दिव्यांग व्यक्ति को लाते हैं** ?

उत्तर-मीडियाकर्मी अपने कार्यक्रम को सफल, आकर्षक और बिकाऊ बनाने के लिए एक विकलांग व्यक्ति को अपने टीवी चैनल पर लाता है ।

# 5. उषा (शमशेर बहादुर सिंह)

## कविता का सार

कविता में कवि ने सूर्योदय पूर्व की बेला में आकाश में होने वाले रंग और गति के प्रतिपल परिवर्तित रूप का मोहक और जादुई रूप प्रस्तुत किया है | उसके लिए कवि ने ग्रामीण जीवन से अनेक उपमानों को जुटाकर सूर्योदय के जीवंत परिवेश को गाँव की सुबह से जोड़ दिया है |

सूर्योदय के ठीक पहले की उषा बेला में आसमान नीले शंख की भांति बहुत नीला नजर आता है .अगले ही पल लगता है जैसे आकाश राख से लीपा हुआ एक चौका है जिसमें वातावरण की नमी अभी बाकी है .सूर्य की रश्मियां जैसे ही क्षितिज पर बिखरने लगती है तो प्रतीत होता है मानों काली सिल पर लाल केसर पीसकर धो दी गई हो या फिर काली स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया चाक मल दी हो .नील गगन में सूर्य की प्रथम रश्मियों का झिलमिल सौन्दर्य गौरवर्णी रूपसी की देह की भांति आभा पैदा कर रहा है .क्षितिज पर झिलमिल करती रश्मियाँ अचानक नभ के छोर में आती हैं और प्रकृति के पल पल परिवर्तित रूप का सम्मोहक जादू टूट जाता है. सूर्योदय हो जाता है .

### काव्यांश – 2

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है )
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने .
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो |
और ...
जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है

1. **नीले नभ में उदित होता सूर्य कैसी आभा पैदा करता है**

(क) शंख की (ख) सिन्दूर की
(ग) राख से लीपे गए चौके की (घ) गौरवर्णी सुन्दरी की झिलमिलाती काया की

2. **कवि ने कविता के लिए जो उपमान जुटाए हैं उन्हें आप कहाँ देख सकते हैं**

(क) शहरों में (ख) गावों में (ग) महानगरों में (घ) पहाड़ों में

3 .**अलंकार की दृष्टि से इस कविता में किस अलंकार की छटा दर्शनीय है**

(क) उपमा (ख) रूपक (ग) अनुप्रास (घ) अतिशयोक्ति

4 . **कविता का प्रतिपाद्य क्या है** ?

(क ) उषा के सौदर्य का चित्रण (ख) आसमान में उदित होते सौन्दर्य का चित्रण
(ग) सूर्योदय का चित्रण (घ)सभी

5.**कविता में गत्यात्मक बिम्ब है**

(क) राख से लीपा हुआ चौका (ख) शंख (ग) काली सिल (घ) गौर झिलमिल देह

6. **कवि ने कविता में किन उपमानों का प्रयोग किया है** ?

(क) ग्रामीण (ख)शहरी (ग) प्राकृतिक (घ) पारंपरिक

7. '**चौका अभी गीला पड़ा है**' **का क्या अभिप्राय है**?

(क) बारिश हुई है (ख)ओस पड़ी है (ग) कुहरा पड़ा है (घ) बर्फ पड़ी है

8. **उषा का जादू क्या है** ?

(क) शंख की ध्वनि (ख)प्रकृति का जादू (ग) गाँव की सुन्दरता (घ) आकाश में पल-पल परिवर्तन

9. **उषा का जादू कैसे टूटता है** ?

(क) रात होने पर (ख)भोर होने पर (ग) सूर्योदय होने पर (घ) सूर्यास्त होने पर

10. **नीले जल में किसी के गौर देह का हिलना कहा गया है**-

(क) भोर को (ख)सूर्योदय को (ग) आकाश को (घ) मनुष्य को

**उत्तर** – 1. **घ** , 2. **ख** , 3.**क** , 4.**घ** , 5 . **घ**, 6. **क** , 7. **ख** , 8. **घ**, 9.**ग** , 10. **ख**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

1**. भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका क्यों कहा गया है** ?

उत्तर **–** भोर का नभ गीली राख के सामान गहरा स्लेटी होता है | उस समय वातावरण में नमी और पवित्रता होती है| इन तीन विशेषताओं रंग **,**नमी और पवित्रता के कारण भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका कहा गया है

2.**नील जल में हिलती झिलमिलाती देह के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है** ?

उत्तर- कवि नील जल के माध्यम से नीले आकाश का चित्रण करना चाहता है और इस जल में सूर्य की रश्मियों का क्षितिज पर बिखरता रूप किसी रूपसी की गोरी देह के झिलमिल सौन्दर्य का बोध करा रही हैं **|**

3.**उषा कविता में सूर्योदय के किस रूप का चित्रण किया गया है** ?

उत्तर- इस कविता में सूर्योदय पूर्व की बेला उषा बेला का मोहक और गतिमय चित्र प्रतुत किया गया है **|**

4. **भोर के नभ और राख से लीपे गए चौके में क्या समानता है** ?

उत्तर- जिस तरह प्रातः कालीन राख से लीपा चौका गहरा स्लेटी होता है उसमें नमी होती है वह ग्रामीण जीवन में पवित्रता प्रतीक होता है उसी तरह से उषा काल में आसमान का रंग गहरा स्लेटी होता है और उसमें वातावरण की नमी होती है **.**वह पवित्र होता है उसमें किसी भी तरह का सांसारिक प्रदूषण भी नहीं होता है |

5. **स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने पंक्ति का अर्थ बताइये -**

उत्तर- आसमान में जब सूरज की प्रारंभिक किरणें नभ की ओर उन्मुख होती हैं तो प्रतीत होता है मानों प्रकृति के विशाल फलक रूपी स्लेट में किसी ने लाल खड़िया चाक मल दी हो

6. **उषा का जादू किसे कहा गया है** ?

उत्तर- विविध रूप रंग बदलती उषा बेला व्यक्ति पर जादुई प्रभाव डालते हुए उसे मंत्रमुग्ध करती है| किसी जादू की तरह प्रकृति के पल-पल बदलते हुए स्वरुप को उषा का जादू कहा गया है**|**

7**. उषा का जादू कब टूटता है** ?

उत्तर- आसमान पर सूर्य की स्वर्णिम रश्मियों के आसमान पर बिखरते ही उषा का जादू समाप्त हो जाता है और सूर्योदय हो जाता है|

8. **कवि ने किस शैली में कविता रची है** ?

उत्तर- चित्रात्मक **(**बिम्बात्मक शैली **)** कविता में कवि ने सर्वथा नवीन और ग्रामीण उपमानों से युक्त गत्यात्मक बिम्बों का प्रयोग किया है

9. '**उषा**' **कविता में गोरी देह के झिलमिलाने की समानता किससे की गई है**?

उत्तर**-** गोरी देह के झिलमिलाने की समानता किरणों के प्रतिबिंब से की गई है। सूर्योदय के समय किरणों का प्रतिबिंब जल में गौर**–** झिलमिल देह के समान प्रतीत होता है।

10. '**उषा**' **का जादू कैसा है**? **उषा कविता के आधार पर लिखिए।**

उत्तर**-** उषा का जादू अद्भुत है**,** जिसे अपलक देखने की इच्छा होती है। आसमान राख से लिपा चौका**,** काली स्लेट**,** काली सिल**,** नीले शंख जैसे उपमानों से सजा दिखाई दे रहा है।

11. **सिल और स्लेट का उदाहारण देकर कवि ने आकाश के रंग के बारे में क्या कहा है** ?

उत्तर-कवि ने सिल और स्लेट के रंग की समानता आकाश के रंग से की है। भोर के समय आकाश का रंग गहरा नीला-काला होता है और उसमें थोड़ी-थोड़ी सूर्योदय की लालिमा मिली हुई होती है।

12. **उषा' कविता में प्रातःकालीन आकाश की पवित्रता, निर्मलता व उज्ज्वलता से संबंधित पंक्तियों को बताइए।**

उत्तर- पवित्रता- राख से लीपा हुआ चौका।

निर्मलता- बहुत काली सिल जरा से केसर से/ कि जैसे धुल गई हो। / उज्ज्वलता-नीले जल में या किसी की / गौर झिलमिल देह / जैसे हिल रही हो।

### लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

1. **कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है।**

उत्तर- कवि के नीले शंख, राख से लीपा हुआ गीला चौका, सिल, स्लेट, नीला जल और गोरी युवती की झिलमिलती देह आदि उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है। इन्हीं उपमानों के माध्यम से कवि ने सूर्योदय का गतिशील वर्णन किया है। ये उपमान भी कविता को गति प्रदान करते हैं।

2. **सूर्योदय से पहले आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं? 'उषा' कविता के आधार पर बताइए।**

उत्तर-सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था, उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगा मानो काली सिल पर थोड़ा लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो।

3. **'उषा' कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के साथ टूट जाता है।**

उत्तर- इस समय आकाश का सौंदर्य क्षण-क्षण में परिवर्तित होता रहता है। यह उषा का जादू है। नीले आकाश का शंख-सा पवित्र होना, काली सिल पर केसर डालकर धोना, काली स्लेट पर लाल खड़िया मल देना, नीले जल में गोरी नायिका का झिलमिलाता प्रतिबिंब आदि दृश्य उषा के जादू के समान लगते हैं। सूर्योदय होने के साथ ही ये दृश्य समाप्त हो ज़ाते हैं।

4. **'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने।' - इसका आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर-कवि कहता है कि सुबह के समय अँधेरा होने के कारण आकाश स्लेट के समान लगता है। उस समय सूर्य की लालिमा-युक्त किरणों से ऐसा लगता है जैसे किसी ने काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी हो। कवि आकाश में उभरी लालिमा के बारे में बताना चाहता है।

5. **भोर के नभ को 'राख से लीपा, गीला चौका' की संज्ञा दी गई है। क्यों?**

उत्तर- भोर के समय ओस के कारण आकाश नमीयुक्त व धुंधला होता है। राख से लिपा हुआ चौका भी मटमैले रंग का होता है। दोनों का रंग लगभग एक जैसा होने के कारण कवि ने भोर के नभ को 'राख से लीपा, गीला चौका' की संज्ञा दी है। दूसरे, चौके को लीपे जाने से वह स्वच्छ हो जाता है। इसी तरह भोर का नभ भी पवित्र होता है।

6. **'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे की गई हैं और क्यों?**

उत्तर- 'उषा' कविता में प्रातः कालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की गई है। इस समय आकाश नम एवं धुंधला होता है। इसका रंग राख से लिपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है। जिस प्रकार चूल्हा-चौका सूखकर साफ़ हो जाता है उसी प्रकार कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है।

7. **आपने क्या कभी भोर का नभ देखा है? अपने अनुभव लिखें।**

उत्तर- जी हाँ, मैंने भोर का नभ देखा है। मैंने अनुभव किया कि प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व प्रकृति असीम उर्जा से भरपूर होती है। आसमान ऐसा लगता है मानो किसी ने सिल पर जरा सा लाल केसर पीसकर धो डाली हो। सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था, उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। अचानक पूर्ण सूर्योदय होने से जादू ख़त्म हो जाता है।

# 6. बादल राग – सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’

कविता का सार – बादल राग कविता ‘अनामिका’ काव्य संग्रह से ली गई है | इस शीर्षक को लेने का कवि का उद्देश्य है कि बादल के भीतर सृजन और ध्वंस की ताकत एक साथ होती है । जहाँ बादल किसान के लिए उल्लास और निर्माण का अग्रदूत है ,तो मजदूर के संदर्भ में क्रांति और बदलाव का । बादल शोषित वर्ग के हितैषी हैं, जिन्हें देखकर पूंजीपति वर्ग भयभीत होता है | बादलों की क्रांति का लाभ दबे -कुचले लोगों को मिलता है इसलिए किसान और उसके खेतों में छोटे-छोटे पौधे बादलों को हाथ हिला- हिला कर बुलाते हैं। वस्तुतः कवि ने समाज में आर्थिक विषमता की समाप्ति के लिए बादलों को क्रांति का अग्रदूत माना है ।

कवि कल्पना करता है कि बादल हवा रूपी समुद्र में तैरते हुए क्षणिक सुख पर दुख की छाया है। जो संसार या धरती की जलती हुई छाती पर मानों छाया करके उसे शांति प्रदान करती है। बादल की गर्जना को सुनकर धरती के अंदर सोए हुए बीज नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊंचा उठाकर देखने लगते हैं। बादलों का गर्जन किसानों एवं मजदूरों को नव निर्माण की प्रेरणा देता है ।क्रांति से सदा आम आदमी को ही फायदा होता है ।बादल पूंजीपति वर्ग में भय पैदा करते हैं, जिसके कारण वह अपनी प्रियाओं से लिपटे होने पर भी आतंकित होने के कारण मुँह छिपाए हुए हैं ।

**मुख्य बिंदु :-** बादलों को क्रांति दूत के रूप में चित्रित किया गया है | प्रस्तुत कविता में निराला की प्रगतिवादी चेतना देखने को मिलती है। प्रस्तुत कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। कवि ने पूँजीपतियों के विलासी जीवन पर कटाक्ष किया है ।तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

### काव्यांश 1

तिरती है समीर - सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया
यह तेरी रण - तरी
भरी आकांक्षाओं से ,
धन ,भेरी - गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
जनजीवन की ,ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं ,ऐ विप्लव के बादल।
फिर- फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार
हृदय थाम लेता संसार ,
सुन - सुन घोर वज्र - हुंकार |
अशनि - पात से शापित उन्नत शत-शत वीर ,
क्षत -विक्षत हत अचल - शरीर
गगन - स्पर्शी स्पर्धा धीर |

**1. प्रस्तुत कविता बादल राग के रचनाकार का नाम है-**

(क) रामधारी सिंह दिनकर (ख) उमाशंकर जोशी
(ग) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (घ) रघुवीर सहाय

**2. प्रस्तुत कविता में बादल किस का प्रतीक है**?

(क) शोषक का (ख) शांति का (ग) क्रांति का (घ) शोषित का

**3. कविता में रण - तरी किस से भरी होने की बात कही गई है**?

**(**क) आकांक्षाओं से (ख)गर्जना से (ग) धन - दौलत से (घ) अस्त्र-शस्त्र से

**4. यह तेरी रण - तरी यहाँ रण –तरी शब्द का अर्थ है-**

**(**क) धन से भरी नौका (ख)सुंदर नौका (ग)युद्ध की नौका (घ) उपर्युक्त कोई नहीं

**5. बादल राग कविता में सुख को कैसा बताया गया है** ?

**(**क) स्थिर (ख) चंचल (ग) अस्थिर (घ) अदृश्य

**6. 'निर्दय विप्लव की प्लावित माया' यहाँ विप्लव शब्द का अर्थ है -**

**(**क) बादल (ख) नौका (ग)शोषण (घ) क्रांति

**7. संसार भयभीत क्यों हो जाता है**?

**(**क) घनघोर बारिश को देख कर (ख) क्रांति रूपी बादलों की बज्ररूपी हुँकार को सुनकर

**(**ग) विप्लव के बादलों को देखकर (घ) रण –तरी को देखकर

**उत्तर** – 1. **ग** 2. **ग** 3. **क** 4. **ग** 5. **ग** 6. **घ** 7. **ख**

## काव्यांश-2

हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार
शस्य अपार ,
हिल - हिल।
खिल - खिल
हाथ हिलाते,
तुझे बुलाते
विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते |
अट्टालिका नहीं है रे
आतंक - भवन
सदा पंक पर ही होता
जल – विप्लव - प्लावन
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर ,
रोग - शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर |
रुद्र कोष है ,क्षुब्ध तोष
अंगना अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं |
धनी, वज्र - गर्जन से बादल
त्रस्त नयन - मुख ढाँप रहे हैं
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ए विप्लव के वीर |
चूस लिया है उसका सार
हाड़ - मात्र ही है आधार ,
ऐ जीवन के पारावार ।

**1. विप्लव - रव से छोटे ही हैं शोभा पाते| यहाँ छोटे शब्द प्रयुक्त हुआ है**

(क) शोषित वर्ग के लिए (ख) शोषक वर्ग के लिए
(ग) मध्यम वर्ग के लिए (घ) उच्च वर्ग के लिए

**2. जल -विप्लव - प्लावन किस पर होता है ?**

(क) जलज पर (ख) नौका पर (ग) कीचड़ पर (घ) नभ पर

**3. कवि ने अट्टालिकाओं को क्या कहा है?**

(क) राज महल (ख) सभा भवन (ग) व्यामशाला (घ) आतंक भवन

**4. शैशव का सुकुमार शरीर किसमें हँसता रहता है?**

(क) रोग शोक में (ख) आनंद में (ग) दु:ख में (घ) उपर्युक्त सभी में

**5. धनी वर्ग के लोग क्यों काँप रहे हैं ?**

(क) सत्ता के डर से (ख) शोषण के डर से
(ग) घनघोर बारिश के डर से (घ) क्रांति एवं विद्रोह के डर से

**6. विप्लव का वीर कौन है और उसे कौन बुलाता है?**

(क) बादल, और उसे व्याकुल मजदूर बुलाता है (ख) क्रांतिकारी,और उसे व्याकुल कृषक बुलाता है |
(ग) बादल ,और उसे व्याकुल कृषक बुलाता है (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**7. धनी वर्ग क्रांति के डर से क्या कर रहे हैं ?**

(क) प्रेमिकाओं के अंगों से लिपट रहे हैं (ख) अपने आँख और मुँह को ढक लेते हैं
(ग) भयभीत हो रहे हैं (घ) उपर्युक्त सभी

**8. किसकी भुजाएँ पूँजीपति वर्ग के शोषण के कारण जर्जर हो चुकी हैं ?**

(क) मजदूर की (ख) किसान की (ग) नौकर पेशी लोगों की (घ) उपर्युक्त सभी की

**उत्तर- 1 क, 2 ग , 3घ , 4क, 5घ , 6ग 7घ 8ख**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1. बादल राग शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए-**

उत्तर - बादल राग क्रांति की आवाज का परिचायक है । जिस प्रकार बादलों के आने से नए पौधे हर्षित होते हैं उसी प्रकार क्रांति होने से आम आदमी को विकास के नए अवसर मिलते हैं| अतः यह कविता जनक्रांति की प्रेरणा देती है। इस दृष्टि से यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है ।

**2. अस्थिर सुख पर दु;ख की छाया पंक्ति में दु;ख - छाया किसे कहा गया है ?**

उत्तर - क्रांति की संभावना को दुःख की छाया कहा गया है ।क्रांति शोषण पर आधारित व्यवस्था को नष्ट कर देती है जिससे उन लोगों का सुख छिन जाता है जो दूसरों के शोषण के कारण संपन्न बनते हैं। शोषक और पूँजीपतियों को क्रांति के कारण अपने सुख - साधनों के छिन जाने का भय निरंतर बना रहता है इस कारण उनके सुख को अस्थिर कहा गया है उस पर दु;ख की छाया सदा मंडराती रहती है।

**3. अशनि - पात से शापित उन्नत शत-शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है ?**

उत्तर- अशनि - पात से शापित उन्नत शत - शत वीर पंक्ति में क्रांति के विरोधी तथा शोषण के कारण समृद्ध और शक्तिशाली लोगों की ओर संकेत किया गया है| वे दूसरों के धन को छीन कर उनके श्रम का शोषण करके धनवान और शक्तिशाली तो बन जाते हैं परंतु क्रांति का प्रहार उनको उसी प्रकार नष्ट कर देता है जैसे विद्युत पात होने से बड़े-बड़े पर्वतों की ऊंची तथा कठोर चोटियाँ क्षणभर में टूट - फूट जाती हैं।

**4. यह तेरी रण - तरी ,भरी आकांक्षाओं से का क्या आशय है?**

उत्तर- इस पंक्ति के माध्यम से कवि क्रांति के दूत बादलों को संबोधित करते हुए कहता है कि जिस प्रकार युद्ध रूपी नौका युद्ध की सामग्री से भरी होती है उसी प्रकार से तुम्हारे अंदर जन सामान्य की अनेक कामनाएँ भरी हुई हैं जिन्हें तुम्हें वर्षा के माध्यम से पूरा करना है ।

**5. हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार के माध्यम से कवि ने किनकी ओर संकेत किया है और क्यों ?**

उत्तर - कवि ने छोटे पौधे के माध्यम से पिछड़े वर्गों और शोषितों की ओर संकेत किया है। जो संपन्न वर्ग के शोषण के कारण ही दीन - हीन दशा प्राप्त कर किसी प्रकार जीवन जी रहे हैं । वे क्रांति रूपी बादलों के आगमन पर प्रसन्न है कि क्रांति के बाद शोषक वर्ग मिट जाएगा और शोषित वर्ग को फूलने - पनपने का उचित अवसर प्राप्त होगा ।

**7. बादल राग कविता में विप्लव के वीर किसे कहा गया है ? कवि के द्वारा उसका आह्वान क्यों किया जा रहा है?**

उत्तर - बादल राग कविता में विप्लव के वीर बादल को कहा गया है। बादल क्रांति का प्रतीक है। क्रांति द्वारा विषमता दूर करने तथा किसान मजदूर वर्ग का जीवन खुशहाल बनाने के लिए उसको बुलाया जा रहा है । किसान और मजदूर वर्ग की दुर्दशा के कारण पूँजीपतियों द्वारा उनका शोषण किया जाता है।

**8. बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन - किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?**

उत्तर- बादलों के आगमन से प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन होते हैं -बादल गर्जन करते हुए मूसलधार वर्षा करते हैं | पृथ्वी से पौधों का अंकुरण होने लगता है | बिजली चमकती है तथा उसके गिरने से पर्वत शिखर टूटते हैं। हवा चलने से छोटे-छोटे पौधे हाथ हिलाते से प्रतीत होते हैं। गर्मी के कारण दु:खी प्राणी बादलों को देखकर प्रसन्न हो जाते हैं।

**9. बादल राग कविता जीवन निर्माण के नए राग का सूचक है स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर - बादल राग कविता में कवि ने लघु मानव की खुशहाली का गीत गाया है | कवि आम व्यक्ति के लिए बादल का आह्वान क्रान्ति के रूप में करता है | किसानों तथा मजदूरों की आकांक्षाएँ बादल को नव निर्माण के राग के रूप में पुकार रही हैं | क्रांति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है बादलों के अंग अंग में बिजलियाँ सोई हैं | वे वज्रपात से शरीर आहत होने पर भी हिम्मत नहीं हारते| धरती के भीतर सोए अंकुर नवजीवन की आशा में सिर ऊंचा करके बादल की ओर देख रहे हैं| क्रांति के बाद छोटे पौधे ही अधिक खुश होंगें ।

**10. बादल राग कविता के आधार पर भारतीय कृषक की दुर्दशा के बारे में बताइए ।**

उत्तर - भारतीय कृषक पूरी तरह शोषित है| वह गरीब व बेसहारा है । शोषक वर्ग ने उनसे उनके जीवन की सारी सुख सुविधाएँ छीन ली है| उनका शरीर हड्डियों का ढाँचा मात्र रह गया है|

**11. बादल राग कविता में कवि निराला की किस विचारधारा का पता चलता है ?**

उत्तर - बादल राग कविता में कवि की प्रगतिवादी क्रांतिकारी विचारधारा का ज्ञान होता है । वह समाज में व्याप्त पूँजीवाद का घोर विरोध करता हुआ दलित शोषित वर्ग के कल्याण की कामना करता हुआ उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाना चाहता है। कवि ने बादलों की गर्जना तथा बिजली की कड़क को जनक्रांति के रूप में बताया है । इस जन क्रांति में धनी वर्ग का पतन होता है और छोटे वर्ग जैसे मजदूर, गरीब ,शोषित आदि उन्नति करते हैं।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**1. बादल राग कविता में अट्टलिका को आतंक का भवन क्यों कहा गया है?**

उत्तर ,- बादल राग कविता में अट्टालिका को आतंक भवन इसलिए इसलिए कहा गया है क्योंकि इन भवनों में शोषण के नए-नए तरीके खोजे जाते हैं और उन्हीं तरीकों के माध्यम से मजदूरों और किसानों को शोषित किया जाता है, पीड़ित किया जाता है उन पर आतंक का साम्राज्य कायम किया जाता है ।

**2. बादल राग कविता में जीवन के पारावर किसे कहा गया है तथा क्यों?**

उत्तर - बादल राग कविता में जीवन के पारावार बादल को कहा गया है | बादल वर्षा कर जीवन को बनाए रखते हैं| वर्षा से फसल उत्पन्न होती है तथा पानी की कमी दूर होती है| इसके अलावा क्रांति से शोषण समाप्त होता है जीवन खुशहाल बनता है।

**3. रूद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष किसके लिए कहा गया है और क्यों ?**

उत्तर-क्रांति होने पर पूँजीपति वर्ग का धन छिन जाता है कोष रिक्त हो जाता है । उसके धन की आमद समाप्त हो जाती है । उसका संतोष भी अब बीते दिनों की बात हो जाता है।

**4. क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है उनका मुख ढाँपना किस मानसिकता का द्योतक है? बादल राग कविता के आधार पर उत्तर दीजिए ।**

उत्तर - शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है , परंतु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है | वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है | उसकी शांति समाप्त हो जाती है | शोषक वर्ग का मुख ढाँपना उनकी कमजोर स्थिति को दर्शाता है| क्रांति के परिणामों से वे भयभीत हैं |

**5. सदा पंख पर ही होता जल विप्लव प्लावन | पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- इसका आशय है कि वर्षा से जो बाढ़ आती है वह सदा कीचड़ भरी धरती को ही डुबोती है अर्थात शोभा की मार सबसे अधिक दबे - कुचले तथा गरीबों को ही झेलनी पड़ती है।

**6. विप्लवी बादल की युद्ध रुपी नौका की क्या-क्या विशेषताएं हैं ?**

उत्तर - बादलों के अंदर आम आदमी की इच्छाएं भरी हुई है | जिस तरह से युद्ध की नौका में युद्ध की सामग्री भरी होती है |युद्ध की तरह बादल के आगमन पर रणभेरी बजती है ।सामान्य जन की आशाओं के अंकुर एक साथ फूट पड़ते हैं।

**7. छोटे ही हैं शोभा पाते में निहित लाक्षणिकता क्या है?**

उत्तर - बचपन में मनुष्य निश्चिन्त होता है | निर्धन मनुष्य उस बच्चे के समान है जो क्रांति के समय भी निर्भय होता है और अंततः लाभान्वित होता है |

**8. बादल के बरसने का गरीब एवं धनी वर्ग से क्या संबंध जोड़ा गया है?**

उत्तर- बादल के बरसने से गरीब वर्ग आशा से भर जाता है एवं धनी वर्ग अपने विनाश की आशंका से भयभीत होता है |

**9. बादल राग कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है?**

उत्तर - कविता का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त विषमता को समाप्त करना है| इस विषमता को दूर करने का एकमात्र उपाय क्रांति है | यहाँ क्रांति से अभिप्राय समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाना है | साथ ही एक वर्गहीन व्यवस्था स्थापित करना है।

**10. पृथ्वी में सोए अंकुर किस आशा से ताक रहे हैं ?**

उत्तर - बादल के बरसने से बीज अंकुरित हो लहलहाने लगते हैं | अतः बादल की गर्जना उनमें आशाएँ उत्पन्न करती है| वे सिर ऊँचा कर बादलों के आने की राह निहारते हैं | ठीक उसी प्रकार निर्धन व्यक्ति शोषक के अत्याचार से मुक्ति पाने और अपने जीवन की खुशहाली की आशा में क्रांति रुपी बादल की प्रतीक्षा करते हैं।

# 7. कवितावली- तुलसीदास

**पाठ का सार –**

तुलसीदास, जब कलियुग का वर्णन करते हैं तो वे अपने युग की विषमताओं को ध्यान में रखते हैं। उनकी कविता का क्षेत्र हिंदी भाषी क्षेत्र है और समय है 16-17 वीं शताब्दी। मानस के शुरुआती तथा अंतिम अंशों के साथ-साथ 'कवितावली' में भी कलियुग का वर्णन मिलता है। इन दोनों रचनाओं में कलियुग का प्रभाव एवं उनसे दूर रखने वाले राम नाम के माहात्म्य वर्णन एक साथ चलता है। तुलसीदास कलियुग को कुपंथ, कुतर्क, कपट, कुचाल, दंभ तथा पाखंड का स्रोत मानते हैं और रामनाम का गुण इन बुराइयों को जलाने वाला ईंधन है। कलियुग रूपी घास-पात को राम नाम रूपी नदी समूल उखाड़ फेंकती है। रामनाम ही कलियुग के समस्त पापों तथा उससे उत्पन्न ग्लानि को दूर करता है। दुख दरिद्र तथा दोषों का नाश करने वाला है-रामनाम।

गोस्वामी तुलसीदास अपने वर्णन में चित्रात्मकता के लिए प्रसिद्ध हैं। इसी कला के उदाहरण के रूप में दैन्य और गरीबी के चित्र तो मिलते ही हैं - दरिद्रता रूपी रावण का रुपक भी बार-बार मिलता है। जिस तरह रावण का संहार आवश्यक है, उसी तरह दरिद्रता उत्पन्न करने वाले दुष्ट सामंती शासन का भी विनाश आवश्यक है। किसानों, बनियों और कारीगरों की कैसी फटेहाली और दुर्दशा थी, इसे खास तौर पर कवितावली के उत्तरकांड के अनेक पदों में दर्शाया गया है |

### काव्यांश 1

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊंचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेट की।।

**1. इस संसार में सभी लोग विविध प्रकार के कार्य किस कारण करते हैं ?**

(क) ईर्ष्या वश (ख) दूसरे से आगे बढ़ने हेतु

(ग) पेट की क्षुधा शांत करने हेतु (घ) शालीन जीवन यापन हेतु

**2. तुलसीदास के अनुसार मनुष्य के पेट की आग का शमन किस प्रकार हो सकता है ?**

(क) राजा की कृपा से (ख) श्री राम की कृपा से

(ग) पर्याप्त बारिश होने से (घ) श्री कृष्ण के अनुग्रह से

**3. बड़वाग्नि का अर्थ है ?**

(क) जंगल की आग (ख) चूल्हे की आग

(ग) समुद्र की आग (घ) इनमे से कोई नहीं

**4. किसबी का क्या अभिप्राय है?**

(क) किसान (ख) मजदूर (ग) जादूगर (घ) कवि

**5. पेट की अग्नि किससे बढ़ कर है?**

(क) जंगल की आग से (ख) लालच की आग से

(ग) समुद्र की आग से (घ) संसार की आग से

**उत्तर-1- (ग) 2-(ख) 3-(ग) 4-(ख) 5-(ग)**

### काव्यांश -2

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सघिमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों ''कहाँ जाई, का करी?''
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम। रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।।

**1. रोजगार विहीन प्रजा किस चिंता में मग्न है ?**

| | |
|---|---|
| (क) आय का कोई साधन नहीं होने से | (ख) राज्य द्वारा कोई प्रबंध न होने से |
| (ग) इन दोनों में से कोई नहीं | (घ) 'क' और 'ख' दोनों |

**2. कवि ने दरिद्रता की तुलना रावण से क्यों की है ?**

(क) रावण जैसा व्यापक प्रभाव होने से (ख) रावण के भय को दिखाने हेतु
(ग) रावण के प्रति अपने क्रोध को प्रदर्शित करने हेतु (घ) रावण के प्रकोप से सब ओर त्राहि त्राहि मच गई थी|

**3. दुरित-दहन में कौन सा अलंकार है?**

(क) उपमा (ख) रूपक (ग) अनुप्रास (घ) अतिशयोक्ति

**4. काव्यान्श की भाषा क्या है?**

(क) अवधी (ख) ब्रज (ग) सधुक्कड़ी (घ) खड़ी बोली

**5. चाकर का क्या अर्थ है ?**

(क)चोकर (ख)नौकर (ग)चोर (घ)सेवक

**उत्तर-1- (घ) 2-(क) 3-(ग) 4-(ख) 5-(ख)**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**1. माँग कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।। आशय स्पष्ट कीजिए -**

उत्तर: इन दोहे के द्वारा तुलसीदास जी ने समाज से अपनी तटस्थता के बारे में कहा है। उन्होंने अपने स्वाभिमान रक्षा का भी संकेत दिया है। उन्होंने कहा है कि समाज के बेबुनियाद बातों से उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह किसी पर आश्रित नहीं है। वे केवल राम भक्ति में लीन रहते हैं। संसार से उन्हें कोई लेना देना नहीं है। इन दोहे में उन्होंने कहा है कि वह भिक्षा मांग कर अपना पेट पाल लेते हैं और रात मस्जिद में काट लेते हैं। उन्हें किसी से कोई मतलब नहीं है।

**2. ऊँचे नीचे करम, धरम-अधरम करि, पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।। आशय स्पष्ट कीजिए -**

उत्तर: गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने काल की आर्थिक दशा का यथार्थ परक चित्रण किया है। उस दौर में लोग पेट भरने के लिए कोई भी कार्य कर लेते थे। लोगों का काम सिर्फ पेट भरना, पेट की आग बुझाना था। पेट की आग बुझाने के लिए यह नहीं देखते थे कि वह काम उचित है कि अनुचित। उन्हें कर्म की प्रवृत्ति और तरीके की कोई परवाह नहीं थी। लोग अपने पेट को शांत करने के लिए, अपने संतानों तक को बेच देते थे। अर्थात पेट भरने के लिए लोग कोई भी काम कर लेते थे।

**3. तुलसी के युग की बेकारी के क्या कारण हो सकते हैं ? आज की बेकारी की समस्या के कारणों को स्पष्ट करें -**

उत्तर: तुलसी के युग में बेकारी के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं- खेती के लिए पानी उपलब्ध न होना, बार-बार अकाल पडना,अराजकता,व्यापार व वाणिज्य में गिरावट |

आज बेकारी के कारण पहले की अपेक्षा भिन्न हैं- भ्रष्टाचार,शारीरिक श्रम से नफ़रत करना,कृषि-कार्य के प्रति अरुचि,जनसंख्या विस्फोट,अशिक्षा तथा अकुशलता।

### लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1. तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी? धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ/काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ। इस सवैया में काहू के बेटा सों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आती?**

उत्तर:तुलसीदास के युग में जाति संबंधी नियम अत्यधिक कठोर हो गए थे। तुलसी के संबंध में भी समाज ने उनके कुल व जाति पर प्रश्नचिहन लगाए थे। कवि भक्त था तथा उसे सांसारिक संबंधों में कोई रुचि नहीं थी। वह कहता है कि उसे अपने बेटे का विवाह किसी की बेटी से नहीं करना। इससे किसी की जाति खराब नहीं होगी क्योंकि लड़की वाला अपनी जाति के वर ढूँढ़ता है। पुरुष-प्रधान समाज में लड़की की जाति विवाह के बाद बदल जाती है। तुलसी इस सवैये में अगर अपनी बेटी की शादी की बात करते तो संदर्भ में बहुत अंतर आ जाता। इससे तुलसी के परिवार की जाति खराब हो जाती। दूसरे, समाज में लड़की का विवाह न करना गलत समझा जाता है। तीसरे, तुलसी बिना जाँच के अपनी लड़की की शादी करते तो समाज में जाति-प्रथा पर कठोर आघात होता। इससे सामाजिक संघर्ष भी बढ़ सकता था।

**2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही करता सकता है - तुलसी का यह काव्य-सत्य, क्या इस समय का भी युग-सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।**

उत्तर: मनुष्य का जन्म, कर्म, कर्म फल, सब ईश्वर के अधीन है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं पेट के आग को बुझाने का कार्य सिर्फ भगवान (राम) द्वारा किया जा सकता है। अर्थात, तुलसीदास जी कहते हैं कि पेट की आग केवल भगवान की भक्ति से ही बुझ सकती है। यदि मनुष्य भगवान की भक्ति में लीन हो जाए तो भगवान उसकी पेट की आग बुझाने में सक्षम रहते हैं। ईश्वर से फल प्राप्त करने के लिए दोनों के बीच संतुलन होना बहुत ही आवश्यक है। कड़ी मेहनत के साथ-साथ पेट की शांति के लिए भगवान का कृपा होना भी बहुत जरूरी होता है।

**3.“धूत कहौ... .... .. ... ” वाले छंद में ऊपर से सरल व नीरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत, एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहां तक सहमत है?**

उत्तर: गोस्वामी तुलसीदास जी के स्वाभिमान पर किसी को संदेह नहीं है। उन्होंने इस कविता में अपना स्वाभिमान व्यक्त किया है। वे एक सच्चे भक्त हैं और अपने प्रभु के प्रति पूर्णतया समर्पित है। उन्होंने कभी भी अपने स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं किया। उन्होंने हमेशा एक ही इशारे से राम की पूजा की। यह कविता, भक्त हृदय की भक्ति की गहराई और गहनता में, भक्ति का जीवंत चित्रण है। तुलसीदास जी का, जो राम भक्ति में लगे हैं, समाज के कटाक्ष पर कोई प्रभाव नहीं है। वह किसी पर निर्भर नहीं है। वे अपना जीवन भीख मांग कर जीते हैं और मस्जिद में सोते हैं। वह बाहर से सीधे एवं कोमल है परंतु उनके मन में स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा है।

**4. “पेट ही पचत, बचत बेटा बेटकी”, तुलसी के ही युग का नहीं बल्कि आज के युग का भी सत्य है। भुखमरी में किसानों की आत्महत्या और संतानों को भी बेच डालने की हृदय विदारक घटनाएं घटती रहती है। वर्तमान परिस्थितियों और तुलसी के युग की तुलना करें।**

उत्तर: तुलसीदास के युग में लोगों की हालत इतनी खराब थी कि वह अपने पेट भरने के लिए अपने संतानों तक को बेच देते थे। आज के युग में भी ऐसी घटनाएं होती ही रहती है। अत्यधिक गरीब और पिछड़े हुए क्षेत्रों में ऐसी घटनाएं होती ही रहती है। भुखमरी के कारण किसान खुद की भी हत्या कर लेते हैं और कई लोग तो आज भी अपने सन्तानो को बेच देते है। अनैतिकता दोनों युगो में सामान दिखाई देती है।

**5. 'कवितावली' के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी।**

उत्तर:'कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।

# लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप (तुलसीदास)

**पाठ का सार-**राम-रावण युद्ध के प्रसंग में जब लक्ष्मण को शक्ति-बाण लग जाती है तब सुषेण वैद्य के निर्देश पर हनुमान संजीवनी बूटी लेने जाते हैं। आधी रात बीतने पर भी जब हनुमान बूटी लेकर नहीं लौटते तो राम अपने अनुज के लिए चिंतित होकर विलाप करने लगते हैं। मूर्च्छित लक्ष्मण को राम विलाप करते हैं तथा कहते हैं कि तुम तो मुझे कभी दुखी नहीं देख सकते। मेरे लिए तुमने माता-पिता को त्याग वन के कष्ट को सहन करना स्वीकार किया। फिर आज मेरी व्याकुलता देखकर भी तुम क्यों नहीं उठते। राम कहते हैं कि यदि यह जानता कि वन में आने पर तुमसे मेरा वियोग होगा तो पिता की आज्ञा का पालन कर वन आता ही नहीं। संसार में संसार, पुत्र, स्त्री, अर्थ आदि बार-बार प्राप्त हो जाता है किंतु सहोदर भाई प्राप्त नहीं हो सकता। यह जानकर जाग जाओ। यदि मैं जीवित रहा तो अयोध्या जाकर सबको क्या मुँह दिखाऊँगा। तुम अपनी माँ के प्रिय पुत्र हो मुझे तुम्हारा परम हितैषी जानकर उन्होंने तुम्हें मुझे सौंपा था। अब यदि मैं वापस गया तो लोग यह कहेंगे कि मैंने पत्नी के कारण भाई को खो दिया। ये विचार करते हुए राम की आँखों से आँसू बह चले। इसी क्रम में शिव पार्वती को कहते हैं कि राम के इस व्यवहार को देखकर यह समझना उचित है कि भगवान ने मनुष्य रूप धारण कर मनुष्योचित व्यवहार कर रहे हैं। इसी क्रम में हनुमान संजीवनी बूटी लेकर वहाँ उपस्थित हो जाते हैं तथा राम ने हनुमान को अपने गले से लगा लिया। समस्त सेना में व्याप्त करुणा उत्साह में बदल जाती है। वैद्य के उपचार से लक्ष्मण ठीक हो जाते हैं तथा राम ने वैद्य को ससम्मान लंका पहुँचाया। लक्ष्मण के ठीक होने का समाचार रावण को प्राप्त होता है तथा वह कुंभकरण के पास पहुँचता है तथा अनेक उपायों से उसे जगाकर संपूर्ण वृत्तांत उसे सुनाता है। रावण की बातों को सुनकर कुंभकरण दुखी होकर कहते हैं कि तूने स्वयं जगतजननी जानकी का अपहरण किया और अब अपना कल्याण चाहता है?

**पाठ के स्मरणीय तथ्य-**

1. यह प्रसंग रामचरित मानस के लंका काण्ड से लिया गया है जो लक्ष्मण को मेघनाद द्वारा मूर्च्छित करने के संदर्भ में लिखा गया है।

2. हनुमान के पर्वत सहित संजीवनी बूटी ले जाने पर अनिष्ट की आशंका से भरत उन्हें उतरने पर मज़बूर करते हैं तथा समस्त घटनाचक्र जान कर उन्हें शीघ्र लक्ष्मण के पास भेजते हैं। हनुमान भरत के चरित्र तथा व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं।

3. राम आधी रात बीतने पर भी हनुमान के न आने से बेचैन हो जाते हैं तथा सामान्य मनुष्यों की तरह विचलित होकर कभी पिता की अवज्ञा करने और कभी पत्नी की हानि को सामान्य हानि बताने की बात करते हैं। राम सोचते हैं कि भ्रातृ-शोक का यह कलंक वह कैसे मिटाएँगे तथा लक्ष्मण के बिना अपूर्ण व्यक्तित्व के होकर कैसे जीवन व्यतीत करेंगे? माता को क्या उत्तर देंगे?वह लक्ष्मण से कहते हैं कि तुम मेरा दुख कभी नहीं देख सकते थे तो आज मुझे व्यथित देखकर भी क्यों नहीं उठते?

4. शिव भगवान पार्वती माता को इस स्थिति की समीक्षा करते हुए समझाते हैं कि राम का यह व्यवहार केवल नर-लीला है वास्तव में वे भगवान के ही स्वरूप हैं।

5. इसी क्रम में हनुमान का आगमन होता है तथा सभी लोग तथा श्रीराम उत्साह से भर जाते हैं।

6. लक्ष्मण के ठीक होने के संवाद को सुनकर रावण कुंभकरण के पास जाता है तथा युद्ध में हुई हानि के विषय में बताता है। कुंभकरण समस्त संवाद को सुनकर रावण को कहता है कि तुमने जगत जननी सीता का अपहरण किया है। अतः तुम्हारा कल्याण होना असंभव है।

### काव्यांश 1

तव प्रताप उर राखि प्रभउ जैहउँ नाथ तुरंत।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंत।।
भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार।
मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार।।

**1. इन पंक्तियों में किस-किस के बीच संवाद हुआ है?**

क). राम और जामवंत ख). राम और रावण ग). राम और हनुमान घ). भरत और हनुमान

**2. किसकी आज्ञा प्राप्त कर हनुमान कार्य संपन्न करने चलते हैं?**

क). श्रीराम की ख). विभीषण की ग). भरत की घ). सीता की

**3. भ़रत और हनुमान में किस भाव की समानता दिखती है?**

क). भक्ति की ख) ईर्ष्या की ग). उत्साह की घ). मित्रता की

**4. हनुमान भरत की किस बात से प्रभावित हुए?**

क). शक्ति और गुणशीलता से ख). विनयशीलता से ग). उत्साह से घ). उपर्युक्त सभी से

**5. 'प्रभु पद प्रीति अपार' में प्रयुक्त अलंकार है?**

क). उपमा ख). अनुप्रास ग). रूपक घ). अतिशयोक्ति

**उत्तरमाला- 1-घ 2-ग 3-क 4-क 5-ख**

## काव्यांश 2

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु बचन मततेउँ नहिं ओहू।।

**1. पद्यांश में 'बंधु' किसे कहा गया है?**

क) हनुमान को ख) लक्ष्मण को ग) विभीषण को घ) सुग्रीव को

**2. 'आतप' का क्या अर्थ है?**

क) धूप ख). वर्षा ग). ठंड घ) हवा

**3. पद्यांश में राम के व्यक्तित्व के किस पहलू का पता चलता है?**

क) सरल ख). दैवीय ग). मानवीय घ). धैर्यवान

**4. लक्ष्मण किस कारण से नहीं उठ रहे थे?**

क). थकान के कारण ख). शक्ति-बाण लगने के कारण

ग) छल-प्रपंच के कारण घ). राम के धैर्य की परीक्षा लेने के कारण

**5. 'जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू'- में कौन-सा अलंकार है?**

क. उपमा ख). अनुप्रास ग). रूपक घ). अतिशयोक्ति

**उत्तरमाला- 1-क 2-क 3-ग 4-ख 5-ख**

## काव्यांश 3

जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवल मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।।
बहु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

**1. दिए गए पद्य में श्रीराम ने किसके महत्व को दर्शाया है?**

क). भाई के ख). पत्नी के ग). मित्र के घ). पिता के

**2. दिए गए कथन तथा तर्क को पढ़कर दिए गए उत्तरों से सही विकल्प चुनिए।**

**कथन- राम चिंतित हैं कि अयोध्या जाकर लोगों का सामना कैसे करेंगे?**

**तर्क-लोग यह आरोप लगाएँगे कि राम ने पत्नी के लिए प्रिय भाई को खो दिया।**

क). केवल कथन सही है ख). केवल तर्क सही है

ग). कथन तथा तर्क दोनों सही है घ). कथन तथा तर्क दोनों सही नहीं है

**3. पद्यांश में किस अपयश की बात कही गयी है?**

क). भाई की मृत्यु का ख). पत्नी के अपहरण का ग). पिता की मृत्यु का घ). युद्ध की हार का

**4. राम की आँखों से बहने वाले आँसुओं से क्या प्रतीत होता है?**
क). भाई के प्रति प्रेम ख). युद्ध में आसन्न पराजय का बोध
ग). असहायता का बोध घ). इनमें से कोई नहीं

**5. लक्ष्मण के अभाव में राम ने अपने जीवन की तुलना किससे नहीं की है?**
क). बिना सूँढ़ के हाथी से ख). बिना मणि के साँप से
ग). बिना पंख के पक्षी से घ). बिना जल के सागर से

**उत्तरमाला- 1-क 2-ग 3-क 4-क 5-घ**

## अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न

**1. श्रीराम ऐसा क्यों कहते हैं कि अब तुम्हारा मेरे प्रति अनुराग नहीं रहा-**
क). राम का आदेश न सुनने के कारण ख). राम को पीड़ित देखकर भी न उठने के कारण
ग). बड़े भाई का असम्मान करने के कारण घ). सभी विकल्प सही हैं

**2. 'नारि हानि विसेष छति नाहीँ' कथन क्या प्रदर्शित करता है-**
क). श्रीराम का नारियों के प्रति असम्मान ख). श्रीराम का अपनी पत्नी के प्रति असम्मान
ग). समाज की पुरुषवादी विचारधारा घ). तत्कालीन समाज की नारी विषयक अवधारणा

**3. श्रीराम आदर्श पुरुष होकर भी विलाप क्यों कर रहे थे?**
क). समाज की आलोचना के भय से ख). सीता से बिछुड़ने के कारण
ग). युद्ध में पराजय के कारण घ). भाई की मरणासन्न स्थिति देखकर

**4. लक्ष्मण को शक्ति-बाण किसने मारा था?**
क). रावण ने ख) विभीषण ने ग). मेघनाद ने घ). कुंभकरण ने

**5. संजीवनी बूटी लाने का सुझाव किसने दिया?**
क). जामवंत ने ख). सुग्रीव ने ग). सुषेण ने घ). नल-नील ने

**6. लक्ष्मण के ठीक होने का समाचार पाकर रावण किसके पास गया?**
क). कुंभकरण के ख). राम के ग). शिव के घ). मेघनाद के

**7. हनुमान के आगमन की तुलना किससे की गई है?**
क). करुण रस में वीर रस के आविर्भाव से ख). वीर रस में करुण रस के आविर्भाव से
ग). श्रृंगार रस के आगमन से घ). वीर रस में रौद्र रस के आविर्भाव से

**8. राम किसे देखकर प्रसन्न हुए?**
क). सुषेण वैद्य को ख). लक्ष्मण को ग). हनुमान को घ). विभीषण को

**9. 'दसकंधर' शब्द किसके लिए प्रयुक्त किया गया है?**
क). रावण के लिए ख). कुंभकरण के लिए ग). मेघनाद के लिए घ). सभी राक्षसों के लिए

**10. 'अब सठ चाहत कल्याण'- यह संवाद किसने किसे कहा?**
क). रावण ने राम को ख). कुंभकरण ने रावण को
ग) मेघनाद ने लक्ष्मण को घ). राम ने रावण को

**उत्तरमाला- 1-ख 2-घ 3- घ 4- ग 5- ग 6- क 7- क 8-ग 9- क 10-ख**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

### 1. हनुमान भरत की किन बातों से प्रभावित हुए?

उत्तर- हनुमान राम के प्रति भरत की अटूट प्रीति, उनके बाहुबल, चरित्र तथा गुणशीलता से प्रभावित हुए तथा उनके मन में उपस्थित सभी शंकाओं का निवारण हो गया।

### 2. भरत तथा राम के संबंधों पर पाठ के आधार पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- भरत और राम के संबंध स्नेह तथा प्रेम से भरपूर थे। भरत राम का अत्यधिक सम्मान करते थे। हनुमान से राम का परिचय पाकर भी वे भावुक हो उठे तथा तुरंत उन्हें संजीवनी बूटी पहुँचाने का निर्देश दिया।

### 3. तुलसीदास ने राम के किस स्वरूप का इस प्रसंग में वर्णन किया है?

उत्तर- तुलसीदास के राम मर्यादापुरुषोत्तम राम हैं। यहाँ वे नर रूप धारण कर मनुष्यों की तरह व्यवहार करते हैं। यह उनकी मनुज-लीला का वर्णन है जिसे वे शिव-पार्वती संवाद द्वारा स्पष्ट करते हैं।

### 4. राम ने भाई के प्रेम के आगे किसे तुच्छ माना है?

उत्तर- राम ने भाई के प्रेम के आगे पुत्र, पत्नी, भवन, परिवार समस्त भौतिक संपदाओं तथा पारिवारिक संबंधों को हीन माना है क्योंकि ये सभी बार-बार प्राप्त किये जा सकते हैं किंतु भाई प्राप्त नहीं हो सकता।

### 5. लक्ष्मण के बिना राम ने अपने जीवन की कल्पना कैसे की है?

उत्तर- लक्ष्मण के बिना राम ने अपने जीवन की कल्पना, पंखहीन पक्षी, मणिहीन सर्प, सूँडहीन हाथी के समान की है। अर्थात् उन्होंने अपना जीवन लक्ष्मण के बिना सर्वथा व्यर्थ माना है।

### 6. लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम क्या सोचने लगे?

उत्तर- लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम अत्यधिक भावुक और व्याकुल हो उठे। वे सोचने लगे कि वन में आकर उन्होंने पहले ही अपनी जानकी को खो दिया और अब भाई को भी खो देंगे। ऐसा होने पर जीवन-भर का कलंक मेरे सर होगा तथा मैं अयोध्या वापस जाकर किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहूँगा।

### 7. पठित पाठ के आधार पर लक्ष्मण के प्रति राम के स्नेह-संबंधों पर टिप्पणी करें।

उत्तर- लक्ष्मण के प्रति राम के मन में अगाध स्नेह है। युद्ध में मूर्च्छित होने पर भी वे स्वयं को भाई की स्थिति के लिए दोषी समझते हैं। भाई को खोने की पीड़ा में पत्नी-वियोग को भी भूल जाते हैं तथा संसार के समस्त संबंधों व संपदाओं से भाई के प्रेम और सान्निध्य को ऊपर रखते हैं।

### 8. कुंभकरण ने रावण को क्या प्रतिक्रिया दी?

उत्तर- कुंभकरण रावण की बातों को सुनकर दुखी हुआ किंतु उसने रावण को स्पष्ट शब्दों में समझाया कि उसने जगतजननी सीता का अपहरण किया है अतः उसका कल्याण होना असंभव है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

### 1. भाई के शोक में कवि ने प्रभु श्रीराम स्थिति को नर लीला से अधिक सहज मानवीय अनुभूति के रूप में व्यक्त किया है- इस कथन पर अपनी तर्कपूर्ण प्रतिक्रिया दीजिए।

उत्तर- श्रीराम ने भाई लक्ष्मण की मरणासन्न स्थिति को देखकर जिस प्रकार विलाप किया है तथा मानव-सुलभ व्यवहार को दर्शाया है उसे पूरी तरह से नर-लीला कहना उचित नहीं है। श्रीराम जिस प्रकार निज पत्नी की हानि या बिछुड़ने को विशेष हानि मानने से मना करते हैं अथवा ये कहते हैं कि यदि वे जानते कि वन में भातृ शोक का सामना करना होगा तो वे पिता के आदेश की अवहेलना कर वन-गमन ही न करते। ये ऐसे वक्तव्य हैं जो सामान्य मनुष्य अत्यंत भावुकता और असहनीय दुख के पलों में ही व्यक्त कर सकता है। अतः यहाँ तुलसीदास जी ने मानवीय अनुभूति को ही अधिक प्रभावी रूप से प्रकट किया है।

### 2. हनुमान के आगमन की तुलना करुण रस के बीच वीर रस के आविर्भाव से क्यों की गयी है?

उत्तर- लक्ष्मण की मरणासन्न अवस्था से समस्त वानर सेना तथा श्रीराम अत्यंत चिंतित थे। सुषेण वैद्य के दिए गए निर्देश के अनुसार हनुमान का उपचार शीघ्रातिशीघ्र करना आवश्यक था। समय बीतता जा रहा था तथा समस्त वातावरण में शोक और निराशा का भाव संचरित हो रहा था। ऐसे समय में हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर वहाँ उपस्थिति हुए तथा लोगों में यह विश्वास जागा कि लक्ष्मण अब अवश्य ठीक हो जाएँगे। ऐसा विचार आते ही चारों ओर आशा तथा उत्साह का भाव छा गया। इसे ही व्यक्त करने हेतु करुण रस में वीर रस के आविर्भाव की बात की गयी है।

**3. शोक में राम ने निज पत्नी के संदर्भ में जो बातें कहीं उस संदर्भ में स्त्री के प्रति तत्कालीन सामाजिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करें।**

उत्तर- भाई की मृत्यु की आसन्न अवस्था देखकर श्रीराम जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम के मुख से पत्नी के बिछोह को विशेष हानि न मानना तत्कालीन समाज में नारी के प्रति असम्मान का भाव परिलक्षित होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समाज में नारी का समाज में प्राथमिक अधिकार अथवा महत्व नहीं रहा होगा तथा लोग बहुविवाह प्रथा में विश्वास करते होंगे।

**4. लक्ष्मण राम के सहोदर (एक ही पेट से जन्मे) भाई नहीं थे फिर भी राम ने उन्हें 'सहोदर भ्राता' की संज्ञा क्यों दी है?**

उत्तर- श्रीराम कौशल्या के साथ कैकेयी तथा सुमित्रा का भी समान रूप से सम्मान करते थे। उन्होंने अपने समस्त भाईयों में कभी भी विभेद नहीं किया तथा सभी को अपने सगे भाई की तरह स्नेह किया था। विशेष रूप से लक्ष्मण के प्रति उनका स्नेह अनेकानेक संदर्भों में दिखाई पड़ता है। अतः उन्होंने लक्ष्मण की स्थिति को देखते हुए सहोदर भाई शब्द का प्रयोग अत्यंत भावुकता के साथ किया होगा किंतु इस कथन में उनका अपना दृढ़ विश्वास भी अवश्य सम्मिलित रहा होगा।

**5. लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर राम कहते हैं कि यदि वे जानते कि वन में भ्रातृ-शोक का सामना करना होगा तो पिता के वचन को मानकर वनागमन ही नहीं करते- क्या आपको लगता है कि श्रीराम ऐसा करते?**

उत्तर- लक्ष्मण की अवस्था देखते हुए श्रीराम अत्यधिक व्याकुल हो उठे थे तथा प्रतिकूलता की चिंता करते हुए वे कभी निज पत्नी की हानि को भ्रातृ-शोक से हीन कहते हैं कभी पिता की आज्ञा की अवहेलना की बात करते हैं। ये सभी बातें श्रीराम के चरित्र के दुर्बल, भावुक तथा परिस्थितिजन्य मानवीय स्वरूप की अभिव्यक्ति मात्र हैं। हमें ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि किसी भी अवस्था में श्रीराम पिता की आज्ञा की अवहेलना करते या वन-गमन के आदेश के प्रति विरोध करते। उनकी समस्त बातें प्रलाप मात्र हैं जो एक आशंकाग्रस्त सामान्य मनुष्य की प्रतिक्रियामात्र है।

## 8. रुबाइयाँ ( फिराक गोरखपुरी)

**प्रतिपाद्य -** फिराक की रुबाइयाँ उनकी रचना 'गुले- नग्मा' से उद्धृत हैं। रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है। इन रुबाइयों में हिन्दी का एक घरेलु रूप दिखता है। इन्हें पढ़ने से सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आती है।

**पाठ का सार-** इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। माँ अपने बच्चे कोआंगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है।वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिला कर हँस उठता है।वह उसे साफ पानी से नहलाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है।बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है।

दीवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगते हैं।चीनी - मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं।वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमक आ जाती है।आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है। माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चाँद उतर आया है।रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है।रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं।सावन में रक्षाबंधन आता है।सावन का जो संबंध झीनी घटा से है,घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से हैं।

### काव्यांश - 1

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद भरी
रह - रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

**i) कवि ने किसकी तुलना चाँद से की है?**

क) आँगन ख) माँ ग) बच्चा घ) हवा

**ii) माँ अपने बच्चे को क्या कर रही है?**

क) नहा रही है ख) लोका देती है ग) खिलौना देती है घ) चाँद दिखा रही है

**iii) माँ अपने चाँद के टुकड़े को किस पर झुलाती है?**

क) झूले पर ख) अपने हाथ पर ग) पेड़ की डाली पर घ) इनमें से कोई नहीं

**iv) इसमें कौन- सा रस झलकता है?**

क) करुण ख) वात्सल्य ग) शांत घ) श्रृंगार

**v) प्रस्तुत काव्यांश के रचयिता कौन हैं?**

क) फिराक गोरखपुरी ख) रघुवीर सहाय ग) उमाशंकर जोशी घ) आलोक धन्वा

**उत्तर -i)ग) बच्चा ii)ख) लोका देती है iii) ख) अपने हाथ पर iv)ख) वात्सल्य v)क) फिराक गोरखपुरी**

### काव्यांश -2

नहला के छलके - छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े

**i) माँ ने शिशु को नहलाने के लिए क्या किया ?**

(क) नल के नीचे बिठाया (ख) हाथ से पानी छलका - छलकाकर नहलाया
(ग) मग से पानी डाल - डालकर नहलाया (घ) इनमें से कोई नहीं

**ii) शिशु के बाल कैसे दिख रहे हैं?**
(क) अत्यंत सुंदर और सीधे (ख) आपस में उलझे हुए
(ग) चमकीले और गुँथे हुए (घ) हवा में लहराते हुए

**iii) शिशु प्यार से क्या देखता है?**
(क) निर्मल जल को (ख) सुंदर कंघी को
(ग) सुंदर कपड़ों को (घ) अपनी माँ के मुँह को

**iv) माँ शिशु को घुटनों पर क्यों बिठाती है?**
(क) शिशु को कपड़े पहनाने के लिए (ख) उसके बालों को सुलझाने के लिए
(ग) शिशु का सुंदर मुँह देखने के लिए (घ) शिशु को प्रसन्न करने के लिए

**v) काव्यांश में कौन -सा रस घनीभूत है?**
(क) करुण रस (ख) शांत रस (ग) हास्य रस (घ) वात्सल्य रस

**उत्तर (i) (ख) (ii) (ख) (iii) (घ) (iv) (क) (v) (घ)**

## काव्यांश-3

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए
आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है

**i) किस पर्व पर घर लिपे पुते, साफ - सुथरे तथा सजे - धजे होते हैं?**
क) दशहरा ख) रक्षा - बंधन ग) होली घ) दीवाली

**ii) दीवाली के अवसर पर रूपवती के मुख पर क्या होती है?**
क) एक नर्म चमक ख) एक गर्म चमक ग) एक ठण्डी चमक घ एक सरल चमक

**iii) काव्यांश का काव्य वैशिष्टय क्या है?**
क) काव्य में वात्सल्य रस की प्रधानता ख) काव्य की भाषा शैली देशज शब्द प्रधान है
ग) काव्य में रुबाई छंद का प्रयोग किया गया है घ) उपर्युक्त सभी

**iv)प्रस्तुत काव्यांश में 'लावे' शब्द का आशय -**
क) जगमगाते सितारों से है ख) जगमगाते दियों से है
ग) जगमगाते झालर से है घ) जगमगाते खिलौनों से है

**v) माँ बच्चे की जिद को किस प्रकार पूरा करती है?**
क) बच्चे को हवा में लोका देकर ख) चाँद रूपी खिलौना देकर
ग) चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर घ) नया खिलौना देकर

**उत्तर i) घ) दीवाली, ii) क) एक नर्म चमक iii) घ) उपर्युक्त सभी**
**iv) ख) जगमगाते दियों से है v) ग) चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**1. बच्चे को लेकर माँ के किन क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है? उनसे उसके किस भाव की अभिव्यक्ति हो रही है ?**

उत्तर - माँ बच्चे को लेकर हाथों में झूलाती है।वह बीच-बीच में उसे हवा में उछालती है तो बच्चा खुशी से खिलखिला उठता है। इससे वात्सल्य भाव की अभिव्यक्ति हो रही है।

**2.' आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है, बालक तो हई चाँद पै ललचाया है' - में बालक की कौन सी विशेषता अभिव्यक्त हुई है?**

उत्तर - इन पंक्तियों में बालक की हठ करने की विशेषता अभिव्यक्त हुई है। बच्चे जब जिद पर आ जाते हैं तो अपनी इच्छा पूरी करवाने के लिए नाना प्रकार की हरकतें किया करते हैं। जिदयाया शब्द लोक भाषा का विलक्षण प्रयोग है - इसमें बच्चे का ठुनकना, तुनकना, पाँव पटकना, रोना आदि सभी क्रियाएँ शामिल हैं ।

**3. शायर राखी के लच्छे को बिजली की तरह चमक कह कर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?**

उत्तर - रक्षाबंधन का पावन पर्व सावन में आता है। सावन में आकाश में घटाएँ छाई और बिजली चमकती रहती है। इस प्रकार सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वह संबंध भाई का बहन से है।

**4.' फिराक' की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर - फिराक की रूबाइयों में घरेलू जीवन का सुंदर चित्रण किया गया है। माँ अपने शिशु को लिए आँगन में खड़ी है। वह उसे झुलाती है। बच्चे को नहलाने के दृश्य का सुंदर चित्रण है। इसी तरह दीवाली व रक्षाबंधन पर जिस माहौल को चित्रित किया गया है, वह आम जीवन से जुड़ा हुआ है। बच्चे का किसी वस्तु के लिए जिद करना तथा उसे किसी तरह बहलाने के दृश्य सभी परिवारों में पाए जाते हैं

**5. दीवाली के दिन की सज्जा और माँ के वात्सल्य का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।**

उत्तर -दिवाली के दिन सारा घर रंग- रोगन से सज कर नया हो गया है। माँ घर में चीनी मिट्टी से बने हुए खिलौने ले आई है।बच्चा उन खिलौनों को बड़े प्यार से निहारता है। माँ बच्चे को प्रसन्न करने के लिए उसके खिलौने वाले संसार के बीच एक नन्हा दीया जला देती है। उस समय उसके चेहरे पर ममता, कोमलता और वात्सल्य की उजली दमक होती है।यह दृश्य देखने योग्य होता है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1. शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है ?**

उत्तर - शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कह कर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि रक्षाबंधन सावन के महीने में आता है।इस समय आकाश में घटाएँ छाई होती हैं तथा उनमें बिजली भी चमकती है।राखी के लच्छे बिजली कौंधने की तरह चमकते हैं।बिजली की चमक सत्य को उद्घाटित करती है तथा राखी के लच्छे रिश्तो की पवित्रता को व्यक्त करते हैं।घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से हैं।

**2.'रुबाइयाँ' के आधार पर घर - आंगन में दिवाली और राखी के दृश्य बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।**

उत्तर - कवि दीवाली के त्योहार के बारे में बताते हुए कहता है कि इस अवसर पर घर में पुताई की जाती है तथा उसे सजाया जाता है।घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने खिलौने आते हैं।रोशनी भी की जाती है।बच्चे के छोटे से घर में दिए के जलाने से मां के मुखड़े की चमक में नयी आभा आ जाती है।

रक्षाबंधन का त्योहार सावन के महीने में आता है।इस त्योहार पर आकाश में हल्की घटाएँ छाई होती हैं।राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हुए प्रतीत होते हैं।

## 9. छोटा मेरा खेत- उमाशंकर जोशी

**सारांश**–प्रस्तुत कविता में कवि उमाशंकर जोशी ने खेती के रूपक में कवि – कर्म के हर चरण को बांधने की कोशिश की है । उन्होंने कविता और कृषि – कर्म में समानता दर्शाते हुए बताया है कि कागज का पन्ना चौकोर खेत की तरह होता है । इसमें भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है, जिससे शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं और कविता की फसल तैयार हो जाती है । यह कभी खत्म न होनेवाली फसल है अर्थात सहृदय लोग सदैव इसका आनंद प्राप्त कर सकते हैं । साहित्य का रस कभी चुकता नहीं ।

**कविता की व्याख्या**– कवि ने कागज के पन्ने की चौकोर खेत से तुलना की है । कवि कहता है कि मेरा यह कागज का पन्ना मेरे लिए चौकोर खेत की तरह है,जिसमें मैं कवि – कर्म करते हुए क्षण का बीज बोता हूँ । वास्तव में कविता या साहित्य मनोभावों की ही उपज है । कवि ने कविता के सृजन से पहले कवि के मन में उठने वाली भावनाओं को अंधड़ कहा है, जिनसे प्रेरित होकर वह काव्य – रचना में प्रवृत होता है । " क्षण के बीज बोना " कृति के अर्थ में उस अनुभव को अंकित करना है, जो किसी विशेष समय में कवि के मन -मस्तिष्क में विचारों के रूप में आते हैं । फिर कवि कहता है कि कागजी खेत मे जो क्षण रूपी बीज बोया गया, वह कालांतर में कल्पना के रसायनों को अवशोषित कर पूरी तरह गल गया और शब्द रूपी अंकुरों के रूप में प्रकट हुआ अर्थात भावों ने शब्द का रूप ग्रहण किया । जिस प्रकार खेत में बोया गया बीज मिट्टी में उपस्थित रासायनिक तत्वों, खाद, पानी आदि को अवशोषित कर गल जाता है और अंकुर के रूप में मिट्टी से बाहर आता है, वैसे ही कवि के मनोभाव काव्य- शब्दों के अंकुर के रूप में कागज पर अंकित हो गए । कवि आगे इन शब्द रूपी अंकुरों के पल्लव और पुष्पों से युक्त हो जाने की बात कहता है । जिस प्रकार अंकुर खेत में विकसित होते हुए पूरे खेत को अपने पत्तों और फूलों से भरकर विस्तृत फसल का रूप दे देते हैं,वैसे ही कवि के शब्द रूपी अंकुर विकसित होकर कृति का रूप धारण कर लेते हैं । वस्तुतः कृषि में फसल का पल्लव और पुष्पों से युक्त होना साहित्य – सृजन या कवि – कर्म की दृष्टि से कृति का रूप ग्रहण करना है । कृति में ही विभिन्न आस्वादों की रचनाएँ संभव होती हैं ।

कविता रूपी फल और कृति रूपी फसल की विशिष्टता बताते हुए कवि कहता है कि कृति रूपी फसल में कविता रूपी जो फल लगे हैं, वे अलौकिक रस से युक्त थे । कवि कविता रूपी फलों से अमृत धाराओं के फूटने की बात कहकर उससे मिलने वाले आत्मिक संतोष एवं चेतना की ओर संकेत करता है । इस प्रकार उसने जो फसल उपजाई है उसने अनंत को पा लिया है । उसकी यह सृजनात्मकता काव्य -पूँजी के व्यय से कम नहीं होती, बल्कि और बढ़ती ही जाती है अर्थात लोगों द्वारा अपनाए जाने, प्रचारित – प्रसारित होने से वह और भी अधिक प्रसिद्ध एवं प्रभावशाली होती जाती है। यही कविता और साहित्य की अनंतता है और उसकी विशिष्टता भी है । अंत में कवि अपने " कागज के पन्ने " रूपी खेत को " रस के अक्षय पात्र " की संज्ञा देते हुए कहता है कि यह मेरा कागज का पन्ना रूपी खेत, कृति और कविता रूपी फसल एवं फल को निरंतर उपजाते रहने वाला है । यह ठीक उस अक्षय पात्र की भाँति है, जिसमें पकाया गया भोजन कभी समाप्त नहीं होता । वास्तव में इसमें कवि – कर्म की निरंतरता और सततता की बात कही गई है ।

### काव्य – सौंदर्य

1. कविता की भाषा सहज, प्रवाहयुक्त एवं विचार-प्रधान है । कवि ने साहित्य के मर्म एवं सृजन प्रक्रिया को अपने काव्य में समान्य परंतु प्रभावशाली रूपकों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।

2. कई जगहों पर रूपक अलंकार का प्रयोग दृष्टिगत होता है – कागज का पन्ना तथा खेत, कल्पना के रसायन, शब्द के अंकुर आदि । पल्लव- पुष्पों तथा गल गया में अनुप्रास अलंकार है । " रस" में श्लिष्टता है। कागज के चौकोने पन्ने को खेत की उपमा दी गई है ।

3. अंधड़, बीज, अंकुर, पल्लव, पुष्प आदि सार्थक बिंबों का प्रयोग किया गया है ।

## काव्यांश-1

छोटा मेरा खेत चौकोना
कागज का एक पन्ना ,
कोई अंधड़ कहीं से आया
क्षण का बीज वहाँ बोया गया ।

(**क**) **प्रस्तुत काव्यान्श में कवि ने किस खेत की बात की है** ?

**(अ)** मनरूपी खेत **(ब)** प्रेमरूपी खेत **(स)** कागजरुपी खेत **(द)** हरियाली रूपी खेत

(**ख**) **कवि ने अपने खेत में कैसा बीज बोया था**?

**(अ)** धान रूपी बीज **(ब)** शब्द रूपी बीज **(स)** प्रेमरूपी बीज **(द)** ये सभी

(**ग**) **कवि ने अभिव्यक्ति रूपी बीज कहाँ बोया था**?

**(अ)** खेत में **(ब)** घर के आँगन में **(स)** छत पर **(द)** कागज के पृष्ठ पर

(**घ**) " **कोई अंधड़ कहीं से आया** " **पंक्ति में** "**अंधड़**" **शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है**?

**(अ)** अनजान व्यक्ति **(ब)** कवि के मन के भावों के लिए **(स)** आँधी के लिए **(द)** विरोधी व्यक्ति के लिए

(**ङ**) **कवि ने अपने रचना- कार्य की तुलना किससे की है**?

**(अ)** महान साहित्यकार से **(ब)** श्रेष्ठ काव्य-कृति से **(स)** खेती के कार्य से **(द)** अपने सहयोगी से

उत्तर - (क) **(स)** कागजरुपी खेत (ख) **(ब)** शब्दरूपी बीज
(ग) **(द)** कागज के पृष्ठ पर (घ) **(ब)** कवि के मन के भावों के लिए
(ङ) **(स)** खेती के कार्य से

## काव्यांश-2

कल्पना के रसायनों को पी
बीज गल गया निःशेष **;**
शब्द के अंकुर फूटे **,**
पल्लव- पुष्पों से नमित हुआ विशेष ।

(**क**) **कवि ने रसायन किसे कहा है** ?

**(अ)** साहित्य को **(ब)** शब्द को **(स)** कल्पना को **(द)** खाद को

(**ख**) **बीज के गल जाने के बाद उसका क्या हुआ** ?

**(अ)** बीज नष्ट हो गया **(ब)** उससे शब्द रूपी अंकुर फूटे
**(स)** उससे फसल तैयार हुई **(द)** उससे नयापन आया

(**ग**) **खेत में अंकुर के फूटने का क्या परिणाम होता है** ?

**(अ)** खेत पत्तों और फूलों से भर जाता है **(ब)** खेत नष्ट हो जाता है
**(स)** खेत की उपजाऊ क्षमता घट जाती है **(द)** उपरोक्त सभी

(**घ**) **कवि के शब्दरूपी अंकुर विकसित होने पर क्या करते हैं** ?

**(अ)** कृति का रूप धारण करते हैं **(ब)** समाज को भोजन प्रदान करते हैं
**(स)** गरीबी को दूर करते हैं **(द)** प्रतिस्पर्द्धा की भावना विकसित करते हैं

(**ङ**) **अलंकार की दृष्टि से कौन सा विकल्प सही है**?

**(अ)** कल्पना के रसायनों को पी ---- रूपक अलंकार
**(ब)** बीज गल गया निःशेष ---- अन्योक्ति अलंकार
**(स)** शब्द के अंकुर फूटे ---- अनुप्रास अलंकार
**(द)** पल्लव- पुष्पों से नमित हुआ विशेष ---- विशेषोक्ति अलंकार

**उत्तर** (क) (स)**कल्पना को** (ख) (ब) **उससे शब्द रूपी अंकुर फूटे**
(ग) (अ) **खेत पत्तों और फूलों से भर जाता है** (घ) (अ) **कृति का रूप धारण करते हैं**
(ङ) (अ) **कल्पना के रसायनों को पी --- रूपक अलंकार**

## काव्यांश-3

झूमने लगे फल ,
रस अलौकिक ,
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की ,
कटाई अनंतता की
लौटते रहने से जरा भी नहीं कम होती ।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना ।

(**क**) **काव्यान्श में कवि ने किसके झूमने की बात कही है** ?
**(**अ**)** भाव और विचार के **(**ब**)** फल के **(**स**)** साहित्यकार के **(**द**)** पेड़- पौधे के
(**ख**) **कविता मे कवि ने किसकी कटाई की बात की है** ?
**(**अ**)** क्षण की **(**ब**)** अनंतता की **(**स**)** अंकुर की **(**द**)** फसल की
(**ग**) **कवि ने किस रस की अमृत धारा को अक्षय बताया है** ?
**(**अ**)** करुणा की **(**ब**)**शृंगार की **(**स**)** हास्य की **(**द**)** साहित्य की
(**घ**) **कवि के खेत में पैदा होने वाले कविता रूपी फल किस विशेषता से युक्त है** ?
**(**अ**)** अलौकिक रस **(**ब**)** वात्सल्य रस **(**स**)** शृंगारिकता **(**द**)** क्लिष्टता
(**ङ**) " **छोटा मेरा खेत चौकोना** " **उपमान का प्रयोग किसके लिए किया गया है** ?
**(**अ**)** फसल के लिए **(**ब**)** वर्गाकार रूप के लिए **(**स**)** कागज के पन्ने के लिए **(**द**)** पल्लव के लिए

**उत्तर** (क) (ब) **फल के** (ख) (ब) **अनंतता की** (ग) (द) **साहित्य की**
(घ) (अ) **अलौकिक रस** (ङ) (स) **कागज के पन्ने के लिए**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

1. **छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है**?

उत्तर **–** कवि छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहता है । कवि बताना चाहता है कि कवि-कर्म भी खेती की तरह है। खेती में रोपाई से कटाई तक प्रक्रिया श्रमसाध्य होती है । इसी तरह कविता- सृजन भी श्रमसाध्य की प्रक्रिया है । इसमें भी खेती की तरह अनेक प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं ।

2. **रचना के संदर्भ में** '**अंधड़** ' **और** '**बीज** ' **क्या हैं** ?

उत्तर **–** रचना के संदर्भ में **'**अंधड़ **'** का तात्पर्य भावों की आँधी से है । जब भावों की आँधी आती है तो वह शब्दों का रूप लेकर कागज पर जन्म लेती है । यह कविता सृजन का प्रथम चरण है । **'**बीज **'** से अभिप्राय विचार से है । भावों के अंधड़ से विचार जन्म लेता है । यह विचार कविता को आकार देता है ।

3.**रस का अक्षय**- **पात्रसे कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है**?

उत्तर**-** अक्षय- पात्र का अर्थ है **–** नष्ट न होनेवाला । रस का अक्षय **–** पात्र कभी खाली नहीं होता । रस जितना बटता जाता है, उतना ही भरता जाता है । कविता का रस चिरकाल तक आनंद देता है । खेती की फसल कट जाती है, परंतु रस कभी खत्म नहीं होता । यह अनंतकाल तक बहता है । यह रचना कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है ।

4. **कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत क्यों पड़ी**?

उत्तर – कवि ने कविता की रचना-प्रक्रिया को खेत में फसल होने की प्रक्रिया के समान बताया है । वह बताता है कि खेती कठिन कार्य है । उसमें रोपाई क्षणिक होती है, परंतु लाभ लंबे समय तक मिलता है । इसी प्रकार कविता भी भावनाओं के अंधड़ से जन्म लेती है तथा इसका रस युगों तक लिया जाता है । इसी कारण कवि को खेत का रूपक अपनाने की जरूरत पड़ी ।

5. **शब्द रूपी अंकुर फूटने से कवि का क्या आशय है**?

उत्तर – जिस प्रकार खेत में बीज में अंकुर फूट पड़ते हैं, उसी प्रकार विचार रूपी बीज से कुछ समय बाद शब्द के अंकुर फूटते हैं ।इससे कविता की रचना – प्रक्रिया शुरू हो जाती है । यह कविता की पहली सीढ़ी है । इसके बाद ही सम्पूर्ण कविता रची जाती है ।

6. **कवि का खेत कौन**- **सा है**? **उस पर आँधी का क्या प्रभाव पड़ता है**?

उत्तर – कवि को कागज का चौकोर पन्ना एक खेत की तरह दिखाई देता है । जब आँधी आती है तो बीज बोया जाता है । इसी प्रकार भावों की आँधी आने पर कविता रूपी बीज बोया जाता है ।

7. **कविता की रचना कैसे होती है**?

उत्तर – कविता की रचना प्रक्रिया का संबंध भावों से है । कल्पना रूपी रसायन इस कागज रूपी खेत में बीज रूप में पूर्णतः समा गया । इस प्रकार बीज रूपी अंकुर फूटने लगे । अर्थात कविता की पंक्तियाँ कागज पर उतरने लगीं । फिर इन अंकुरों पर भावना रूपी फूल खिलने लगे । कवि का मन प्रसन्नता से भर गया ।

8.**कवि ने अपनी तुलना किससे की है और क्यों** ?

उत्तर –कवि ने स्वयं को किसान के समान माना है । किसान खेत में बीज बोकर, जल तथा खाद देकर फसलें उगाता है । कविता रचना भी फसल उगाने के समान श्रम साध्य कार्य है ।

9. **कविता रूपी फसल तैयार होने पर क्या होता है** ?

उत्तर – जब कागज रूपी खेत में कविता रूपी फसल झूमने लगे तो चारों तरफ अलौकिक रस की अमृत धाराएँ फूटने लगी।खेत में फसल तैयार होने पर खुशी का माहौल होता है । इस फसल की रोपाई क्षण भर की है, परंतु उसकी कटाई का अंत नहीं है । उसे लूटते रहने से भी वह कम नहीं होती ।

10. **कविता तथा फसल में क्या अंतर है**?

उत्तर – कविता की रचना क्षण भर की है,परंतु इसका आनंद युगों-युगों तक उठाया जाएगा । जबकि फसल की कटाई का अंत है । कवि कहता है कि मेरे खेत रूपी रस का कविता रूपी पात्र छोटा है, परंतु यह कभी खत्म नहीं होता । यह हमेशा लोगों को प्रसन्न करता रहता है ।

# बगुलों के पंख – उमाशंकर जोशी

**सारांश**– इस प्रतिकात्मक कविता में कवि आकाश में बगुलों की पंक्ति देखता है । ये बगुले ऐसे लगते हैं मानों बादलों के ऊपर तैरती सांझ में कोई सफ़ेद काया जा रही है । कवि इस दृश्य को देखकर ठगा रह जाता है । वह स्वयं को इस मायाजाल से बचाने की प्रार्थना करता है । यह एक दृश्य बिम्ब की कविता है।

**व्याख्या**– कवि कह रहा है कि आसमान में कतारबद्ध होकर उड़ रहे बगुलों के पंखों से एक सम्मोहक दृश्य उपस्थित हो गया है । यह नयनाभिराम दृश्य जिन बगुलों के आसमान में उड़ने के कारण उत्पन्न हुआ है, वे मेरी आँखें चुरा लिए जाती हैं ।कहने का तात्पर्य यह है कि कवि की दृष्टि जहां तक जाती है, वह बगुलों की उड़ान को देखता ही रह जाता है । कवि सांझ के समय के आकाश का वर्णन करते हुए कहता है कि आकाश में काले बादल छाए हुए हैं, जिन पर संध्याकालीन सूर्य का प्रकाश पड़कर अद्भुत सौंदर्य की सृष्टि कर रहा है । ये साँझ के दृश्य मुझे अपनी माया के आकर्षण में बाँधे हुए हैं । कवि की इच्छा है कि ये नयनाभिराम दृश्य जो सचल है, गतिमान है, थोड़ी देर के लिए रुक जाए, ठहर जाए, जिससे वह इसे और अधिक देर तक देख सके, क्योंकि ये दृश्य इतने सुंदर हैं, आकर्षक हैं कि वे उसकी आँखें चुराये लिए जाती हैं ।यहाँ कवि ने सौंदर्य के प्रभाव का अंकन करने के लिए जिन युक्तियों का सहारा लिया है, वे हैं दृश्यों के चित्रण तथा उन दृश्यों को देखते हुए अपने मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन । कविता में वर्णित सौंदर्य जिन दृश्यों के कारण उपस्थित होता है, वे सभी गतिशील हैं । इनकी गतिशीलता और समय के सापेक्ष होने वाला परिवर्तन ही इनके सौंदर्य का मूल कारक है ।

## काव्यांश-1

नभ में पाँति- बंधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें
कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया
हौले- हौले जाती मुझे बाँध निज माया से,
उसे कोई तनिक रोक रक्खो ।
वह तो चुराए लिए जातीं मेरी आँखें
नभ में पाँति- बँधी बगुलों की पांखें ।

(**क**) **बगुलों के पंखों का रंग कैसा है**?

**(अ)** काला **(ब)** नीला **(स)** सफ़ेद **(द)** मटमैला

(**ख**) **नभ में पंक्तिबद्ध कौन थे**?

**(अ)** हंस **(ब)** चातक **(स)** बगुले **(द)** पिक

(ग) **नभ में पंक्तिबद्ध बगुलों की पंखों ने कवि की कौन सी इंद्रिय को चुराया**?

**(अ)** कान **(ब)** आँख **(स)** नासिका **(द)** सभी

(घ) **प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार कौन हैं**?

**(अ)** भारत भूषण अग्रवाल **(ब)**महादेवी वर्मा **(स)** उमाशंकर जोशी **(द)** आलोक धन्वा

(ङ) '' **सतेज श्वेत काया** '' **का अर्थ है** –

**(अ)** तेज मुक्त सफ़ेद काया **(ब)** तेज युक्त सफ़ेद काया

**(स)** तेज युक्त बादामी काया **(द)** तेज मुक्त बादामी काया

**उत्तर** – (क) (स) **सफ़ेद** (ख) (स) **बगुले** (ग) (ब) **आँख** (घ) (स) **उमाशंकर जोशी**

(ङ) (ब) **तेजयुक्त सफ़ेद काया**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

1. '**बगुलों के पंख**' **कविता में चित्रित सौंदर्य पर प्रकाश डालिए ।**

उत्तर **–'** बगुलों के पंख **'** कविता में संध्याकालीन आकाश का सुंदर दृश्य-बिम्ब उपस्थित किया गया है । आकाश में कजरारे बादलों के मध्य श्वेत बगुले पंक्तिबद्ध उड़ते हैं**,** तो ऐसा लगता है की संध्या की श्वेत काया बादलों के ऊपर तैर रही है ।

2. " **वह तो चुराए लिए जातीं मेरी आँखें** " – **इस पंक्ति में आँखें चुराने से कवि का क्या आशय है**?

उत्तर **–** कवि का आशय है कि संध्या के समय कजरारे बादलों के मध्य श्वेत बगुलों की पंक्ति इतनी मनोरम लगती है कि आँखें उनकी उड़ान के पीछे- पीछे भागती रहती हैं । मानो संध्या की श्वेत काया कवि की आँखों को अपने साथ चुराए लिए जा रही हैं । कवि उस दृश्य से अपनी आँखें हटा नहीं पा रहे हैं ।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

1. '**बगुलों के पंख**' **कविता का प्रतिपाद्य बताइए ।**

उत्तर **–** इस सुंदर दृश्य कविता में कवि उमाशंकर जोशी जी ने काले बादलों से भरे आकाश में उड़ते हुए सफ़ेद बगुलों की पंक्ति को देखकर तरह **–** तरह की कल्पनाएँ करता है । ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफ़ेद काया के समान लगते हैं । कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है । वह सबकुछ भूलकर इस दृश्य में खो कर रह जाता है । एक तरफ से वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बंधकर रहना चाहता है ।

2. " **बगुलों के पंख** " **कविता को पढ़कर आपके मन में कैसे चित्र उभरते हैं** ?

उत्तर **–"** बगुलों के पंख**"** कविता को पढ़कर हमारे मन में अनेक सुंदर और सफ़ेद पंखों वाले पक्षी विचरण करने लगते हैं । ये सभी सुंदर पक्षी आकाश में पंक्तिबद्ध उड़ रहे हैं । इनकी सुंदरता हमारे मन को अपनी ओर खींच लेती हैं । साथ ही आसमान में छाए बादल और उनके पल-पल बदलते रूप दिखाई देने लगते हैं ।

# 10. भक्तिन (महादेवी वर्मा)

**पाठ का सार-** भक्तिन महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो स्मृति की रेखाएँ में संकलित है | इसमें लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए व्यक्तित्व का चित्रण किया है | लेखिका के घर में काम करना शुरू करने से पहले भक्तिन ने संघर्षशील व स्वाभिमानी जीवन जिया और जीवन की राह बदलने का निर्णय लिया | उसके जीवन को महादेवी ने चार परिच्छेद (भागों) में बाँटा है|

**प्रथम परिच्छेद** में सौतेली माता के कहने पर उसके पिता द्वारा उसका कम उम्र में विवाह करने, विमाता द्वारा जायदाद पाने की लालसा के कारण लक्ष्मी के पिता के गंभीर रूप से बीमार होने पर भी सूचना नहीं देने व पिता की मृत्यु के बाद विमाता द्वारा लछमिन से बुरा व्यवहार करने का वर्णन है |

**दूसरे परिच्छेद** में लछमिन(भक्तिन) द्वारा तीन बेटियों को जन्म देने के कारण उसकी सास व जेठानियों द्वारा उसकी उपेक्षा करने, उसके पति व बड़े दामाद की मृत्यु का वर्णन है |

**तीसरे परिच्छेद** में पंचों द्वारा उसकी बेटी की जबरन शादी के बाद जमींदार द्वारा अपमानित होने पर कमाई के उद्देश्य से उसके शहर आने का वर्णन है |

**अंतिम परिच्छेद(चौथे परिच्छेद)** में गाँव से शहर आकर भक्तिन के महादेवी के घर रहकर काम करने, भक्तिन की सेवा-भावना, उसके गुण-दोषों और महादेवी से अटूट सम्बन्ध का वर्णन है |

भक्तिन लेखिका को ग्रामीण भोजन खिलाती है, परन्तु खुद शहर का रसगुल्ला नहीं खाती और महादेवी को देहाती बना देती है | लेखिका द्वारा गुणों के साथ-साथ भक्तिन के दुर्गुणों के बारे में वर्णन किया गया है | जैसे - पूरा सच न बोलना, पैसे छिपाना,बात बदलकर कहना, जिद्दी होना आदि | भक्तिन द्वारा शास्त्र की बातों को अपने अनुसार बदलने के सन्दर्भ में बाल मुँडवाने के उदाहरण का वर्णन | भक्तिन के स्वतंत्र व्यक्तित्त्व की तुलना आँगन के अँधेरे-उजाले,गुलाब व आम के फल से करना | भक्तिन की सहज बुद्धि व कवियों के बारे में राय का वर्णन है | लेखिका को कारागार भेजने की बात पर भक्तिन द्वारा साथ जाने की जिद्द करना और अधूरा पर मार्मिक अंत होना |

## गद्यांश – 1

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है-नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी इस नाम का उपयोग न करूँ | उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने, इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण किया तब वह भक्तिन जैसे कवित्वहीन नाम को पाकर भी गदगद हो उठी।

(1) **भक्तिन को भक्तिन नाम किसने और क्यों दिया** ?

**(क)** माता-पिता ने**,** कंठी माला देखकर **(ख)** लेखिका ने**,** सुख-समृद्धि के लिए

**(ग)** लेखिका ने**,** कंठी माला देखकर **(घ)** माता-पिता ने**,** सुख-समृद्धि के लिए

(2) '**मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है** |' - **वाक्य किसके लिए कहा गया है** ?

**(क)** महादेवी वर्मा के लिए **(ख)** भक्तिन के लिए

**(ग)** भक्तिन की माँ के लिए **(घ)** भक्तिन की सास के लिए

(3) **इतिवृत्त का अर्थ है**-

**(क)** वंशावली **(ख)** जीवन समाप्त होना

**(ग)** दूसरों के बारे में बताना **(घ)** जीवन का सम्पूर्ण परिचय

(4) '**कपाल कुंचित रेखाओं**' **का अर्थ है**-

**(क)** खुशहाली होना **(ख)** भाग्य खराब होना

**(ग)** प्रगतिशील होना **(घ)** ललाट पर तिलक होना

(5) **सेवा-भावना के कारण लेखिका ने भक्तिन की तुलना की है** -

**(क)** कवियों से **(ख)** स्वयं से

**(ग)** लक्ष्मण से **(घ)** हनुमान जी से

**उत्तरमाला**- 1-**ग**, 2-**क**, 3-**घ**, 4-**ख**, 5-**घ**

## गद्यांश – 2

भक्तिन और मेरे बीच में सेवक- स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है, जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख-दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे हुए हैं।

(1) **भक्तिन व महादेवी के बीच क्या संबंध है** ?

**(क)** सेवक-स्वामी **(ख)** आत्मीय सम्बन्ध

**(ग)** मालकिन-नौकरानी **(घ)** कोई सम्बन्ध नहीं

(2) **महादेवी भक्तिन को अपनी सेविका क्यों नहीं मानती थी** ?

**(क)** दिखावे के कारण **(ख)** दूसरी सेविका न मिलने के कारण

**(ग)** आपसी प्रेम व आत्मीय सम्बन्ध के कारण **(घ)** कम पैसा देने के कारण

(3) **भक्तिन महादेवी द्वारा चले जाने का आदेश पाकर क्या करती** ?

**(क)** अवज्ञा से हँस देती थी **(ख)** बुरा मानकर नाराज़ हो जाती थी

**(ग)** छोड़कर चली जाती थी **(घ)** महादेवी ऐसा आदेश देती ही नहीं थी

(4) **लेखिका ने अँधेरे – उजाले** , **गुलाब** , **आम और भक्तिन में क्या समानता बताई है** ?

**(क)** ये सभी अपना अस्तित्त्व रखते है **(ख)** अस्तित्त्व की सार्थकता के लिए सुख-दुःख दोनों देते हैं

**(ग)** स्वतंत्र व्यक्तित्त्व का होना **(घ)** उपर्युक्त सभी

(5) **भक्तिन के स्वतंत्र व्यक्तित्त्व को बताने के लिए लेखिका ने भक्तिन की निम्नलिखित में से किससे तुलना नहीं की है** ?

**(क)** गुलाब **(ख)** कमल **(ग)** अँधेरे-उजाले **(घ)** आम

**उत्तरमाला**- 1-**ख**, 2-**ग**, 3-**क**, 4-**घ**, 5-**ख**

## गद्यांश – 3

मेरे परिचितों और साहित्यिक बंधुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है; पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्‌भाव से निश्चित होता है। इस संबंध में भक्तिन की सहजबुद्धि विस्मित कर देने वाली है। वह किसी को आकार-प्रकार और वेश-भूषा से स्मरण करती है और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा | कवि और कविता के संबंध में उसका ज्ञान बढ़ा है; पर आदर-भाव नहीं। किसी के लंबे बाल और अस्त-व्यस्त वेश-भूषा देखकर वह कह उठती है- 'का ओहू कवित्त लिखे जानत हैं और तुरंत ही उसकी अवज्ञा प्रकट हो जाती है - तब ऊ कुच्छौ करिहै-धरिहैं ना-बस गली-गली गाउत-बजाउत फिरिहैं।

(1) **भक्तिन किनसे विशेष परिचित हैं** ?

**(क)** अपने परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से **(ख)** लेखिका के परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से

**(ग)** केवल सभी कवियों से **(घ)** उपर्युक्त सभी से

(2) **आगंतुकों के प्रति सद्भाव का भक्तिन के लिए आधार था** –

**(क)** आगंतुकों का सद्भाव **(ख)** भक्तिन का स्वयं का सद्भाव

**(ग)** लेखिका के प्रति सद्भाव **(घ)** उपर्युक्त सभी

(3) '**भक्तिन लेखिका के घर आने वाले परिचितों व साहित्यकारों को उतना ही सम्मान देती थी जितना वे लेखिका को सम्मान देते थे**'- **इसमें भक्तिन के किस गुण का पता चलता है** ?

**(क)** स्वाभिमानी **(ख)** सहज बुद्धि **(ग)** सेवा-भावना **(घ)** कार्य-कुशल

(4) **भक्तिन परिचितों व साहित्यिक बंधुओं को कैसे स्मरण करती थी** ?

**(क)** आकार-प्रकार से **(ख)** वेशभूषा से **(ग)** नाम के अपभ्रंश से **(घ)** उपर्युक्त सभी

(5) **कवियों के संबंध में भक्तिन की मान्यता है कि** -

**(क)** वे कुछ काम नहीं करते **(ख)** वे लालची होते हैं

**(ग)** वे पढ़े-लिखे होते हैं **(घ)** वे समझदार होते हैं

**उत्तरमाला**- 1-**ख** , 2-**ग**, 3-**ख**, 4-**घ**, 5-**क**

## अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) **भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखने का दंड दिया** -

**(क)** ज़मींदार ने **(ख)** विमाता ने **(ग)** सास ने **(घ)** जेठ ने

(2) **भक्तिन पाठ में 'खोटे सिक्के की टकसाल' पंक्ति द्वारा किस पर व्यंग्य किया गया है**?

**(क)** भक्तिन पर **(ख)** समाज पर ग**)** लेखिका पर **(घ)** विमाता पर

(3) **जब भक्तिन के पति की मृत्यु हुई, तब उसके पति की उम्र थी** -

**(क) 29** वर्ष **(ख) 30** वर्ष **(ग) 35** वर्ष **(घ) 36** वर्ष

(4) **भक्तिन लेखिका को निम्नलिखित में से कौन-सा देहाती भोजन नहीं खिलाती थी** ?

**(क)** ज्वार के हरे दानों की खिचड़ी **(ख)** रसगुल्ला

**(ग)** सफ़ेद महुए की लपसी **(घ)** मकई का दलिया

(5) **भक्तिन द्वारा शास्त्र का प्रश्न अपनी सुविधा से सुलझाने के लिए लेखिका ने उदाहरण दिया है**-

**(क)** भक्तिन के पूजा-पाठ का **(ख)** भक्तिन की सेवा भावना का

**(ग)** भक्तिन के चूड़ाकर्म का **(घ)** भक्तिन के पढ़ने का

(6) **भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायतों की क्या तस्वीर उभरती है**?

**(क)** पंचायतें गूंगी**,** लाचार और अयोग्य हैं

**(ख)** वे सही न्याय नहीं कर पातीं

**(ग)** वे दूध का दूध और पानी का पानी करती हैं

**(घ)** वे अपने स्वार्थों को पूरा करती हैं

(7) **खोटे सिक्कों की टकसाल का अर्थ क्या है**?

**(क)** निकम्मे काम करने वाली पत्नी

**(ख)** बेकार पत्नी

**(ग)** जिस टकसाल से खोटे सिक्के निकलते हैं

**(घ)** कन्याओं को जन्म देने वाली पत्नी

(8) **कथन** - **भक्तिन के पुत्र न होने पर उसके सास द्वारा उपेक्षा प्रकट की गई।**

कारण**-** वह स्वयं तीन पुत्रों को जन्म दे चुकी थी।

**(क)** कथन सही है, कारण गलत

**(ख)** कथन गलत है**,** कारण सही

**(ग)** कथन और कारण दोनों सही है

**(घ)** कथन और कारण दोनों गलत है

(9) **लेखिका ने भक्तिन नाम को कवित्वहीन क्यों कहा है** ?

**(क)** भक्तिन नाम कविता का प्रतीक है

**(ख)**सादगी व सरलता का बोध करता है

**(ग)** भक्तिन आपसी प्रेम का प्रतीक है

**(घ)** इनमें से कोई नहीं

(10) **लेखिका ने अपने नाम को दुर्वह क्यों कहा है** ?

**(क)** लेखिका के पास धन संपत्ति नहीं है

**(ख)**लेखिका अपने को नाम से भी बड़ा मानती है

**(ग)** लेखिका अपने को देवीय नाम के योग्य नहीं मानती

**(घ)** इनमे से कोई नहीं

(11) **भक्तिन किसके लिए लड़ाई लड़ती रही**?

**(क)** समाज के लिए

**(ख)** अपने पति के जीवन के लिए

**(ग)** महादेवी के लिए

**(घ)** अपनी बेटियों के हक के लिए

(12) **भक्तिन के ससुराल वालों ने उसके पति की मृत्यु पर उसे पुनर्विवाह के लिए क्यों कहा**?

**(क)** ताकि भक्तिन सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत कर सके

**(ख)** ताकि वे भक्तिन की घर-संपत्ति को हथिया सकें

**(ग)** ताकि वे भक्तिन से छुटकारा पा सकें

**(घ)** ताकि वे भक्तिन को पुनः समाज में सम्मान दे सकें

**उत्तरमाला**- 1**क**, 2**क**, 3**घ**, 4**ख**, 5**ग**, 6**क**, 7**घ**, 8**ग**, 9**ख**, 10(**ग**), 11**घ**, 12(**ख**)

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

(1) **भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी** ? **भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा** ?

उत्तर**-** भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था जिसका अर्थ है**-** धन की देवी व सुख-समृद्धि से भरपूर **|** भक्तिन को यह नाम उसके माता-पिता ने यह सोचकर दिया होगा कि उसका जीवन सुख-समृद्धि से भरा रहे **|** भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से इसलिए छुपाती थी क्योंकि नाम के अनुसार उसके जीवन में सुख-समृद्धि नहीं थी और उसका जीवन गरीबी व दुखों से भरा था और लोग उसका उपहास न करें **|**

(2) **भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा ज़बरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं**, **बल्कि विवाह के सन्दर्भ में स्त्री के मानवाधिकार** (**विवाह करें या न करें अथवा किससे करें**) **इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है |कैसे** ?

उत्तर**-** एक दिन भक्तिन को घर में न पाकर उसके जेठ के बड़े लड़के का साला भक्तिन की बेटी की कोठरी में घुस गया**,** तो भक्तिन की बेटी ने उसे अच्छी तरह पीटा **|** जेठ के बड़े लड़के व उसके समर्थकों ने पंचों को बुलाया **|** तब उस युवक ने झूठ बोला कि इस लड़की ने मुझे बुलाया था **|** पंचायत ने उन्हें पति-पत्नी की तरह रहने का

फैसला सुनाया और भक्तिन की बेटी की बात न सुनी | ऐसा हमारे समाज में सदियों से चला आ रहा है | इससे स्पष्ट है कि सामाजिक परंपरा की आड़ में विवाह के सन्दर्भ में स्त्री के मानवाधिकार व स्वतंत्रता को कुचला जा रहा है|

(3) "**भक्तिन अच्छी है**, **यह कहना कठिन होगा**, **क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं**" **लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा** ?

उत्तर- भक्तिन अच्छी है पर उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं, लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि–वह पूरा सच नहीं बोलती थी बल्कि झूठ बोल जाती थी |लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसों को भण्डार घर की मटकी में छिपाकर रखती थी | इस पर संकेत करने पर वह तर्क-वितर्क करती थी | लेखिका के क्रोध से बचने के लिए बातों को बदलकर कह देती थी | वह दूसरों को अपने अनुसार बदल लेती थी परन्तु स्वयं बिलकुल भी नहीं बदलती थी|

(4) **भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है** ?

उत्तर- शास्त्र का प्रश्न भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती थी | वह प्रत्येक गुरूवार को नाई को बुलाकर उसके उस्तरे पर गंगाजल छिड़ककर अपने बाल मुँडवाती थी | लेखिका द्वारा इस बारे में पूछने पर वह (भक्तिन) कहती थी की शास्त्रों में लिखा है– 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध |' भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का यह उदाहरण लेखिका ने दिया है |

(5) **लेखिका और भक्तिन के नामों में क्या विरोधाभास है** ?

उत्तर- दोनों का ही नाम के अनुसार जीवन नहीं था | महादेवी के समान भक्तिन के नाम में भी विरोधाभास था –

लछमिन (अर्थ – सुख,धन से भरपूर) – वास्तव में गरीब व संघर्षपूर्ण जीवन

महादेवी (अर्थ – महान देवी) – वास्तव में वे अपने जीवन और व्यक्तित्व को महान व उदार नहीं मानती थी |

(6) **कारागार के नाम से डरने के बावजूद भक्तिन जेल जाने के लिए क्यों तैयार हो गयी**?

उत्तर –भक्तिन को कारागार से बहुत डर लगता था। उसके लिए कारागार जाना यमलोक जाने के समान था| कारागार की ऊँची दीवारों को देखकर वह चकरा जाती थी। जब उसे पता चला कि महादेवी जेल जा रही हैं तो वह उनके साथ जेल जाने के लिए तैयार हो गई। वह महादेवी के बिना अलग रहने की कल्पना मात्र से परेशान हो उठती थी।

(7) '**भक्तिन**' **अनेक अवगुणों के होते हुए भी महादेवी जी के लिए अनमोल क्यों थी**?

उत्तर –अनेक अवगुणों के होते हुए भी भक्तिन महादेवी वर्मा के लिए इसलिए अनमोल थी क्योंकि

**i.**भक्तिन में सेवाभाव कूट-कूटकर भरा था।

**ii.**भक्तिन लेखिका के हर कष्ट को स्वयं झेल लेना चाहती थी।

**iii.**वह लेखिका द्वारा पैसों की कमी का जिक्र करने पर अपने जीवनभर की कमाई उसे दे देना चाहती थी।

**iv.**भक्तिन की सेवा और भक्ति में नि:स्वार्थ भाव था। वह अनवरत और दिन-रात लेखिका की सेवा करना चाहती थी।

### लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**(1) तीन कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी | ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है | क्या इससे आप सहमत हैं** ?

उत्तर- इस कहानी में निम्नलिखित घटनाओं से पता चलता है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है-

विमाता (सौतेली माता)- विमाता के कहने पर उसकी जल्दी शादी कर दी गई | विमाता ने उसके पिता की मृत्यु के बाद जाने पर उसे अपमानित किया व बुरा व्यवहार किया

सास- तीन बेटियों को जन्म देने के कारण उसकी सास उसे उचित सम्मान नहीं देती थी |

जिठानियाँ- जिठानियाँ व उनके लड़के कोई काम नहीं करते बल्कि घर और खेत का काम लक्ष्मी और उसकी बेटियाँ करती थीं | फिर भी लक्ष्मी और उसकी बेटियों को पौष्टिक भोजन नहीं मिलता था |

**(2) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई ?**

उत्तर- भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई थी क्योंकि– भक्तिन देहाती महिला थी। शहर में आकर उसने स्वयं में कोई परिवर्तन नहीं किया। ऊपर से वह दूसरों को भी अपने अनुसार बना लेना चाहती है, पर अपने मामले में उसे किसी प्रकार का हस्तक्षेप पसंद नहीं था। उसने लेखिका का मीठा खाना बिल्कुल बंद कर दिया।भक्तिन लेखिका को ग्रामीण भोजन खिलाती थी जैसे –ज्वार के भुट्टे के हरे दानों की खिचड़ी,सफ़ेद महुए की लपसी आदि |वह उसे रात का बासी भोजन खिला देती थी, यह कहकर कि मकई का रात को बना दलिया सवेरे मट्ठे से अच्छा लगता है और तिल के पुए ठंडे अच्छे लगते हैं |लेखिका की साड़ी को इस तरह तह करती थी कि वह सलवटों से भर जाती थी |

**(3) भक्तिन के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए |**

उत्तर- भक्तिन की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं – वह मेहनती व स्वाभिमानी महिला थी | उसमें संघर्षशीलता का गुण था |उसमें सेवा-भावना, त्याग और समर्पण की भावना थी |वह अन्याय की विरोधी थी |अन्य गुण – स्नेह व सहानुभूति वाली, सहज बुद्धि वाली, महादेवी के प्रति आदर भाव ।

**(4) भक्तिन व लेख्रिका के बीच कैसा संबंध था ?**

उत्तर –लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक-स्वामी का संबंध था, परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था। महादेवी उसकी कुछ आदतों से परेशान थीं, जिसकी वजह से यदा-कदा उसे घर चले जाने को कह देती थीं। इस आदेश को वह हँसकर टाल देती थी। दूसरे, वह नौकरानी कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी। वह लेखिका की छाया बनकर घूमती थी। वह आने-जाने वाले, अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब व आम की तरह पृथक अस्तित्व रखती तथा हर सुख-दुख में लेखिका के साथ रहती थी।

**(5) भक्तिन के इतिवृत पर विचार व्यक्त कीजिए।/ या इतिवृत्त से क्या तात्पर्य है ?**

उत्तर- इतिवृत्त का अर्थ है आरंभ से अंत तक जीवन के बारे में वर्णन।लेखिका ने भक्तिन के जीवन के विषय मे बताया है।भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन था। वह ऐतिहासिक झूँसी के एक प्रसिद्ध सूरमा की इकलौती बेटी थी। पाँच वर्ष की अल्पायु में ही उसका विवाह हँडियाँ ग्राम के एक संपन्न परिवार में गोपालक के बेटे से कर दिया। उसकी विमाता ने नौ वर्ष की आयु में ही उसका गौना कर दिया था ,ससुराल में भी उसे अनेक दुःख झेलने पड़े।.

**(6) भक्तिन ने अपना वास्तविक नाम कब और किसे बताया ? उसने क्या प्रार्थना की ?**

**अथवा**

**भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छिपाती थी? भक्तिन को 'भक्तिन' नाम किसने और क्यों दिया होगा?**

उत्तर- भक्तिन ने अपना वास्तविक नाम नौकरी पाने के समय अपनी मालकिन लेखिका महादेवी वर्मा को बताया था। उसने लेखिका से यह प्रार्थना की थी कि वह इस नाम का कभी उपयोग न करें।उसका वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी था। लक्ष्मी का अर्थ है धन की देवी, समृद्धि, विष्णु प्रिया उसकी दशा इसके विपरीत थी। उसके पास धन का अभाव था इसलिए वह अपना नाम छिपाती थी। उसे यह नाम उसके पिता ने दिया होगा ।भक्तिन नाम महादेवी जी ने कण्ठीमाला देखकर दिया था।

# 11. बाजार दर्शन-जैनेन्द्र कुमार

**पाठ का सार- "बाजार दर्शन"** जैनेंद्र कुमार जी द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध निबंध है। जिसमें उन्होंने उपभोक्तावाद व बाजारवाद के बारे में खुलकर अपने दिल की बात रखी हैं। लेखक कहते हैं कि बाजार का आकर्षण ही ऐसा हैं कि व्यक्ति अपना संयम खो देता है और गैर जरूरी चीजें को भी खरीद लेता है। भले ही बाद में उसे इस बात का अहसास होता है कि उसने बाजार की चकाचौंध से आकर्षित होकर गैर जरूरी चीजें खरीद ली है।

**पैसा पावर है -** लेखक कहते हैं कि पैसे में पर्चेजिंग पावर  है और कुछ लोग पर्चेजिंग पावर के हिसाब से ही सामान खरीदते हैं यानि जेब में जितना अधिक पैसा , उतना ही अधिक सामान की खरीदारी। फिर चाहे वो सामान उनकी जरूरत का हो या न हो। ये लोग इसी पावर का इस्तेमाल करने में खुशी महसूस करते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो पैसे के महत्व को समझते हुए अपने मन पर नियंत्रण रखते हैं और अपनी बुद्धि और संयम से जोड़े हुए पैसों को खर्च करने के बजाय सहेज कर रखने में ज्यादा गर्व महसूस करते है।

**बाजार एक जादू है-** लेखक कहते हैं कि बाजार सबको मूक आमंत्रित करता हैं। उसका तो काम है ग्राहकों को आकर्षित करना। बाजार में खड़ा व्यक्ति आकर्षक तरीके से रखे हुए सामान को देखता है तो फिर उसके मन में उस सामान को लेने की तीव्र इच्छा हो जाती है। और अगर उसके पास पर्चेजिंग पावर है तो वह बाजार की गिरफ्त में आ ही जाएगा।

एक और मित्र का उदाहरण देते हुए लेखक कहते हैं कि उनके एक और मित्र जो दिल्ली के चांदनी चौक में चक्कर लगाकर बिना कोई सामान खरीदे वापस लौट आये।

जब उन्होंने अपने मित्र से बाजार से खाली हाथ लौट आने का कारण पूछा।तो उन्होंने लेखक को जबाब दिया कि बाजार में मुझे सभी वस्तुओं को लेने का मन कर रहा था। लेकिन अगर मैं थोड़ा लेता तो बाकी छूट जाता और मैं तो कुछ भी नहीं छोड़ना चाहता था। इसलिए मैंने कुछ भी नहीं खरीदा। लेखक कहते हैं कि जब पता ही न हो कि तुम्हें क्या लेना हैं ? तो सभी वस्तुएं तुम्हें आकर्षित करेंगी। जिसका परिणाम बुरा ही होगा। लेखक आगे कहते हैं कि बाजार के जादू से कैसे बचा जाए ? बाजार में एक जादू हैं जो आँखों के रास्ते काम करता हैं। अगर मन खाली हो तो बाजार जाना नहीं चाहिए। क्योंकि आँखे बंद भी कर लेते हैं तो तब भी मन यहां वहां घूमता रहता है। मगर हमें अपने मन पर खुद ही नियंत्रण रखना होगा। क्योंकि कि अगर व्यक्ति की जेब भरी है और मन भी भरा है तो बाजार का जादू उस पर असर नहीं करेगा।

**भगत जी का उदाहरण-** लेखक अपने एक पड़ोसी का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि भगत नाम के एक व्यक्ति जो पिछले कई वर्षों से चूरन बेच रहे हैं। दस वर्षों से लेखक भी उन्हें चूरन बेचते हुए देख रहे हैं। लेखक कहते है कि भगत रोज चूरन बेचने जाते हैं। वह उतना ही चूरन बेचते हैं जितने में उनकी छः आने की आमदनी होती है। छः आने की कमाई होने के बाद वो बिना किसी लालच के बचा हुआ चूरन बच्चों में बांट देते हैं। वो चाहते तो और भी पैसे कमा सकता थे। लेकिन वह ऐसा नहीं करते हैं।  लेखक आगे बताते हैं कि जब भगत बाजार जाते हैं तो उस सीधे पन्सारी की दुकान पर ही जाते हैं जहां उनकी जरूरत का सारा सामान मिल जाता है। वो वहां से अपना सामान लेकर सीधे घर आ जाते हैं। यही उनकी दिनचर्या है। इसके आलावा वो न तो बहुत पैसा कमाने का लालच रखते हैं न गैर जरूरी सामान खरीदने का। लेखक कहते हैं कि हम उनसे सबक लेकर बाजार के जादू से बच सकते हैं।क्योंकि गैर जरूरी सामान खरीद कर व्यक्ति ना तो खुद फायदा उठा रहा है और ना ही बाजार को सही सार्थकता दे रहा है।

**पैसे की व्यंग्य शक्ति-** बाजार की सार्थकता भी तभी है जब व्यक्ति केवल अपनी जरूरत का सामान खरीदें। बाजार हमेशा ग्राहकों को मौन निमंत्रण देता है। अपनी चकाचौंध से आकर्षित करता है। व्यक्ति का अपने मन पर नियंत्रण होना चाहिए।

लेकिन जो लोग अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं रखते हैं। वो अपनी पर्चेजिंग पावर के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति – शैतानी शक्ति और व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। ऐसे व्यक्ति न तो खुद बाज़ार से कुछ लाभ उठा सकते हैं और न ही बाजार को लाभ दे सकते हैं।ये लोग सिर्फ बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिससे बाजार में छल कपट बढ़ता हैं। सद्भावना का नाश होता हैं।

बाजार को सार्थकता वही मनुष्य दे सकता है जो जानता है कि उसे बाजार से क्या चाहिए |

## गद्यांश-1

बाज़ार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है , वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है।

**1. किसका जादू आँख की राह काम करता है?**

**(क)** मन का जादू
**(ख)** पैसे का जादू
**(ग)** बाज़ार का जादू
**(घ)** मर्यादा का जादू

**2. उपर्युक्त गद्यांश का मुख्य प्रतिपाद्य (उद्देश्य) क्या हो सकता है?**

**(क)** बाज़ार के उपयोग का विवेचन
**(ख)** बाज़ार से लाभ
**(ग)** बाज़ार न जाने की सलाह
**(घ)** बाज़ार जाने की सलाह

**3. बाज़ार का सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। कारण है?**

**(क)** लालच के कारण
**(ख)** मोह के कारण
**(ग)** बाज़ार के जादू के कारण
**(घ)** व्यक्ति के कारण

**4. आप को किस स्थिति में बाज़ार जाना चाहिए?**

**(क)** जब मन खाली हो
**(ख)** जब मन खाली न हो
**(ग)** जब मन बंद हो
**(घ)** जब मन में नकार हो

**5 - ग्राहक पर बाज़ार के जादू का प्रभाव पड़ने का कारण है?**

**(क)** ग्राहक का मन खाली होना
**(ख)** ग्राहक का मन भरा हुआ होना
**(ग)** ग्राहक के साथ उसकी पत्नी होना
**(घ)** ग्राहक गरीब होना

**उत्तर**- (1)-**ग** , (2)-**क**, (3)-**ग**, (4)-**ख**, (5)-**क**

## गद्यांश-2

पर उस जादू की जकड़ से बचने का एक सीधा-सा उपाय है । वह यह कि बाजार जाओ तो खाली मन न हो। मन खाली हो, तब बाजार न जाओ। कहते हैं लू में जाना हो तो पानी पीकर जाना चाहिए। पानी भीतर हो, लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है। मन लक्ष्य में भरा हो तो बाजार भी फैला-का-फैला ही रह जाएगा। तब वह घाव बिलकुल नहीं दे सकेगा , बल्कि कुछ आनंद ही देगा। तब बाजार तुमसे कृतार्थ होगा, क्योंकि तुम कुछ-न-कुछ सच्चा लाभ उसे दोगे। बाजार की असली सार्थकता है आवश्यकता के समय काम आना ।

**1. बाजार जाते समय बाजार के जादू की पकड़ से बचने का सीधा-सा उपाय क्या हैं ?**

**(क)** मन खाली न हो
**(ख)** मन रिक्त हो
**(ग)** मन भारी हो
**(घ)** मन बोझिल हो

**2. मनुष्य का मन खाली होने पर बाजार क्यों नहीं जाना चाहिए ?**

**(क)** बाजार की जकड़ में आने के लिए
**(ख)** बाजार की चकाचौंध से बचने के लिए
**(ग)** बाजार खाली होता है
**(घ)** बाज़ार खाली लगता है

**3. बाजार कब फैला का फैला रह जाएगा ?**

**(क)** मन में लक्ष्य होने से
**(ख)** मन का खाली होने से
**(ग)** मन शून्य होने पर
**(घ)** जेब खाली होने पर

**4. बाजार की सार्थकता किसमें है?**

**(क)** लोगों की खरीदारी करने में **(ख)** लोगों की आवश्यकता पूरी करने में

**(ग)** उत्कृष्ट चीजें मिलने में **(घ)** उपर्युक्त सभी

**5. बाजार से कब असली आनंद मिलता हैं ?**

**(क)** जब ग्राहक के मन में कोई लक्ष्य नहीं होता **(ख)** जब ग्राहक के मन में लक्ष्य निश्चित होता है

**(ग)** जब आरामदायक वस्तुएं मिले **(घ)** कोई भी नहीं

**उत्तर**- (1)-**क** , (2)-**ख**, (3)-**क**, (4)-**घ**, (5)-**ख**

## गद्यांश-3

उनका आशय था कि यह पत्नी की महिमा है। उस महिमा का मैं कायल हूँ। आदिकाल से इस विषय में पति से पत्नी की ही प्रमुखता प्रमाणित है। और यह व्यक्तित्व का प्रश्न नहीं, स्त्रीत्व का प्रश्न है। स्त्री माया न जोड़े, तो क्या मैं जोड़ें? फिर भी सच सच है और वह यह कि इस बात में पत्नी की ओट ली जाती है। मूल में एक और तत्व की महिमा सविशेष है। वह तत्व है मनीबैग, अर्थात पैसे की गरमी या एनर्जी। पैसा पावर है। पर उसके सबूत में आस-पास माल-टाल न जमा हो तो क्या वह खाक पावर है! पैसे को देखने के लिए बैंक-हिसाब देखिए, पर माल-असबाब मकान-कोठी तो अनदेखे भी देखते हैं। पैसे की उस 'पचेंजिग पावर' के प्रयोग में ही पावर का रस है।

**1. कौन किसका कायल है?**

**(क)** पति अपनी पत्नी की महिमा का **(ख)** पत्नी अपने पति के महिमा की

**(ग)** लेखक अपंने मित्र की महिमा का **(घ)** लेखक पैसे की महिमा का

**2. पत्नी की प्रमुखता कब प्रमाणित है?**

**(क)** आदि काल से **(ख)** वर्तमान काल से **(ग)** सदा से **(घ)** हमेशा

**3. 'स्त्रीतत्व' शब्द है –**

**(क)** जातिवाचक संज्ञा **(ख)** भाववाचक संज्ञा **(ग)** व्यक्तिवाचक संज्ञा **(घ)** विशेषण

**4. पैसे को क्या बताया गया है?**

**(क)** सबूत **(ख)** दिखावा **(ग)** पावर **(घ)** माल-ताल

**5. माया कौन जोड़ती है?**

**(क)** पत्नी **(ख)** स्त्री **(ग)** मनीबेग **(घ)** पड़ोसी

**उत्तर**- (1)-**क** , (2)-**क**, 3)-**ख**, (4)-**ग**, (5)-**ख**

## गद्यांश-4

इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक-दूसरे को ठगने की घात में हों। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है और यह बाजार का, बल्कि इतिहास का, सत्य माना जाता है। ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है; तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना हैं और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है, जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है वह मायावी शास्त्र है वह अर्थशास्त्र अनीति शास्त्र है।

**1. बाजार में आदमी क्या बन कर रह जाते हैं?**

(क) कोरे गाहक (ख) बेचक (ग) दोनों (घ) इतिहास

**2. दोनों किस घात में रहते हैं?**

(क) एक-दूसरे को ठगने की (ख) एक दूसरे को जानने की

(ग)एक दूसरे को लूटने की (घ) एक दूसरे को शोषण करने की

**3. एक की हानि में दूसरे को अपना क्या दिखता है?**

(क) लाभ (ख) हानि (ग) सुख (घ) दुःख

**4. निष्कपट कब शिकार होता है?**

(क) गाहक और बेचक के व्यवहार से (ख) बाजार का विडम्बना बनने से

(ग)बाजार के मायावी शास्त्र बनने से (घ) एक दूसरे को ठगने से

**5. 'निष्कपट' का संधि-विच्छेद क्या है**

(क) निः+कपट (ख) निस्+कपट (ग) निष्क+कपट (घ) नि+कपट

**उत्तर- (1)-ग (2)-क (3)-क (4)-घ (5)-क**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**1. बाजार की सार्थकता किसमें है?**

उत्तर- मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में ही बाजार की सार्थकता है। जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नही करते वे भी बाजार को सार्थक बनाते हैं।

**2. फैंसी चीजों की बहुतायत का क्या परिणाम होता है?**

उत्तर- फैंसी चीजें आराम की जगह आराम में व्यवधान ही डालती है। थोड़ी देर को अभिमान को जरूर सेंक मिल जाती है पर दिखावे की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है।

**3. बाजार के जादू को लेखक ने कैसे स्पष्ट किया है ?**

उत्तर- बाजार के रूप का जादू आँखों की राह काम करता हुआ हमें आकर्षित करता है। बाजार का जादू ऐसे चलता है जैसे लोहे के ऊपर चुंबक का जादू चलता है। चमचमाती रोशनी में सजी फैंसी चींजें ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित करती हैं| इसी चुम्बकीय शक्ति के कारण व्यक्ति फिजूल सामान को भी खरीद लेता है |

**4. जादू की जकड़ से बचने का क्या उपाय है ?**

उत्तर- जादू की जकड़ से बचने के लिए एक ही उपाय है, वह यह है कि बाजार जाओ तो मन खाली न हो, मन खाली हो तो बाजार मत जाओ।

**5. जेब भरी हो और मन खाली तो हमारी क्या दशा होती है ?**

उत्तर- जेब भरी हो और मन खाली हो तो हमारे ऊपर बाजार का जादू खूब असर करता है। मन, खाली है तो बाजार की अनेकानेक चीजों का निमंत्रण मन तक पहुँच जाता है और उस समय यदि जेब भरी हो तो मन हमारे नियंत्रण में नहीं रहता।

**6. पर्चेजिंग पावर किसे कहा गया है, बाजार पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?**

उत्तर- पर्चेजिंग पावर का अर्थ है खरीदने की शक्ति। पर्चेजिंग पावर के घमंड में व्यक्ति दिखावे के लिए आवश्यकता से अधिक खरीदारी करता है और बाजार को शैतानी व्यंग्य-शक्ति देता है। ऐसे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

**7. बाज़ार का जादू क्या है? उसके चढ़ने-उतरने का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।**

उत्तर-बाजार की चमक-दमक व उसके आकर्षण में फँसकर व्यक्ति खरीददारी करता है तो यही बाजार का जादू है। बाजार का जादू मनुष्य पर तभी चलता है जब उसके पास धन होता है तथा वस्तुएँ खरीदने की निर्णय क्षमता नहीं होती। वह आराम वे अपनी शक्ति दिखाने के लिए निरर्थक चीजें खरीदता है। जब पैसे खत्म हो जाते हैं तब उसे पता चलता है कि आराम के नाम पर जो गैर जरूरी वस्तुएँ उसने खरीदी हैं, वे अशांति उत्पन्न करने वाली है। वह झल्लाता है, परंतु उसका अभिमान उसे तुष्ट करता है।

**8. 'बाज़ार दर्शन' निबंध उपभोक्तावाद एवं बाज़ारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है।'-उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।**

उत्तर- यह निबंध उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है। लेखक बताता है कि बाजार का आकर्षण मानव मन को भटका देता है। वह उसे ऐशोआराम की वस्तुएँ खरीदने की तरफ आकर्षित

करता है। लेखक ने भगत जी के माध्यम से नियंत्रित खरीददारी का महत्त्व भी प्रतिपादित किया है। बाजार मनुष्य की ज़रूरतें पूरी करें। इसी में उसकी सार्थकता है, अन्यथा यह समाज में ईर्ष्या, तृष्णा, असंतोष, लूटखसोट को बढ़ावा देता है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1.बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है?**

उत्तर-बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं –

1. बाजार में आकर्षक वस्तुएँ देखकर मनुष्य उनके जादू में बँध जाता है।
2. उसे उन वस्तुओं की कमी खलने लगती है।
3. वह उन वस्तुओं को जरूरत न होने पर भी खरीदने के लिए विवश होता है।
4. वस्तुएँ खरीदने पर उसका अहं संतुष्ट हो जाता है।
5. खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि जो चीजें आराम के लिए खरीदी थीं वे खलल डालती हैं।
6. उसे खरीदी हुई वस्तुएँ अनावश्यक लगती हैं।

**2. 'बाजारूपन' से तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते है अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमे है ?**

उत्तर –बाज़ारूपन से तात्पर्य है कि बाजार की चकाचौंध में खो जाना। केवल बाजार पर ही निर्भर रहना। ऐसे व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं जो आवश्यक सामान खरीद लेते हैं जिनकी उन्हें ज़रूरत होतीहै । वे फिजूल में सामान नहीं खरीदते रहते हैं अर्थात् वे अपना धन और समय नष्ट नहीं करते हैं। लेखक कहता है कि बाजार की सार्थकता तो केवल ज़रूरत का सामान खरीदने में ही है तभी हमें लाभ होगा।

**3. बाजार का जादू मनुष्य को कैसे प्रभावित करता हैं?'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।**

उत्तर –बाजार की तड़क-भड़क और वस्तुओं के रूप-सौंदर्य से जब ग्राहक खरीददारी करने को मजबूर हो जाता है तो उसे बाजार का जादू कहते हैं। बाजार का जादू तब सिर चढ़ता है जब मन खाली हो। मन में निश्चित भाव न होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को अच्छा समझता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर जरूरी चीजें खरीदता है। इस तरह वह जादू की गिरफ़्त में आ जाता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फ़ैसी चीजें आराम में मदद नहीं करतीं, बल्कि खलल उत्पन्न करती हैं। इससे वह झुंझलाता है, परंतु उसके स्वाभिमान को सेंक मिल जाती है।

**4. भगत जी बाजार और समाज को सार्थकता प्रदान कर रहें हैं कैसे? ' बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए?**

उत्तर –भगत जी निम्नलिखित तरीके से बाजार और समाज को सार्थकता प्रदान कर रहें हैं-

1. वे निश्चित समय पर चूरन बेचने के लिए निकलते हैं।
2. छह आने की कमाई होते ही बचे चूरन को बच्चों में मुफ़्त बाँट देते हैं।
3. बाजार में जीरा व नमक खरीदते हैं।
4. सभी का अभिवादन करते हैं।
5. बाजार के आकर्षण से दूर रहते हैं।
6. अपने चूर्ण का व्यावसायिक तौर पर उत्पादन नहीं करते।

इस प्रकार भगतजी के मन में सांसारिक आकर्षणों के लिए कोई तृष्णा नहीं है। वे संचय, लालच और दिखावे से दूर रहते हैं। बाजार और व्यापार उनके लिए आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है। भगतजी के मन का संतोष और निस्पृह भाव, उनको श्रेष्ठ उपभोक्ता और विक्रेता बनाते हैं।

**5. अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र कब बन जाता है?**

उत्तर- जब बाजार में कपट और शोषण बढ़ने लगे, खरीददार अपनी पर्चेचिंग पावर के घमंड में दिखावे के लिए खरीददारी करें| मनुष्यों में परस्पर भाईचारा समाप्त हो जाए| यदि मन में संतोष न हो और व्यक्ति दिखावे और ईर्ष्या की भावना से संचय करे एवं खरीददार और दुकानदार एक दूसरे को ठगने की घात में लगे रहें, एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखाई दे तो बाजार का अर्थशास्त्र, अनीतिशास्त्र बन जाता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडंबना है।

# 12. काले मेघा पानी दे-धर्मवीर भारती

**पाठ का सार--**काले मेघा पानी दे मानवता के महान पुजारी, आस्था वादी समाजशास्त्री, लेखक धर्मवीर भारती के बचपन के संस्मरण पर आधारित एक विचार प्रधान लेख है ।यह संस्मरण भारतीय समाज के लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान सम्मत तर्क पर आधारित है। विश्वास भारतीय समाज की आस्था से जुड़ा हुआ है और विज्ञान का अपना तर्क है जो सहज एवं स्वाभाविक है ।लेखक ने आस्था वादी भारतीय समाज के विश्वास और विज्ञान की सामर्थ्य का सहारा लेकर एक विचार प्रधान लेख की रचना की है जो पाठक को सहज ही सोचने के लिए विवश करता है। आस्था पूरित विश्वास या वैज्ञानिक तर्क दोनों में कौन कितना सार्थक है ,यह प्रश्न पाठक के हृदय को उद्वेलित करता है ,पाठक के हृदय में द्वंद पैदा करता है और पाठक अनायास ही आस्था वादी समाज के विश्वास और विज्ञान के तर्क के बीच हिचकोले खाता रहता है।

आसाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत जाता है। लेकिन वर्षा का नामोनिशान नहीं दिखाई पड़ता। आशावादी भारतीय ग्रामीण समाज जो अशिक्षा, गरीबी , बेबसी,अभाव के साथ-साथ अंधविश्वास से घिरा हुआ है, अनावृष्टि या सूरज के प्रचंड ताप से बचने के लिए विश्वास का सहारा लेता है और अपने को जीवित रखने के लिए परंपरा से मिले हुए प्रपंच का सहारा लेता है। इस प्रपंच से उन्हें लाभ मिलता है या नहीं मिलता है, लेकिन विश्वास अवश्य है कि इंद्र भगवान खुश होकर वर्षा कराएंगे ,नदी -नाला, तालाब सभी पानी से भर जाएगा ।धरती के सभी जीव जंतु को पानी मिलेगा खेत में फसलें लहलहाएगी और भारतीय कृषक समाज खुशहाल हो जाएगा । अनावृष्टि को दूर करने के लिए गांव के बच्चों की टोली इंद्रसेना बनकर द्वार -द्वार जाकर पानी मांगती है और गांव के लोग वह पानी जिसे वे किसी तरह अपने परिवार जनों को जीवित रखने के लिए बचाकर कर रखे हैं,उस पर डालते हैं और कीचड़ बन जाता है। उसी कीचड़ को इंदर सेना अपनी देह पर लपेटकर एक घर से दूसरे घर घूमते रहते हैं। वे गंगा मैया की जयकारा लगाते हैं। इन्द्र भगवान से गीत गाकर पानी मांगते हैं –

काले मेघा पानी दे, गगरी फूटी बैल प्यासा
पानी दे गुड़धानी दे, काले मेघा पानी दे.....

दूसरी ओर विज्ञान की पढ़ाई करने वाला, आर्य समाजी संस्कार से सराबोर, कुमार सभा का उपमंत्री लेखक धर्मवीर भारती का किशोर मन यह तर्क करता है कि यह पानी की बर्बादी है ।यदि ऐसे इंद्र भगवान से पानी मांगने से पानी मिलेगा तो ये लोग अपने लिए पानी क्यों नहीं मांग लेते ।ये पूरे गांव के लोगों के घर के पानी को क्यों बर्बाद करते हैं। ऐसे ही अंधविश्वास के कारण हम पिछड़ गए हैं।हम गुलाम बने हैं।लेकिन लेखक की मां की उम्र से भी अधिक उम्र वाली लेखक की मुंह बोली जीजी जो लेखक को बचपन से ही सबसे ज्यादा प्यार करती आई है। जिसके कारण लेखक जीजी की हर बात को मानते हैं ।जीजी के प्राण अपने बेटे बहू सब को छोड़कर लेखक में बसते हैं। वह अपने सारे पूजा- विधान लेखक के हाथों महज इसलिए करवाती है किउसके सभी पूजा विधान का पुण्य सिर्फ लेखक को मिले ।जीजी के इसी प्यार के कारण लेखक ना चाहते हुए भी दीदी के सभी पूजा - विधान, त्योहार अनुष्ठान में हाथ बटाते हैं।लेकिन इंद्रसेना को पानी देने के नाम पर लेखक बिल्कुल अड़ा हुआ है कि वह इस अंधविश्वास भरे काम को नहीं करेगा। इंद्रसेना की देह पर पानी नहीं डालेगा। पानी की बर्बादी इस तरह नहीं करेगा। लेखक ने साफ इंकार कर दिया कि वह अंधविश्वास को नहीं मानता। जीजी गुस्से में आकर अपने बूढ़े डगमगाते पैरों से चलकर बाल्टी भर कर पानी मेंढक मंडली पर डालती है और लेखक अलग मुंह फुलाए खड़ा सब देख रहा है और मन ही मन पानी की बर्बादी पर दुखी हो रहा है।लेखक पर अधिक प्यार के कारण जीजी का गुस्सा कुछ देर में ही शांत हो जाता है ।वह प्यार से लेखक के सिर को अपनी गोद में रखकर समझाती है कि बेटा यह अंधविश्वास नहीं है ।यह पानी की बर्बादी नहीं है। यह हमारे ऋषि-मुनियों का दिया हुआ संस्कार है ।जिसे वे ऋषि मुनि त्याग कहते थे ।जिस तरह किसान अपने पास का अच्छा गेहूं खेत में डालकर पहले गेहूं की बुवाई करता है और बाद में खेत उसे चार गुणा-आठ गुणा गेहूं देता है । ठीक उसी तरह हम मेढक मंडली पर पानी डालकर पानी की बुवाई करते हैं ।बाद में सारे शहर- कस्बा, गांव पर पानी वाले बादलों के द्वारा पानी बरसाया जाता है ।खेतों में फसलें लहलहाने लगती है। नदी, तालाब ,पोखर सभी पानी से लबालब भर जाते हैं ।धरती के सभी जीव को ग्रीष्म के ताप से मुक्ति मिलती है।सभी जीव ,पशु-पक्षी,पादप नया जीवन प्राप्त करते हैं।जीजी की बात सुनकर लेखक के तर्क का किला ध्वस्त हो जाता है। लेखक महसूस करता है कि वास्तव में हमें भोग को छोड़कर समाज के लिए ,देश के लिए ,मानवता के लिए कुछ त्याग करना होगा ।कुछ दान देना होगा ।तभी हम आशा कर सकते हैं कि हम देश और समाज से कुछ पाने के हकदार हैं।

## गद्यांश 1

मैं असल में था तो इन्हीं मेढक-मंडली वालों की उमर का, पर कुछ तो बचपन के आर्य समाजी संस्कार थे और एक कुमार- सुधार सभा कायम हुई थी उसका उप मंत्री बना दिया गया था – सो समाज-सुधार का जोश कुछ ज्यादा ही था। अंधविश्वासों के खिलाफ तो तरकस में तीर रखकर घूमता रहता था । मगर मुश्किल यह थी कि मुझे अपने बचपन में जिससे सबसे ज्यादा प्यार मिला वे थीं जीजी। यूं मेरी रिश्ते में कोई नहीं थीं ।उम्र में मेरी मां से भी बड़ी थीं, पर अपने लड़के- बहू सबको छोड़कर उनके प्राण मुझी में बसते थे। और वे थीं उन तमाम रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा -अनुष्ठानों की खान जिन्हें कुमार- सुधार सभा का यह उप मंत्री अंधविश्वास कहता था, और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता था। पर मुश्किल यह थी कि उनका कोई पूजा- विधान, कोई त्यौहार अनुष्ठान मेरे बिना पूरा नहीं होता था। दिवाली है तो गोबर और कौड़ियों से गोवर्धन और सतिया बनाने में लगा हूं, जन्माष्टमी है तो रोज आठ दिन की झांकी तक को सजाने और पंजीरी बांटने में लगा हूं, हर छठ है तो छोटी रंगीन कुलहियो में भूजा भर रहा हूं। किसी में भूना चना ,किसी में भूनी मटर, किसी में भूने अरवा चावल, किसी में भूना गेहूं। जीजी यह सब मेरे हाथों से करातीं, ताकि उनका पुण्य मुझे मिले। केवल मुझे।

**(1) लेखक किसका उपमंत्री था?**

(अ) आर्य समाज का (ब) अंधविश्वास का (स) मेंढक- मंडली का (द)कुमार -सुधार सभा का

**(2)लेखक किसके खिलाफ तरकस में तीर लेकर घूमता रहता था?**

(अ) समाज (ब) आर्य समाज (स) मेंढक- मंडली (द) अंधविश्वास

**(3) लेखक की जीजी की उम्र लेखक की मां की उम्र से-**

(अ) ज्यादा थी (ब) कम थी (स) बराबर थी (द) उपर्युक्त कोई नहीं

**(4) जीजी के प्राण किसमें बसते थे ?**

(अ)उनके बेटे में (ब) उनकी बहू में (स) लेखक की मां में (द) लेखक में

**(5) जीजी अपने सभी पूजा -विधान किस से करवाती थी ?**

(अ) अपने बेटे से (ब) अपनी बहू से (स) अपने पड़ोसी से (द) लेखक से

**उत्तरमाला**—(1) -**द**, (2)- **द**, (3)- **अ** (4) -**द** (5)- **द**

## गद्यांश 2

फिर जीजी बोलीं ,"देख तू तो अभी से पढ़ लिख गया है ।मैंने तो गांव के मदरसे का मुंह नहीं देखा ।पर एक बात देखी है कि अगर 30-40 मन गेहूं उगाना है तो किसान 5-6 सेरअच्छा गेहूं अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियां बना कर फेंक देता है ।उसे बुबाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं वह भी बुबाई है ।पानी गली में बोएंगे तो सारे शहर ,कस्बा ,गांव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं ,फिर काले मेघा से पानी मांगते हैं। सब ऋषि- मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना- अठ गुना करके लौटाएंगे भैया, यह तो आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा ।यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।" जी जी का एक लड़का राष्ट्रीय आंदोलन में पुलिस की लाठी खा चुका था, तब से जीजी गांधी महाराज की बात अक्सर करने लगी थी।

**(1) किसान 30- 40 मन गेहूं के लिए कितना गेहूं जमीन में क्यारियों में बुबाई करता है।**

(अ)दस -बीस सेर (ब) पंद्रह -बीस सेर (स) पांच -छह सेर (द) पच्चीस -तीस सेर

**(2) पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना -अठ गुना करके लौटाएंगे। यह किसने कहा-**

(अ) भगवान ने (ब) ऋषि-मुनियों ने (स) जीजी ने (द) लेखक ने

**(3) यथा राजा तथा प्रजा का अर्थ होता है।**

(अ) जैसी प्रजा वैसी राजा (ब) प्रजा के अनुसार राजा का आचरण

(स) राजा के विपरीत प्रजा का आचरण (द) राजा के आचरण के अनुसार प्रजा का आचरण

**(4) यथा प्रजा तथा राजा का अर्थ है-**

(अ) राजा प्रजा एक समान (ब) प्रजा बड़ी राजा छोटा

(स) राजा बड़ा प्रजा छोटी (द)प्रजा के अनुसार राजा का आचरण

**(5) पुलिस की लाठी किसने खाई थी**

(अ) लेखक ने (ब) प्रजा ने (स) लेखक के लड़के ने (द) जीजी के लड़के ने

**उत्तरमाला— (1)- स (2)- ब (3)- द (4)- द (5)- द**

## गद्यांश - 3

उन लोगों के दो नाम थे -इंदरसेना या मेंढक मंडली। बिल्कुल एक दूसरे के विपरीत। जो लोग उनके नग्न स्वरूप शरीर, उनकी उछल- कूद ,उनके शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ कांदो से चिढ़ते थे वे उन्हें कहते थे मेंढक- मंडली ।उनकी अगवानी गालियों से होती थी । वे होते थे 10 -12 बरस से 16 -अठारह बरस के लड़के, सांवला नंगा बदन सिर्फ एक जांघिया या कभी-कभी सिर्फ लंगोटी। एक जगह इकट्ठे होते थे। पहला जयकारा लगता था ,"बोल गंगा मैया की जय"। जय कारा सुनते ही लोग सावधान हो जाते थे। स्त्रियांऔर लड़कियां छज्जे,बारजे से झांकने लगती थींऔर यह विचित्र नंग धड़ंग टोली उछलती -कूदती समवेत पुकार लगाती थी।

**(1) गांव से पानी मांगने वालों को लोग किस नाम से पुकारते थे?**

(अ) किशोर बच्चे (ब) 16- अठारह बरस के

(स)उछल कूद करते बच्चे (द) मेंढक मंडली या इंदर सेना

**(2) मेंढक मंडली से क्या आशय है?**

(अ) इंद्रसेना (ब) बच्चों की मंडली

(स) मेंढकों की मंडली (द) मेंढक की तरह उछल -कूद करते बच्चे

**(3) मेढक मंडली में कैसे बच्चे होते थे?**

(अ) 10 बरस के बच्चे (ब) 12 बरस के बच्चे

(स) 16 बरस के बच्चे (द) 10- 12 बरस से 16- 18 बरस के बच्चे

**(4) इंदर सेना की जयकारे की क्या प्रतिक्रिया होती थी?**

(अ) लोग घबरा जाते थे (ब) लोग घर छोड़कर भाग जाते थे

(स) लोग उछल कूद करने लगते थे (द) लोग सावधान हो जाते थे

**(5) वे लोग पानी क्यों मांगते थे?**

(अ) खेतों को पटाने के लिए (ब) अपनी प्यास बुझाने के लिए

(स) नहाने के लिए (द) उपर्युक्त कोई नहीं।

**उत्तरमाला— (1)- द (2)- द (3)- द (4)- द (5)- द**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**1. जीजी ने इंदरसेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?**

उत्तर-जीजी ने लेखक को अपने बारे में बताया कि वह मदरसे की पढ़ी –लिखी नहीं है। लेकिन जीजी को भारतीय संस्कृति, परंपरा ,रीति- रिवाज और आचार -व्यवहार का गहरा ज्ञान था। जीजी ने बताया कि किसान सबसे पहले पांच -छह सेर अपने घर का सबसे अच्छा वाला गेहूं खेतों में क्यारी बना कर फेंक देता है ।इसे गेहूं की बुवाई कहते हैं। इसके बदले में खेत कुछ महीनों के बाद किसान को 30 से 40 मन गेहूं देता है। किसान जब अपने घर का अच्छा वाला गेहूं खेतों में फेंकता है तो वह किसान का त्याग है। किसान को इस त्याग के बदले कई गुना अधिक गेहूं खेत से मिलता है। ठीक इसी तरह इस सूखे में जहां पानी की बहुत किल्लत है और हम जो इंदर सेना पर गलियों में पानी फेंकते हैं, यह पानी की बुवाई है। यह हमारा त्याग है। इसके बदले पानी वाले बादल झमाझम बरसा करेगा और हर शहर कस्बा, गांव खेत -खलिहान को भरपूर पानी मिलेगा। हमारे ऋषि-मुनियों ने यही कहा है कि पहले तुम खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना -अठगुना करके लौटाएगा। इस तरह जीजी ने अपने ऋषि-मुनियों के कथन के आधार पर इंद्रसेना पर पानी फेंके जाने को उचित ठहराया।

**2. लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक- मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आप को इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी?**

उत्तर-दस -बारह बरस से लेकर सोलह-अठारह बरस तक के नंग- धड़ंग लड़के एक जगह इकट्ठे होकर गांव की गलियों में ऊछल-कूद करते, गंगा मैया की जयकारा लगाते,शोर -शराबा करते पानी मांगते,लोग उनपर पानी फेंकते जिससे गलियों में कीचड़ -कादो हो जाता और वे सभी उस कीचड़- कांदो में लेटते हुए घूमते रहते। इसी आधार पर उससे चिढ़ने वाले लोग उन्हें मेंढक मंडली कहा करते थे।उस लड़कों का ऐसा मानना था कि वे घर घर जाकर पानी मांगते हैं, लोग उन पर पानी फेंकते हैं, इससे इंद्र भगवान खुश होते हैं और झमाझम वर्षा करके सारी दुनिया को गर्मी से निजात दिलाते हैं। अतः लड़कों की यह टोलीअपने आप को इंदरसेना कह कर बुलाती थी।

**3. इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है?**

उत्तर-यों तो संपूर्ण विश्व की मानव सभ्यता का विकास नदियों के किनारे ही हुआ है। हमारा भारत कृषि प्रधान रहा है। हमारे पूर्वज पशुपालन और कृषि कार्य करते थे। पशु को नदी से पानी पीने के लिए मिल जाता था और खेतों की सिंचाई भी नदियों के पानी से ही होती थी। अतः हमारे पूर्वज नदियों के किनारे बसते थे। नदियों को माता का दर्जा प्राप्त है। सभी मातृ नदियों में गंगा सर्वश्रेष्ठ है। यह जीवनदायिनी और मोक्ष दायनी है। इसी धार्मिकआस्था भाव के कारण इंदरसेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है।

भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में नदियों को देवी के रूप में पूजा जाता है। हमारे यहां आदि काल से हमारे पूर्वज नदियों को देवी के रूप में पूजते आए हैं। गंगा, यमुना, सरस्वती, कृष्णा ,कावेरी गोदावरी ,कोसी ,बूढ़ी गंडक इत्यादि हमारी मातृदेवी हैं। खेतों की सिंचाई से लेकर पीने के लिए शुद्ध पानी हमें हमारी मातृदेवी नदियों से ही मिलता है।अतः हमारी नदियां जीवनदायिनी और मोक्षदायिनी देवी है, हमारी माता हैं।

**4. रिश्तों में हमारी भावना शक्ति का बंट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के सन्दर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।**

उत्तर -बचपन में लेखक को सबसे अधिक प्यार जीजी से ही मिला। अपने लड़के बहू को छोड़कर जीजी के प्राण लेखक में ही बसते थे। जीजी अपना सभी पूजा- विधान ,त्यौहार अनुष्ठान लेखक हाथों ही करवाती थी महज इसलिए कि उसका पूरा का पूरा पुण्य लेखक को ही मिले। सिर्फ लेखक को। जीजी का यही प्यार ,यही रिश्ता लेखक को जीजी का विरोध करने से रोकता है। लेखक की बुद्धि जीजी के विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजना चाहती है लेकिन शिथिल पड़ जाती है क्योंकि रिश्तों के कारण मनुष्य की भावना शक्ति बंट जाती है। लेखक जीजी और अन्य लोगों द्वारा की जा रही पानी की बर्बादी को नहीं रोक पाता है। अतः प्रस्तुत पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि लेखक की बुद्धि जो सत्य की खोज करना चाहती थी जीजी के तर्कों के सामने कमजोर पड़ जाती है।

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**1. "पानी दे गुड़धानी दे" मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की मांग क्यों की जा रही है?**

उत्तर -मानव सभ्यता के विकास के साथ ही बादल या वर्षा का संबंध संपूर्ण जीव जगत से जुड़ा हुआ है। वर्षा से ही पादप उगते हैं, पलते हैं, बढ़ते हैं और जीवित रहते हैं। अन्य सभी जीव जगत के प्राण का आधार तो वर्षा ही है। सभी जीवो के लिए हवा के साथ साथ जल और भोजन की आवश्यकता होती है। वर्षा से जल भी मिलता है और अन्न भी मिलता है। जल बरसेगा तभी अन्न होगा।, फल के साथ-साथ रसदार पौधे होंगे ,तभी गुड़धानी (गुड़ और चने से बना एक प्रकार का लड्डू) बनेगा। अतः स्वाभाविक है कि पानी के साथ साथ गुड़धानी की मांग की जा रही है|

**2.गगरी फूटी बैल प्यासा इंदर सेना के इस खेल गीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है ?**

उत्तर -आषाढ़ का एक पखवारा बीत चुका है। अभी तक वर्षा का नामोनिशान नहीं है। संपूर्ण जीव जगत भीषण गर्मी के कारण त्राहिमाम कर रहा है।उस समय भारत की कृषि व्यवस्था पूर्ण रूप से वर्षा पर ही आश्रित थी। और खेत जोतने के लिए बैल ही एकमात्र सहारा था। यदि अभी वर्षा नहीं हुई तो बैल भी प्यासे मर जाएंगे तो बाद में भी खेती करना मुश्किल होगा। अतः भविष्य की इसी चिंता के कारण इंदर सेना के खेल गीतों में बैलों के प्यासा रहने की बात मुखरित हुई है।

# 13. पहलवान की ढोलक-फणीश्वर नाथ रेणु

## पाठ का सार

'पहलवान की ढोलक' आँचलिक कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु की समस्त विशेषताओं से युक्त एक श्रेष्ठ कहानी है। लेखक ने अपने गांव, अंचल एवं संस्कृति को इस कहानी में सजीव किया है। यह कहानी व्यवस्था के बदलने के साथ-साथ लोक कला और कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है।

**कहानी के नायक लुट्टन का परिचय** - लुट्टन के माता-पिता का देहांत तभी हो गया था जब वह नौ वर्ष की आयु का था। लुट्टन का विवाह हो चुका था। उसकी विधवा सास ने उसे पाल-पोस कर बड़ा किया। बचपन में वह गाय चराता, धारोष्ण दूध पीता और कसरत करता। गाँव के लोग उसकी सास को परेशान करते थे। लोगों से बदला लेने के लिए लुट्टन कसरत करता था। इससे उसका सीना और बाँहें सुडौल मांसल बन गई।

**लुट्टन का पहलवान बनना**- लुट्टन पहलवानी के दाँव-पेंच सीखता हुआ कब पहलवान बन गया, पता ही नहीं चला। लोग उससे डरने लगे। वह कुश्ती भी लड़ता था ।

**लुट्टन का श्यामनगर मेला देखने जाना** - एक बार लुट्टन श्यामनगर मेला देखने गया। पहलवानों की कुश्ती के दाँव-पेंच देखकर और ढोल की ललकारती आवाज ने उसमें उत्साह भर दिया।

**'शेर के बच्चे' चाँद सिंह पहलवान को ललकारना** - चाँद सिंह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ पंजाब से श्यामनगर आया था। उसने पंजाबी और पठान पहलवानों को हरा कर 'शेर के बच्चे' का खिताब जीता था। श्यामनगर के दंगल और शिकार- प्रिय वृद्ध राजा, उसे दरबार में रखने की बात कर रहे थे कि लुट्टन सिंह ने उसे कुश्ती के लिए ललकारा। उसे लोगों ने तथा राजा साहब ने बहुत मना किया लेकिन आत्मविश्वास के बूते वह उससे जा भिड़ा।

**चाँद सिंह और लुट्टन सिंह की कुश्ती** -दोनों में कुश्ती आरंभ हुई कुश्ती के लिए ढोल बजने लगा। 'ढाक- ढिना, ढाक ढिना, ढाक-ढिना' (अर्थात वाह पट्ठे!! वाह पट्ठे!!) लुट्टन को चाँद ने दबा लिया। उसी समय ढोल बजा 'चट् गिड़-धा, चट्-गिड़-धा, चट्-गिड़-धा' (मत डरना, मत डरना, मत डरना) लुट्टन सिंह ढोल की आवाज का अनुसरण कर रहा था। उसने चाँद का दाँव काटा और फिर चाँद को ललकारा। ढोल फिर बजा 'चटाक- -चट्-धा, चटाक चट्-धा' (उठा पटक दे! उठा पटक दे!!) लुट्टन ने दाँव लगाकर चाँद को उठाकर जमीन पर पटक दिया और चित्त कर दिया।

**राजकीय पहलवान बनना**-चाँद सिंह को धूल चटाने के बाद लुट्टन को राजा साहब ने राजकीय पहलवान बना दिया। उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। उसने धीरे-धीरे सभी नामी पहलवानों को हरा दिया। उसने काला खाँ को भी चित्त कर दिया।

**राजा साहब की कृपा दृष्टि** - राजा साहब लुट्टन का हर प्रकार से ध्यान रखते थे। राजा साहब उसे किसी से लड़ने की आज्ञा नहीं देते थे। वह 15 वर्ष तक अजेय बना रहा।

**पहलवान के दो पुत्र**- पहलवान की सास और स्त्री दोनों मर चुके थे। उसके दो पुत्र थे। उसने दोनों पुत्रों को भी पहलवानी के गुर सिखाए। वे भी भावी राजकीय पहलवान घोषित हो गए।

**व्यवस्था बदलना और पहलवान का अप्रासंगिक होना**-वृद्ध राजा का देहांत हो गया। नए राजकुमार ने विलायत से आकर सारी व्यवस्था अपने हाथ में ले ली। पहलवान को साफ जवाब मिल गया कि राजदरबार में उसकी आवश्यकता नहीं। नई व्यवस्था में वह अप्रासंगिक हो गया।

**पहलवान का गाँव लौटना**- लुट्टन सिंह अपने बेटों के साथ गाँव में रहने लगा। वहीं रहकर वह गाँव के नौजवानों को कुश्ती सिखाने लगा। खाने-पीने का खर्च गाँव वालों की ओर से बाँध दिया गया। धीरे-धीरे उसका स्कूल खाली रहने लग गया। उसके पुत्र मजदूरी करके जो कुछ लाते, उसी से गुजारा होता। पाठशाला में वे तीनों ही रह गए।

**गाँव पर वज्रपात** - गाँव पहले अनावृष्टि का शिकार हुआ, फिर अनाज की कमी का, और फिर गाँव पर मलेरिया और हैजे का प्रकोप हुआ। गाँव सूना हो चला। रोज दो-तीन लाशें उठने लगीं। लोग सूर्योदय होते ही लाशें उठाते और श्मशान ले जाते या नदी में बहा देते।

**पहलवान का ढोलक बजाना**-पहलवान अब भी रात को ढोलक बजाता रहता था। उसकी ढोलक की ललकार गाँव वालों में उत्साह का संचार कर देती थी। ढोलक की थाप संजीवनी शक्ति का काम करती थी।

**पहलवान के पुत्रों का महामारी की चपेट में आना**-एक दिन पहलवान के दोनों पुत्र भी महामारी की चपेट में आ गए। पहलवान ने सवेरे दोनों को कंधे पर लादा और नदी में बहा आया। लोगों ने सुना तो दंग रह गए।

**ढोलक की आवाज फिर सुनना**- रात में पहलवान की ढोलक की आवाज प्रतिदिन की तरह फिर सुनाई दी। लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई। लोगों ने पहलवान की हिम्मत की प्रशंसा की।

**ढोलक की आवाज सुनाई न देना**- चार-पाँच दिन बाद एक रात को ढोलक की आवाज सुनाई नहीं दी। पहलवान के कुछ बीमार शिष्यों ने जाकर देखा कि पहलवान की लाश 'चित्त' पड़ी है।

## गद्यांश-1

एक बार वह 'दंगल' देखने श्यामनगर मेला गया। पहलवानों की कुश्ती और दाँव-पेंच देखकर उससे नहीं रहा गया। जवानी की मस्ती और ढोल की ललकारती हुई आवाज ने उसकी नसों में बिजली उत्पन्न कर दी। उसने बिना कुछ सोचे-समझे दंगल में 'शेर के बच्चे' को चुनौती दे दी।

'शेर के बच्चे' का असल नाम था चाँद सिंह । वह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ, पंजाब से पहले-पहल श्यामनगर मेले में आया था। सुंदर जवान, अंग-प्रत्यंग से सुंदरता टपक पड़ती थी। तीन दिनों में ही पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के अपनी जोड़ी और उम्र के सभी पट्ठों को पछाड़कर उसने 'शेर के बच्चे' की टायटिल प्राप्त कर ली थी। इसलिए वह दंगल के मैदान में लंगोट लगाकर एक अजीब किलकारी भरकर छोटी दुलकी लगाया करता था। देशी नौजवान पहलवान, उससे लड़ने की कल्पना से भी घबराते थे। अपनी टायटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए ही चाँद सिंह बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था।

(**क**) **लुटट्न कहाँ गया और क्यों** ?

**(i)** श्यामनगर के मेले में दंगल देखने **(ii)** श्यामनगर का मेला देखने
**(iii)** मेले में पहलवानों को देखने **(iv)** श्यामनगर के मेले में झूला झूलने

(**ख**) **शेर का बच्चा किसे कहा गया था** ?

**(i)** बादल सिंह **(ii)** लुटट्न सिंह
**(iii)** चाँद सिंह **(iv)** पंजाबी पहलवान

(**ग**) **चांद सिंह बीच-बीच में दहाड़ता क्यों था** ?

**(i)** क्योंकि वह शेर का बच्चा था **(ii)** क्योंकि वह प्रसन्न था
**(iii)** दूसरे पहलवानों को डराने के लिए **(iv)** अपनी उपाधि को सिद्ध करने के लिए

(**घ**) '**नसों में बिजली उत्पन्न करना**' **का क्या अर्थ है** ?

**(i)** तेजी आना **(ii)** ताजगी भरना
**(iii)** जोश उत्पन्न करना **(iv)** बिजली बनाना

(**ड़**) **चांद सिंह की विशेषता क्या थी** ?

**(i)** वह सुंदर और जवान था **(ii)** उसने पंजाबी और पठान पहलवानों को हराया था
**(iii)** उसने शेर के बच्चे का टायटिल प्राप्त किया था **(iv)** उपर्युक्त सभी

**उत्तर**- (**क**) (i) **श्यामनगर मेले में दंगल देखने** (**ख**) (iii) **चाँद सिंह को**
(**ग**) (iv) **अपनी उपाधि को सिद्ध करने के लिए**(**घ**) (iii) **जोश उत्पन्न करना** (**ड़**)(iv)**उपर्युक्त सभी**

## गद्यांश-2

दोनों ही लड़के राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। अतः दोनों का भरण-पोषण दरबार से ही हो रहा था। प्रतिदिन प्रातःकाल पहलवान स्वयं ढोलक बजा-बजाकर दोनों से कसरत करवाता। दोपहर में लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की भी शिक्षा देता-''ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना। हाँ, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है, समझे। ढोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे!.. ऐसी ही बहुत-सी बातें वह कहा करता। फिर मालिक को कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसा व्यवहार करना चाहिए, आदि की शिक्षा वह नित्य दिया करता था।

(**क**) **राजदरबार का भावी पहलवान किसे घोषित किया जा चुका था** ?

**(i)** लुट्टन सिंह को **(ii)** बादल सिंह को
**(iii)** चाँद सिंह को **(iv)** लुट्टन पहलवान के दोनों लड़कों को

(ख) **पहलवान के बेटों का भरण-पोषण राजदरबार से होने का क्या कारण था** ?
**(i)** उनके पिता का दरबारी पहलवान होना **(ii)** समाज के उच्च अधिकारी के पुत्र होना
**(iii)** जनता की इच्छाशक्ति **(iv)** राजा का विशेष लगाव
(ग) **पहलवान अपने बेटों को क्या शिक्षा देता था** ?
**(i)** पहलवानी की **(ii)** ढोलक का सम्मान करने की
**(iii)** स्वामी-भक्ति की **(iv)** ये सभी
(घ) **राजा साहब ने पहलवान को दरबार में किस कारण से रखा** ?
**(i)** शेर के बच्चे चाँद सिंह को धूल चटाने के कारण
**(ii)** उसके ढोलक बजाने के ढंग से प्रभावित होने के कारण
**(iii)** लोगों द्वारा आग्रह करने के कारण
**(iv)** अपने सैनिकों को पहलवानी सिखाने के कारण
(ङ) **गाँवों से अखाड़े समाप्त होते जाने का क्या कारण हो सकता है**?
**(i)** राजदरबारों में पहलवानी की उपेक्षा करना **(ii)** मनोरंजन के अन्य साधन तलाशना
**(iii)** समाज के लोगों द्वारा इसकी उपेक्षा करना **(iv)** ये सभी

**उत्तर- (क) (iv) लुट्टन पहलवान के दोनों लड़कों को (ख) (i) उनके पिता का दरबारी पहलवान होना**
**(ग) (iv) ये सभी (घ) (i) शेर के बच्चे चाँद सिंह को धूल चटाने के कारण (ङ) (iv) ये सभी**

## गद्यांश-3

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन, प्राणियों में यह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े, बच्चे, जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

(क) **पहलवान की ढोलक में किस बीमारी को रोकने की शक्ति थी** ?
**(i)** बुखार को **(ii)** तपेदिक को **(iii)** महामारी को **(iv)** इनमें से कोई नहीं
(ख) **गाँव के वासियों में संजीवनी शक्ति भरने का काम किसने किया** ?
**(i)** राजा ने **(ii)** पहलवान ने **(iii)** पहलवान की ढोलक ने **(iv)** इनमें से कोई नहीं
(ग) **गाँव के बच्चे**, **बूढ़े**, **जवानों को पहलवान की ढोलक की आवाज सुनते ही क्या याद आ जाता था** ?
**(i)** दंगल का दृश्य **(ii)** मृत्यु का भय **(iii)** राजा की दयालुता **(iv)** रात्रि का अंधकार
(घ) **ढोलक की आवाज को सुनकर बिना किसी तकलीफ के अपने प्राण कौन त्याग देता था** ?
**(i)** लुट्टन सिंह **(ii)** चाँद सिंह **(iii)** मरता हुआ व्यक्ति **(iv)** स्वस्थ व्यक्ति
(ड़) **गाँव के लोगों की कैसी स्थिति थी** ?
**(i)** अर्द्धमृत **(ii)** औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन**(iii) (i)** और **(ii)** दोनों **(iv)** संतोषजनक

**उत्तर** - (**क**) (iv) **इनमें से कोई नहीं** (**ख**) (iii) **पहलवान की ढोलक ने**
(**ग**) (i) **दंगल के दृश्य** (**घ**) (iii) **मरता हुआ व्यक्ति** (**ङ**) (iii) (i) **और** (ii) **दोनों**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

1. **पहलवान की ढोलक की उठती-गिरती आवाज बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है** ? **उत्तर दीजिए।**

उत्तर-पहलवान की ढोलक ग्रामीणों को एक आंतरिक शक्ति देती है। पहलवान के दोनों पुत्र अन्य ग्रामीणों की भाँति गाँव में फैले महामारी की चपेट में आकर भगवान को प्यारे हो चुके थे, परंतु फिर भी वह ढोलक बजाता रहता है। उसका मनोबल नहीं टूटता, क्योंकि वह अपनी ढोलक के माध्यम से समूचे गाँव वालों को जीने की शक्ति देता है। इस प्रकार पहलवान महामारी से जूझते ग्रामीणों के लिए एक आदर्श बन गया। ग्रामीणों को उससे यह संदेश मिला कि हँसते-हँसते भी मृत्यु को गले लगाया जा सकता है।

2. '**पहलवान की ढोलक**' **के आधार पर लिखिए कि प्राचीन लोक-कलाएँ किस प्रकार धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है** ? **उनके पुनर्जीवन के लिए क्या किया जा सकता है** ?

उत्तर-प्राचीन लोक-कलाएँ अब धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं, क्योंकि औद्योगीकरण के कारण बढ़ते शहरीकरण में इन लोक-कलाओं की प्रासंगिकता समाप्त हो रही है। जो प्रासंगिक नहीं रह जाता, उसे समाप्त होना ही पड़ता है। आधुनिक समय में लोगों के मूल्य एवं जीवन-शैली अत्यधिक परिवर्तित हो गए हैं। अब कुश्ती जैसी कलाओं का अधिक महत्त्व नहीं रह गया है। आज के दौर में क्रिकेट, फुटबॉल, तैराकी, हॉकी, जिमनास्टिक जैसे अन्य खेल अधिक लोकप्रिय हो गए हैं। पहलवान की ढोलक पाठ के आधार पर कहा जा सकता है कि लुट्टन पहलवान या कुश्ती जब तक राज्याश्रित था, तब तक फला-फूला, लेकिन राज दरबार से निकल जाने के बाद उसकी स्थिति मरणासन्न हो गई। कुश्ती जैसी कलाओं के पुनर्जीवन के लिए सरकार के निवेश से ही शहरी एवं ग्रामीण नवयुवकों को विद्यालय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अच्छे प्रशिक्षक के अंतर्गत उचित प्रशिक्षण एवं सम्मान आदि मिलना आवश्यक है। अतः ढोल बजाने के इस उत्साहपूर्ण तरीके के आधार पर यह कहना उचित ही है कि इस पाठ में लोक-कलाओं को संरक्षण दिए जाने का संदेश दिया गया है।

3. **गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान के ढोल बजाते रहने का मर्म स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर-वास्तव में, ढोल की आवाज सुनते ही लुट्टन पहलवान में एक नए उत्साह एवं नई शक्ति का संचार हो जाता था। वह इसी शक्ति के बल पर दंगल जीत जाता था। उसका ढोल में एक गुरु के जैसा ही विश्वास था। ढोल के साथ उसकी श्रद्धा जुड़ी थी। वह यह भी मानता था कि ढोल की आवाज गाँव वालों में भी उत्साह का संचार कर देगी, जिससे वे महामारी का डटकर सामना कर सकेंगे। मौत के सन्नाटे को चीरने एवं उसके भय को समाप्त करने के लिए ही वह रात में ढोल बजाया करता था। इससे गाँव वालों में एक नई जिजीविषा पैदा होती थी। गाँव वालों में जीने की इसी इच्छा को उत्पन्न करने एवं बनाए रखने के लिए वह अपने बेटों की मृत्यु के उपरांत भी ढोल बजाता रहा। यह गाँव वालों के प्रति उसकी परोपकार की भावना थी। साथ ही साथ ढोल बजाकर ही वह अपने बेटों की मृत्यु के सदमे को झेलने की शक्ति भी प्राप्त कर रहा था।

4. **लुट्टन सिंह प्रसिद्ध पहलवान किस प्रकार बना** ?

उत्तर-लुट्टन सिंह जब केवल नौ वर्ष का था तभी उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी। उसकी शादी हो चुकी थी इसलिए उसकी सास ने ही उसका पालन-पोषण किया। वह बचपन में पशु चराता, ताजा दूध पीता और कसरत करता। गाँव के लोग उसकी सास को तरह-तरह की तकलीफ देते थे। लुट्टन उन लोगों से बदला लेना चाहता था इसलिए नियमित कसरत से वह सुडौल और मांसल बन गया। वह गाँव में अच्छा पहलवान समझा जाने लगा। श्यामनगर के मेले में उसने प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दी। उसे चित्त करके राजकीय पहलवान का दर्जा पाया। उसके बाद तो उसने सभी नामी गिरामी पहलवानों को हरा कर कीर्ति अर्जित की। इस प्रकार लुट्टन सिंह प्रसिद्ध पहलवान बन गया।

5. **व्यवस्था के बदलाव ने पहलवान के जीवन पर क्या प्रभाव डाला** ?

उत्तर- वृद्ध राजा के जीवित रहने तक पहलवान को अपने तथा परिवार के भरण-पोषण की चिंता नहीं थी क्योंकि उनके भरण-पोषण का भार दरबार पर था उसका जीवन आराम से चल रहा था। वृद्ध राजा की मृत्यु के पश्चात व्यवस्था में बदलाव आया। राजकुमार ने सारी व्यवस्था अपने हाथ में ले ली । उसने पहलवान को साफ बयान दे दिया कि दरबार में उसकी आवश्यकता नहीं है। इससे पहलवान का जीवन कष्टप्रद हो गया। वह गाँव लौट गया। उसके पुत्र मजदूरी करके जो कुछ लाते उससे उनका गुजारा चलता। इस प्रकार लोगों का मनोरंजन करने वाला पहलवान ढोलक बजाकर पेट भरने के लिए विवश हो गया|

## लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

1. **लुट्टन सिंह पहलवान की दी गई शिक्षा-दीक्षा पर पानी क्यों फिर गया**?

उत्तर-लुट्टन सिंह पहलवान के द्वारा दी गई शिक्षा से उसके दोनों पुत्र सामाजिक व राजसी रूप से भावी पहलवान घोषित हो चुके थे, परंतु अकस्मात् राजा के स्वर्गवासी होने के पश्चात् उत्तराधिकारी बने नए विलायती राजा ने पाया कि इन पहलवानों पर होने वाला राजसी खर्च बहुत अधिक है, क्योंकि नए राजा को कुश्ती का शौक नहीं था। अतः उन तीनों को उसने बिना किसी सुनवाई के ही राज दरबार से निकाल दिया।

2. **लाशों को बिना क़फन के पानी में बहा देने की सलाह क्यों दी जा रही थी** ?

उत्तर-जब महामारी के कारण घरों में से लगातार एक-दो लाशें निकलनें लगी, तो ग्रामवासी मानसिक और आर्थिक रूप से इतने टूट गए कि कफन तक के लिए भी सोचना पड़ रहा था। अतः लाशों को बिना कफन के गंगा में बहा देने की सलाह दी जा रही थी।

3. **गाँव में महामारी फैलने के बाद सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था** ?

उत्तर-सूर्योदय के पश्चात दिन भर गाँव में हलचल रहती थी। बीमार लोगों के कराहने, कै करने और हरे राम, हे भगवान टेरने की आवाजे सुनाई देती थी। लोगों के चेहरे पर एक चमक होती थी वो एक दूसरे को सांत्वना देते थे। सूर्यास्त के बाद सभी अपनी झोपड़ियों में घुस जाते और चूँ भी नहीं करते थे। माताएँ अपने दम तोड़ते पुत्र को बेटा कहने की हिम्मत भी नहीं कर पाती थी।

4. **लुट्टन पहलवान ढोलक क्यों बजाता था** ?

उत्तर-लुट्टन पहलवान का ढोलक की आवाज के साथ गहरा रिश्ता था। यह आवाज न सिर्फ लुट्टन में बल्कि पूरे ग्रामवासियों में जीवंतता और उत्साह भरती थी। वह जानता था कि ढोलक की आवाज मरते हुए ग्रामवासियों के मन से मरने का डर दूर करती है।

5. **लुट्टन सिंह को अपने बेटों के भविष्य की चिंता क्यों नहीं थी**

उत्तर-लट्टन सिंह के दोनों बेटे लुट्टन के साथ ही रहते थे और नियमित रूप से कसरत व कुश्ती का अभ्यास करते थे। वे राज-दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। उनके भरण-पोषण का सारा भार राज-दरबार उठा रहा था। इसलिए लुट्टन सिंह को उनके भरण-पोषण की कोई चिंता नहीं थी ।

# 14. शिरीष के फूल- हजारी प्रसाद द्विवेदी

साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने के पक्षपाती हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन 1907 में उत्तर प्रदेश में हुआ । उनका साहित्य कर्म भारतवर्ष के सांस्कृतिक इतिहास की रचनात्मक परिणति है ।मानवतावादी साहित्यकार द्विवेदी जी स्त्री को सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा शिकार मानते हैं ऐतिहासिक सन्दर्भ में उसकी पीड़ा का विश्लेषण करते हुए उसकी महिमा प्रतिष्ठित करते हैं ।

'शिरीष के फूल' निबंध कल्पलता से उद्धृत है।इसमें लेखक ने आँधी, लू और गर्मी की प्रचंडता में भी अवधूत की तरह अविचल होकर कोमल पुष्पों का सौन्दर्य बिखेर रहे शिरीष के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविषा और तुमुल कोलाहल कलह के बीच धैर्यपूर्वक, लोक के साथ चिंतारत, कर्तव्यशील बने रहने को महान मानवीय मूल्य के रूप में स्थापित किया है । ऐसी भावधारा में बहते हुए उसे देहबल के ऊपर आत्मबल का महत्व सिद्ध करने वाली इतिहास विभूति गांधीजी की याद हो आती है तो वह गांधीवादी मूल्यों के अभाव की पीड़ा से भी कसमसा उठता है। निबंध की शुरुआत में लेखक शिरीष की कोमल सुंदरता के जाल बुनता है फिर उसे भेदकर उसके इतिहास में और फिर उसके जरिए मध्यकाल के सांस्कृतिक इतिहास में पैठता है फिर तत्कालीन जीवन व सामंती वैभव- विलास को सावधानी से उकेरते हुए उसका खोखलापन भी उजागर करता है। अशोक के फूल के भूल जाने की तरह शिरीष को नजरअंदाज किए जाने की साहित्यिक घटना से आहत है और इसी में उसे सच्चे कवि का तत्व- दर्शन भी होता है। उनका मानना है कि योगी की अनाशक्त शून्यता और प्रेमी की पूर्णता एक साथ उपलब्ध होना सत्कवि होने की एकमात्र शर्त है। ऐसा कवि ही समस्त प्राकृतिक और मानवीय वैभव में रम कर भी चुकता नहीं और निरंतर आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा देता है ।

शिरीष के पुराने फलों की अधिकार-लिप्सु खरखड़ाहट और नए पत्ते- फलों द्वारा उन्हें धकियाकर बाहर निकालने में लेखक साहित्य, समाज व राजनीति में पुरानी और नई पीढ़ी के द्वंद्व को संकेतित करता है ।

## गद्यांश-1

एक -एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष एक अद्भुत अवधूत है। दुख हो या सुख, वह हार नहीं मानता ।ना उधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं, तब भी यह हजरत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं । एक वनस्पतिशास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है।जरूर खींचता होगा । नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर को कैसे उगा सकता था ?अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली हैं । कबीर बहुत- कुछ इस शिरीष के समान ही थे, मस्त और बेपरवाह, पर सरस और मादक। कालिदास भी जरूर अनासक्तयोगी रहे होंगे। शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत' का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनाविल उन्मुक्त ह्रदय में उमड़ सकता है। जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-किराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया,वह भी क्या कवि है?

**प्रश्न.1-लेखक ने शिरीष को किस संज्ञा से अभिहित किया है ?**

(क)अवधूत (ख) मुक्त ह्रदय (ग) फक्कड़ (घ)मस्त मौला

**प्रश्न.2 –अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सरस रचनाएँ निकली है। यह किसकी ओर संकेत है?**

(क) कबीर दास (ख) कालिदास (ग) तुलसीदास (घ) सभी

**प्रश्न3.-मस्त और बेपरवाह पर सरस और मादक लेखक ने किसकी विशेषताएँ बतायी है?**

(क) कबीर दास (ख)तुलसीदास (ग) कालिदास (घ) सभी

**प्रश्न4. वनस्पति शास्त्री ने लेखक को शिरीष के सम्बन्ध में क्या बताया था?**

(क) शिरीष वायुमंडल से अपना रस खींचता है (ख)शिरीष दुख हो या सुख, हार नहीं मानता
(ग)जो कवि अनासक्त नहीं रह सका,वो फक्कड़ नहीं बन सका (घ)कबीर बहुत कुछ शिरीष के समान ही थे

**प्रश्न5.- 'अपने काम से काम रखना' इस उक्ति का सम्बन्ध किससे है?**

(क)आठों पहर मस्त रहना (ख)अनासक्त अनाविल उन्मुक्त ह्रदय
(ग) ना उधो का लेना, न माधो का देना (घ) फक्कड़ाना मस्ती

**उत्तर- 1.क 2. घ 3. क 4. क 5. ग**

## गद्यांश-2

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगे जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या यह बाह्य परिवर्तन- धूप, वर्षा,आँधी,लू- अपने आपमें सत्य नहीं हैं? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट,अग्निदाह, लूट-पाट, खून- खच्चर का बवंडर बह गया है,उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ?शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है।शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर है। गांधी भी वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल और इतना कठोर हो सका था। मैं जब-जब शिरीष की ओर देखता हूँ तब-तब हुक उठती है- हाय वह अवधूत आज कहाँ है !

**1.कौन लेखक के मन में पक्के अवधूत की भांति तरंगे जगा देता है ?**

(क)अशोक (ख) अरिष्ठ वृक्ष (ग)आरग्वध वृक्ष (घ) शिरीष।

**2.-लेखक के लिए उत्सुकता का विषय क्या है ?**

(क)शिरीषधूप में इतना सरस कैसे बना रहता है (ख)क्या यह वर्षा,धूप,आँधी अपने आप में सत्य नहीं है

(ग)क्या मार-काट,अग्निदाह में स्थिर रहा जा सकता है (घ)उपर्युक्त सभी।

**3.-'अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था' इसमें लेखक ने बूढ़ा किनके लिए प्रयुक्त किया है ?**

(क) देश के बड़े –बूढ़े के लिए (ख) महात्मा गांधी

(ग)पंडित जवाहर लाल नेहरू (घ)उपर्युक्त में से कोई नहीं।

**4. लेखक के अनुसार निम्न में से कौन वायुमंडल से रस खींचकर कोमल और कठोर हो सका ?**

(क)शिरीष (ख) गांधीजी (ग)अरिष्ठ वृक्ष (घ) क एवं ख दोनों।

**5.'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !' पंक्ति में लेखक ने किस कमी पर अफ़सोस व्यक्त कर रहा है ?**

(क)आज गांधी जी जैसे नेता नहीं रहे। (ख)आज सत्य,अहिंसा जैसे मानवतावादी मूल्य नहीं रहे

(ग)आज शिरीष जैसे अवधूत नहीं रहे (घ)क एवं ख दोनों।

**उत्तर- 1.घ 2. घ 3.ख 4. घ 5. घ .**

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

**प्रश्न1.- शिरीष के फूल में तुलसीदास ने किस सत्य पर क्या कह कर मुहर लगाई है?**

उत्तर- 'शिरीष के फूल' में तुलसीदास ने बुढ़ापे और मृत्यु के अटल सत्य पर यह कहकर मुहर लगाई है,'धरा को प्रमाण यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना' तुलसीदास ने जरा और मृत्यु को जगत का अतिपरिचित और अतिप्रमाणित सत्य बताया है अर्थात बुढ़ापा और मृत्यु संसार में अवश्यंभावी और सत्य है।

**प्रश्न2.-शिरीष और अमलतास की फूलों की तुलना क्यों नहीं की जा सकती ?**

उत्तर-शिरीष के फूल वसंत के आगमन के साथ खिलते हैं और आषाढ़ तक निश्चित रूप से खिले रहते हैं। दूसरे शब्दों में शिरीष का फूल दीर्घजीवी होता है जबकि अमलतास का फूल केवल पंद्रह दिन के लिए खिलता है। उसके बाद अमलतास के फूल झड़ जाते और पेड़ फिर से ठूँठ हो जाता है। यही कारण है कि शिरीष के फूल की तुलना अमलतास से नहीं की जा सकती।

**प्रश्न.3-शिरीष के फूल में धरित्री को निर्धूम अग्निकुंड क्यों कहा गया है ?**

उत्तर- ग्रीष्म ऋतु में जेठ के महीने में प्रचंड गर्मी पड़ती है। लू चलती है सूर्य की प्रचंड किरणों से पृथ्वी जलने लगती है परंतु उसमें से धुआँ नहीं निकलता।धरती आग के समान जलती है। वह ऐसे हवन कुंड के समान होती है जिसमें से धुआँ नहीं उठता। इसलिए लेखक ने धरित्री को निर्धूम अग्निकुंड कहा है।

**प्रश्न4- शिरीष के फूल में लेखक के अनुसार कवि बनने के लिए क्या आवश्यक है?**

उत्तर–'शिरीष के फूल' में लेखक के अनुसार कवि बनने के लिए अनासक्त और फक्कड़ बनना आवश्यक है इसके साथ- साथ कवि को स्वच्छ और स्वतंत्र हृदय वाला होना चाहिए। जो व्यक्ति किए -कराए के लेखा-जोखा में उलझने वाला होगा वह कवि नहीं हो सकता।

**प्रश्न-5.-'शिरीष के फूल' निबंध में 'जमे कि मरे' से लेखक का क्या आशय है?**

उत्तर –'शिरीष के फूल' निबंध में'जमे कि मरे' से लेखक का आशय है कि किसी स्थान पर दृढ़ता से अथवा जबरदस्ती चिपके रहना। यदि कोई व्यक्ति किसी एक स्थिति में दृढ़ता से बैठा रहता है तो उसका आगे बढ़ने का रास्ता बंद हो जाता है।उसकी प्रगति रुक जाती है उसका मरना निश्चित है।अर्थात् जड़ होते ही व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। यहाँ'मरने' का अर्थ उन्नति ना करना अथवा आगे नहीं बढ़ना है।

**प्रश्न6-द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन -स्थितियों में अविचल रह कर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें।**

उत्तर-शिरीष के फूल निबंध में द्विवेदी जी के अनुसार आँधी,लू और गर्मी की प्रचंडता में भी अवधूत के समान अविचल होकर, कोमल पुष्पों का सौन्दर्य बिखेरता शिरीष मनुष्य को सीख देता है कि वह भी शिरीष की भांति कोलाहल और संघर्ष से भरी स्थितियों में स्थिर रहकर अजेय जिजीविषु बना रहे।

**प्रश्न-7.शिरीष के पुष्प को शीतपुष्प भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गर्मी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प की संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी ?**

उत्तर-शिरीष का फूल प्रचंड गर्मी, लू और आँधी में खिला रहता है। विषम परिस्थितियों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ग्रीष्म ऋतु में जब सब कुछ झूलस जाता है, ऐसे में शिरीष का यह फूल शीतलता प्रदान करता है। गर्मी में ठंडक प्रदान करने के आधार पर ही शिरीष के फूल को शीतपुष्प कहा गया होगा।

**प्रश्न-8-हजारी प्रसाद द्विवेदी शिरीष की किस विशेषता से प्रभावित हैं?**

उत्तर-शिरीष के कालजयी अवधूत के समान मस्त, बेपरवाह, फक्कड़पन और उसके अनासक्त ढंग से जीवन जीने की पद्धति से हजारी प्रसाद द्विवेदी बहुत प्रभावित हैं। शिरीष का फूल ही एकमात्र ऐसा फूल है जो दीर्घजीवी है।उसे देखकर लगता है उसने अजेयता का मंत्र जान लिया है और वह समस्त संसार को अजेय रहने की प्रेरणा दे रहा है।आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी शिरीष की इसी विशेषता से प्रभावित हैं।

**प्रश्न-9-लेखक ने 'एक बूढ़ा' किसे कहा है? किस संदर्भ में उनका उल्लेख किया गया है?**

उत्तर-लेखक ने 'एक बूढ़ा' महात्मा गांधी को कहा है उनका उल्लेख समाज में फैली अशांति और विरोधी वातावरण के संदर्भ में किया गया है। गांधी जी ने देश में हिंदू- मुसलमानों में व्याप्त घृणा,ईर्ष्या,हत्या , लूटपाट और आगजनी के वातावरण में भी अपने सिद्धांतों की रक्षा की और अपना संघर्ष जारी रखा।

**प्रश्न-10- 'ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले'-भाव स्पष्ट करें।**

उत्तर-लेखक कहता है कि दुमदार अर्थात सजीला पक्षी कुछ दिनों के लिए सुंदर नृत्य करता है फिर दुम गँवा कर कुरूप हो जाता है।यहाँ लेखक मोर के बारे में कह रहा है। वह बताता है कि सौंदर्य क्षणिक नहीं होना चाहिए इससे अच्छा तो पूँछ कटा पक्षी ही ठीक है।उसे कुरूप होने की दुर्गति तो नहीं झेलनी पड़ेगी।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

**प्रश्न.1-लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत(संन्यासी) की तरह क्यों माना है ?**

उत्तर–कालजयी अवधूत का अर्थ है सांसारिक बंधनों व विषय- वासनाओं से ऊपर उठ गया संन्यासी ।कालजयी अवधूत सुख-दुख लाभ-हानि की चिंता किए बिना मस्त और बेपरवाह बना रहता है। शिरीष भी संन्यासी की भाँति बाहरी गर्मी, धूप, वर्षा,आँधी और लू से प्रभावित नहीं होता एवं बेपरवाह और मस्त खड़ा रहता है। इसलिए शिरीष को कालजयी अवधूत कहा गया है ।

**प्रश्न.2-हाय वह अवधूत आज कहाँ है? ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे ?**

उत्तर- लेखक का मत है कि आज गांधी जैसे प्रेरणादायीऔर आत्मविश्वास रखने वाले अवधूत नहीं रहे। वर्तमान सभ्यता में आत्मबल के स्थान पर देहबल के वर्चस्व में वृद्धि होने के कारण स्थितियाँ बदल गई हैं। आज लोगों में स्वार्थ सिद्ध करने की प्रवृत्ति व्याप्त है, फलस्वरुप समाज में लूटपाट मारकाट बढ़ गए हैं। इस प्रकार लेखक ने आत्मबल पर देहबल के प्रभावी होने की ओर संकेत किया है।

**प्रश्न3.-लेखक ने शिरीष के फलों के माध्यम से किस द्वंद्व को व्यक्त किया है ?**

उत्तर- लेखक ने शिरीष के पुराने फलों की अधिकार-लिप्सु खड़ाखड़ाहट नए पत्ते एवं फलों द्वारा उन्हें धकियाकर बाहर निकालने में साहित्य, समाज और राजनीति में पुरानी व नई पीढ़ी के द्वंद्व को बताया है । वह स्पष्ट रूप से पुरानी पीढ़ी और हम सब में नयेपन के स्वागत का साहस देखना चाहता है ।

**प्रश्न-4.कवि(साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थिर-प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का ह्रदय- एक साथ आवश्यक हैं, स्पष्ट करें।**

उत्तर- कवि (साहित्यकार) में विषय –भोग की वासनाओं से मुक्त योगी की स्थिरता,तथा तपे हुए प्रेमी की सरसता एक साथ उपलब्ध होनी चाहिए ।योगी की अनासक्त शून्यता और प्रेमी की सरसता से संपन्न कवि ही समस्त प्राकृतिक और मानवीय वैभव में रमकर भी अपने कार्य क्षेत्र से विचलित नहीं होता। वह अपनी रचनाओं के माध्यम से निरंतर आगे बढ़ते जाने की प्रेरणा दे सकता है, ऐसा कवि निष्पक्ष काव्य की रचना कर समाज का मार्गदर्शन कर सकता है अतः लेखक ने निश्चय ही साहित्य कर्म के लिए ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है।

**प्रश्न.5-सर्वग्रासीकाल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है स्पष्ट करें।**

उत्तर-प्रकृति निरंतर परिवर्तित होती रहती है। यही प्रकृति का नियम है। मनुष्य को भी समय और परिस्थितियों के अनुसार अपने आचार- व्यवहार, जीवन -मूल्य और आदर्शों में परिवर्तन करते रहना चाहिए। जिसने अपने व्यवहार में जड़ता को छोड़कर नित्य बदल रही स्थितियों में परिवर्तन कर स्वयं को गतिशील बनाए रखा, वही सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए दीर्घजीवी हो सकता है। स्वयं में स्थितियों के अनुसार बदलाव लाकर ही शिरीष के फूल दीर्घजीवी रहते हैं । मनुष्य को शिरीष के फूलों से प्रेरणा लेनी चाहिए ।

**प्रश्न.6.-कालिदास ने शिरीष की कोमलता और लेखक ने उसकी कठोरता के संबंध में क्या कहा है?**

उत्तर-कालिदास और संस्कृत साहित्य ने शिरीष को बहुत कोमल माना है। कालिदास का मानना है कि शिरीष का फूल केवल भौरों के पदों का दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिल्कुल नहीं। इसके विपरीत लेखक का मानना है कि शिरीष ने कोमल और कठोर दोनों गुणों को अपनाया है उसका फूल कोमल है तो फल इतना कठोर है कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। उन्हें तो नए फूल पत्ते धकिया कर स्थान छोड़ने पर विवश करते हैं।

# 15. श्रम विभाजन और जाति प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज

### -बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर

**पाठ का सार -** यह पाठ डॉ०भीमराव आंबेडकर के भाषण का हिंदी रूपांतर है।यह भाषण जाति - पाँति तोड़क मंडल (लाहौर) के वार्षिक सम्मेलन(1936 ई0) में दिया जाना था,परंतु आयोजकों की पूर्णतः सहमति न बन सकने के कारण सम्मेलन स्थगित हो गया। अतः यह भाषण नहीं दिया जा सका। इससे स्वतंत्र पुस्तिका के रूप में बाद में प्रकाशित कराया गया। इसमें डॉ० आंबेडकर ने जाति- प्रथा की पूर्णतः मीमांसा करते हुए स्वतंत्रता, समता तथा बंधुता को एकाकार किया है। लेखक ने जाति - प्रथा को श्रम विभाजन का तरीका मानने की अवधारणा को मानने से इंकार किया है।उन्होंने बताया है कि इसी श्रम विभाजन के कारण लोगों की कार्य के प्रति अरुचि उत्पन्न हो गई है।लेखक ने आर्थिक उत्थान, सामाजिक राजनैतिक संघटन तथा जीवनयापन से तमाम भौतिक पहलुओं के दृष्टिकोण से जातिवाद के उन्मूलन को अनिवार्य बताया है। लेखक ने आदर्श समाज की परिकल्पना भी प्रस्तुत की है। उन्होंने लोकतंत्र की स्थिति को मूलतत्व बताया है। लेखक ने लोकतंत्र में समानता, स्वतंत्रता तथा बंधुत्व को अनिवार्य तत्व बताया है।

### गद्यांश -1

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है। इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य - कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है, और चूँकि जाति - प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति - प्रथा श्रम विभाजन के साथ - साथ श्रमिक - विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

1. **गद्यांश में इनमें से किसे विडंबना कहा गया है**?

क) कुछ लोगों द्वारा जातिवाद का विरोध करने को

ख) कुछ लोगों द्वारा इसे अनावश्यक मानने को

ग) कुछ लोगों द्वारा जातिवाद का समर्थन करने और कार्य कुशलता के लिए आवश्यक मानने को

ध) कुछ लोगों द्वारा जातिवाद का समर्थन करने पर कार्यकुशलता के लिए अनावश्यक मानने को

2. **जातिप्रथा के पोषकों का मानना है कि** -

क) जातिप्रथा और श्रम विभाजन एक नहीं हो सकते। ख) जातिप्रथा श्रम विभाजन का अन्य रूप है।

ग) श्रम विभाजन का कारण जातिप्रथा है। घ) समाज में जातिप्रथा का स्थान नहीं होना चाहिए।

3. **श्रम विभाजन की किस कमी की ओर संकेत किया गया है**?

क) इससे उत्पादन में कमी आती है। ख) इससे श्रमिक अपने पेशे में रुचि नहीं लेते।

ग) इस विभाजन से श्रमिकों का विभाजन हो जाता है। घ) इनमें से कोई नहीं।

4. **श्रम - विभाजन का अर्थ है**-

क) काम करने वालों को बाँट देना । ख) काम को योग्यतानुसार श्रमिकों में बाँट देना।

ग) श्रमिक और काम धंधे दोनों को बाँट देना। घ) 'क', 'ख' और 'ग' तीनों

5. **श्रम विभाजन का लाभ इनमें से क्या है**?

क) इससे हर काम में कुशलता आती है। ख) इससे श्रमिकों की कुशलता बढ़ती है।

ग) इससे काम में हानि नहीं होती है। घ) इससे श्रमिकों का भी विभाजन हो जाता है।

उत्तर **-1. (ग) 2. (ख) 3.(ग) 4. (ख) 5. (क)**

## गद्यांश -2

जाति - प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है, क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी - कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है**?** हिंदू धर्म की जाति- प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा - परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

i) **लेखक ने जाति** - **प्रथा के जो दोष बताए हैं**, **उनमें कौन**- **सी अवधारणा असत्य है**?

क) पेशे का दोषपूर्ण निर्धारण
ख) आजीवन एक पेशे में बँधकर रहना
ग) समाज में ऊँच - नीच की भावना में कमी आना
घ) अनुपयुक्त पेशे के कारण भूखों मरने की विवशता

ii) **आधुनिक युग में किसी व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की जरूरत क्यों पड़ सकती है** ?

क) उद्योग धंधों का निरंतर बदलता स्वरूप
ख) तकनीकी विकास के कारण व्यवसाय का बदलता रूप
ग) अन्य प्रकार के आकस्मिक बदलाव
घ) 'क','ख' और 'ग' तीनों

iii) **व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की छूट न होने का का परिणाम हो सकता है**?

क) व्यक्ति अपने कार्य में पारंगत हो सकता है।
ख) व्यक्ति अधिक रुचि से काम करेगा।
ग) तकनीकी परिर्वतन होने से बेरोजगारी के कारण भूखों मरने को विवश हो सकता है।
घ) तकनीकी परिवर्तन होने पर वह नया रोजगार ढूँढ़ सकता है।

iv) **गद्यांश का मूल भाव इनमें से क्या है**?

क) जाति प्रथा के दुष्परिणाम बताना
ख) जाति - प्रथा की महत्ता समझाना
ग) समाज में जाति प्रथा की उत्पति बताना
घ) जाति - प्रथा को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करना

v) **जाति प्रथा लोगों को पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर किसमें अपना योगदान देती है**?

क) कार्य के प्रति निपुणता लाने में
ख) कार्य के प्रति रुचि बढ़ाने में
ग) रोजगार तथा नया पेशा बढ़ाने में
घ) बेरोजगारी में वृद्धि करने में

**उत्तर**: i) (**ग**) ii) (**घ**) ii) (**ग**) iv) (**क**) v) (**घ**)

## गद्यांश -3

फिर मेरी दृष्टि में आदर्श समाज क्या है **?**ठीक है,यदि ऐसा पूछेंगे, तो मेरा उत्तर होगा कि मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा।क्या यह ठीक नहीं है भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है **?**किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सब का भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए।तात्पर्य यह है कि दूध - पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है,और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है।

i) **लेखक जिस समाज को आदर्श मानता है**,**उसके संबंध में असत्य अवधारणा कौन – सी है** ?

क)समाज में सबको स्वतंत्रता हो।

ख) सबको एक समान समझा जाए।

ग) समाज में गतिहीनता हो जिससे लोग परिवर्तन ग्रहण ना कर सकें।

घ) समाज में समरसता और भाईचारा हो।

ii) **गद्यांश के आधार पर** '**भ्रातृता**' **का स्वरूप इनमें से क्या है** ?

क) जिसमें लोग अपना हित समझें।

ख) )लोग अपनी रक्षा करने में सक्षम हों।

ग) लोग अपने समुदाय के लोगों को भाई समझें।

घ) लोग सामूहिक रूप से एक- दूसरे का हित समझे और एक - दूसरे की रक्षा करें।

iii) **लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप इनमें से क्या है**?

क) केवल एक शासन पद्धति ख) सामूहिक जीवन जीने का एक तरीका

ग) अनुभवों को संजो कर रखना घ)इनमें से कोई नहीं

iv) **डॉ**. **अंबेडकर कैसा भाईचारा चाहते थे** ?

क) जिसमें लोग परस्पर दूध पाने की तरह मिलें। ख) जिसमें रुढ़िबद्घाता हो

ग) जिसमें संबंधों में कुछ ना कुछ बंधन हो घ) 'क' , 'ख' और 'ग' तीनों

v)'**सब लोगों का उदारतापूर्वक मेल** - **मिलाप**' **इसके लिए जिस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है**, **वह किस विकल्प में है** ?

क)गतिशीलता ख)बहुविधि हित ग) अवाध संपर्क घ) दूध पानी का मिश्रण

**उत्तर** i. (**ग**) ii.(**घ**) iii) (**ख**) iv) (**क**) v) (**क**)

## गद्यांश -4

व्यक्ति - विशेष के दृष्टिकोण से, असमान प्रयत्न के कारण,असमान व्यवहार को अनुचित नहीं कहा जा सकता। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति को अपने क्षमता का विकास करने का पूरा प्रोत्साहन देना सर्वथा उचित है। परंतु यदि मनुष्य प्रथम दो बातों में आसमान है तो क्या इस आधार पर उनके साथ भिन्न व्यवहार उचित है ?उत्तम व्यवहार के हक की प्रतियोगिता में वे लोग निश्चित ही बाजी मार ले जाएँगे,जिन्हें उत्तम कुल,शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक संपदा तथा व्यवसायिक प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त होता है।इस प्रकार पूर्ण सुविधा संपन्नों को ही 'उत्तम व्यवहार' का हकदार माना जाना वास्तव में निष्पक्ष निर्णय नहीं कहा जा सकता।क्योंकि यह सुविधा - संपन्नों के पक्ष में निर्णय देना होगा।अतः न्याय का तकाजा यह है कि जहां हम तीसरे( प्रयासों की असमानता,जो मनुष्यों के अपने वश की बात है)आधार पर मनुष्यों के साथ असमान व्यवहार को उचित ठहराते हैं,वहाँ प्रथम दो आधारों(जो मनुष्य के अपने वश की बातें नहीं हैं) पर उनके साथ असमान व्यवहार नितांत अनुचित है।और हमें ऐसे व्यक्तियों के साथ यथासंभव समान व्यवहार करना चाहिए। दूसरे शब्दों में,समाज को यदि अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है,,तो यह तो संभव है जब समाज के सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ।

i) **लोगों के व्यवहार में जो असमानता दिखाई देती है**,**उसे अनुचित क्यों नहीं कहा जा सकता है** ?

क) व्यक्ति - विशेष के अपने दृष्टिकोण के कारण ख)प्रयासों में समानता न होने के कारण

ग)क्षमता विकास के अवसर में कमी घ) क ख और ग तीनों

ii) **लोगों के व्यवहार में कब समानता आ जाती है** ?

क) हर व्यक्ति को अपने क्षमता के विकास का पूरा अवसर देने पर

ख) व्यक्तित्व विकास के अवसर की समानता मिलने पर

ग) शिक्षा के स्तर में भिन्नता बनाने पर

घ) क और ख दोनों

iii) **उच्चवर्ग को उत्तम व्यवहार का हकदार मानना निष्पक्ष निर्णय नहीं है**, **इस संबंध में कौन- सी अवधारणा गलत है** ?

क)शिक्षा के अवसरों की उपलब्धता के कारण ख) पारिवारिक ख्याति के प्रभाव के कारण

ग) क्षमता के विकास के अवसरों में कमी के कारण घ) पैतृक संपदा एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठा के लाभ के कारण

iv) **इनमें से कौन - सा कथन न्याय का तकाजा है** ?

क)व्यक्ति के साथ वंश के आधार पर व्यवहार

ख) व्यक्ति के साथ समानता के आधार पर व्यवहार

ग)व्यक्ति के साथ सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर व्यवहार

घ)व्यक्ति की आर्थिक स्थिति के आधार पर व्यवहार

v) **समाज के सदस्यों को आरंभ से ही समान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध कराने का क्या परिणाम होगा**

क) समाज अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता प्राप्त कर सकता है।

ख) समाज को कुछ अच्छे नागरिक प्राप्त होंगे।

ग) समाज को वर्ग भेद का अभिशाप झेलना होगा।

घ) समाज को अपना सच्चा उद्देश्य प्राप्त नहीं होगा।

**उत्तर** - i) (**घ**) ii) (**घ**) iii) (**ग**) iv) (**ख**) v) (**क**)

### लघु उत्तरीय प्रश्न (40 शब्द) - 2 अंक

1. **जाति - प्रथा द्वारा किया गया श्रम - विभाजन अस्वाभाविक है - क्यों** ?

उत्तर -जाति - प्रथा श्रम का विभाजन तो करती है,किंतु वह विभाजन मानव की रूचियों और स्वेच्छा पर आधारित नहीं होता। वह विभाजन जन्म और जाति के आधार पर रूढ़ होता है। उसमें बंधन होता है, स्वेच्छा नहीं। सही श्रम - विभाजन वही कहलाता है जिसमें मानव की रुचियों, क्षमताओं और अवसरों के लिए पूरी छूट हो।

2. **आंबेडकर ने किसके लिए 'दासता' शब्द का प्रयोग किया है और क्यों** ?

उत्तर - आंबेडकर ने जाति - प्रथा के आधार पर काम- धंधे अपनाने की परंपरा को 'दासता' कहा है। कारण यह है कि इस परंपरा में मनुष्य अपने कर्म - क्षेत्र को चुनने के लिए स्वतंत्र नहीं होता। उसे जन्म से ही निर्धारित कार्य करना पड़ता है। उसे अपनी इच्छा से नही, समाज की निर्धारित इच्छा के अनुसार सारा जीवन ढोना पड़ता है। ऐसा जीवन दासता के समान है।

3. **आदर्श समाज के विषय में लेखक की क्या मान्यता है** ?

उत्तर - लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित होगा। लेखक के आदर्श समाज में परिवर्तन का लाभ सभी को मिलेगा। ऐसे समाज में बहुविधि हितों में सबकी सहभागिता होगी। सामाजिक जीवन में सबके लिए अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर मिलेंगे। समाज में भाईचारा दूध और पानी के मिश्रण के समान होगा।

4. **डॉ. आंबेडकर किस आधार पर असमान व्यवहार को उचित मानते हैं और क्यों** ?

उत्तर - डॉ. आंबेडकर असमान प्रयत्न के आधार पर असमान व्यवहार को उचित मानते हैं। उनका आशय है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से कम प्रयत्न करता है तो उसे कम सम्मान मिलना चाहिए। अधिक प्रयत्न करने पर

अधिक सम्मान मिलना चाहिए। इस प्रकार का प्रोत्साहन या दंड उचित है। इससे मनुष्य को अपनी क्षमताओं का विकास करने का अवसर मिलता है।

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 3 अंक

1.**जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं**?

उत्तर - जाति - प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं -

जाति - प्रथा,श्रम - विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी करती है।सभ्य समाज में श्रम - विभाजन आवश्यक है परंतु श्रमिकों के विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन किसी अन्य देश में नहीं है।भारत की जाति - प्रथा में श्रम - विभाजन मनुष्य के रूचि पर आधारित नहीं होता वह मनुष्य की क्षमता या प्रशिक्षण को दरकिनार करके जन्म पर आधारित पेशा निर्धारित करती है।जाति प्रथा मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों में पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती फलतः भूखे मरने की नौबत आ जाती है।

2. **जाति** - **प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती जा रही है** ? **क्या वह स्थिति आज भी है** : **स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर - जाति - प्रथा के बंधन के कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता नहीं होती।इसी कारण उसे भूखों मरने तक की नौबत आ जाती है। जाति - प्रथा पैतृक पेशा अपनाने पर जोर देती है भले ही वह इस पेशे में पारंगत न हो। जाति प्रथा व्यक्ति को पेशे विशेष से बाँधकर रखती है जो समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का कारण बनता है।आज समाज की स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। आज व्यक्ति को अपना पेशा चुनने और बदलने का अधिकार है।

3. **मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर है** ? **इनके विषय में लेखक का क्या मत है** ?

उत्तर - लेखक लिखता है - मनुष्यों की क्षमता तीन बातों पर निर्भर रहती है -

**1.** शारीरिक वंश – परंपरा **2.** सामाजिक उत्तराधिकार **3.** मनुष्य के अपने प्रयत्न

लेखक का मत है कि मनुष्य के अपने प्रयत्न उसके अपने वश में हैं। इसलिए उनके आधार पर किसी मनुष्य के साथ असमान व्यवहार करना अनुचित नहीं कहा जा सकता। परंतु यहाँ भी ध्यान रखना चाहिए कि सभी मनुष्यों को प्रयत्न करने के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए। शारीरिक वश - परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार दोनों मनुष्यों के वश में नहीं हैं। ये जन्मजात होते हैं। अतः इनके आधार पर किसी का वर्ग और कार्य निश्चित नहीं होना चाहिए। न ही जन्म के आधार पर किसी को उत्तम या हीन मानना चाहिए।

4. **आदर्श समाज की स्थापना में डॉ. आंबेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।**

उत्तर - डॉ. आंबेडकर ने आदर्श समाज की स्थापना के लिए जन्मजात समानता का विचार दिया है। वे चाहते हैं कि श्रम का विभाजन जन्म और जाति पर न होकर रुचि के अनुसार होना चाहिए। मैं इस विचार से पूरी तरह सहमत हूँ। अभी तो कुछ लोग जन्म से ही स्वयं को ऊँचा मानते हैं और कुछ लोग स्वयं को नीचा मानते हैं। इससे जाति - प्रथा बढ़ती है और समाज में असमानता बढ़ती है। यदि सबको अपनी रुचि अनुसार काम चुनने का अवसर मिलेगा तो उन्हें सबसे बराबर का सम्मान मिलेगा। ऐसा समाज सुखी और संतुष्ट होगा।

5.**सही में अंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है**, **जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन- सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं** ?

उत्तर – हम लेखक की बात से सहमत हैं।उन्होंने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन - सुविधाओं का तर्क दिया है।भावनात्मक समत्व तभी आ सकता है जब सामान भौतिक स्थितियाँ व जीवन - सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।समाज में जाति - प्रथा का उन्मूलन समता का भाव होने से ही हो सकता है।मनुष्य की महानता उसके प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप होनी चाहिए।मनुष्य के प्रयासों का मूल्यांकन भी तभी हो सकता है जब सभी को समान अवसर मिले। अतः जातिवाद का उन्मूलन करने के बाद हर व्यक्ति को समान भौतिक सुविधाएँ मिलें तो उनका विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं।

# पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2

## 1. सिल्वर वैडिंग-मनोहर श्याम जोशी

### बहुविकल्पीय प्रश्न (एक अंकीय प्रश्न)

**प्रश्न1 : यशोधर बाबू किस पद पर कार्यरत थे?**

(क) सेक्शन ऑफिसर (ख)सेक्शन इंजीनियर (ग)अध्यापक (घ)प्रशासनिक अधिकारी

**प्रश्न 2:यशोधर पन्त किससे मिली परंपरा का पालन करते थे?**

(क) अपने बेटे से (ख) अपनी पत्नी से (ग) कृष्णानंद पाण्डे से (घ)चड्ढा से

**प्रश्न 3 : दफ्तर में यशोधर बाबू किशनदा को क्या समझते थे ?**

(क)स्वामी (ख)सेवक (ग)मालिक (घ)साहब

**प्रश्न 4 : यशोधर बाबू गोल मार्केट से सेक्रेट्रिएट पहले किस साधन से आते जाते थे ?**

(क)साईकिल से (ख)बस से (ग)मेट्रो से (घ) ट्रेन से

**प्रश्न 5 : यशोधर बाबू दफ्तर से लौटते हुए रोज कहाँ रुकते थे?**

(क)राम मंदिर (ख)शिव मंदिर (ग)बिड़ला मंदिर (घ) कृष्ण मंदिर

**प्रश्न 6 : सिल्वर वैडिंग पाठ में किशनदा किसके आदर्श पुरुष माने जाते थे?**

(क)हरिवंश राय बच्चन के (ख)यशोधर पन्त के (ग)सुमित्रानंदन पन्त के(घ)रामधारी सिंह दिनकर के

**प्रश्न 7 : यशोधर बाबू का विवाह किस वर्ष हुआ था ?**

(क)1946 ई.में (ख)1974 ई.में (ग)1947 ई.में (घ)1973 ई. में

**प्रश्न 8 : यशोधर पन्त अपनी घड़ी किससे मिलाते थे ?**

(क)रेडियो समाचार से (ख) टेलीविज़न से (ग)1947 ई.में (घ)इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 9 : यशोधर बाबू की शादी को कितने साल हो गए थे ?**

(क)22 साल (ख)23 साल (ग)24 साल (घ)25 साल

**प्रश्न 10 :यशोधर बाबू को किशनदा का कौन- सा कथन सही लगता है ?**

(क) "मूरख लोग मकान बनाते हैं,सयाने उनमें रहते हैं|"

(ख) "बुद्धिमान लोग मकान बनाते हैं , मूरख लोग रहते हैं|"

(ग) "अमीर लोग मकान बनाते हैं,गरीब लोग रहते हैं|"

(घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 11 : यशोधर जी अपनी माँ की मृत्यु के बाद किसके साथ रहे?**

(क) अपनी बहन के साथ (ख) अपनी मामी के साथ (ग) अपनी बुआ के साथ (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 12 :यशोधर बाबू के बड़े बेटे का नाम क्या था ?**

(क) दूषण (ख) भूषण (ग) चन्द्रदत्त तिवारी (घ) गिरीश

**प्रश्न 13:यशोधर बाबू ने पद्मासन साधकर ध्यान लगाया तो उन्हें क्या दिखाई देने लगा ?**

(क) किशनदा दिखाई देने लगे (ख) पत्नी दिखाई देने लगी (ग) चड्ढा दिखाई देने लगे (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 14 : यशोधर बाबू ने किशनदा की कौन सी भूमिका निभाई ?**

(क) पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्त्ता (ख)आज्ञाकारी शिष्य

(ग) अच्छा सेवक (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 15:यशोधर बाबू को केक काटना कैसा लगा ?**

(क) बहुत अच्छी बात (ख)बचकानी बात (ग) अद्भुत बात (घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 16 : यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से प्रसन्न होते हुए "समहाऊ इम्प्रापर" क्या महसूस करते हैं?**

(क) साधारण पुत्र को असाधारण नौकरी समझ नहीं आती

(ख)अपने बच्चों द्वारा गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा समझ में नहीं आती
(ग) वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन का अनुभव कराये
(घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 17 : यशोधर बाबू की पत्नी उनसे नाराज़ क्यों रहती थी ?**

(क) विवाह के बाद पाबंदियों के कारण (ख) विवाह के बाद संयुक्त परिवार में रहने के कारण
(ग) नवविवाहिता पर पुराने नियम लागू होने के कारण (घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 18:आप "सिल्वर वैडिंग" कहानी की मूल संवेदना किसे कहेंगे ?**

(क)हाशिये पर धकेले जाते हुए मानवीय मूल्य (ख) पीढ़ी का अंतराल
(ग)पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (घ) इनमें से कोई भी नहीं

**प्रश्न 19 : यशोधर बाबू को अपने पर गर्व और प्रसन्नता का बोध कब होता है?**

(क)जब वे ऑफिस से मंदिर जाते हैं (ख)जब भूषण उन्हें सिल्वर वैडिंग पार्टी पर उपहार देता है
(ग)जब लोग उनके बच्चों को देखकर लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं (घ)उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 20 : यशोधर बाबू का बेटा भूषण कहाँ नौकरी करता था ?**

(क)कॉलेज में (ख)सरकारी दफ्तर में (ग) विज्ञापन संस्था में (घ) रेलवे में

**बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर संकेत**

**—-----------------------------------------------------------------------------------------------------**

**1- (क) सेक्शन ऑफिसर 2- (ग) कृष्णानंद पाण्डे से 3- (घ) साहब 4 -(क) साईकिल से**

**5 - (ग) बिड़ला मंदिर 6 -(ख) यशोधर पन्त के 7- (ग) 1947 ई.में 8-(क) रेडियो समाचार से**

**9- (घ) 25 साल 10- (क) "मूरख लोग मकान बनाते हैं,सयाने उनमें रहते हैं|"**

**11- (ग) अपनी बुआ के साथ 12- (ख) भूषण 13- (क) किशनदा दिखाई देने लगे**

**14- (क) पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्त्ता 15- (ख)बचकानी बात 16- (घ) उपर्युक्त सभी**

**17- (घ) उपर्युक्त सभी 18- (ख) पीढ़ी का अंतराल 19- (ग)जब लोग उनके बच्चों को देखकर लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं 20- (ग) विज्ञापन संस्था में**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 4 अंक

**1. "सिल्वर वैडिंग" पाठ के आधार पर बताएँ कि यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं | क्यों ?**

उत्तर : यशोधर बाबू के जीवन में कई उत्तरदायित्व थे | उनके माता - पिता का देहांत बाल्यकाल में ही हो गया था| उनका भरण - पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया |कक्षा दसवीं उत्तीर्ण होने के बाद वे दिल्ली आ गए | वहाँ उनकी मुलाकात किशन दा से हुई जो कुँवारे थे |वे ऐसे लोगों के साथ रहे जिनके कोई परिवार न था तथा पारिवारिक सुख से वंचित रहे | वे सदैव पुराने लोगों के साथ रहे , उनका पालन पोषण हुआ और आगे बढे| अतः वे उन रीति-रिवाजों को वे त्याग नहीं सकते थे | उनपर किशनदा के विचारों का प्रभाव था| दूसरी ओर यशोधर बाबू की पत्नी पुराने संसकारों की थीं|वे एक संयुक्त परिवार में आईं थीं| जहाँ उन्हें सुख की अनुभूति नहीं हुई | उनकी इच्छाएँ अतृप्त रहीं|वे मातृत्व प्रेम भाव के कारण अपनी संतानों का समर्थन करती हैं और बेटी की इच्छा पर वे नए कपड़े पहनती हैं | वे बेटों के प्रसंग में किसी तरह हस्तक्षेप नहीं करती|इसलिए वे स्वयं को शीघ्र ढाल लेती हैं|

**2. "सिल्वर वैडिंग" पाठ में जो हुआ होगा वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते/ सकती है ?**

उत्तर: सिल्वर वैडिंग पाठ में “जो हुआ होगा” वाक्य की अनेक अर्थ छवियाँ खोजी जा सकती हैं| पाठ में जो हुआ होगा वाक्य पहली बार तब आया जब जब यशोधर किशनदा के जाति भाई से उनकी मृत्यु का कारण पूछते हैं , तो जवाब मिलता है -जो हुआ होगा अर्थात पता नहीं|, क्या हुआ इसका अर्थ यह है कि किशन दा की मौत के कारण जानने की इच्छा किसी में नहीं थी |इससे पता चलता है कि वे हीन भावना से ग्रसित थे |दूसरा अर्थ किशन दा ही उपयोग करते हैं | वे इसे अपने लोगों से मिली उपेक्षा के लिए करते हैं |वे कहते हैं- “भाऊ,सभी जन इसी जो हुआ होगा से मरते हैं|- गृहस्थ हो, ब्रह्मचारी हों अमीर हों, गरीब हों ,मरते जो हुआ होगा से ही हैं| हाँ- हाँ, शुरू में और आखिर में सब अकेले ही होते हैं|अपना कोई इस संसार में नहीं है | बस,अपना नियम अपना हुआ|”

**3. ‘समहाउ इप्रॉपर’ वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?**

उत्तर – यशोधर बाबू “समहाऊ इप्रॉपर” वाक्यांश का प्रयोग तकिया कलाम की तरह करते हैं|उन्हें जब कुछ अनुचित प्रतीत होता है तो अकस्मात् यह वाक्य कहते हैं |इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि कहीं कुछ गलत अवश्य हुआ है | पाठ में अनेक जगह समहाऊ इप्रॉपर का प्रयोग हुआ है| साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलना,दफ्तर में सिल्वर वैडिंग,स्कूटर की सवारी पर,अपनों से परायेपन का व्यवहार मिलने पर,डीडीए फ्लैट का पैसा न भरने पर,छोटे साले के ओछेपन पर,शादी के संबंध में बेटी द्वारा स्वयं निर्णय लेने पर,खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर,केक काटने की विदेशी परंपरा पर आदि। इन सन्दर्भों से स्पष्ट होता है कि यशोधर बाबू समय के हिसाब से अप्रासंगिक हो गए हैं, इस कारण वे उपेक्षित रह गए।कहानी के अंत में यशोधर के व्यक्तित्व की सभी विशेषताएं प्रकट होती हैं|

**4. सिल्वर वैडिंग पाठ के आधार पर बताइए कि जीवन मूल्य समय के साथ बदल रहे हैं-**

उत्तर: जीवन मूल्य का अर्थ है ऐसे गुण जिनसे समाज में मानवता , भाईचारा , स्नेह , सौहार्द ,नम्रता आदि की आवश्यकता होती है जिनसे श्रेष्ठ समाज का निर्माण होता है | समय के साथ इन मूल्यों में बदलाव होता है | सिल्वर वैडिंग पाठ में यशोधर बाबू और उनके बच्चों के आचार-विचार , सोच , रहन-सहन आदि देखकर पता चलता है कि नयी और पुरानी पीढ़ी के बीच अनेक जीवन मूल्यों में परिवर्तन आ गया है| कुछ जीवन मूल्य निम्नलिखित हैं : त्याग और **समर्पण की भावना**: पुरानी पीढ़ी के लोगों में त्याग और समर्पण की भावना दृढ़ थी|वे दूसरों को सुखी देखना चाहते थे | इसके लिए अपना सुख त्याग देते थे | परन्तु अब यह भावना ख़त्म होती जा रही है | और स्वार्थ प्रवृत्ति प्रबल हो रही है| **सामूहिक व्यवहार** :यशोधर बाबू अपनी उन्नति के साथ साथ दूसरों की उन्नति के लिए सोचते थे |जैसे, घर ,परिवार,साथी सहकर्मी| **पूर्वजों का आदर** : पुरानी पीढ़ी अपने पूर्वजों का बहुत आदर करती थी|पर अब जीवन मूल्यों में आज गिरावट आ गई है| आज बुजुर्ग अपने ही घर में उपेक्षित एवं तिरस्कृत हो रहे हैं| **रीति- रिवाजों से लगाव:** पुरानी पीढ़ी अपनी संस्कृति ,परंपरा , रीति - रिवाज से आसक्ति थी |पर समय के साथ इसमें बदलाव आ गया है|और परम्पराएँ घिसने लगी हैं |

**5. वर्तमान समय में परिवार की सरंचना, स्वरूप से जुडे आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बैठा पाते हैं ?**

उत्तर –सिल्वर वैडिंग कहानी आज के समय के परिवार की संरचना और उसके स्वरूप का सही चित्रण करती है। आज की परिस्थितियाँ इस कहानी की मूल संवेदना को प्रस्तुत करती हैं। आज के परिवारों में सिद्धांत और व्यवहार का अंतर दिखाई देता है। आज के परिवारों में भी यशोधर बाबू जैसे लोग मिल जाते हैं जो चाहकर भी स्वयं को बदल नहीं सकते। दूसरे को बदलता देखकर वे क्रोधित हो जाते हैं। उनका क्रोध स्वाभाविक है क्योंकि समय और समाज का बदलना जरूरी है। समय परिवर्तनशील है और व्यक्ति को उसके अनुसार ढल जाना चाहिए। यह कहानी वर्तमान समय की पारिवारिक संरचना और स्वरूप को अच्छे ढंग से प्रस्तुत करती है।

**6. निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे/कहेंगी और क्यों?**

**(क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य**

**(ख) पीढ़ी का अन्तराल**

**(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव**

उत्तर – "सिल्वर वैडिंग" कहानी में मानवीय मूल्यों - भाईचारा बड़ों का सम्मान, रिश्ते नाते , स्नेह और सहयोग आदि को हाशिये पर रखा गया है|यशोधर बाबू के बच्चे और पत्नी इन मानवीय मूल्यों का पुरजोर विरोध करते हैं|इस कहानी में पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव दिखाया गया है|बच्चे और पत्नी भी आधुनिक रंग में रंगना चाहते हैं |वे सिल्वर वैडिंग को भारतीय रंग में रंगना चाहते हैं | वे अपने पिता को भी आधुनिक बनाना चाहते हैं |

प्रस्तुत कहानी में पीढ़ी का अंतराल भी स्पष्ट है| वे भारतीय संस्कृति , पूजा पाठ , भक्ति , रामलीला रिश्तेदारी, अपनापन सरलता और सादगी को ग्रहण करना चाहते हैं |उधर उनके बच्चे आधुनिक प्रगति के दीवाने हैं|उनके पिता स्कूटर को नहीं चाहते| पूरी कहानी इसी द्वंद्व पर आधारित है|यशोधर बाबू पीढ़ी में अंतराल के कारण परेशान हैं|वे अपने कार्यालय में भी पुरानी परंपरा को अपनाते हैं|इनके कारण उनके अधीनस्थ कर्मचारी उनकी उपेक्षा करते हैं|वे उनकी वेशभूषा,रुचियाँ , आचार -व्यवहार का विरोध करते हैं|बच्चे पिताजी के लिए नया गाउन लाते हैं ताकि समाज में उन्हें लज्जित न होना पड़े|बच्चे अपने सम्मान का ध्यान रखते हैं, पिताजी का नहीं| इसलिए उपर्युक्त तीनों स्थितियों में से पीढ़ी का अंतराल इस कहानी की मूल संवेदना कही जा सकती है|

**7. सिल्वर वैडिंग पाठ के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू अपने कार्यालय में कर्मचारियों से कैसा व्यवहार करते हैं ?**

उत्तर: यशोधर पन्त इस कहानी के मूल पात्र हैं| वे एक सरकारी कार्यालय में काम करते हैं|वे अपने अधीनस्थ कर्मियों को अपने नियंत्रण में रखते हैं|वे दफ्तर में साढ़े पाँच बजे तक बैठते हैं |इसलिए अन्य कर्मचारियों को उनके साथ मजबूरी में बैठना पड़ता है|वे उनसे कठोरता से काम लेते हैं| इसलिए कार्यालय से जाते समय कोई चुटीली बात ज़रूर करते हैं ताकि माहौल तनावमुक्त हो | पन्त जी अपने साथियों से उचित दूरी बनाये रखते हैं |वे उनके प्रति उदार रहते हैं|परन्तु उनके साथ मन से मिल नहीं पाते| उनके घर में सिल्वर वैडिंग की पार्टी मनाई जाती है|उस समय वे उनका स्वागत नहीं करते |मेहमानों के साथ व्यवहार करने में कोई रूचि नहीं दिखाते| वे व्यवहार कुशल हैं|एक नए लड़के चड्ढा ने उनके साथ थोड़ी बदतमीजी-सी की तो उन्होंने उसकी धृष्टता की ओर ध्यान नहीं दिया | पन्त जी को सलाह दी जाती है कि एक नयी घड़ी खरीद लो तो वे जवाब देते हैं कि यह घड़ी मुझे शादी में मिली थी और यह राईट टाइम चलती है| इस प्रकार यशोधर पन्त अपने दफ्तर में साथिओं के साथ असहज-सा व्यवहार करते हैं|

**8.सिल्वर वैडिंग पाठ के आधार पर बताइए कि यशोधर बाबू किशनदा को अपना आदर्श क्यों मानते थे ?**

उत्तर :सिल्वर वैडिंग कहानी में यशोधर बाबू किशनदा को अपना आदर्श मानते थे |वे उन्हें मानस पुत्र से लगते थे | उनका व्यक्तित्व किशनदा से प्रभावित था| अल्पायु में यशोधर बाबू पहाड़ से दिल्ली आ गए| किशनदा ने उन्हें आश्रय दिया था|उन्हें सरकारी विभाग में नौकरी दिलवाई | यशोधर बाबू को इस प्रकार उनसे सहयोग मिला था | इसलिए उनके विचारों का उन पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था | किशनदा की जिस प्रकार की आदतें थीं, उसी अनुरूप वे व्यवहार करते थे | जैसे: कार्यालय में अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ सम्बन्ध ,सुबह सैर करने की आदत ,पोशाक धारण करने का तरीका,किराये के मकान में रहना, आदर्श बातें, किसी बात को कहकर मुस्कराना, सेवानिवृत्ति के बाद गाँव जाकर रहने की बातें करना,रामलीला करवाना आदि | इस प्रकार यशोधर बाबू उनके आदर्शों से आजीवन चिपके रहे|

**9. "यशोधर पन्त की आँखों में नमी आ गई" 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के आधार पर कारण स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर: यशोधर पन्त प्रतिदिन दूध लेने जाया करते थे | भूषण उनका बड़ा बेटा था जिसके विचार पिताजी से मेल नहीं खाते थे| भूषण ने अपने पिता के लिए ऊनी ड्रेसिंग गाऊन लाया था | इसने उन्हें ये गाऊन उपहार में दिया था

| उसने पिताजी को देते ही कहा - "आप जब सबेरे दूध लेने जाते हैं बब्बा,फटा फूलोवर पहन कर जाते हैं,जो बहुत ही बुरा लगता है| आप इसे पहन के जाया कीजिए" |यह सुनकर यशोधर की आँखों में नमी आ गयी| इसके पीछे दो कारण हो सकते हैं:

(क) भूषण के पिता को यह बात दिल में लग गयी |भूषण ने दूध लाने की जिम्मेदारी स्वयं नहीं उठाई |उसने पिता की सेहत के लिए एवं अपने सम्मान के लिए यह गाऊन दिया था|

(ख)दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि यशोधर के आदर्श चरित्र किशनदा की मौत दयनीय दशा में हुई | उन्होंने परिवार नहीं बनाया |परिणामस्वरूप किसी ने उनकी देख भाल नहीं की|यशोधर को लगा कि उनका ध्यान रखनेवाला परिवार भी है|

**10. "सिल्वर वडिंग" पाठ के आधार पर यशोधर बाबू की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए|**

उत्तर: यशोधर बाबू सेक्शन ऑफिसर हैं|उन्हें एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में देखा जा सकता है|वे दिल्ली आकर किशनदा के घर रहते थे | यशोधर बाबू पर किशनदा के विचारों एवं सिद्धान्तों का प्रभाव था | यशोधर के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

(क) दूसरों के विचारों से प्रभावित व्यक्ति : यशोदर बाबू विशेष रूप से किशनदा के विचारों से प्रभावित थे| वे किशनदा के घर में रहते थे | वे उनके आचरण एवं व्यवहार के अनुरूप चलने का प्रयास करते थे | उनके परिवार न थे | घर मकान न थे | उन्होंने इसे बनाने की आवश्यकता महसूस न की | इसी प्रकार यशोधर बाबू की भी इच्छा न थी |

(ख) सुख - सुविधा से दूर: यशोधर भौतिक सुविधाओं के घोर विरोधी थे | उन्हें घर या दफ्टर में पार्टी करना पसंद नहीं था |वे पैदल चलते थे या फिर साइकिल से चलते थे | केक काटना, बाल काले करना , मेकअप , धन संग्रह आदि पसंद न था |

(ग) असंतुष्टता: यशोधर जी एक असंतुष्ट पिता भी थे |अपने बच्चों के विचारों से संतुष्ट न थे |बेटी की वेशभूषा उन्हें पसंद नहीं थी | उन्हें बच्चों की उन्नति से भी ईर्ष्या थी|बेटे उनसे किसी बात में सलाह नहीं लेते थे| क्योंकि उन्हें सब कुछ गलत दीखता था |

(घ) पुरानी परम्पराओं के समर्थक : यशोधर परंपरा को मानते थे|वे सामाजिक रिश्तों को निभाते थे|वे अपनी बहन को आर्थिक मदद करते थे |वे रामलीला आदि का आयोजन करवाते थे|

(ङ) अपरिवर्तनशील व्यक्तित्व: यशोधर बाबू आदर्शों से चिपके रहे |वे समय के साथ अपने विचारों में बदलाव न ला सके |वे परम्परावादी थे |उन्हें बच्चों के नए व्यवहारों पर संदेह रहता था| वे सेक्शन अफसर होते हुए भी साइकिल से दफ्तर जाया करते थे|

इस प्रकार यशोधर पन्त एक आदर्श व्यक्ति थे | वे सादगीपूर्ण जीवन में विश्वास रखते थे |

# 2.जूझ-आनंद यादव

लेखक -आनंद यादव,जन्म-1935 महाराष्ट्र के कोल्हापुर में, मृत्यु-1916 ईस्वी में

जूझ उपन्यास पर इन्हें 1990 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

## पाठ का सारांश

उपर्युक्त पाठ लेखक के बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास जूझ का ही एक अंश है। इस पाठ में एक किशोर के द्वारा भोगे गए ग्रामीण जीवन के खुरदुरे यथार्थ का कटु चित्रण किया गया है। लेखक के पिता रत्नप्पा ने लेखक आनंद यादव को खेती के काम में लगा रखा था तथा स्वयं शहर जाकर रखमाबाई के चक्कर में पड़ा रहता था। अपने निजी स्वार्थ के चलते उन्होंने लेखक की पढ़ाई लिखाई छुड़ा रखी थी। लेखक पढ़ना चाहता था।उसे लगता था खेती के काम में कोई लाभ नहीं है। एक दिन बालक आनंद यादव ने ही अपनी मां से स्कूल जाने की इच्छा प्रकट की। मां जानती थी उसका बाप उसे कभी स्कूल जाने नहीं देगा। उसने अपनी शंका भी जतलाई। पर आनंदा कहां मानने वाला था। उसने दत्ता जी राव की सहायता से लेकर पिता को मनाने की युक्ति बताई।

योजना के अनुसार ही मां बेटे दत्ता जी राव से मिले और यह युक्ति काम कर गई। दूसरे दिन लेखक पिता की कड़ी शर्तों को शिरोधार्य करते हुए विद्यालय गए परंतु विद्यालय का माहौल ही बदला हुआ सा था। सारे बच्चे नए थे। उस पर भी लेखक का पाला चौहान के बच्चे से पड़ गया जो कक्षा का सबसे धूर्त बच्चा था। पहले ही दिन लेखक हैरान परेशान हो गया। अंततः उसकी दोस्ती बसंत पाटिल नाम के बच्चे से हो गई जो कक्षा का सबसे होनहार विद्यार्थी था। न.वा.सौंदलगेकर मास्टर साहब कक्षा में मराठी पढ़ाते थे। इनके चलते लेखक का मन कक्षा में लग गया। मास्टरजी की सिखाई लय ताल पर वे खुद कविता गाने लगे। आगे चलकर छंद रचना भी करने लगे। मराठी के मास्टर साहब ने बच्चों की सभा में लेखक को सम्मानित किया। इससे लेखक का उत्साह बढ़ गया। अब वे छंद रचना करने लगे और जीवन मधुर संगीत बन गया।

## बहुविकल्पीय प्रश्न (एक अंकीय प्रश्न)

**1.लेखक के सर्वप्रिय अध्यापक कौन थे?**

(क) गणित के अध्यापक मंत्री (ख) मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर

(ग). बसंत पाटील (घ)दत्ता जी राव देसाई

**2.सौंदलगेकर किस विषय के शिक्षक थे –**

(क) मराठी (ख).अँग्रेजी (ग).गणित (घ).विज्ञान

**3.आनंदा की कक्षा का मानीटर था –**

(क).राज पाटील (ख)बसंत पाटील (ग)उद्धव पाटील (घ)मोहन पाटील

**4.आनंदा की माँ किसे 'बरहेला सूअर' कहती है ?**

(क).आनंदा को (ख).देसाई को (ग)आनंदा के पिता को (घ)जंगली जानवर को

**5.लेखक ने पाठ का शीर्षक "जूझ" क्यों रखा?**

(क).क्योंकि लेखक बचपन से ही संघर्ष से दूर था

(ख) क्योंकि लेखक बचपन से ही पग-पग पर समस्याओं से जूझ रहा था

(ग) लेखक ने कभी संघर्ष नहीं किया था

(घ) कोई भी नहीं

**6.उपन्यास 'जूझ' किस तरह का उपन्यास है ?**

(क).आत्मकथात्मक (ख)विश्लेषणात्मक (ग)विवरणात्मक (घ).ऐतिहासिक

**7.जूझ' का अर्थ है –**

(क).जमीन (ख)संघर्ष (ग)तलवार (घ)झरना

**8. इस पाठ में दादा' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?**

(क).दत्ता जी राव के लिए (ख)आनंदा के पिता के लिए (ग)अध्यापक के लिए (घ)लेखक के लिए

**9.लेखक के पिता ने उसे विद्यालय भेजने के लिए क्या शर्त रखी ?**

(क).पाठशाला जाने से पहले ग्यारह बजे तक खेत में काम करना होगा तथा पानी लगाना होगा।

(ख)अगर किसी दिन खेत में ज्यादा काम होगा तो उसे पाठशाला नहीं जाना होगा।

(ग)छुट्टी होने के बाद घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना होगा।

(घ) उपरोक्त सभी

**10.गणित पढ़ाने वाले शिक्षक का क्या नाम था -**

(क).सौन्दलगेकर (ख).मंत्री (ग)आनंद (घ)दत्ता जी राव

**11.आनंदा से कविता कहाँ गवाई गई -**

(क).गाँव के समारोह में (ख)शहर के समारोह में

(ग) विद्यालय के समारोह में (घ)जिले के समारोह में

**12.लेखक के सर्वप्रिय अध्यापक कौन थे?**

(क).गणित के अध्यापक मंत्री (ख)मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर

(ग) बसंत पाटील (घ) दत्ता जी राव देसाई

**13.लेखक किसकी प्रेरणा से कवि बन गए?**

(क).गणित के अध्यापक मंत्री की प्रेरणा से (ख)मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर की प्रेरणा से

(ग)बसंत पाटिल की प्रेरणा से (घ)दत्ता जी राव देसाई की प्रेरणा से

**14.दादा के सामने लेखक को क्या कहने का हिम्मत नहीं होती थी?**

(क).'मैं पढ़ने जाऊँगा" (ख) मैं पढ़ने नहीं जाऊँगा

(ग)मैं खेलने जाऊँगा (घ) मैं खेलने नहीं जाऊँगा

**15.लेखक को पढ़ाने के लिए किसने दादा से सिफारिश किया -**

(क). दत्ता जी राव देसाई ने (ख)मंत्री मास्टर ने

(ग)सौंदलगेकर अध्यापक ने (घ)लेखक की माँ ने

**16. दत्ता जी राव थे**

(क). शिक्षक (ख)जमींदार (ग) वकील (घ) सिपाही

**17. लेखक को अगर उनके पिता ना पढ़ाते तो दत्ता जी राव ने क्या प्रस्ताव दिया-**

(क). वह मेहनत मजदूरी करे (ख) वह खेतों में काम करे

(ग)दत्ता जी राव उसे स्वयं पढ़ाते (घ). इनमें से कोई नहीं

**18. जूझ कहानी में किसकी भूमिका महत्वपूर्ण है-**

(क). मां की (ख) देसाई साहब की

(ग) मंत्री नामक मास्टर की (घ). लेखक के पिता की

**19. जूझ कहानी में दर्शाया गया है-**

(क). पढ़ाई का महत्व (ख)कृषि का महत्व (ग)गुरुजी का महत्व (घ)देश प्रेम का महत्व

**20. स्कूली जीवन के बाद लेखक को अच्छा लगने लगा-**

(क). दोस्तों का साथ (ख)मास्टर जी का साथ (ग) अकेलापन (घ)इनमें से कोई नहीं

**21. जूझ कहानी किस प्रांत की कहानी है-**

(क). हिमाचल प्रदेश (ख) महाराष्ट्र (ग) बिहार (घ).केरल

**22. लेखक अपनी तुकबंदी को कभी-कभी कहां लिखता था-**

(क). फेसबुक पर (ख)व्हाट्सएप पर (ग)भैंस की पीठ पर (घ). इनमें से कोई नहीं

**23. लेखक ने कंडा बेचा था-**

(क). सिनेमा देखने के लिए (ख)साइकिल खरीदने के लिए

(ग)कमीज खरीदने के लिए (घ). फुटबॉल खरीदने के लिए

**24. लेखक के पिताजी किस श्रेणी का गुड बनाते थे-**

(क).तृतीय श्रेणी का (ख) द्वितीय श्रेणी का (ग) प्रथम श्रेणी का (घ)इनमें से कोई नहीं

**25. लेखक को उसके शिक्षक क्या कह कर पुकारने लगे-**

(क). प्रियोदा (ख) बरहेला (ग) आनंदा (घ)इनमें से कोई नहीं

**26. कक्षा का सबसे बदमाश बच्चा था -**

(क).वसंत पाटिल (ख) मंत्री (ग) चौहान (घ). इनमें से कोई नहीं

**27. कक्षा का सबसे अच्छा बच्चा था-**

(क).वसंत पाटिल (ख)मंत्री (ग)चौहान (घ). इनमें से कोई नहीं

**28. लेखक किसके साथ मिलकर गणित की कॉपियां जाँचता था-**

(क).वसंत पाटिल (ख) मंत्री (ग) चौहान (घ) इनमें से कोई नहीं

**29. लेखक के विद्यालय में गणित के शिक्षक थे**

(क).न. वा. सौंदलगेकर (ख)मंत्री (ग). शिवराज पाटील (घ). इनमें से कोई नहीं

**30. लेखक की मां दत्ता जी राव के पास क्या पहुंचाने गई थी -**

(क). पुआ पकवान (ख)प्रसाद (ग) साग-भाजी (घ). दूध

**31. कक्षा में उसका सम्मान था। यहाँ 'उसका' किसके लिए आया है ?**

(क).जकाते के लिए (ख)वसंत पाटिल के लिए (ग)चह्वाण के लड़के के लिए (घ).आनंदा के लिए

**32. लेखक का ऐसा कब लगा कि मास्टर की चाल पर दूसरी कविताएँ भी पढ़ी जा सकती हैं?**

(क).कक्षा में कविताएँ सुनने पर (ख)खेत में पानी लगाते और ढोर चराते अकेले में कविता गाने पर

(ग)मराठी शिक्षक द्वारा कविता के भाव समझाने पर (घ).स्वयं द्वारा कविता रचने पर

**33. लेखक ने 'चाँद रात पसरिते पांढरी गाया धरणीवरी' कविता को सिनेमा के एक गीत की तर्ज पर गाया। वह गाना किस छंद की तर्ज पर था?**

(क).सोरठा (ख)सवैया (ग) केशव करणी जाति (घ)द्रुतविलंबित गति

**34. 'चाँद रात पसरिते पांढरी गाया धरणीवरी' किसकी कविता की पहली पंक्ति है?**

(क).बा.भ.बोरकर (ख).अनंत काणेकर (ग). कवि कुमार दास (घ) न.वा.सौंदलगेकर

**35. मास्टर जी ने किस कक्षा के लड़कों के सामने लेखक से कविता गवायी?**

(क). छठी (ख).सातवीं (ग)आठवीं (घ). क और ख दोनों

उत्तर संकेत

**1-ख 2-क 3-ख 4-ग 5-ख 6-क 7-ख 8-ख 9-घ 10-ख 11-ग 12-ख 13-ख 14-क 15-क 16-ख 17-ग 18-ख 19-क 20-ग 21-ख 22-ग 23-ग 24-क 25-ग 26-ग 27-क 28-क 29-ख 30-ग 31-ख 32-ख 33-ग 34-ख 35-घ**

## लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 4 अंक

**1.स्वयं कविता रख लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ?**

उत्तर-लेखक की पाठशाला में उसके मराठी भाषा के शिक्षक न.वा.सौंदलगेकर कविता के मर्मज्ञ व्यक्ति थे। वे अपनी कक्षा में कविता का सस्वर वाचन करते थे तथा बच्चों लय- छंद,गति-यति,आरोह-अवरोह,ताल आदि का भाव बोध कराते थे। साथ ही वे कवि-सम्मेलनों में कवियों से हुई भेंट मुलाकात की भी चर्चा छात्रों से करते थे।इसके पहले लेखक आनंद यादव कवि को किसी दूसरे ग्रह का जीव समझते थे। गुरु जी को देखकर लेखक को लगा कि कवि भी उसी की तरह के हाड मांस के जीव होते हैं। एक बार लेखक ने पाया कि उनके मराठी गुरुजी ने अपने घर के आंगन में निकल आई मालती लता पर ही कविता लिख डाली है तब से लेखक को भी विश्वास हो गया कि वह भी अपने इर्द-गिर्द की वस्तुओं को कविता में ढाल सकते हैं। इस तरह उनके मन में कविता रचने का आत्मविश्वास जगा।

**2. जूझ शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?**

उत्तर-शीर्षक किसी भी रचना के केंद्रीय भाव को व्यक्त करने वाला होता है।'जूझ' का अर्थ ही होता है संघर्ष। इस कहानी में कथा नायक आनंद यादव अपने पिता,अपने परिवेश और यहां तक कि अपने विद्यालय में सहपाठियों से भी संघर्ष करते हैं। पृष्ठभूमि में आर्थिक संघर्ष तो है ही। परंतु अंततोगत्वा अपनी मां,दत्ता जी राव और मराठी शिक्षक न.वा.सौंदलगेकर महोदय की सहायता से उनकी जीत होती है। इस प्रकार हम पाते हैं कि कहानी का शीर्षक कथा नायक के संघर्ष की चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

**3. श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं को रेखांकित करें जिन्होंने कविताओं के प्रति लेखक के मन में रुचि जगाई।**

उत्तर-श्री न.वा.सौंदलगेकर,लेखक की कक्षा में मराठी पढ़ाया करते थे। कविता के अध्यापन में वे खुद भी इतने रम जाते थे कि बच्चे मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहते थे। छंदशास्त्र की बढ़िया समझ, यति-गति,लय-ताल सबका मंजुल सामंजस्य उनकी मराठी कक्षा को आकर्षक बना देता था। वह कविता को जीवंत कर देते थे। न केवल मराठी बल्कि हिंदी और अंग्रेजी की कविताएं भी उन्हें कंठस्थ थीं जिन्हें वे अभिनय के साथ गाते थे। गाने की इस कला ने लेखक के मन में कविता के प्रति आकर्षण पैदा कर दिया। लेखक अकेले में मास्टर जी की नकल करते थे और उन्हीं की तरह अभिनय करके कविता गाते थे। शिक्षक की विशेषताओं ने लेखक के मन में कविताओं के प्रति रुचि जगाई।

**4. कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?**

उत्तर-लेखक के पिताजी ने लेखक को खेती के कामों में और ढोर चराने जैसे नीरस कामों में लगा रखा था। जब दूसरे बच्चे खेल रहे होते थे उस समय लेखक को अकेले में मजबूरन यह काम करना पड़ता था। परंतु जैसे ही लेखक का रुझान कविता की ओर हुआ उसे लगने लगा कि अकेले में ही वह अच्छी तरह से कविता गा कर सकता है और उसकी धुन पर नाच भी सकता है। अगर कोई और वहां होता है तो उसे इस प्रक्रिया में बाधा पहुंचती थी। अतः अब उसे एकाकीपन ही अच्छा लगता था ताकि अभिनय करते हुए वह कविता को गा सके। इस तरह हम पाते हैं कि कविता के प्रति लगाव से पहले जहां उसे अकेलापन खलता था अब उसे अकेलापन ही भाने लगा।

**5. आपके ख्याल से पढ़ाई लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का ?तर्क सहित उत्तर दीजिए।**

उत्तर-लेखक ने अपने अनुभव से जान लिया था कि पीढ़ियों से खेती में लगे रहने पर भी घर की दरिद्रता दूर नहीं हो पा रही है। गांव के जो भी लोग पढ़े लिखे हैं वह कहीं न कहीं नौकरी कर लेते हैं और उनके घर गरीबी नहीं होती। जबकि लेखक के पिता तो निजी स्वार्थों के चलते ही बच्चे के भविष्य की बलि दे रहे थे। वह तो अपने ही बच्चे को डांटते हुए कहते हैं-मुझे पता है तू पढ़ लिख कर बालिस्टर नहीं होने वाला। जाहिर सी बात है ऐसा वे इसलिए कह रहे थे ताकि बच्चा खेती के काम में लगा रहे और उसे अय्याशी के लिए समय मिल जाए।

परंतु गांव के सम्मानित व्यक्ति दत्ता जी राव ने लेखक और उसकी मां का साथ दिया। कुल मिलाकर देखा जाए तो किसी भी बच्चे के लिए पढ़ाई लिखाई करना उसका हक बनता है। ऐसे में निःसंदेह कहा जा सकता है कि पढ़ाई लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था जबकि लेखक के पिता बिल्कुल गलत थे। आज भी हम देखते हैं कि पढ़े-लिखे लोग चाहे नौकरी करें या स्वरोजगार वह दूसरे निरक्षर लोगों की तुलना में ज्यादा सफल होते हैं ।

**6. दत्ता जी राव से पिताजी पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी मां को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा।यदि झूठ का सहारा लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता है?अनुमान लगाएं।**

उत्तर-दत्ता जी राव से पिताजी पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी मां दोनों ने ही योजना बनाकर एक झूठ का सहारा लिया। उनकी यह तरकीब काम भी कर गई और लेखक को खेती के काम से कुछ समय के लिए छुट्टी मिली। वह स्कूल जाने लगे। यहीं से उसके जीवन ने एक नया मोड़ लिया और वह एक लेखक बनकर निकले। एक सफल व्यक्ति बने। यदि वह प्यारा सा झूठ उस समय नहीं बोला गया होता तो आज कथानायक इस स्वर्णिम मुकाम पर नहीं होते। भारत के करोड़ों बच्चों का भविष्य जिस तरह पढ़ाई के अभाव में गर्त में चला जाता है उसी गर्त में वे भी चले गए होते। इस तरह हम पाते हैं कि कभी कभी झूठ भी व्यक्ति और समाज के विकास में सहायक बनता है।

**7. वसंत पाटिल कौन था? लेखक ने उससे दोस्ती क्यों की?**

उत्तर-वसंत पाटिल लेखक की कक्षा में ही पड़ने वाला है एक लड़का था। वह दुबले-पतले कद वाला परंतु होशियार लड़का था। शिक्षक ने उसे कक्षा का मॉनिटर बना रखा था। मंत्री मास्टर की कक्षा में वह बच्चों के कॉपियों की जांच भी करता था। पढ़ाई के प्रति उसकी लगन को देखकर लेखक को अच्छा लगा और उसने उससे दोस्ती कर ली। लेखक भी मन लगाकर पढ़ाई करने लगा और उसकी प्रतिभा को देखकर सर ने उसे भी बच्चों की कॉपियों की जांच में लगा दिया। इस तरह अपने शिक्षकों की नजर में अच्छा बनने से लेखक के अंदर में उत्साह जगा और वह और अधिक मन लगाकर पढ़ाई करने लगा।

**8. लेखक का पाठशाला में विश्वास कैसे बढ़ा?जूझ कहानी के आधार पर बताइए।**

उत्तर-न.वा.सौंदलगेकर नामक मराठी के शिक्षक के स्नेह ने तथा वसंत पाटिल की दोस्ती ने बालक आनंदा के मन में एक आत्मविश्वास जगा दिया। पढ़ाई के प्रति उसकी रूचि जग गई तथा वह अब कविताएं अभिनयात्मक अंदाज में गाने लगा। धीरे-धीरे उसे अकेलापन अच्छा लगने लगा तथा वह स्वयं भी कविताएं रचने लगा। अपनी रची कविता को मास्टर साहब को दिखाकर उसे गजब का आत्मविश्वास मिला। साथ ही वसंत पाटिल के साथ मिलकर अन्य बच्चों की कॉपियां जांचते हुए उसे गर्व की अनुभूति हुई तथा उसका पाठशाला में विश्वास बढ़ा।

# 3. अतीत में दबे पाँव-ओम थानवी

**पाठ का सारांश** : 'अतीत में दबे पाँव' ओम थानवी का यात्रावृतांत और रिपोर्ट का मिलाजुला रूप है। इसमें थानवी ने विश्व फलक पर घटित सभ्यता की सबसे प्राचीन घटना को सुनियोजित तरीके से पुनर्जीवित किया है। उसी तरह जितने सुनियोजित ढंग से उसके दो महानगर मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा बसे थे। लेखक ने टीलों, स्नानागारों, मृद्भांडों, कुओं - तालाबों, मकानों व मार्गों से प्राप्त पुरातत्वों से मानव संस्कृति की उस समझदार भावात्मक घटना को बड़े इत्मीनान से खोज- खोजकर हमें दिखलाया है, जिससे हम इतिहास की सपाट वर्णनात्मकता से ग्रस्त होने की जगह इतिहास बोध से सिक्त होते हैं। जिस तरह सिंधु घाटी सभ्यता एक समय प्राणधारा से तर थी, सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े शहर मोहनजोदड़ो की नगर योजना आकर्षित करती है, वह आज के सेक्टर मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा ज्यादा रचनात्मक थी क्योंकि उसकी बसावट शहर के खुद विकसने का अवकाश भी छोड़कर चलती थी। पुरातत्व के निष्प्राण पड़े चिह्नों से एक जमाने में आबाद घरों, लोगों और उनकी सामाजिक धार्मिक राजनीतिक व आर्थिक, गतिविधियों का पुख्ता अनुमान किया जा सकता है। यह सभ्यता ताकत के बल पर शासित होने की जगह आपसी समझ से अनुशासित थी। उसमें भव्यता थी,पर आडंबर नहीं था। उसकी खूबी उसका सौंदर्य बोध था, जो राजपोषित या धर्म पोषित न होकर समाज पोषित था। अतीत की ऐसी कहानियों के स्मारक चिह्नों का आधुनिक व्यवस्था के विकास अभियानों की भेंट चढ़ते जाना भी लेखक को कचोटता है।

## बहुविकल्पीय प्रश्न (एक अंकीय प्रश्न)

1. **कोठार किस के काम आता होगा**?

(क) सुरक्षा के लिए (ख) धन जमा करने के लिए
(ग) अनाज जमा करने के लिए (घ) पानी जमा करने के लिए

2. **दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम क्या रखा गया**?

(क) मुख्य नरेश (ख) धर्म नरेश
(ग) याजक नरेश (घ) गौण नरेश

3. '**अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ के रचयिता का नाम क्या है**?

(क) ओम थानवी (ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(ग) मनोहर श्याम जोशी (घ) फणीश्वर नाथ रेणु

4. **लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो की आबादी कितनी थी** ?

(क) 20 हज़ार (ख) 65 हज़ार (ग) 85 हज़ार (घ) 50 हज़ार

5. **मोहनजोदड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है**?

(क) 1000 साल (ख)2000 साल (ग) 3000 साल (घ) 5000 साल

6. **मुख्य सड़क की चौड़ाई कितनी है**?

(क) 32 फीट (ख)30 फीट (ग)20फीट (घ) 33 फीट

7. **सबसे ऊँचे चबूतरे पर क्या विद्यमान है**?

(क) मंदिर (ख)बौद्ध स्तूप (ग) राज महल (घ) विशाल स्तूप

8.**बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है**?

**(**क) **25** फीट (ख)**15** फीट (ग) **12** फीट (घ) **10** फीट

9.**राखाल दास बनर्जी कौन थे**?

**(**क) शिक्षक (ख) भिक्षु (ग)पुरातत्ववेत्ता (घ) व्यापारी

10. **राखलदास बनर्जी मोहनजोदड़ो किस वर्ष आए थे**?

(क) सन् **1922** (ख) सन् **1923** (ग) सन् **1924** (घ) सन् **1925**

11.**मोहनजोदड़ो में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद आई**?

(क) कुलधरा (ख) कुलघड़ा (ग) शुभधरा (घ) इनमें से कोई नहीं

12. **मोहनजोदड़ो की खुदाई से निकली पंजीकृत चीजों की संख्या कितनी थी**?

(क) **50** हज़ार से अधिक (ख)**60** हज़ार से अधिक

(ग) **30** हज़ार से कम (घ) **20** हजार से अधिक

13.**सिंधु घाटी सभ्यता-------------थी**?

(क) धर्म पोषित (ख)राज पोषित (ग) व्यापार पोषित (घ) समाज पोषित

14.**अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम क्या था**?

(क) नवाज़ खान (ख)मोहम्मद खान (ग) अली नवाज़ (घ) अली बख़्तावर

15. **मोहनजोदड़ो को नागर भारत का सबसे प्राचीन क्या कहा गया है**?

(क) नगर (ख)कस्बा (ग) लैंडस्केप (घ) गांव

16. **मोहनजोदड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है**?

(क) दिल्ली (ख) राजस्थान (ग) चंडीगढ़ (घ) हरियाणा

17. **मोहनजोदड़ो से कितनी दूरी पर सिंधु नदी बहती थी**?

(क) **10** किलोमीटर (ख) **2** किलोमीटर (ग) **5** किलोमीटर (घ) **7** किलोमीटर

18. **दक्षिण में टूटे-फूटे घरों का जमघट किसकी बस्ती माना गया है**?

(क) कामगारों की (ख) अमीरों की (ग) भिक्षुओं की (घ) व्यापारियों की

19. **मोहनजोदड़ो का क्या अर्थ है**?

(क) वनों का क्षेत्र (ख) मुर्दों का टीला (ग) पशुओं का झुंड (घ)पुरातात्विक क्षेत्र

20. **मोहनजोदड़ो कौन से प्रांत में स्थित पुरातात्विक स्थान है**?

(क) पाकिस्तान के पंजाब (ख) भारत के पंजाब (ग) पाकिस्तान का सिंध (घ) भारत का सिंध

21. **हड़प्पा कौन से प्रांत का पुरातात्विक स्थान है**?

(क) पाकिस्तान के पंजाब (ख) भारत के पंजाब (ग) पाकिस्तान का सिंध (घ) भारत का सिंध

22. **मोहनजोदड़ो कितने हेक्टेयर क्षेत्र में फैला माना जाता है**?

(क) दो सौ (ख) पाँच सौ (ग) सात सौ (घ) आठ सौ

23. **मोहनजोदड़ो का नगर नियोजन का स्वरूप आज किस नाम से जाना जाता है**?

(क) ग्रिड प्रणाली (ख) तकनीकी प्रणाली (ग) भू प्रणाली (घ) ओल्ड प्रणाली

24. **महाकुंड की लंबाई** 40 **फुट**,**चौड़ाई** 25 **फुट और गहराई ----------फुट है।**

(क) **10** फीट (ख) **7** फीट (ग) **15** फीट (घ) **20** फीट

25. **महाकुंड के साथ कितने स्नानघर हैं**?

(क) पाँच (ख) आठ (ग) दस (घ) बारह

26. **सूती कपड़े का दूसरा नमूना किस देश से प्राप्त हुआ**?

(क) मिस्र से (ख) जॉर्डन से (ग) भारत से (घ) पाकिस्तान से

27. **रंगाई का कारखाना खुदाई में किसे मिला था**?

(क) जॉन मार्शल (ख) माधोस्वरूप वत्स (ग) राखल दास बनर्जी (घ) काशी प्रसाद दीक्षित

28. **मोहनजोदड़ो के खंडहरों के नामकरण का आधार क्या है**?

(क) फूलों के नाम पर (ख) स्थानीय लोगों के नाम पर

(ग) पुरातत्व वेत्ताओं के नाम पर (घ) पशु पक्षियों के नाम पर

29. **मोहनजोदड़ो नगर के विषय में कौन सा कथन असत्य है**?

(क) विश्व की पहली संस्कृति जो भूजल तक पहुँची (ख) नालियाँ पक्कीईंटों से ढकी हुई है

(ग) पहली संस्कृति जिसमें स्नानघर का निर्माण नहीं किया गया (घ) मोहनजोदड़ो ताम्रकाल का शहर है

30.**पुरातत्वविद् मार्टिमर वीलर ने कहा था कि "संसार में इसके जोड़ की दूसरी चीज़ शायद ही होगी"।किस चीज़ के लिए कहा गया है**?

(अ) दाढ़ी वाले बाबा की मूर्ति के लिए (ख) नर्तकी की मूर्ति के लिए

(ग)मुखिया के घर के लिए (घ)उपर्युक्त में से कोई नहीं

31. **सिंधु घाटी की सभ्यता की सबसे सुंदर व्यवस्था क्या थी**?

(क)वह समाज को विकसित करने के लिए कार्य करती थी (ख) वह काम को अधिक महत्व देती थी

(ग)वह केवल शहरों का निर्माण करती थी (घ) वह केवल संपन्न वर्ग के लिए कार्य करते थे

32. **सिंधु घाटी सभ्यता में किस कारण बीमारी का प्रकोप अधिक नहीं हो सकता था**?

(क) पानी की निकासी के अनुचित प्रबंध के कारण (ख) नालियाँ आदि उचित रूप से ढकी होने के कारण

(ग) छोटे-छोटे घरों के स्थान पर बड़े घर होने के कारण (घ) सामाजिक दूरी का पालन करने के कारण

33. **पुरातात्विक तत्वों से सिंधु सभ्यता के बारे में क्या पता चलता है**?

(क) यह सभ्यता अत्यंत विशाल थी (ख)यह सभ्यता विकसित थी

(ग) यह सभ्यता बिखरी हुई थी (घ) यह सभ्यता धर्म घोषित थी

34."**टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं" -कथन का भाव क्या है**?

(क) खंडहरों के आधार पर लोगों के रहने सहने के ढंग और सोच के तरीकों की कल्पना की जा सकती है

(ख)खंडहरों से कोई भी जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती

(ग) खंडहरों के आधार पर प्राप्त की गई जानकारी सदैव और प्रामाणिक होती है

(घ) खंडहर किसी सभ्यता का केवल इतिहास होते हैं

35.**कला की दृष्टि से सिंधु सभ्यता समृद्ध थी इस सभ्यता की समृद्धि का क्या प्रमाण था**?

(क) वहाँ की वास्तुकला एवं नियोजन तथा धातु एवं पत्थर की मूर्तियों से

(ख) वहाँ भव्य महल तथा समाधियों के अवशेषों से

(ग) वहाँ के सड़क मार्गों को देखकर

(घ) वहाँ के कुएँ और नालियों से

36.'**अतीत में दबे पाँव' पाठ में मोहनजोदड़ो के बारे में क्या धारणा थी**?

(क) अपने दौर की यह घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा

(ख)अपने दौर में यह सीमित जनसंख्या वाला क्षेत्र रहा होगा

(ग) अपने दौर में यह सबसे कम प्रसिद्ध क्षेत्र रहा होगा

(घ) अपने दौर में क्या केवल मुर्दों का टीला रहा होगा

37. **पूरब की बस्ती रईसों की बस्ती है अतीत के दबे पांव पाठ की पंक्ति के संदर्भ में बताइए कि आज के युग में पूरब की तरफ से किसे माना जाता है**?

(क) आज के युग में पूरब की बस्ती गरीबों की बस्ती को माना जाता है

(ख)आज के युग में पूरब की बस्ती उच्च शासन अधिकारियों की बस्ती है

(ग) आज के युग में पूरब की बस्ती समृद्धि की प्रतीक मानी जाती है

(घ) आज के युग में पूरब की बस्ती पश्चिमी देश को माना जाता है

38. **मोहनजोदड़ो का अनूठा नगर नियोजन आधुनिक नगर नियोजन के नगरों से बेहतर कैसे हैं**?

(क) मोहनजोदड़ो की जल निकासी का प्रबंध उन्नत था

(ख)नगर की योजना अत्यंत सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप से तार्किक थी

(ग) घरों की बनावट अत्यंत बेमिसाल थी

(घ) उपर्युक्त सभी

39.**लेखक ने किस आधार पर सिंधु घाटी की सभ्यता को जल संस्कृति कहां है**?

(क) सिंधु नदी के आधार पर

(ख)बेजोड़ निकासी व्यवस्था के आधार पर

(ग) स्नानागार आधार पर

(घ) ये सभी

40.**मोहनजोदड़ो की खुदाई का काम किस कारण बंद कर दिया गया** ?

(क) मजदूरों की कमी के कारण

(ख) बहुत अधिक समय बर्बाद होने के कारण

(ग) सिंधु के पानी के रिसाव के कारण

(घ) साधनों के अभाव के कारण

41. **सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य है**, **जो राजपोषित या धर्म पोषित ना होकर समाज पोषित था - कथन का क्या तात्पर्य है**?

(क) इस सभ्यता के केंद्र में समाज को प्रथम स्थान दिया गया है

(ख) इस सभ्यता में कोई राजा नहीं था

(ग) इस सभ्यता में केवल सौंदर्य बोध से पूर्ण वस्तुएँ है

(घ) इस सभ्यता में आडम्बर अधिक है

42. **सिंधु घाटी की सभ्यता की वास्तुकला**, **मूर्तियाँ**, **केश विन्यास**, **आभूषण आदि क्या प्रमाणित करते हैं**?

(क) यहाँ के लोगों के जीवन के खालीपन को।

(ख) यहाँ के लोगों के सौंदर्य बोध और उनकी कलात्मक रुचि को

(ग) समाज में निम्न वर्ग की स्थिति को।

(घ) उच्च वर्ग की कला और संस्कृति को

43. "**शक्ति से सिंधु सभ्यता का कोई संबंध नहीं है**",**इस तथ्य को कौन सा कथन सत्य सिद्ध करता है**?

(क ) किसी युद्ध का वर्णन न मिलना (ख) कहीं भी हथियार के दर्शन न होना

(ग) किसी औजार का उल्लेख न होना (घ) राजव्यवस्था का न होना

44. **मोहनजोदड़ो के महाकुंड से क्या प्रदर्शित होता है**?

(क) यह सामुदायिक भेदभाव को प्रदर्शित करता है

(ख) यह वहाँ के लोगों की आस्था को प्रदर्शित करता है

(ग) इससे सभ्यता की प्रमाणिकता पर प्रश्न चिन्ह लगता है

(घ) यह सामुदायिक एकता को प्रदर्शित करता है

45. **सिंधु सभ्यता में कुंड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का उपयोग किस लिए किया जाता होगा**?

(क) कुंड का पानी रिस ना सके (ख) बाहर का अशुद्ध पानी कुंड में ना जाने पाए

(ग) कुंड की सुंदरता बढ़ाने के लिए (घ) 'क' और 'ख' दोनों

46. **मोहरें**, **धातु**, **पत्थर की मूर्तियाँ आदि के मिलने पर क्या संभव हो पाया है**?

(क) सिंधु घाटी सभ्यता का अध्ययन करना (ख) भविष्य की अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार करना

(ग) इतिहास की पर्याप्त जानकारी मिलना (घ) ऐतिहासिक स्थल का ज्ञान होना

47. '**अतीत में दबे पाँव' में लेखक ने किसका वर्णन किया है**?

(क) इतिहास के अनछुए पक्षों का (ख) पौराणिक स्मृतियों के अध्ययन का

(ग) इतिहासकारों की सोच वह विचार शक्ति का (घ) सिंधु घाटी सभ्यता का

48. **मोहनजोदड़ो में स्थित अजायबघर को किसके समान बताया गया है**?

(क) कस्बाई स्कूल की इमारत के समान। (ख) मुर्दों के टीले के समान।

(ग) संपन्न बस्ती के समान। (घ) नियोजित व्यवस्था के समान।

49. **सिंधु घाटी सभ्यता की खोज की शुरुआत में वहाँ की खेती के संबंध में क्या समझा जाता था**?

(क) इस घाटी के लोग उन्नत किस्म की खेती करते थे (ख) इस घाटी के लोग अन्न नहीं उगाते थे

(ग) इस घाटी के लोग केवल ज्वार की खेती करते थे (घ) इस घाटी के लोग खेती में दिलचस्पी नहीं रखते थे

50.**सिंधु घाटी की सभ्यता दूसरी सभ्यताओं से किस प्रकार भिन्न थी**?

(क) पूर्णत: राजाश्रित सभ्यता थी

(ख) यह सभ्यता साधन संपन्न थी

(ग) इसमें किसी एक का प्रभुत्व नहीं था बल्कि एकता व समृद्धि से परिपूर्ण सभ्यता थी

(घ) इसमें निम्न वर्ग पर विशेष ध्यान दिया गया ताकि उनका विकास हो सके

**उत्तरमाला** : **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (घ) **7.** (ख) **8.** (क) **9.** (ग) **10.** (क) **11.** (क) **12.** (क) **13.** (घ) **14.** (ग) **15.** (ग) **16.** (ग) **17.** (ग) **18.** (क) **19.** (ख) **20.** (ग) **21.** (क) **22.** (क) **23.** (क) **24.** (ख) **25.** (ख) **26.** (ख) **27.** (ख) **28.** (ग) **29.** (ग) **30.** (ख) **31.** (क) **32.** (ख) **33.** (क) **34.** (क) **35.** (क) **36.** (क) **37.** (क) **38.** (घ) **39.** (घ) **40.** (ग) **41.** (क) **42.** (ख) **43.** (ख) **44.** (घ) **45.** (घ) **46.** (क) **47.** (घ) **48.** घ) **49.** (ख) **50.** (ग)

### लघु उत्तरीय प्रश्न (60 शब्द) - 4 अंक

**प्रश्न** 1. **सिंधु सभ्यता साधन-संपन्न थी**, **पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था**, **कैसे**?

उत्तर: सिंधु-सभ्यता के शहर मुअनजोदड़ो की व्यवस्था, साधन और नियोजन के विषय में खूब चर्चा हुई है। इस बात से सभी प्रभावित हैं कि वहाँ की अन्न-भंडारण व्यवस्था, जल-निकासी की व्यवस्था अत्यंत विकसित और परिपक्व थी। हर निर्माण बड़ी बुद्धमानी के साथ किया गया था; यह सोचकर कि यदि सिंधु का जल बस्ती तक फैल भी जाए तो कम-से-कम नुकसान हो। इन सारी व्यवस्थाओं के बीच इस सभ्यता की संपन्नता की बात बहुत ही कम हुई है। वस्तुत: इनमें भव्यता का आडंबर है ही नहीं। व्यापारिक व्यवस्थाओं की जानकारी मिलती है, मगर सब कुछ आवश्यकताओं से ही जुड़ा हुआ है, भव्यता का प्रदर्शन कहीं नहीं मिलता। संभवत: वहाँ की लिपि पढ़ ली जाने के बाद इस विषय में अधिक जानकारी मिले।

**प्रश्न** 2. '**सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया**?

उत्तर: सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की। मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है। खुदाई के दौरान जो भी वस्तुएँ मिलीं या फिर जो भी निर्माण शैली के तत्व मिले, उन सभी से यही बात निकलकर आती है कि सिंधु सभ्यता समाज प्रधान थी। यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक थी। इसमें न तो किसी राजा का प्रभाव था और न ही किसी धर्म विशेष का।

इतना अवश्य है कि कोई-न-कोई राजा होता होगा लेकिन राजा पर आश्रित यह सभ्यता नहीं थी। इन सभी बातों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि सिंधु सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था।

**प्रश्न** 3. **पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-"सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"**

उत्तर: सिंधु-सभ्यता से जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उनमें औजार तो हैं, पर हथियार नहीं हैं। मुअनजो-दड़ो, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु-सभ्यता में हथियार उस तरह नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं व महतों की समाधियाँ। मुअनजो-दड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट भी बहुत छोटा है। इन सबके बावजूद यहाँ ऐसा अनुशासन जरूर था जो नगर-योजना, वास्तु-शिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता रखे हुए था। इन आधारों पर विद्वान यह मानते हैं कि यह सभ्यता समझ से अनुशासित सभ्यता थी, न कि ताकत से।

**प्रश्न** 4. '**यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं**; **वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं**, **लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं**, **वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है**?

उत्तर: इस कथन के पीछे लेखक का आशय यही है कि खंडहर होने के बाद भी पायदान बीते इतिहास का पूरा परिचय देते हैं। इतनी ऊँची छत पर स्वयं चढ़कर इतिहास का अनुभव करना एक बढ़िया रोमांच है। सिंधु घाटी की सभ्यता केवल इतिहास नहीं है बल्कि इतिहास के पार की वस्तु है। इतिहास के पार की वस्तु को इन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर ही देखा जा सकता है। ये अधूरे पायदान यही दर्शाते हैं. कि विश्व की दो सबसे प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास कैसा रहा।

**प्रश्न** 5. **टूटे-फूटे खंडहर**, **सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों को भी दस्तावेज़ होते हैं-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर: यह सच है कि टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं। मुअनजो-दड़ो में प्राप्त खंडहर यह अहसास कराते हैं कि आज से पाँच हजार साल पहले कभी यहाँ बस्ती थी। ये खंडहर उस समय की संस्कृति का परिचय कराते हैं। लेखक कहता है कि इस आदिम शहर के किसी भी मकान की दीवार पर पीठ टिकाकर सुस्ता सकते हैं चाहे वह एक खंडहर ही क्यों न हो, किसी घर की देहरी पर पाँव रखकर आप सहसा सहम सकते हैं, रसोई की खिड़की पर खड़े होकर उसकी गंध महसूस कर सकते हैं या शहर के किसी सुनसान मार्ग पर कान देकर बैलगाड़ी की रुन-झुन सुन सकते हैं। इस तरह जीवन के प्रति सजग दृष्टि होने पर पुरातात्विक खंडहर भी जीवन की धड़कन सुना देते हैं। ये एक प्रकार के दस्तावेज होते हैं जो इतिहास के साथ-साथ उस अनछुए समय को भी हमारे सामने उपस्थित कर देते हैं।

**प्रश्न** 6. **इस पाठ में एक ऐसे स्थान का वर्णन है**, **जिसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा**, **परंतु इससे आपके मन में उस नगर की एक तसवीर बनती है। किसी ऐसे ऐतिहासिक स्थल**, **जिसको आपने नज़दीक से देखा हो**, **का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।**

उत्तर: मैंने हर्षवर्धन के किले को नजदीक से देखा है। यह एक ऐतिहासिक स्थल है। यह बहुत बड़ा किला है। जिसे हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी बना रखा था। अपने भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद वह थानेसर का राजा बना। इस किले के चारों ओर प्रत्येक कोने पर ऊँचे-ऊँचे स्तंभ हैं। इसके परकोटों पर खूबसूरत मीनाकारी की गई है। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के रहने के लिए महल के साथ ही कमरे बनवाए हुए थे। किले का मुख्य गुंबद बहुत ऊँचा था। इसके साथ ही एक मीना बाज़ार था जहाँ पर हर प्रकार का साजो-सामान बिकता था। यह किला आज भी शांतभाव से खड़ा अपना इतिहास बताता प्रतीत होता है। किले का प्रवेश द्वार बहुत मजबूत है जहाँ तक कई सीढ़िया पार करके पहुँचा जा सकता है।

**प्रश्न** 7. **नदी**, **कुएँ**, **स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं**? **आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में**? **तर्क दें।**

उत्तर: सिंधु घाटी सभ्यता में नदी, कुएँ, स्नानागार व बेजोड़ निकासी व्यवस्था के अनुसार लेखक इसे 'जल-संस्कृति' की संज्ञा देता है। मैं लेखक की बात से पूर्णत: सहमत हूँ। सिंधु-सभ्यता को जल-संस्कृति कहने के समर्थन में निम्नलिखित कारण हैं –

**1.** यह सभ्यता नदी के किनारे बसी है। मुअनजो-दड़ो के निकट सिंधु नदी बहती है।

**2.** यहाँ पीने के पानी के लिए लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं। ये कुएँ पानी की बहुतायत सिद्ध करते हैं।

**3.** मुअनजो-दड़ो में स्नानागार हैं। एक पंक्ति में आठ स्नानागार हैं जिनमें किसी के भी द्वार एक-दूसरे के सामने नहीं खुलते। कुंड में पानी के रिसाव को रोकने के लिए चूने और चिराड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है।

**4.** जल-निकासी के लिए नालियाँ व नाले बने हुए हैं जो पकी ईटों से बने हैं। ये ईटों से ढँके हुए हैं। आज भी शहरों में जल-निकासी के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती है।

**5.** मकानों में अलग-अलग स्नानागार बने हुए हैं।

**6.** मुहरों पर उत्कीर्ण पशु शेर, हाथी या गैडा जल-प्रदेशों में ही पाए जाते हैं।

## अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**प्रश्न** 1. **मुअनजोदड़ो की बड़ी बस्ती के बारे में विस्तार से बताइए।**

उत्तर: लेखक बताता है कि बड़ी बस्ती के घर बहुत बड़े होते थे। इसी प्रकार इन घरों के आँगन भी बहुत खुले होते थे। इन घरों की दीवारें ऊँची और मोटी होती थीं। जिस आधार पर कहा जा सकता है कि मोटी दीवारों वाले घर दो मंजिले होते होंगे। कुछ दीवारों में छेद भी मिले हैं जो यही संकेत देते हैं कि दूसरी मंजिल को उठाने के लिए शायद शहतीरों के लिए यह जगह छोड़ दी गई होगी। सभी घर पक्की ईंटों के हैं। एक ही आकार की ईंटे इन घरों में लगाई गई हैं। यहाँ पत्थर का प्रयोग ज्यादा नहीं हुआ। कहीं-कहीं नालियों को अनगढ़ पत्थरों से ढक दिया है ताकि गंदगी न फैले। इस प्रकार मुअनजोदड़ो की बड़ी बस्ती निर्माण कला की दृष्टि से संपन्न एवं कुशल थी।

**प्रश्न** 2. **क्या प्राचीनकाल में रंगाई का काम होता था।**

उत्तर: प्राचीनकाल में भी रंगाई का काम होता था। लोग बड़े चाव से यह काम किया करते थे। आज भी मुअनजोदड़ो में एक रंगरेज का कारखाना मौजूद है। यहाँ ज़मीन में गोल गड्ढे उभरे हुए हैं। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि इसमें रंगाई के लिए बर्तन रखे जाते होंगे। पश्चिम में ठीक गढ़ी के पीछे यह कारखाना मिला है। अतः इस बात को बिना किसी शंका के कहा जा सकता है कि प्राचीन लोग रंगाई का काम किया करते थे।

**प्रश्न** 3. **खुदाई के दौरान मुअनजोदड़ो से क्या-क्या मिला**?

उत्तर: मुअनजोदड़ो से निकली वस्तुओं की पंजीकृत संख्या लगभग पचास हजार से कुछ अधिक है। अहम चीजें तो आज कराची, लाहौर, दिल्ली और लंदन में रखी हुई हैं। मुठ्ठीभर चीजें यहाँ के अजायबघर में रखी हुई हैं जिनमें गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य यंत्र, चाक पर बने बड़े-बड़े मिट्टी के मटके, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप तौल के पत्थर, ताँबे का शीशा, मिट्टी की बैलगाड़ी, दो पाटों वाली चक्की, मिट्टी के कंगन, मनकों वाले पत्थर के हार प्रमुख हैं। इस प्रकार खुदाई के दौरान बहुत-सी वस्तुएँ मिलीं जिनमें कुछ तो संग्रहालयों में चली गई और बाकी बची चोरी हो गईं।

**प्रश्न** 4. **सिंधु घाटी की सभ्यता कैसी थी**? **तर्क सहित उत्तर दें।**

उत्तर: लेखक के मतानुसार सिंधु घाटी की सभ्यता 'लो-प्रोफाइल' सभ्यता थी। दूसरे स्थानों पर खुदाई करने से राजतंत्र को प्रदर्शित करने वाले महल धर्म की ताकत दिखाने वाले पूजा स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड मिले हैं जबकि मुअनजोदड़ो की खुदाई के दौरान न तो राजप्रसाद ही मिले और न ही मंदिर। यहाँ किसी राजा अथवा महंत की समाधि भी नहीं मिली। यहाँ जो नरेश की मूर्ति मिली है उनके मुकुट का आकार बहुत छोटा है। इतना छोटा कि इससे छोटे सिरपंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन लोगों की नावों का आकार भी ज्यादा बड़ा नहीं था। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि सिंधु घाटी की । सभ्यता आडंबर हीन सभ्यता थी। ऐसी सभ्यता जो छोटी होते हुए भी महान थी। जो विश्व की प्राचीनतम संस्कृति थी।

**प्रश्न** 5. **किन आधारों पर कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता में राजतंत्र नहीं था**?

उत्तर: मुअनजोदड़ो के अजायबघर में प्रदर्शित चीज़ों में औज़ार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं है। मुअनजोदड़ो क्या, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु सभ्यता में हथियार उस तरह कहीं नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। इस बात को लेकर विद्वान सिंधु सभ्यता में शासन या सामाजिक प्रबंध के तौर-तरीके को समझने की कोशिश कर रहे हैं। वहाँ अनुशासन ज़रूर था, पर ताकत के बल पर नहीं। वे मानते हैं कोई सैन्य सत्ता शायद यहाँ

न रही हो। मगर कोई अनुशासन ज़रूर था जो नगर योजना, वास्तुशिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं आदि में एकरूपता तक को कायम रखे हुए था।

दूसरी बात, जो सांस्कृतिक धरातल पर सिंधु घाटी सभ्यता को दूसरी सभ्यताओं से अलग ला खड़ा करती है, वह है प्रभुत्व या दिखावे के तेवर का नदारद होना। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रसाद मिले हैं, न मंदिर। न राजाओं, महंतों की समाधियाँ। यहाँ के मूर्तिशिल्प छोटे हैं और औज़ार भी। मुअनजोदड़ो के नरेश' के सिर पर जो 'मुकुट' है, शायद उससे छोटे सिरपंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती। और तो और, उन लोगों की नावें बनावट में मिस्र की नावों जैसी होते हुए भी आकार में छोटी रहीं। आज के मुहावरे में कह सकते हैं वह 'लो-प्रोफाइल' सभ्यता थी।

**प्रश्न** 6. **मुअनजोदड़ो और हड़प्पा के बारे में लेखक क्या बताता है**?

उत्तर: मुअनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं, दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं। ये सिंधु घाटी सभ्यता के परवर्ती यानी परिपक्व दौर के शहर हैं। खुदाई में और शहर भी मिले हैं। लेकिन मुअनजोदड़ो ताम्र काल के शहरों में सबसे बड़ा है। वह सबसे उत्कृष्ट भी है। व्यापक खुदाई यहीं पर संभव हुई। बड़ी तादाद में इमारतें, सड़कें, धातु-पत्थर की मूर्तियाँ, चाक पर बने चित्रित भांडे, मुहरें, साजोसामान और खिलौने आदि मिले। सभ्यता का अध्ययन संभव हुआ। उधर सैकड़ों मील दूर हड़प्पा के ज्यादातर साक्ष्य रेललाइन बिछने के दौरान विकास की भेंट चढ़ गए।' मुअनजोदड़ो के बारे में धारणा है कि अपने दौर में वह घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा। यानी एक तरह की राजधानी। माना जाता है यह शहर दो सौ हेक्टर क्षेत्र में फैला था। आबादी कोई पचासी हजार थी। जाहिर है, पाँच हजार साल पहले यह आज के 'महानगर' की परिभाषा को भी लांघता होगा।

**प्रश्न** 7. **लेखक के मुअनजोदड़ो की नगर योजना की तुलना आज के नगरों से किस प्रकार की है**?

उत्तर: नगर नियोजन की मोहनजोदड़ो अनूठी मिसाल है; इस कथन का मतलब आप बड़े चबूतरे से नीचे की तरफ देखते हुए सहज ही भाँप सकते हैं। इमारतें भले खंडहरों में बदल चुकी हों, मगर शहर की सड़कों और गलियों के विस्तार को स्पष्ट करने के लिए ये खंडहर काफ़ी हैं। यहाँ की कमोबेश सारी सड़कें सीधी हैं या फिर आड़ी। आज वास्तुकार इसे 'ग्रिड प्लान' कहते हैं। आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों में हमें आड़ा-सीधा 'नियोजन' बहुत मिलता है। लेकिन वह रहन-सहन को नीरस बनाता है। शहरों में नियोजन के नाम पर भी हमें अराजकता ज़्यादा हाथ लगती है। ब्रासीलिया या चंडीगढ़ और इस्लामाबाद 'ग्रिड' शैली के शहर हैं जो आधुनिक नगर नियोजन के प्रतिमान ठहराए जाते हैं, लेकिन उनकी बसावट शहर के खुद विकास करने का कितना अवकाश छोड़ती है इस पर बहुत शंका प्रकट की जाती है।

**प्रश्न** 8. **महाकुंड के विषय में बताइए। यहाँ की जल निकासी व्यवस्था कैसी थी**?

उत्तर: महाकुंड स्तूप के टीले से नीचे उतरने पर मिलता है। धरोहर के प्रबंधकों ने गली का नाम देव मार्ग रखा है। माना जाता है कि उस सभ्यता में सामूहिक स्नान किसी अनुष्ठान का अंग होता था। कुंड करीब चालीस फुट लंबा और पच्चीस फुट चौड़ा है। गहराई सात फुट। कुंड में उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। इसके तीन तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं। उत्तर में दो पांत में आठ स्नानघर हैं। इनमें किसी का द्वार दूसरे के सामने नहीं खुलता। सिद्ध वास्तुकला का यह भी एक नमूना है। इस कुंड में खास बात पक्की ईंटों का जमाव है।कुंड का पानी रिस न सके और बाहर का 'अशुद्ध पानी कुंड में न आए, इसके लिए कुंड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है। पाश्र्व की दीवारों के साथ दूसरी दीवार खड़ी की गई है जिसमें सफ़ेद डामर का प्रयोग है। कुंड के पानी के बंदोबस्त के लिए एक तरफ कुआँ है। दोहरे घेरे वाला यह अकेला कुआँ है। इसे भी कुंड के पवित्र या आनुष्ठानिक होने का प्रमाण माना गया है। कुंड से पानी को बाहर बहाने के लिए नालियाँ हैं। इनकी खासियत यह है कि ये भी पक्की ईंटों से बनी हैं और ईंटों से ढकी भी हैं।

**प्रश्न** 9. **मुअनजोदड़ो के कृषि उत्पादों तथा उद्योग के विषय में बताइए।**

उत्तर: विद्वानों का मानना है कि यहाँ ज्वार, बाजरा और रागी की उपज भी होती थी। लोग खजूर, खरबूजे और अंगूर उगाते थे। झाड़ियों से बेर जमा करते थे। कपास की खेती भी होती थी। कपास को छोड़कर बाकी सबके बीज मिले हैं और उन्हें परखा गया है। कपास के बीज तो नहीं, पर सूती कपड़ा मिला है। ये दुनिया में सूत के दो सबसे पुराने नमूनों में एक है। दूसरा सूती कपड़ा तीन हज़ार ईसा पूर्व का है जो जॉर्डन में मिला। मुअनजोदड़ो में सूत की कताई-बुनाई के साथ रंगाई भी होती थी। रंगाई का एक छोटा कारखाना खुदाई में माधोस्वरूप वत्स को मिला था। छालटी (लिनन) और ऊपन कहते हैं। यहाँ सुमेर से आयात होते थे। शायद सूत उनको निर्यात होता हो। बाद में सिंध से

मध्य एशिया और यूरोप को सदियों तक हुआ। प्रसंगवश, मेसोपोटामिया के शिलालेखों में मोहनजोदड़ो के लिए 'मेलुहा' शब्द का संभावित प्रयोग मिलता है।

**प्रश्न** 10. '**मुअनजोदड़ो' के उत्खनन से प्राप्त जानकारियों के आधार पर सिंधु सभ्यता की विशेषताओं पर एक लेख लिखिए।**

उत्तर: 'मुअनजोदड़ो' के उत्खनन से प्राप्त जानकारियों के आधार पर सिंधु सभ्यता की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

**1.** सिंधु सभ्यता के नगरों की सड़कें समकोण पर काटती थीं। वे खुली व साफ़ थी।

**2.** यहाँ सामूहिक स्नानागार मिले हैं।

**3.** 'यहाँ पानी की निकासी की उत्तम व्यवस्था थी, नालियाँ पक्की व ढकी हुई थी।

**4.** यहाँ खेती व व्यापार के प्रमाण मिले हैं।

**5.** हर नगर में अनाज भंडार घर की व्यवस्था थी।

**6.** मुहरों पर उत्कीर्ण कलाकृतियाँ, आभूषण, सुघड़ अक्षरों की लिपि आदि से कलात्मक उत्कृष्टता का पता चलता है।

**7.** हर नगर में अनाज भंडार घर की व्यवस्था थी।

**8.** नगर सुनियोजित थे।

**प्रश्न** 11. **पर्यटक मुअनजोदड़ो में क्या-क्या देख सकते हैं**? '**अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।**

उत्तर: पर्यटक मुअनजोदड़ो में निम्नलिखित चीजें देख सकते हैं

**1.** बौद्ध स्तूप – मुअनजोदड़ो में सबसे ऊँचे चबूतरे पर बड़ा बौद्ध स्तूप है। यह स्तूप मुअनजोदड़ो के बिखरने के बाद बना था। **25** फुट ऊँचे चबूतरे पर बना है। इसमें भिक्षुओं के रहने के कमरे भी बने हैं।

**2.** स्नानागार – यहाँ पर **40** फुट लंबा तथा **25** फुट चौड़ा कुंड बना हुआ है। यह सात फुट गहरा है। कुंड के उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियाँ उतरती हैं। उत्तर में आठ स्नानागार एक पंक्ति में हैं। इसमें एक तरफ तीन कक्ष हैं।

**3.** अजायबघर – यहाँ का अजायबघर छोटा ही है। यहाँ काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद्भांड, दीये, ताँबे का आईना, दो पाटन वाली चक्की आदि रखे हैं।

**प्रश्न** 12. '**अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।**

उत्तर: इस पाठ में लेखक ने मुअनजोदड़ो की यात्रा के समय के अपने अनुभवों के विषय में बताया है। लेखक यहाँ पर पहुँचकर पुराने सुनियोजित शहर की एक-एक चीज का सिलसिलेवार परिचय करवाता है। वह उस सभ्यता के अतीत में झाँककर वहाँ के निवासियों और क्रियाकलापों को अनुभव करता है। यहाँ की सड़कें, नालियाँ, स्तूप, स्नानागार, सभागार, अन्न भंडार, कुएँ, आदि के अलावा मकानों की सुव्यवस्था को देखकर लेखक महसूस करता है कि लोग अब भी वहाँ मौजूद हैं। उसे बैलगाड़ियों की ध्वनि सुनाई देती हैं। रसोई घर की खिड़की से झाँकने पर वहाँ पक रहे भोजन की गंध आती है। लेखक कल्पना करता है कि यदि यह सभ्यता नष्ट न हुई होती तो आज भारत महाशक्ति बन चुका होता। यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

निबंधात्मक प्रश्न

**प्रश्न** 13. '**अतीत में दबे पाँव' पाठ में सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े नगर 'मुअनजोदड़ो' की नगर योजना आज की नगर योजनाओं से किस प्रकार बेहतर थी**? **उदाहरण देते हुए लिखिए।**

उत्तर: इस पाठ में लेखक के वर्णन से पता चलता है कि सिंधु सभ्यता के सबसे बड़ नगर मुअनजोदड़ो की नगरयोजना नगरयोजना अपने आप में अनूठी थी। यह आधुनिक नगरों से भिन्न थी। आजकल के नगरों की योजना में फैलाव

की गुंजाइश बहुत कम होती है। एक विस्तार के बाद नगर योजना असफल साबित होती है। 'मुअनजोदड़ो' की नगर योजना की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं

**1.** यहाँ सड़कें चौड़ी व समकोण पर काटती थी।

**2.** जल निकासी की व्यवस्था उत्तम थी।

**3.** मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क पर नहीं खुलते थे।

**4.** सड़क के दोनों ओर ढकी हुई नालियाँ मिलती थीं।

**5.** हर जगह एक ही प्रकार की ईंटों का प्रयोग किया जाता था।

**6.** हर घर में एक स्नानघर होता था।

**7.** कुएँ पकी हुई एक ही आकार की ईंटों से बने हैं। यह पहली संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भूजल तक पहुँची थी।

**प्रश्न** 14. **सिंधु घाटी की सभ्यता को जलसभ्यता कहने का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए बताइए कि वर्तमान में जल संरक्षण क्यों आवश्यक हो गया है**?

उत्तर: सिंधु घाटी में जल की व्यवस्था अति उत्तम थी। यहाँ पर कुएँ पकी हुई एक ही आकार की ईंटों से बने हैं। इतिहासकारों का मानना है कि यह सभ्यता संसार में पहली ज्ञात संस्कृति है जो कुएँ खोदकर भूजल तक पहुँची। यहाँ लगभग सात सौ कुएँ थे। इसके अतिरिक्त स्नानागार की व्यवस्था हर घर में है। पानी के रिसाव को रोकने का उत्तम प्रबंध था। जल निकासी के लिए नालियाँ व नाले बने हुए थे जो ढके हुए थे। इस तरह सिंधु सभ्यता में जल संरक्षण पर उचित ध्यान दिया गया था। वर्तमान समय में पूरी दुनिया में जल संकट का हाहाकार मचा हुआ है। लातूर, राजस्थान आदि क्षेत्रों के संकट से हर कोई परिचित है। जल संकट के प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि व अनियोजित जल संरक्षण प्रणाली है। जल की कमी नहीं है, परंतु उसका वितरण सही नहीं है। जल संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय हैं –

**1.** पानी को दूषित होने से बचाने के उपाय करने चाहिए।

**2.** पानी का दुरुपयोग विशेषकर उसका समुचित वितरण करना चाहिए।

**3.** वर्षा के जल के उचित भंडारण की व्यवस्था हो।

**4.** अधिकाधिक वृक्षारोपण करना चाहिए।

**5.** नदी-नालों, तालाबों को प्रदूषण मुक्त रखना चाहिए।

**प्रश्न** 15. **आधुनिक विकास ने प्राचीन शहरी निर्माण व्यवस्था को हाशिए पर ला दिया है। इससे अनेक सामाजिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। पाठ के आधार पर चर्चा कीजिए।**

उत्तर:आधुनिक शहर ब्रासीलिया, चंडीगढ़, इस्लामाबाद आदि शहर ग्रीड शैली में विकसित किए गए हैं। ये आधुनिक प्रतिमान माने गए हैं, परंतु इन शहरों में स्वयं को विकसित करने की क्षमता नहीं है। ये एकाकीपन को बढ़ावा देते हैं। कंक्रीट के जंगल बन गए हैं, हर तरफ भव्यता दिखाई देती है, तकनीक का कमाल देखकर आम व्यक्ति भ्रमित हो जाता है, परंतु वह सहज जीवन नहीं जी पाता। चमक-चमक में पुराने मूल्यों को भूल जाता है। नियोजन के नाम पर सामाजिकता को नष्ट कर दिया जाता है।

विकसित देश तकनीक, आदि के नाम पर पुराने शहरों की निर्माण पद्धति को पिछड़ापन करार देते हैं। पुराने शहर जल की निकासी, जल प्रबंधन, पर्यावरण व मानवीय संबंधों को देखते हुए विकसित हुए हैं। आज नए तरीके के शहर प्रकृति के साथ छेड़छाड़ के साथ करते हैं। परिणामतः बाढ़, सूखा, तापमान में बढ़ोतरी, प्रदूषण आदि से जूझना पड़ रहा है।

# अभिव्यक्ति एवं माध्यम

## पाठ 3 -विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

**प्रश्न 1. निम्नलिखित में से गलत विकल्प है ?**

(क)1780 - बंगाल गज़ट (ख)1560 - आज़ तक (ग)1826 - उदंत मार्तंड (घ)1556 - पहला छापाखाना

**प्रश्न 2. मुद्रण का प्रारंभ किस देश में हुआ?**

(क) भारत (ख)जापान (ग) इंग्लैंड (घ) चीन

**प्रश्न 3. ब्रेकिंग न्यूज़ है निम्नलिखित में से कथन सही है?**

**(i) तुरन्त घटी घटना को प्रसारण रोककर दिखाना**

**(ii) सबसे पहले कोई बड़ी खबर कम से कम शब्दों में महज सूचना के रूप में दी जाए**

**(iii) ख़बरों को विस्तार से बताना**

(क)कथन i सही (ख) कथन ii सही (ग) कथन i और ii दोनो सही (घ) कथन i और ii दोनो गलत

**प्रश्न 4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**

i) टीवी व रेडियो जनसंचार का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है

ii) प्रिंट मीडिया जनसंचार का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है

iii)इंटरनेट जनसंचार का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है

(क)कथन i सही (ख) कथन ii सही (ग) कथन i और ii दोनो सही (घ) कथन ii गलत

**प्रश्न 5. किसी भी माध्यम के लेखन के लिए किसे ध्यान में रखना होता है?**

(क) माध्यमों को (ख)लेखक को (ग) जनता को (घ) बाजार को

**प्रश्न 6. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन सा है?**

(क) अखबार (ख)रेडियो (ग) टेलीविजन (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 7. मुद्रित माध्यमों की विशेषता पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**

**(i) छपे हुए शब्दों में स्थायित्व**

**(ii) लिखित भाषा का विस्तार**

**(iii) चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम**

**उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं?**

(क) केवल i (ख) केवल iii (ग) i और ii (घ) i, ii और iii

**प्रश्न 8. रेडियो माध्यम है-**

(क) दृश्य माध्यम (ख)श्रव्य माध्यम (ग) दृश्य-श्रव्य माध्यम (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 9. रेडियो समाचार बुलेटिन में कौन सी सुविधा उपलब्ध नहीं होती?**

(क) समाचार को कभी भी और कहीं से भी नहीं सुन सकते

ख)किसी कठिन शब्द के अर्थ को समाचार सुनने के दौरान नहीं ढूंढ सकते

(ग) क और ख दोनों सही हैं

(घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 10. मूलतः रेडियो और टीवी है-**

(क) एक रेखीय माध्यम (ख)द्विरेखीय माध्यम

(ग) तीन रेखीय माध्यम (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 11. रेडियो समाचार की संरचना आधारित होती है-**

(क) सीधा पिरामिड शैली पर (ख)उल्टा पिरामिड शैली (इंवर्टेड पिरामिड शैली) पर

(ग) समानांतर पिरामिड शैली पर (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**प्रश्न 12. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**

**कथन : रेडियो समाचार कॉपी लेखन के लिए आवश्यक बुनियादी बातें हैं-**

**(i) साफ-सुथरी और टाइप कॉपी**

**(ii)समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप करना**

**(iii)समाचार कॉपी के दोनों और पर्याप्त हाशिया छोड़ना**

**उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं?**

(क) केवल i (ख) केवल iii (ग) i और ii (घ) i, ii और iii

**प्रश्न 13. प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर टाइप किया जाना चाहिए**

(क) सिंगल स्पेस में (ख)डबल स्पेस में (ग) ट्रिपल स्पेस में (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 14. रेडियो समाचार के लिए लिखी गई कॉपी में एक लाइन में कितने शब्द होने चाहिए ?**

(क) 10-11 शब्द (ख)12-13 शब्द (ग) 13-14 शब्द (घ) 12-15 शब्द

**प्रश्न 15. कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए-**

| **कॉलम 'क'** | **कॉलम 'ख'** |
|---|---|
| **(क) रेडियो** | **(i) दृश्य-श्रव्य माध्यम** |
| **(ख) टीवी** | **(ii) समेकित माध्यम** |
| **(ग) अखबार** | **(iii) श्रव्य माध्यम** |
| **(घ) इंटरनेट** | **(iv) मुद्रित माध्यम** |

(क) (क)-(iii), (ख)-(iv), (ग)-(i) (घ)- (ii) (ख) (क)-(ii), (ख)-(iv), (ग)-(i), (घ)-(iii)

(ग) (क)- (iii), (ख)-(i), (ग)-(iv), (घ)-(ii) (घ) (क)-(ii), (ख)-(i), (ग)-(iv), (घ)-(iii)

**प्रश्न 16. टेलीविजन के लिए समाचार या आलेख(स्क्रिप्ट) लिखने की बुनियादी शर्त है**

(क) शब्द पर्दे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों अर्थात दृश्य के साथ लेखन

(ख) शब्दों को किसी भी तरह से लिखा जा सकता है

(ग) शब्द सुनने के अनुकूल होने चाहिए

(घ) शब्दों की दृश्य श्रव्य में अनुकूलता आवश्यक नहीं

**प्रश्न 17. किसी बड़ी खबर को टीवी पर तात्कालिक रूप से किस रूप में दिखाया जाता है**

(क) प्रमुख रूप में (ख)गौण रूप में (ग) टीवी के परदे के निचले भाग पर (घ) ब्रेकिंग न्यूज़ के रूप में

**प्रश्न 18. 'सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए शानदार प्रस्तुति देते यह बच्चे' इस तरह की खबर जनसंचार के किस माध्यम के लिए उपयुक्त है**

(क) प्रिंट मीडिया (ख) टीवी (ग) समाचार पत्र (घ) इंटरनेट

**प्रश्न 19. टीवी के लिए खबर लिखते समय किस तरह की आवाजों का ध्यान रखना जरूरी है**

(क) बाइट या कथन (ख)प्राकृतिक आवाजें (नेट साउंड) (ग) क और ख दोनों (घ) शोर

**प्रश्न 20. नेट साउंड किस माध्यम से संबंधित है**

(क) इंटरनेट से (ख)टेलीविजन से (ग) रेडियो से (घ) सिनेमा से

**प्रश्न 21. निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए -**

**कथन (A) प्रत्येक व्यक्ति अपने आसपास घटित होने वाली घटनाओं के बारे में जानने को उत्सुक होता है**

**कारण (R)नवीनतम जानकारी रखना मनुष्य का स्वभाव है।**

(क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण(R) सही है।

(ग) कथन (A) तथा कारण(R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण(R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

**प्रश्न 22. टीवी समाचार में किस तरह के शब्द सहज माने जाते हैं**

(क) क्रय-विक्रय की जगह खरीद-बिक्री (ख)स्थानांतरण की जगह तबादला

(ग) पंक्ति की जगह कतार (घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 23. इंटरनेट पत्रकारिता को कहा जाता है**

(क) ऑनलाइन पत्रकारिता (ख)साइबर पत्रकारिता (ग) वेब पत्रकारिता (घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 24. इंटरनेट है -**

(क) केवल एक औजार (ख)एक हार्डवेयर (ग) एक सॉफ्टवेयर (घ) एक यांत्रिक उपकरण

**प्रश्न 25. पत्रकारिता में इंटरनेट का कार्य है**

(क) समाचारों का संकलन करना (ख)खबरों का सत्यापन करना

(ग) खबरों का पुष्टिकरण करना (घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 26. टेलीप्रिंटर द्वारा एक सेकंड में कितने शब्द भेजें जा सकते हैं ?**

(क) 56,000 (ख)60,000 (ग) 70,000 (घ) 80,000

**प्रश्न 27. विश्व स्तर पर इस समय इंटरनेट पत्रकारिता का कौन सा दौर चल रहा है?**

(क) पहला (ख)दूसरा (ग) तीसरा (घ) चौथा

**प्रश्न 28. विश्व स्तर पर इंटरनेट का पहला दौर कब तक चला ?**

(क) 1890 से 1982 तक (ख)1982 से 1992 तक (ग) 1994 से 1998 तक (घ) 1988 से 2000 तक

**प्रश्न 29. समेकित माध्यम किसे कहते हैं?**

(क) टीवी को (ख)रेडियो को (ग) इंटरनेट को (घ) उपर्युक्त सभी को

**प्रश्न 30.विश्व स्तर पर इंटरनेट का दूसरा दौर कब तक चला?**

(क) 1982 से 1992 तक (ख)1982 से 1993 तक (ग) 1993 से 2001 तक (घ) 2001 से 2003 तक

**प्रश्न 31. वास्तविक रूप में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत कब हुई ?**

(क) 1890 से 1900 के बीच (ख)1910 से 1920 के बीच

(ग) 1980 से 2000 के बीच (घ) 1983 से 2002 के बीच

**प्रश्न 32.निम्न में से नयी वेब भाषा है**

(क) इंटरनेट एक्सप्लोरर (ख)नेटस्कैप (ग) एचटीएमएल (हाइपर टेक्स्ट मार्क्डअप लैंग्वेज) (घ) विंडोस

**प्रश्न 33. ज्यादातर डॉट कॉम कंपनियों के बंद होने का क्या कारण था?**

(क) विषय सामग्री और पर्याप्त आर्थिक आधार का अभाव (ख)विषय सामग्री का अभाव

(ग) पर्याप्त आर्थिक आधार का अभाव (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

**प्रश्न 34. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का कौन सा दौर चल रहा है?**

(क) पहला (ख)दूसरा (ग) तीसरा (घ) चौथा

**प्रश्न 35.भारत में दूसरा दौर कब से शुरू हुआ है?**

(क) वर्ष 1993 से (ख)वर्ष 2000 से (ग) वर्ष 2003 से (घ) वर्ष 2007 से

**प्रश्न 36. निम्न में से भारतीय इंटरनेट पत्रकारिता साइट है**

(क) टाइम्स ऑफ इंडिया (ख)आउटलुक (ग) आईबीएन (घ) उपर्युक्त सभी

**प्रश्न 37.निम्न में से कौन सी साइट भुगतान के बाद ही देखी जा सकती है?**

(क) आउटलुक (ख)आज तक (ग) ज़ी न्यूज़ (घ) इंडिया टुडे

**प्रश्न 38. भारत की पहली साइट किसे कहा जा सकता है**

(क) ट्रिब्यून को (ख)हिंदू को (ग) आउटलुक को (घ) रीडिफ को

**प्रश्न 39. वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे  जाता है?**

(क) रीडिफ डॉटकॉम को     (ख)इंडियाइन्फोलाइन को   (ग) सीफी को     (घ) तहलका डॉटकॉम को

**प्रश्न 40. हिंदी में नेट पत्रकारिता का आरंभ हुआ**

(क) भास्कर से     (ख)जागरण से     (ग)  वेब दुनिया से     (घ) प्रभासाक्षी से

**प्रश्न 41. निम्न में से कौन सा अखबार प्रिंट रूप में ना होकर केवल इंटरनेट पर ही उपलब्ध है?**

(क) जागरण     (ख)हिंदुस्तान     (ग) प्रभात खबर     (घ) प्रभासाक्षी

**प्रश्न 42. आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट कौनसी है?**

(क) वेब दुनिया     (ख)बीबीसी     (ग) तहलका डॉटकॉम     (घ) इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 43. सर्वाधिक खर्चीला जनसंचार माध्यम कौन सा है?**

(क) रेडियो     (ख)टेलीविजन     (ग) इंटरनेट     (घ) समाचार पत्र

**प्रश्न 44. कौन सा जनसंचार माध्यम  निरक्षर व्यक्ति के लिए उपयोगी नहीं है?**

(क)  समाचार पत्र     (ख)पत्रिकाएं     (ग) क व ख दोनों सही हैं     (घ) क व ख दोनों गलत है

**प्रश्न 45. छापेखाने के आविष्कार का श्रेय किसे दिया जाता है ?**

(क) गुटेनबर्ग को     (ख)चनमैन को     (ग) जॉनसन को     (घ) निहाल सिंह को

**प्रश्न 46. समाचार में एंकर बाइट का क्या महत्त्व है ?**

(क)  समाचार दिखाई देता है     (ख)एंकर बाइट का कोई महत्त्व नहीं

(ग)  समाचार को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है     (घ)  इनमें से कोई नहीं

**प्रश्न 47. कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए-**

| कॉलम 'क' | कॉलम 'ख' |
|---|---|
| (क) फ्रीलांसर पत्रकार | (i) समाचार एकत्रित करनेवाला |
| (ख) अंशकालिक पत्रकार | (ii) किसी समाचार पत्र में नियमित वेतन भोगी |
| (ग) पूर्णकालिक पत्रकार | (iii) निश्चित पारिश्रमिक पर अलग अलग पत्र पत्रिकाओं के लिए काम करने वाला |
| (घ) संवाददाता | (iv) निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाला |

(क) (क)-(iii), (ख)-(iv), (ग)-(i) (घ)- (ii)     (ख) (क)-(iii), (ख)-(iv), (ग)-(ii), (घ)-(i)

(ग)  (क)- (iii), (ख)-(i), (ग)-(iv), (घ)-(ii)     (घ)  (क)-(ii), (ख)-(i), (ग)-(iv), (घ)-(iii)

**प्रश्न 48.  दृश्यों का किस माध्यम में अधिक महत्व होता है-**

(क) समाचार पत्र     (ख) इंटरनेट     (ग) दूरदर्शन     (घ) रेडियो

**प्रश्न 49. ड्राई एंकर खबर को किस प्रकार बताता है?**

(क) संवाददाता से बात करके बताता है     (ख)दृश्य के साथ बताता है

(ग) सीधे-सीधे बताता है     (घ)  सीधा प्रसारण होता है

**प्रश्न 50. क्रिकेट मैच का प्रसारण किस प्रकार का प्रसारण है?**

(क) एंकर-पैकेज     (ख)एंकर-बाइट     (ग) सीधा प्रसारण     (घ)  एंकर-विजुअल

**उत्तर- 1.(ख) 2.(घ)  3.(ग) 4. (घ)  5.(क)  6.(क)  7.(घ) 8.(ख) 9.(ग)  10.(क)  11.(ख) 12.(घ)  13.(ग) 14.(ख) 15.(घ)  16.(क)  17.(घ)  18.(ख) 19.(ग)  20.(ख) 21.(क)  22.(घ)  23.(घ)  24.(क)  25.(घ) 26.(ग)  27.(ग)  28.(ख) 29.(ग)  30.(ग)  31.(घ)  32.(ग)  33.(क)  34.(ख) 35.(ग)  36.(घ)  37.(घ) 38.(घ)  39.(घ)  40.(ग)  41.(घ)  42.(ख) 43.(ग)  44.(ग)  45.(क) 46.(ग)  47.(ख) 48.(ग)  49.(ग) 50.(ग)**

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्र. (1) प्रिंट/मुद्रित माध्यमों की विशेषताएँ व कमियाँ लिखिए ?**

उत्तर- प्रिंट माध्यमों की विशेषताएँ-

(i) इनमें स्थायित्त्व होता है | इन्हें लम्बे समय तक सुरक्षित रख इस्तेमाल किया जा सकता है |

(ii) इन्हें हम कहीं भी और कभी भी पढ़ सकते हैं |

(iii) इससे हमारी लिखित भाषा का विस्तार होता है |

(iv) यह चिंतन, विचार व विश्लेषण का माध्यम है |

प्रिंट माध्यमों की कमियाँ-

(i) यह अनपढ़ लोगों के लिए उपयोगी नहीं है |

(ii) इससे तुरंत घटी घटनाओं की जानकारी नहीं मिलती |

(iii) इसमें गलतियों की संभावना रह जाती है |

(iv) इसमें आवंटित जगह में ही लेखक लिख सकता है |

**प्र. (2) मुद्रित माध्यमों के लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें लिखिए |**

उत्तर- (i) लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना चाहिए |

(ii) प्रचलित भाषा का प्रयोग करना चाहिए |

(iii) समय-सीमा व आवंटित जगह का ध्यान रखना चाहिए |

(iv) गलतियों व अशुद्धियों को ठीक करना चाहिए |

(v) लेखन में सहज प्रवाह हेतु तारतम्यता होनी चाहिए |

**प्र. (3) रेडियो समाचार की संरचना को स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर- रेडियो समाचारों की संरचना उल्टा पिरामिड शैली पर आधारित होती है । इस शैली में समाचार तीन भाग होते हैं-

इंट्रो- इसे इंट्रो / लीड / मुखड़ा कहते हैं। इसमें खबर के मूल तत्व को शुरू की दो-तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अहम हिस्सा होता है। |

बॉडी- इस भाग में समाचार के विस्तृत ब्यौरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है।

समापन- इसमें प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ दी जा सकती हैं। उल्टा पिरामिड शैली में निष्कर्ष नहीं लिखा जाता है|

**प्र. (4) रेडियो के लिए समाचार-लेखन की बुनियादी बातें लिखिए |**

उत्तर-1. कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप, दोनों ओर हाशिया छोड़ा जाता है, एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द, पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं, पृष्ठ के आखिर में कोई लाइन अधूरी नहीं हो |

2.लोकप्रिय संक्षिप्ताक्षर ही प्रयोग किए जाएँ अन्य नहीं |

3. 11से 999 तक के अंक अंकों में तथा अन्य सभी अंक शब्दों में लिखे जाएँ |

4.संकेत चिह्नों को शब्दों में लिखें जैसे प्रतिशत, डॉलर आदि

5.दशमलव के अंक नजदीकी पूर्णांक में लिखे जाएँ |

6.तिथियों को इस प्रकार लिखा जाए – 15 अगस्त उन्नीस सौ पचासी

**प्र. (5) टी.वी. ख़बरों के विभिन्न चरण स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर- टी.वी. ख़बरों के सात चरण इस प्रकार हैं -

1. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़- बड़ी ख़बर कम से कम शब्दों में तत्काल / तुरंत दर्शकों तक पहुँचाई जाती है |
2. ड्राई एंकर- एंकर बिना दृश्य के दर्शकों को सीधे-सीधे समाचार की जानकारी देता है |
3. फोन-इन - एंकर घटनास्थल पर मौजूद रिपोर्टर से फोन पर बात कर दर्शकों को सूचनाएँ देता है |
4. एंकर- विजुअल- दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है जिसे एंकर दिखाए गए दृश्यों के साथ पढ़ता है |

5. एंकर बाइट- बाइट का अर्थ है कथन एंकर खबर पढ़ने और दृश्य दिखाने के साथ-साथ घटना से जुड़े व्यक्तियों के कथन दिखाता व सुनाता है। एंकर बाइट का महत्त्व खबर को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए है |

6. लाइव- खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण लाइव कहलाता है |

7. एंकर पैकेज- एंकर किसी घटना के दृश्य बाइट, ग्राफिक्स, आदि के साथ उसे सम्पूर्ण रूप में प्रस्तुत करता है |

**प्र. (6) टेलीविजन के लिए समाचार या आलेख लिखते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?**

उत्तर- टेलीविजन में समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

i) हमारे शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों |

ii) टेलीविजन लेखन प्रिंट और रेडियो दोनों ही माध्यमों से काफ़ी अलग है। इसमें कम-से-कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल करना चाहिए

iii) टी०वी० के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन है। दृश्य यानी कैमरे से लिए गए शॉट्स, जिनके आधार पर खबर बुनी जाती है।

**प्र. (7) रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा की विशेषताएँ लिखिए |**

उत्तर- रेडियो और टेलीविजन समाचार की भाषा की विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

i) भाषा सरल किन्तु स्तरीय हो । आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाए |

ii) वाक्य छोटे सीधे और स्पष्ट लिखे जाएँ। वाक्यों में तारतम्य हो ।

iii) गैरजरूरी विशेषणों, सामासिक और तत्सम शब्दों, अतिरंजित उपमाओं आदि से बचना चाहिए।

iv) मुहावरों का इस्तेमाल जहाँ जरूरी हो, वही करना चाहिए।

v) रेडियो व टीवी में अखबारों से भिन्न निम्न ,उपरोक्त,अधोहस्ताक्षरी,क्रमांक आदि शब्दों का प्रयोग नहीं होता है ।

**प्र. (8) इंटरनेट व इंटरनेट पत्रकारिता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

उत्तर- इंटरनेट सिर्फ़ एक टूल यानी औज़ार है, जिसे आप सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। इंटरनेट पत्रकारिता इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन व खबरों का आदान-प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता है। इसमें रेडियो, टी.वी. और अखबार तीनों के गुण, सबसे तेज़ व ताजा पत्रकारिता है। इंटरनेट पत्रकारिता लोकप्रिय है क्योंकि इससे खबरों के संप्रेषण के साथ बैकग्राउंडर तैयार करने में तत्काल सहायता मिलती है |

**प्र. (9) हिंदी नेट संसार या वेब पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालिए ।**

उत्तर- हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नयी दुनिया', 'हिन्दुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा के वेब संस्करण शुरू हुए । 'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी की है। | हिंदी नेट में कई साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही ।

**प्र. (10) विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

उत्तर- विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता का पहला दौर 1982 से 1992 तक जबकि दूसरा दौर चला 1993 से 2001 तक तीसरे दौर की इंटरनेट पत्रकारिता 2002 से अब तक की है।

सच्चे अर्थों में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत 1983 से 2002 के बीच हुई। नयी वेब भाषा एच टी एम एल (हाइपर टेक्स्ट मार्डअप लैंग्वेज) आई, इंटरनेट ईमेल आया, इंटरनेट आया, इंटरनेट एक्सप्लोरर और नेटस्केप नाम के ब्राउजर आए। इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर सच्चे अर्थों में टिकाऊ हो सकता है|

# पाठ -4 . पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

## बहुविकल्पीय प्रश्न

**1) लोकप्रिय लेखकों के लेखों की नियमित श्रृंखला ..............कहीं जाती है ।**

क) स्तंभ लेखन। ख) समाचार लेखन ग)सूचना लेखन घ)कोई नहीं

**2)शीर्षक ,मुखड़ा और निकाय किसके अंग है ?**

क)फीचर के ख)आलेख के ग) नाटक के घ) समाचार लेखन के

**3) जब कोई एंकर शब्दों के माध्यम से किसी खबर को दर्शकों को बताता है तो उसे क्या कहते हैं ?**

क)संपादक। ख)ड्राई एंकर ग )लेखक घ)कवि

**4) वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता किसने आरंभ की थी ?**

क) तहलका डॉट कॉम। ख) आज तक ग)सोनी घ)जी टीवी

**5) खेल और सिनेमा किसके प्रकार हैं ?**

क)फीचर के। ख)आलेख के ग)कहानी के घ) विशेष रिपोर्ट के

**6) पत्रकारिता का मूल तत्व है-----**

क) नई सूचनाएं प्रदान करना। ख) प्रेरणा देना ग)खबर छापना। घ)इनमें से कोई नहीं

**7) स्तंभ लेखन की विशेषता है--------**

क) खबर छापना ख) कुछ ना लिखना ग) चित्र बनाना। घ)लेखक के विचारों की अभिव्यक्ति

**8) विशेषीकृत पत्रकारिता के अंतर्गत आते हैं........**

क) संसदीय पत्रकारिता ख) फोटो पत्रकारिता ग) खेल पत्रकारिता। घ)क और ख दोनों

**9) पत्रकार के कितने प्रकार होते हैं ?**

क) एक। ख)दो ग)तीन घ)चार।

**10) सरकार के कामकाज पर नजर रखना और उसमें होने वाली गड़बड़ियों को सबके सामने लाना .............................................पत्रकारिता कहलाती है ।**

क)पत्रकारिता। ख) रेखांकन ग)वॉच डॉग। घ) स्तंभ लेखन

**11)समाचारों को छपने योग्य बनाने वाले विभाग को कहते हैं .......**

क)लेखन। ख)सूचना ग)मुद्रण। घ)संपादकीय विभाग

**12) संचार प्रक्रिया में किसी प्रकार की बाधा कहलाती है**

क)बाधा। ख)स्वर ग)शोर घ)रुकावट

**13)भारत में 'ब्लिट्ज' अखबार इस श्रेणी का अखबार है**

क)मौखिक ख) पेज थ्री ग)पेज टू। घ)इनमें से कोई नहीं

**14)अखबारों के लिए चौबीस घंटे की अवधि कहलाती है**

क)मेन लाइन। ख) डेडलाइन ग)बॉटम लाइन घ) प्रथम लाइन

**15) किसी समाचार या घटना का सीधे घटनास्थल से ही प्रसारण किया जाना कहलाता है ........**

क)लाइव। ख) अलाइव ग) ओपन घ)बंद

**16)समाचारों को संकलित करने वाला होता है.......**

क)संवाददाता ख) संपादक ग) रिपोर्टर घ) संचालक

17) भारत में रेडियो की शुरुआत हुई ......

क)1857 में ख)1930 में ग) 1936 में घ)1892 में

**18) मुद्रित समाचार की विशेषता है........**

क)यह सुनते ही विलीन हो जाता है। ख) इसका माध्यम आवाज है

ग) इसमें क्रमिकता होती है घ) यह स्थायी होता है।

**19) भारत में पहला छापाखाना कब और कहां खुला था?**

क) 1556, गोवा में। ख) 1552, मुंबई में ग) 1524, कोलकाता में घ) 1554 दिल्ली में

**20)भारत में इंटरनेट का पहला दौर कब से आरंभ माना जा सकता है ?**

क)1994 से। ख) 1993से ग) 1995से। घ)1992से

**21). समाचार लेखन की सबसेउपयोगी और लोकप्रिय शैली कौनसी है?**

(क) सीधा पिरामिड शैली (ख) संक्षेप शैली (ग) कथा शैली (घ) उलटा पिरामिड शैली

**22)समाचार माध्यमों मे काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, वह क्या कहलाता है?**

(क) संपादकीय (ख) फीचर (ग) स्तंभ (घ)पत्रकारीय लेखन

**23). फीचर लेखन की शैली होती है?**

(क) निश्चित (ख) अनिश्चित (ग) सुनिश्चित (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

**24) पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत क्या-क्या आते हैं?**

(क) संपादकीय (ख) समाचार (ग) आलेख (घ) उपर्युक्त सभी

**25) पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?**

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) पाँच

**26) किसी समाचार पत्र या संगठन के नियमित वेतनभोगी पत्रकार कौनसे पत्रकार कहलाते हैं?**

(क) पूर्णकालिक पत्रकार (ख) अंशकालिक पत्रकार (ग) स्वतंत्र पत्रकार (घ) उपर्युक्त सभी

**27) निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाले पत्रकार कौनसे पत्रकार कहलाते हैं?**

(क) पूर्णकालिक पत्रकार (ख) अंशकालिक पत्रकार (ग) स्वतंत्र पत्रकार (घ) उपर्युक्त सभी

**28) जो पत्रकार किसी संस्था से जुड़े नहीं होते, वे कौनसे पत्रकार कहलाते हैं?**

(क) पूर्णकालिक पत्रकार (ख) अंशकालिक पत्रकार (ग) स्वतंत्र पत्रकार (घ) उपर्युक्त सभी

**29) समाचार लेखन में उलटा पिरामिड शैली का विकास कब हुआ?**

(क) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान (ख) अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान

(ग) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

**30) समाचारों की प्राथमिकता का आधार क्या होता है?**

(क)पाठकों की रुचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य (ख) पत्रकारों की रुचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य

(ग) संवाददाताओं की रुचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य (घ) उपर्युक्त सभी

**31) पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-पहचाना रूप क्या होता है?**

(क) फीचर लेखन (ख) स्तंभ लेखन (ग) समाचार लेखन (घ) आलेख लेखन

**32) समाचार लेखन में कितने ककार होते हैं?**

(क) तीन (ख) चार (ग) पाँच (घ) छह

**33) कौनसे ककार सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं?**

(क) क्या, कौन, कब और कहाँ (ख) क्यों, क्या, कौन और कब

(ग) कौन, कैसे, कब और क्या (घ) उपर्युक्त सभी

**34) कौन से ककार विवरणात्मक, व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते हैं?**

(क) क्यों और कब (ख) कैसे और कहाँ

(ग) क्यों और कैसे (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

**35) एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन क्या कहलाता है?**

(क) फीचर लेखन (ख) स्तंभ लेखन (ग) आलेख लेखन (घ) रिपोर्ट लेखन

**36) अख़बारों और पत्रिकाओं में कितने शब्दों तक के फीचर छपते हैं?**

(क) 300 से 3000 तक (ख) 250 से 2000 तक (ग) 350 से 3000 तक (घ) 450से 500 तक

**37) विशेष क्षेत्र से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों तथा समस्याओं का सूक्ष्म विश्लेषण करके उसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, ऐसी रिपोर्ट क्या कहलाती है?**

(क) सार्वजनिक रिपोर्ट (ख) व्यक्तिगत रिपोर्ट (ग) विशेष रिपोर्ट (घ) उपर्युक्त सभी

**38) विशेष रिपोर्ट की भाषा कैसी होनी चाहिए?**

(क) सरल (ख) सहज (ग) आम बोलचाल (घ) उपर्युक्त सभी

**39) संपादकीय लिखने का दायित्व किनका होता है?**

(क) प्रकाशकों का (ख) संवाददाताओं का

(ग) संपादक और उनके सहयोगियों का (घ) उपर्युक्त सभी

**40) विचारपरक लेखन का प्रमुख रूप क्या होता है?**

(क) फीचर लेखन (ख) स्तंभ लेखन (ग) आलेख लेखन (घ) रिपोर्ट लेखन

**उत्तर -**

**1)स्तम्भ लेखन**
**2)समाचार लेखन के**
**3)ड्राई एंकर**
**4)तहलका डॉट कॉम**
**5)विशेष रिपोर्ट**
**6)नई सूचनाए प्रदान करना**
**7)लेखक की विचारो की अभिब्यक्ति**
**8)‘क’और‘ग’ दोनों**
**9)तीन**
**10)वाचडॉग**
**11)समपादकिय विभाग**
**12)रुकावट**
**13)पेज थ्री**
**14)डेडलाइन**
**15)लाइव**
**16)संपादक**
**17)1892**
**18)यह स्थायी होता है**
**19)1556 गोवा**
**20)1995**
**21)उल्टा पिरामिड शैली**
**22)पत्रकारीय लेखन**
**23)अनिश्चित**
**24) उपरोक्त सभी**
**25) तीन**
**26)पूर्णकालिक पत्रकार**
**27)अंशकालिक पत्रकार**
**28)स्वतंत्र पत्रकार**
**29)अमेरिका मे गृह युद्ध के दौरान**
**30)पाठको की रुचिया,दस्टीकोण और मूल्य**
**31)समाचार लेखन**
**32)छह ककार**
**33)क्या,कौन,कब और कहा**
**34)क्यो और कैसे**
**35)फीचर लेखन**
**36)250 से 2000**
**37) विशेष रिपोर्ट**
**38)उपरोक्त सभी**
**39)संपादक व उनके सहयोगियो का**
**40)स्तम्भ लेखन**

# पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

**पत्रकारीय लेखन** - समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारिता या पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत सम्पादकीय, समाचार, आलेख, रिपोर्ट, फ़ीचर, स्तंभ तथा कार्टून आदि आते हैं।

पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य - सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना आदि । इसके कई प्रकार हैं यथा- खोजपरक पत्रकारिता, वॉचडॉग पत्रकारिता और एडवोकेसी पत्रकारिता आदि। पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक विषयों, विचारों व घटनाओं से है। पत्रकार को लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए वह सामान्य जनता के लिए लिख रहा है, इसलिए उसकी भाषा सरल व रोचक होनी चाहिए। वाक्य छोटे व सहज हों। कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए | भाषा को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक विशेषणों, अप्रचलित शब्दावली और दोहराव का प्रयोग नहीं होना चहिए।

पत्रकार के प्रकार- पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं ।

1. पूर्ण कालिक पत्रकार :किसी समाचार पत्र या संगठन के नियमित वेतनभोगी कर्मचारी।

2. अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर):निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाले पत्रकार।

3. फ़्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार :ये किसी संस्था से जुड़े नहीं होते। जब ये लिखते है तो इनका लेख कोई भी छाप सकता है और बदले में एक निश्चित राशि इन्हें भेज दी जाती है ।

**समाचार लेखन**- समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृहयुद्ध के दौरान हुआ। इसमें महत्त्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके बाद महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत किया जाता है। समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

समाचार के छह ककार- समाचार लिखते समय मुख्य रूप से छह प्रश्नों- क्या, कौन, कहाँ, कब, क्यों और कैसे का उत्तर देने की कोशिश की जाती है।

इन्हें समाचार के छह ककार कहा जाता है। प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं ।किसी घटना,समस्या या विचार से संबन्धित खबर लिखते हुये इन छः ककारों को ही ध्यान में रखा जाता है।किसी भी समाचार में पूर्ण संतुष्टि तभी मिलती है जब इन छः काकारों का उत्तर दिया जाए।

**फ़ीचर:** फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।

फ़ीचर लेखन का उद्देश्य: फ़ीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है।

फ़ीचर और समाचार में अंतर: समाचार में रिपोर्टर को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फ़ीचर में लेखक को अपनी राय, दृष्टिकोण और भावनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है। समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, जबकि फ़ीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती । फ़ीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फ़ीचर, समाचार रिपोर्ट से बड़े होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्राय: 250 से 2000 शब्दों तक के फ़ीचर छपते हैं।

**विशेष रिपोर्ट:** सामान्य समाचारों से अलग वे विशेष समाचार जो गहरी छान-बीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रकाशित किये जाते हैं, विशेष रिपोर्ट कहलाते हैं ।

विशेष रिपोर्ट के प्रकार:

(1) खोजी रिपोर्ट : इसमें अनुपलब्ध तथ्यों को गहरी छान-बीन करके सार्वजनिक किया जाता है।

(2) इन्डेप्थ रिपोर्ट: सार्वजनिक रूप से प्राप्त तथ्यों की गहरी छान-बीन कर उसके महत्त्वपूर्ण पक्षों को पाठकों के सामने लाया जाता है ।

(3) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या का विवरण सूक्ष्मता के साथ विस्तार से दिया जाता है। रिपोर्ट अधिक विस्तृत होने पर कई दिनों तक किस्तों में प्रकाशित की जाती है ।

(4) विवरणात्मक रिपोर्ट : इसमें किसी घटना या समस्या को विस्तार एवं बारीकी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

**विचारपरक लेखन :** समाचार-पत्रों में समाचार एवं फ़ीचर के अतिरिक्त संपादकीय, लेख, पत्र, टिप्पणी, वरिष्ठ पत्रकारों व विशेषज्ञों के स्तम्भ छपते हैं। ये सभी विचारपरक लेखन के अन्तर्गत आते हैं।

**संपादकीय :** संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचार-पत्र की राय भी कहा जाता है, संपादकीय कहते हैं । संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता।

**स्तंभ लेखन:** एक प्रकार का विचारात्मक लेखन है। कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचर-पत्र उन्हें अपने पत्र में नियमित स्तम्भ-लेखन की जिम्मेदारी प्रदान करते हैं। इस प्रकार किसी समाचार-पत्र में किसी ऐसे लेखक द्वारा किया गया विशिष्ट एवं नियमित लेखन जो अपनी विशिष्ट शैली एवं वैचारिक रूझान के कारण समाज में ख्याति प्राप्त हो, स्तंभ लेखन कहा जाता है ।

**संपादक के नाम पत्र :** समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर तथा पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम आए पत्र प्रकाशित किए जाते हैं । यह प्रत्येक समाचार-पत्र का नियमित स्तंभ होता है । इसके माध्यम से समाचार-पत्र अपने पाठकों को जनसमस्याओं तथा मुद्दों पर अपने विचार एवं राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है ।

**साक्षात्कार/इंटरव्यू:** किसी पत्रकार के द्वारा अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित करने के लिए, किसी व्यक्ति विशेष से उसके विषय में अथवा किसी विषय या मुद्दे पर किया गया प्रश्नोत्तरात्मक संवाद साक्षात्कार कहलाता है ।

पत्रकारिता लेखन का संबंध समसामयिक और वास्तविक घटनाओं तथा मुद्दों से है। यह अनिवार्य रूप से तात्कालिक और पाठक की रुचियों और जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

सृजनात्मक लेखन में कल्पना को भी स्थान दिया जाता है। इस लेखन में लेखक पर बंधन नहीं होता, उसे काफी छूट होती है।पत्रकारिता लेखन के विकास में जिज्ञासा का मूल भाव सक्रिय होता है। अच्छे लेखन की भाषा सीधी सरल एवं प्रभावी होती है।

अच्छे लेखन के लिए ध्यान देने योग्य बात – गूढ से गूढ़ विषय की प्रस्तुति सरल सहज और रोचक हो। विषय तथ्यों द्वारा पुष्ट हो। लेख उद्देश्य पूर्ण हो।

## लघु उत्तरीय प्रश्न

**प्रश्न : पत्रकारीय लेखन से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर: समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं।इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकारीय लेखन के अंतर्गत संपादकीय ,समाचार आलेख,रिपोर्ट, फीचर,स्तम्भ तथा कार्टून आते हैं।

**प्रश्न:समाचार लेखन में किनकी -किनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है?**

उत्तर: संवाददाता –समाचार एकत्र करने वाले पत्रकार । संपादक मंडल- समाचार को छपने योग्य बनाने वाले संपादक, उप संपादक, सह संपादक आदि की मंडली।

**प्रश्न : समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?**

उत्तर: पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं –

i) पूर्णकालिक पत्रकार-किसी समाचार पत्र या संगठन के नियमित वेतनभोगी कर्मचारी।

ii) अंशकालिक पत्रकार(स्ट्रिंगर) – निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाले पत्रकार ।

iii) फ्रीलान्सर पत्रकार- ये किसी संस्था से जुड़े नहीं होते । जब ये लिखते है तो इनका लेख कोई भी छाप सकता है और बदले में एक निश्चित राशि इन्हें भेज दी जाती है ।

**प्रश्न : समाचार लेखन की शैली पर प्रकाश डालिए।**

**अथवा**

**उल्टा पिरामिड शैली क्या होती है?**

उत्तर:समाचारपत्रों में प्रकाशित अधिकांश समाचार एक विशेष शैली में लिखे जाते हैं। इन समाचारों में किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे मुख्य तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले लिखा जाता है। उसके पश्चात् कम महत्त्वपूर्ण सूचना या तथ्य की जानकारी दी जाती है। समाचार में इंट्रो,बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती है।

- इंट्रो में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्यात्मक प्रश्न (क्या, कब,कहाँ और कौन)पूछे जाते हैं।
- बॉडी में विश्लेषणात्मक प्रश्न(क्यों,कैसे) पूछे जाते हैं।
- समापन में उद्धरण या स्रोत संबन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं।

**प्रश्न : समाचार लेखन के कितने अव्यय या अंग होते हैं?**

उत्तर:समाचार लेखन के तीन अंग होते हैं-शीर्षक, इंट्रो(मुखड़ा),बॉडी (निकाय)।

**प्रश्न : समाचार में शीर्षक का क्या महत्त्व है?**

उत्तर: शीर्षक समाचार का प्रवेश द्वार माना जाता है। शीर्षक की उपयुक्तता समाचार के महत्त्व को बढ़ा देती है।

**प्रश्न : 'इंट्रो' किसे कहते हैं? इसमें किन ककारों का प्रयोग किया जाता है?**

उत्तर: किसी भी समाचार के पहले अनुच्छेद या आरंभिक दो तीन पंक्तियों को उसका मुखड़ा या इंट्रो कहते हैं। इसके अंतर्गत सामान्यतया क्या ,कब, कहाँ और कौन की सूचनाएँ होती हैं । इनका संबंध तथ्यात्मक जानकारी या सूचना से होता है,विश्लेषण या विवरण से नहीं।

**प्रश्न : समाचार में कैसे और क्यों का स्थान कहाँ होता है और क्यों?**

उत्तर: समाचार में 'कैसे' का स्थान 'क्या' ,'कब', 'कहाँ' और 'कौन' के बाद आता है। समाचार के मुखड़े के बाद जहाँ समाचार का विस्तृत वर्णन ( बॉडी )होता है, वहाँ 'कैसे' को स्थान दिया जाता है। 'क्यों' अर्थात् घटना घटने के कारणों का विश्लेषण 'कैसे' के भी बाद आता है। इस क्रम निर्धारण के पीछे मूल कारण यह है कि पाठकों की रुचि पहले घटना के तथ्यों की जानकारी में होती है। बाद में वह उसका विस्तृत विवरण जानना चाहते हैं। अंत में उसके कारणों पर मनन करना चाहता है।

**प्रश्न : उल्टा पिरामिड शैली और सीधा पिरामिड शैली में क्या अंतर है?**

उत्तर:उल्टा पिरामिड शैली समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। इसके विपरीत कथा व कहानी लेखन सीधा पिरामिड शैली में की जाती है।उल्टा पिरामिड शैली में महत्वपूर्ण तथ्य यानी क्लाइमैक्स सबसे पहले रखा जाता है जबकि सीधा पिरामिड शैली में सबसे अंत में।

**प्रश्न :उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग कब से शुरू हुआ एवं विकास कैसे हुआ?**

उत्तर:उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग 19 वीं सदी के मध्य से शुरू हो गया था। लेकिन इसका विकास अमेरिका में गृहयद्ध के दौरान हुआ ।उस समय संवाददाताओं को अपनी खबरें टेलीग्राफ़ संदेशों के जरिये भेजनी पड़ती थी जिसकी सेवाएँ महंगी, अनियमित और दुर्लभ थीं। तकनीकी सेवाएँ रुक जाती थी और संवाददाताओं को खबर संक्षेप में लिखना जरूरी हो जाता था।इस तरह उल्टा पिरामिड शैली का विकास धीरे-धीरे सम्पादन की दुनिया में भी हुआ।

## पाठ -5 . विशेष लेखन-स्वरूप और प्रकार

## बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

### फीचर लेखन

**1. फीचर के लिए हिन्दी में कौन-सा शब्द प्रयुक्त होता है।**

**(क)** रूपक
(ख) विज्ञापन,
(ग) समाचार,
(घ) संपादकीय |

**2.फीचर में तथ्यों की प्रस्तुति का ढंग........होता है ।**

(क) नीरस
(ख) व्यापक
(ग) मनोरंजक
(घ) संकुचित

**3. फीचर लेखन की शैली होती है?**

(क) निश्चित
(ख) अनिश्चित
(ग) सुनिश्चित
(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

**4. फीचर की कौन-सी विशेषता है?**

(क) सृजनात्मक
(ख) सुव्यवस्थित
(ग) आत्मनिष्ठ
(घ) उपर्युक्त तीनों

**5. आमतौर पर अखबारों और पत्रिकाओं में फीचर कितने शब्दों तक छपते हैं?**

(क) 100-1500
(ख) 500-2000
(ग) 250-2000
(घ) 1000-2000

**6.फीचर के संबंध में कौन सा वाक्य सही नहीं है?**

(क) यह एक सुव्यवस्थित, आत्मनिष्ठ,सृजनात्मक लेखन है।
(ख) यह पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत नहीं करता है।
(ग) इसमें शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती।
(घ) इसमें लेखक अपनी राय, दृष्टिकोण, भावना नहीं डाल सकता ।

**7. एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन क्या कहलाता है?**

(क) फीचर लेखन
(ख) स्तंभ लेखन
(ग) आलेख लेखन
(घ) रिपोर्ट लेखन

**8.एक अच्छे और रोचक फीचर के साथ क्या होना जरूरी है ?**

(क) फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स आदि
(ख) कल्पनाओं की उड़ान
(ग) विचारों की गंभीरता
(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

**9.फीचर लेखन, समाचार लेखन से किस प्रकार भिन्न है?**

(क)समाचार लेखन में तथ्यों की शुद्धता पर जोर, फीचर में लेखकीय दृष्टिकोण पर जोर
(ख)समाचार लेखन की उलटा पिरामिड शैली, फीचर लेखन की शैली निश्चित नहीं
(ग) समाचर लेखन में सपाटबयानी, फीचर की भाषा सरल, आकर्षक
(घ) उपर्युक्त सभी

**10.'फीचर' को सजीव बनाने के लिए क्या बातें आवश्यक हैं?**

(क)विषय से जुड़े पात्रों की उपस्थिति आवश्यक है
(ख)फीचर को मनोरंजन के साथ सूचनात्मक होना चाहिए
(ग) पात्रों के माध्यम से विषय के विभिन्न पहलुओं को सामने लाना आवश्यक है
(घ) उपर्युक्त सभी

**11.कथन: (A) फीचर लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फार्मूला नहीं होता ।**
**कारण (R ) फीचर एक निश्चित शैली के अंतर्गत ही लिखा जा सकता है.**

(क)A और R दोनों सही हैं।
(ख)R सही है और A गलत है।
(ग) A सही और R भी सही है तथा R, A की व्याख्या करता है।
(घ) A सही है और R गलत है।

**12.अभिकथन: फीचर लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता है।**
**कारण: फीचर कथात्मक शैली में लिखा जाता है।**

(क)अभिकथन और कारण दोनों सही है और कारण अभिकथन की सही व्याख्या करता है।
(ख)अभिकथन और कारण दोनों सही है पर कारण अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है
(ग) अभिकथन सही है, कारण गलत है।
(घ) अभिकथन गलत है, कारण सही है।

**13.अभिकथन: फीचर पाठकों को तात्कालिक घटनाक्रम से अवगत कराता है।**
**कारण : फीचर सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।**

(क)अभिकथन और कारण दोनों सही है और कारण अभिकथन की सही व्याख्या करता है।
(ख)अभिकथन और कारण दोनों सही है पर कारण अभिकथन की सही व्याख्या नहीं करता है।
(ग) अभिकथन सही है, कारण गलत है।
(घ) अभिकथन गलत है, कारण सही है।

**उत्तरमाला-**

**1.क 2.ग 3.ख 4.घ 5.ग 6.घ 7. क 8. क 9. घ 10. घ 11. घ 12. क 13. घ**

## आलेख लेखन

**1. ------------लेखक का नाम बताता है।**

(क)शीर्षक
(ख)बाय-लाइन
(ग) डेटलाइन
(घ) इनमें से कोई नहीं

**2.किसी लेख के शीर्षक के ठीक नीचे क्या रखा जाता है?**

(क)दिनांक
(ख)बाय-लाइन
(ग) लेखक का स्थान
(घ) प्रणाम

**3.लेख लेखन का मूल्यांकन किन मापदंडों पर किया जाता है?**

(क)सामग्री
(ख)अभिव्यक्ति
(ग) प्रवाह और प्रारूप
(घ) ये सभी

**4.लेख लेखन में प्रवाह क्या है?**

(क)सामग्री को एक साथ बुनने की क्षमता
(ख)सामग्री को अलग करने की क्षमता
(ग) फायदे और नुकसान का पता लगाने की क्षमता
(घ) दर्शकों का अभिवादन करने की क्षमता

**5.लेख लिखने से पहले ------------ करना चाहिए।**

(क)अभ्यास
(ख)विषय के बारे में शोध
(ग) भगवान से प्रार्थना करें
(घ) इनमें से कोई नहीं

**6.अभिकथन (A)- लेखन का आशय यहाँ यांत्रिक हस्तकौशल से नहीं है।**

**कारण (R)- लेखन का आशय भाषा के सहारे किसी चीज़ पर विचार करने और उस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित रूप में अभिव्यक्त करने से है।**

(क)A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(ख)A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।
(घ) A असत्य है, लेकिन R सत्य है।

**7.अभिकथन (A)-लेखन में विषय दो खंभों के बीच बँधी रस्सी की तरह नहीं होता|**

**कारण (R)- लेखन में विषय खुले मैदान की तरह होता है, जिसमें बेलाग दौड़ने, कूदने और कुलांचे भर की छूट होती है।**

(क)A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(ख)A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है
(ग) A सत्य है, लेकिन R असत्य है।
(घ) A असत्य है, लेकिन R सत्य है।

**उत्तरमाला- 1.ख 2.ख 3.घ 4. क 5.ख 6. क 7.ख**

## समाचार लेखन

**1. किस पत्रकार का संबंध किसी खास समाचार पत्र से नहीं होता बल्कि वह भुगतान के आधार पर अलग-अलग अखबारों के लिए लिखते हैं?**

(क)फ्रीलान्सर पत्रकार
(ख)अंशकालिक पत्रकार
(ग) पूर्णकालिक पत्रकार
(घ) उपर्युक्त सभी

**2. समाचार लेखन की प्रभावशाली शैली कौन सी है?**

(क)वर्णनात्मक शैली
(ख)विवेचनात्मक शैली
(ग) सीधा पिरामिड शैली
(घ) उल्टा पिरामिड शैली

**3.इनमें *से कौन-सा उल्टा पिरामिड शैली का अंग नहीं है?***

(क)मध्य भाग
(ख)बॉडी
(ग) इंट्रो
(घ) समापन

**4. समाचार-लेखन में निम्नांकित में किनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है?**

(क)समाचार वाचक
(ख)पाठक वर्ग
(ग) कथावाचक
(घ) सम्पादक मंडल

**5. उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग निम्न में से किस लेखन में होता है ?**

(क)पत्र लेखन में
(ख)निबंध लेखन में
(ग) समाचार वाचन में
(घ) समाचार लेखन में

**6. समाचार लेखन में कितने प्रकार के ककारो का प्रयोग किया जाता है ?**

(क)एक
(ख)दो
(ग) चार
(घ) छः

**7.सूचनाओं का संकलन कर संपादक तक पहुँचाने की जिम्मेदारी किसकी होती है ?**

(क)पत्रकार
(ख)संपादक,
(ग) लेखक,
(घ) खिलाड़ी ।

**8. किसी सामाग्री से उसकी भाषा शैली ,व्याकरण ,वर्तनी तथा तथ्यात्मक अशुद्धियों को दूर करते हुये पठनीय बनाना किसका कार्य है?**

(क)पत्रकार
(ख)संपादक
(ग) संवाददाता
(घ) इनमें से कोई नहीं

**9.पत्रकार कितने तरह के होते हैं?**

(क)तीन
(ख)दो
(ग) पाँच
(घ) चार

**10. समाचारों की प्राथमिकता का आधार क्या होता है?**

(क)पाठकों की रुचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य
(ख)पत्रकारों की रुचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य
(ग) संवाददाताओं की रुचियाँ, दृष्टिकोण व मूल्य
(घ) उपर्युक्त सभी

**11.कौन से 'ककार' सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं?**

(क)क्या, कौन, कब और कहाँ
(ख)क्यों, क्या, कौन और कब

(ग) कौन, कैसे, कब और क्या
(घ) उपर्युक्त सभी

**12. कौन से ककार विवरणात्मक, व्याख्यात्मक, विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते हैं?**

(क)क्यों और कब
(ख)कैसे और कहाँ
(ग) क्यों और कैसे
(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

**13.उलटा पिरामिड शैली' किस लेखन शैली के बिलकुल विपरीत है ?**

(क)कथा लेखन
(ख)समाचार लेखन
(ग) कविता लेखन
(घ) उपरोक्त में से कोई भी नहीं

**14.उलटा पिरामिड शैली' में समाचार का ढाँचा कितने भागों में विभक्त होता है?**

(क)दो
(ख)तीन
(ग) चार
(घ) पाँच

**15.इंट्रो की शब्द सीमा कितनी होनी चाहिए**

(क)40 से 45
(ख)30 से 35
(ग) 50 से 60
(घ) कोई सीमा नहीं

**16.समाचार की भाषा के संबंध में कौन सा वाक्य गलत है-**

(क)अखबारों में साफ-सुथरी, सरल एवं प्रभावी भाषा का प्रयोग होना चाहिए।
(ख)बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए ।
(ग) अखबारों की भाषा सरल, सहज एवं रोचक होनी चाहिए।
(घ) अखबारों की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए विशेषणों और आलंकारिक भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

**17.कथन- नवीनता, लोगों की रुचि, प्रभाविता, निकटता आदि तत्वों के होने से कोई घटना समाचार बन जाती है**

**कारण- समाचार पत्रकार लोगों पर अपना एजेंडा थोपते हैं।**

(क)कथन व कारण दोनों सही है, कारण कथन की सही व्याख्या है।
(ख)कथन व कारण दोनों सही है. कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) कथन सही है, कारण गलत है।
(घ) कथन गलत है, कारण सही है।

**18. कथन- समाचारों के मुखड़े में तीन या चार ककारो क्या, कौन, कब, कहाँ का प्रयोग किया जाता है।**

**कारण - यह सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं।**

(क)कथन व कारण दोनों सही है, कारण कथन की सही व्याख्या है
(ख)कथन व कारण दोनों सही है, कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है
(ग) कथन सही है, कारण गलत है
(घ) कथन गलत है, कारण सही है

**19. कथन- समाचार पत्र पत्रिकाओं में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग किया जाता है।**

**कारण- उल्टा पिरामिड शैली समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय उपयोगी और बुनियादी शैली है।**

(क)कथन व कारण दोनों सही है, कारण कथन की सही व्याख्या है

(ख)कथन व कारण दोनों सही है, कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है
(ग) कथन सही है, कारण गलत है
(घ) कथन गलत है, कारण सही है

**20. कथन- समाचार किसी भी ऐसी घटना विचार या समस्या की रिपोर्ट होता है जिसमें लोगों की अधिक से अधिक रूचि होती है और उन पर उसका प्रभाव पड़ता है।**

**कारण - पत्रकारों ने तथ्यों की शुद्धता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता, संतुलन की उपेक्षा की है।**

(क)कथन व कारण दोनों सही है, कारण कथन की सही व्याख्या है।
(ख)कथन व कारण दोनों सही है, कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) कथन सही है, कारण गलत है।
(घ) कथन गलत है, कारण सही है।

**उत्तरमाला –**

**1. क 2.घ 3. क 4. घ 5. घ 6. घ 7. क 8.ख 9. क 10. क**

**11. क 12.ग 13. क 14. ख 15. ख 16. घ 17.B 18. क 19. ख 20. ख**

## (लघु उत्तरीय प्रश्न)

**प्रश्न.- विशेष लेखन क्या है?**

**उत्तर-** विशेष लेखन का अर्थ है-किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। अधिकांश समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा टी०वी० और रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है। जैसे समाचार-पत्रों और अन्य माध्यमों में बिजनेस यानी कारोबार और व्यापार का अलग डेस्क होता है, इसी तरह खेल की खबरों और फ़ीचर के लिए खेल डेस्क अलग होता है।

**प्रश्न.- बीट किसे कहते हैं?**

**उत्तर-** संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

**प्रश्न.-बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है?**

**उत्तर**-बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग के बीच सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि अपनी बीट की रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी और दिलचस्पी का होना पर्याप्त है। इसके अलावा एक बीट रिपोर्टर को आमतौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। लेकिन विशेषीकृत रिपोर्टिंग का तात्पर्य यह है कि आप सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करते हैं|

**प्रश्न.-विशेष लेखन की भाषा शैली कैसी होती है?**

**उत्तर**- विशेष लेखन की भाषा और शैली कई मामलों में सामान्य लेखन से अलग होती है। विशेष लेखन की अपनी विशेष तकनीकी शब्दावली होती है जो उस विषय पर लिखते हुए आपके लेखन में आती है। उदाहरणार्थ-‘सोने में भारी उछाल’, ‘चाँदी लुढ़की’ या ‘आवक बढ़ने से लाल मिर्च की कड़वाहट घटी’ या ‘शेयर बाजार ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़े, सेंसेक्स आसमान पर’ आदि के अलावा खेलों में भी ‘भारत ने पाकिस्तान को चार विकेट से पीटा’, ‘चैंपियंस कप में मलेशिया ने जर्मनी के आगे घुटने टेके’ आदि |

**प्रश्न. विशेष लेखन के क्षेत्र कौन-कौन से हैं?**

**उत्तर**- विशेष लेखन के क्षेत्र- विशेष लेखन के अनेक क्षेत्र हैं, जैसे

- कारोबार और व्यापार, खेल,विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कृषि,विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फ़िल्म-मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे, कानून, आदि।
- समाचार-पत्रों और दूसरे माध्यमों में खेल, कारोबार, सिनेमा, मनोरंजन, फ़ैशन, स्वास्थ्य, विज्ञान, पर्यावरण, शिक्षा, जीवन-शैली और रहन-सहन जैसे विषयों को आजकल विशेष लेखन के लिहाज से ज्यादा महत्व मिल रहा है। इसके अलावा रक्षा, विदेश-नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और विधि जैसे क्षेत्रों में विशेषीकृत रिपोर्टिंग के अंतर्गत आती है|

# फीचर लेखन

**प्रश्न : फीचर किसे कहते हैं?**

**उत्तर:**मूलतः लैटिन भाषा के 'फैक्ट्रा' शब्द से निर्मित 'फीचर' शब्द का अर्थ 'स्वरूप' या 'रूपरेखा' है। फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक तथा आत्मनिष्ठ लेखन है,जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने तथा मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

**प्रश्न : फीचर और समाचार में क्या अंतर है?**

**उत्तर :**फीचर और समाचार में अंतर निम्नलिखित हैं-

i. फ़ीचर में लेखक के पास अपनी राय या दृष्टिकोण और भावनाएँ जाहिर करने का अवसर होता है जबकि समाचार-लेखन में वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर जोर दिया जाता है।

ii. फ़ीचर-लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता। इसकी शैली कथात्मक होती है।

iii. फ़ीचर-लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक व आकर्षक होती है, परंतु समाचार की भाषा में सपाट बयानी होती है।

iv. फ़ीचर में शब्दों की अधिकतम सीमा नहीं होती। ये आमतौर पर 250 शब्दों से लेकर 2000 शब्दों तक के होते हैं, जबकि समाचारों पर शब्द-सीमा लागू होती है।

v. फ़ीचर का विषय कुछ भी हो सकता है, समाचार का नहीं।

**प्रश्न : फीचर की विशेषतायें लिखिए ?**

**उत्तर:** फीचर की सबसे बड़ी विशेषता इसकी मनोरंजनपूर्ण शैली है । इसके अतिरिक्त इसकी कई विशेषताएँ हैं जो निम्नलिखित है-

i. फीचर एक सुव्यवस्थित ,सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।

ii. फीचर लेखन की भाषा समाचारों के विपरीत सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूने वाली होती है।

iii. फीचर लेखन का का कोई फॉर्मूला नहीं होता है और न ही शब्द सीमा का बंधन होता है।

iv. फीचर सारगर्भित होता है, परंतु यह बोझिल नहीं होता।

v. फीचर लेखन का विषय अतीत, वर्तमान तथा भविष्य से संबंधित हो सकता है।

vi. फ़ीचर जिज्ञासा, सहानुभूति, संवेदनशीलता, आलोचनात्मक तथा विवेचनात्मक भावों को उद्दीप्त करता है।

vii. फीचर किसी महत्त्वपूर्ण खोज तथा उपलब्धि पर लिखा जा सकता है।

viii. एक अच्छे और रोचक फीचर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफ़िक्स आदि होते हैं।

**प्रश्न :फीचर लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?**

**उत्तर:**फीचर लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

i. फ़ीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी जरूरी होती है।

ii. फ़ीचर के कथ्य को पात्रों के माध्यम से बताना चाहिए।

iii. कहानी को बताने का अंदाज ऐसा हो कि पाठक यह महसूस करें कि वे घटनाओं को खुद देख और सुन रहे हैं।

iv. फ़ीचर मनोरंजक व सूचनात्मक होना चाहिए।

v. इसे किसी बैठक या सभा के कार्यवाही विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।

vi. फ़ीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए। उस उद्देश्य के इर्द-गिर्द सभी प्रासंगिक सूचनाएँ तथ्य और विचार गुंथे होने चाहिए।

vii. फ़ीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।

viii. फ़ीचर-लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फ़ॉर्मूला नहीं होता। इसे कहीं से भी अर्थात् प्रारंभ, मध्य या अंत से शुरू किया जा सकता है।

ix. फ़ीचर का हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके से जुड़ा होना चाहिए तथा उनमें प्रारंभ से अंत तक प्रवाह व गति रहनी चाहिए।

x. पैराग्राफ छोटे होने चाहिए तथा एक पैराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस करना चाहिए।

**प्रश्न : फीचर के  कितने प्रकार  हैं ?नाम लिखें।**

**उत्तर**:फीचर अनेक प्रकार के होते हैं, जिनमें  कुछ निम्नलिखित हैं -

i. समाचार बैकग्राउंड  फीचर,    ii.   खोजपरक फीचर,   iii.    साक्षात्कार फीचर,  iv.   जीवनशैली फीचर,

v. रूपात्मक फीचर,    vi. व्यक्तिचित्र फीचर    vii.   यात्रा फीचर,    viii.  विशेष रुचि के फीचर

**प्रश्न : फीचर लिखते समय कैसे विषय का चयन करना चाहिए?**

**उत्तर:** फीचर लेखन में इस प्रकार के विषय का चयन करना चाहिए जो समसामयिक होने के साथ- साथ लोकरुचि के अनुकूल हो । फीचर की सामाग्री विभिन्न स्थलों पर जाकर एकत्रित की जा सके एवं लेखक अपनी तर्कशील तथा सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का प्रयोग कर सके।

**प्रश्न : फीचर लेखन की शैली एवं भाषा कैसी होनी चाहिए?**

**उत्तर:**फीचर लेखन में उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग नहीं होता है यानी  फीचर लेखन का कोई एक तय ढाँचा या फॉर्मूला नहीं होता है।फीचर  लेखन की शैली काफी हद तक कथात्मक शैली की तरह होती है। फीचर की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक और मन को छूने वाली होनी चाहिए। फीचर की भाषा में समाचारों की सपाटबयानी नहीं चलती। इसमें भाषा और शैली को अलंकारिकता से दुरूह बनाने से भी बचना चाहिए ।

## आलेख लेखन

**प्रश्न: आलेख लेखन  किसे कहते हैं ?**

**उत्तर:**आलेख गद्य की वह विधा है जो किसी एक विषय पर सर्वांगपूर्ण और सम्यक् विचार प्रस्तुत करती है। आलेख वास्तव में लेख का ही प्रतिरूप होता है।'लेख'में किसी एक विषय से संबन्धित विचार होते हैं 'आलेख' में लगा 'आ' उपसर्ग यह प्रकट करता है कि वह लेख सर्वांगपूर्ण , सम्यक् और संपूर्ण होना चाहिये ।

**प्रश्न : आलेख रचना के संबंध में कौन- कौन सी प्रमुख बातों का ध्यान रखना जरूरी हो जाता है?**

**उत्तर:** आलेख रचना के संबंध में प्रमुख बातें–

i. लेख लिखने से पूर्व विषय का चिंतन-मनन करके विषयवस्तु का विश्लेषण करना चाहिए।

ii. विषयवस्तु से संबंधित आँकड़ों व उदाहरणों का उपयुक्त संग्रह करना चाहिए।

iii. लेख में श्रृंखलाबद्धता होना जरूरी है।

iv. लेख की भाषा सरल, बोधगम्य व रोचक होनी चाहिए। वाक्य बहुत बड़े नहीं होने चाहिए। एक परिच्छेद में एक ही भाव व्यक्त करना चाहिए।

v. लेख की प्रस्तावना व समापन में रोचकता होनी जरूरी है।

vi. विरोधाभास, दोहरापन, असंतुलन, तथ्यों की असंदिग्धता आदि से बचना चाहिए।

**प्रश्न :आलेख लेखन की विशेषताएँ लिखिए ।**

**अथवा, अच्छे आलेख का गुण लिखें।**

**उत्तर:**आलेख लेखन की विशेषता -

i. नवीनता एवं ताजगी ,    ii. जिज्ञासाशील।    iii. विचार स्पष्ट और बेबाकीपूर्ण।

iv. भाषा सहज, सरल और प्रभावशाली।  v. एक ही बात पुनः न लिखी जाए।    vi. विश्लेषण शैली का प्रयोग।

vii. आलेख ज्वलंत मुद्दों, विषयों और महत्त्वपूर्ण .चरित्रों पर लिखा जाना चाहिए।

viii. आलेख का आकार विस्तार पूर्ण नहीं होना चाहिए।

**प्रश्न : आलेख का मुख्य अंग क्या हैं?**

**उत्तर:** आलेख के मुख्य अंग हैं–

भूमिका, विषय का प्रतिपादन, तुलनात्मक चर्चा व निष्कर्ष ।

सर्वप्रथम शीर्षक के अनुकूल भूमिका लिखी जाती है। यह बहुत लंबी न होकर संक्षेप में होनी चाहिए। विषय के प्रतिपादन में विषय का वर्गीकरण, आकार, रूप व क्षेत्र आते हैं। इसमें विषय का क्रमिक विकास किया जाता है। विषय में तारतम्यता व क्रमबद्धता अवश्य होनी चाहिए। तुलनात्मक चर्चा में विषयवस्तु का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है और अंत में, विषय का निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

# पाठ-11. कैसे करें कहानी का नाट्य रूपांतरण

## कहानी का नाट्य रूपान्तरण एवं रेडियो नाटक की रचना प्रक्रिया

**प्रश्न-1.कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?**

उत्तर-कहानी से नाटक में रूपान्तरण करते समय हमें कहानी और नाटक की विविधताएँ स्पष्ट होनी चाहिए।कहानी के नाटक के रूप में रूपान्तरण के समय कहानी को पढ़कर अभिनय के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए ।कहानी किसी भी शैली में लिखी जाती है,परंतु नाटक को हमेशा संवाद शैली में प्रस्तुत करना चाहिए ।नाटक को मंच पर प्रस्तुत करते समय मंच पर संगीत,सज्जा,प्रकाश की व्यवस्था के साथ अभिनय के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है ।

**प्रश्न-2. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय संवाद-योजना में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?**

उत्तर-कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए

(क) नए लिखे संवाद कहानी के मूल संवाद से मेल खाते हों ।

(ख) नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए ।

(ग)संवाद सहज,सरल,संक्षिप्त सटीक,प्रभावशाली एवं बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

(घ)संवाद अधिक लंबे न हों, इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए ।

**प्रश्न-3. कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है ?**

उत्तर-कहानी को नाटक में रूपांतरित करते समय अनेक महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(क) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

(ख) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है ।

(ग) कथा-वस्तु को विभाजित करके दृश्यों को लिखा जाना चाहिए।

(घ) कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।

(ङ)जो दृश्यों में नहीं आया हो जैसे परिवेश का विवरण या परिस्थितियों पर टिप्पणी उसे मंच-सज्जा, पार्श्वसंगीत और प्रकाश व्यवस्था के द्वारा दिखाया जाता है

(च)मानसिक द्वंद्व के लिए स्वागत कथन या वायस ऑवर का प्रयोग करना चाहिए।

(छ) रंगमंच की संभावनाओं को भी ध्यान में रखना चाहिए।

**प्रश्न-4.'संवाद पात्रों के चरित्र को स्थापित करने के साथ कहानी को गति देकर आगे बढ़ाते हैं'-कथन के सन्दर्भ में संवाद के महत्व को प्रमाणित कीजिए।**

उत्तर-संवाद किसी भी कहानी का महत्वपूर्ण अंग है।कहानी के पात्रों के द्वारा किए गए उनके विचारों की अभिव्यक्ति को संवाद या कथोपकथन कहते हैं।कहानी में संवाद का विशेष महत्त्व होता है ।संवाद ही कहानी तथा पात्र को स्थापित एवं विकसित करते हैं तथा साथ ही कहानी को गति देकर आगे बढ़ाते हैं ।जो घटना या प्रतिक्रिया कहानीकार होती हुई नहीं दिखा सकता,उन्हें वह संवादों के माध्यम से सामने लाता है।इस प्रकार कहानी में संवादों का अत्यंत महत्त्व है ।

**प्रश्न-5 'पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण एवं बुनियादी शर्त है'।कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ?**

उत्तर-कथन से मैं पूर्णत: सहमत हूँ क्योंकि कहानी का संचालन उसके पात्रों के द्वारा ही होता है ।पात्रों के गुण-दोष को उनका चरित्र-चित्रण कहा जाता है।प्रत्येक पात्र का अपना स्वरूप,स्वभाव एवं उद्देश्य होता है ।पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण एवं बुनियादी शर्त है।कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा उतनी आसानी से उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी ।पात्रों का चरित्र-चित्रण कहानीकार द्वारा पात्रों के गुणों का बखान तथा दूसरे पात्रों के संवाद के माध्यम से किया जा सकता है।

**प्रश्न-6 कहानी का कथानक से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर-कथानक कहानी का केन्द्रीय बिन्दु होता है, यह कहानी का वह संक्षिप्त रूप है जिसमें प्रारम्भ से अंत तक की सभी घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन होता है ।

**प्रश्न-7 कुछ कहानियों के नाम बताएं जिनका सफलतापूर्वक नाट्य रूपांतरण हुआ हो ।**

उत्तर-चीफ की दावत-भीष्म साहनी,टोबा टेक सिंह-मंटो,डिप्टी क्लेक्टरी-अमरकान्त,दुविधा-विजयदान ,कफन-प्रेमचंद,बड़े भाई साहब-प्रेमचंद,ईदगाह-प्रेमचंद,रुपया तुम्हें खा गया-भगवतीचरण वर्मा इत्यादि कई कहानियों का सफलता पूर्वक मंचन हुआ है ।

**प्रश्न-8 कहानी का क्या अर्थ है ?इसके मुख्य रूप से कितने भेद हैं?**

उत्तर-कहानी गद्य साहित्य की सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक,भावनात्मक एवं कलात्मक वर्णन करती है ।साहित्य की सभी विधाओं में कहानी सबसे पुरानी विधा है । जीवन में यह सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है । प्राचीन काल में कहानियों को कथा,आख्यायिका,गल्प आदि कहा जाता था ।पुराने समय में कहानी का मतलब था उपदेश देना या मनोरंजन करना ।आज इसका लक्ष्य मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना है ।यही कारण है कि प्राचीन काल की कहानी से आज की कहानी बिलकुल भिन्न हो गई है।इसके मुख्य निम्नलिखित भेद हैं-

1-घटना प्रधान कहानी, 2-चरित्र प्रधान कहानी,3-भावप्रधान कहानी, 4-वातावरण प्रधान कहानी और मनोविश्लेषणात्मक कहानी ।

**प्रश्न-9 कहानी का नाट्य रूपान्तरण करते समय किस मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है?**

उत्तर-कहानी का नाट्य रूपान्तरण करते समय अनेक समस्या आती हैं।मुख्य समस्या तो पत्रों के मनोभावों को प्रस्तुत करने में आती है ।कहानीकार तो कहानी के पात्रों के मनोभावों को प्रस्तुत करता है,किन्तु नाटक के पात्रों में मानसिक द्वंद्व के दृश्यों की नाटकीय प्रस्तुति करने में समस्याएँ आती है उदाहरण के लिए,जब हम 'ईदगाह'कहानी का नाट्य रूपान्तरण करने लगेंगे तो हामिद के द्वंद्व को प्रस्तुत करना कठिन हो जाएगा ।मेले में पहुँच कर हामिद के मन में यह संघर्ष चल रहा है कि दो पैसे दे या क्या न खरीदे ?

**प्रश्न-10 कहानी और नाटक में क्या अंतर है ?**

उत्तर-कहानी और नाटक दो अलग-अलग विधाएँ हैं ।इसमें कुछ समानताएँ हैं तो कुछ भिन्नताएँ भी है ।कहानी की परिभाषा देते हुए हिन्दी साहित्यकोश लिखता है-"कहानी गद्य साहित्य का एक छोटा,अत्यंत सुसंगठित और अपने आप में पूर्ण कथारूप है।"परंतु नाटक जीवन की अनुकृति है ।नाटक को सजीव पात्रों द्वारा एक चलते फिरते सप्राण रूप में अंकित किया जाता है ।अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि कहानी का संबंध केवल लेखक और पाठक से होता है ।परंतु नाटक का संबंध लेखक के अतिरिक्त निर्देशकों,पात्रों,दर्शकों तथा श्रोताओं से होता है ।

दृश्य होने के कारण नाटक अधिक प्रभावशाली विधा है ।नाटक को मंच पर प्रस्तुत किया जाता है ।उसमें मंच सज्जा,संगीत प्रकाश व्यवस्था आदि को भी स्थान दिया जाता है,परंतु कहानी केवल पढ़ी जाती है या कही जाती है ।कहानी को पढ़ते समय हम उसे बीच में भी छोड़ सकते है और बाद में समय मिलने पर बाद में कभी भी पढ़ सकते हैं,परंतु नाटक को एक ही समय तथा स्थान पर दर्शकों के सामने अभिनीत किया जाता है ।संक्षेप मे हम कह सकते है कि कहानी पढ़ने सुनने की विधा है,नाटक रंगमंच पर अभिनीत करने की विधा है ।

# पाठ-12. कैसे बनता है रेडियो नाटक

## रेडियो नाटक की रचना प्रक्रिया

**प्रश्न-1 रेडियो नाटक बनाते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?**

उत्तर-रेडियो नाटक बनाते समय निम्नलिखित तीन बातों पर मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिए

(I)कथानक-रेडियो का कथानक संक्षिप्त होना चाहिए। कथानक का आरंभिक भाग कौतूहल,आत्मीयता तथा स्पष्टता पूर्ण होना चाहिए ।कथानक का अंत प्रभावशाली होना चाहिए ।

(ii)पात्र और चरित्र चित्रण-रेडियो नाटक श्रव्य होते हैं। अत: पात्रों का परिचय ध्वनि द्वारा ही तैयार किया जाता है ।

(iii)ध्वनि-रेडियो नाटक में ध्वनि का महत्वपूर्ण स्थान है।ध्वनि के माध्यम से ही श्रोता नाटक को अपने कल्पना शक्ति के आधार पर देखता है।

**प्रश्न-2 सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं ?**

उत्तर-सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ हैं जो इस प्रकार हैं-

**सिनेमा और रंगमंच** :

(i) सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है ।

(ii) इसमें कहानी का आरंभ,मध्य और अंत होता है ।

(iii) इसमें चरित्र होते हैं ।

(iv) इसमें पात्रों के आपसी संवाद होते हैं ।

(v) इसमें पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और अंत में समाधान ।

(vi) इसमें पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है ।

**रेडियो नाटक:**

(i) रेडियो नाटक में भी एक ही कहानी होती है ।

(ii) इसमें भी कहानी का आरंभ,मध्य और अंत होता है ।

(iii) इसमें भी चरित्र होते हैं ।

(iv) इसमें भी पात्रों के आपसी संवाद होते हैं ।

(v) इसमें भी पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और प्रस्तुत किया जाता है।समाधान प्रस्तुत किया जाता है ।

(vi) इसमें भी पात्रों के संवादों के माध्यम से कहानी का विकास होता है ।

**प्रश्न-3 सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं ?**

उत्तर-सिनेमा रंगमंच और रेडियो नाटक में अनेक समानताएँ होते हुए भी कुछ असमानताएँ भी हैं जो इस प्रकार है-

**सिनेमा और रंगमंच:**

(i)सिनेमा और रंगमंच दृश्य माध्यम है ।

(ii)इसमें दृश्य होते हैं ।

(iii)इसमें मंच सज्जा और वस्त्र सज्जा का बहुत महत्त्व होता है ।

(iv)इसमें पात्रों की भावभंगिमाएँ विशेष महत्त्व रखती हैं ।

(v)इसमें कहानी को पात्रों की भावनाओं के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है ।

**रेडियो नाटक:**

(i)रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है ।

(ii)इसमें दृश्य नहीं होते हैं ।

(iii)इसमें मंच सज्जा का कोई विशेष महत्त्व नहीं होता है ।

(iv)इसमें भावभंगिमाओं की कोई आवश्यकता नहीं होती ।

(v)इसमें कहानी को ध्वनि प्रभावों एवं संवादों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है ।

**प्रश्न-3 रेडियो नाटक की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।**

उत्तर-रेडियो नाटक की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(i)रेडियो नाटक में मनोवैज्ञानिक चित्रण की सुविधा विद्यमान है।रेडियो नाटक के पात्रों की मन की गहराई में उतरना सरल है ।

(ii)रेडियो नाटक में वाद्य संगीत, ध्वनि प्रभाव अथवा शांति के द्वारा दृश्य परिवर्तन किया जा सकता है और इस कार्य में बहुत कम समय लगता है।

(iii)रेडियो नाटक में सभी प्रकार के दृश्य उपस्थित किए जा सकते हैं; जैसे समुद्र की ऊँची, लहरों पर डूबती-उतरती नौका अथवा कारखानों में काम करते मज़दूर।

(iv)रंगमंच पर अस्वाभाविक लगने वाले प्रतीकात्मक पात्र रेडियो नाटक में सजीव एवं स्वाभाविक प्राणी बन जाते हैं। यही नहीं, भाव और विचार भी मानव शरीर धारण कर लेते हैं।

(v)रंगमंच का अस्वाभाविक स्वगत कथन माइक्रोफोन का स्पर्श पाकर रेडियो नाटक पर स्वाभाविक बन जाता है।

**प्रश्न-4 रेडियो नाटक के कथानक में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? स्पष्ट करें।**

उत्तर-रेडियो नाटक का कथानक संवादों और ध्वनि प्रभावों पर ही निर्भर रहता है। इसलिए कथानक का चुनाव करते समय अग्रलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

(1) रेडियो नाटक का कथानक केवल एक घटना पर आधारित नहीं होना चाहिए। उदाहरण के रूप में, यदि रेडियो नाटक के कथानक का आधार पुलिस द्वारा डाकुओं का पीछा करना है, तो यह कथानक अधिक देर तक नहीं रहना चाहिए, अन्यथा यह उबाऊ हो जाएगा। इसका मतलब यह है कि रेडियो नाटक के कथानक में अत्यधिक संवाद होने चाहिए तथा एक-से-अधिक घटनाएँ भी होनी चाहिए।

(2) सामान्य तौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट तक होनी चाहिए। इससे अधिक की अवधि के नाटक को श्रोता सुनना पसंद नहीं करेगा। कारण यह है कि श्रोता की एकाग्रता 15 से 30 मिनट तक ही बनी रहती है। यदि रेडियो नाटक की अवधि लंबी होगी, तो श्रोता की एकाग्रता भंग हो जाएगी और उसका ध्यान भी भटक जाएगा।

(3) रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या बहुत कम होनी चाहिए। तीन-चार पात्रों का नाटक आदर्श नाटक कहा जा सकता है। यदि रेडियो नाटक में बहुत अधिक पात्र होंगे, तो श्रोताओं को पात्रों को याद रखना कठिन होगा, क्योंकि श्रोता केवल आवाज़ के माध्यम से रेडियो के पात्रों को याद रखता है।

**प्रश्न-5 रेडियो नाटकों में ध्वनि तथा संवादों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर-रेडियो एक श्रव्य माध्यम है। रेडियो रूपक रेडियो से प्रसारित किया जाता है। अतः यह भी श्रव्य विधा है। इसमें संवादों का विशेष महत्त्व रहता है। श्रोता ध्वनि तथा संवादों को सुनकर ही कथानक को समझता है और आनंद उठाता है। नाटक के पात्रों की जानकारी भी संवादों से मिलती है, जिन्हें सुनकर श्रोता अपने मन में पात्र का बिंब बना लेता है। संवादों से ही पात्रों के नाम, उनके काम तथा उनकी चारित्रिक विशेषताओं का परिचय मिलता है। संवाद भाषा पर निर्भर होते हैं। भाषा से ही पता चलता है कि नाटक संवाद शहरी हैं अथवा ग्रामीण। यही नहीं, भाषा से पात्रों की आयु तथा व्यवसाय का भी पता चल जाता है। जब पात्र एक-दूसरे को नाम लेकर बुलाते हैं, तो श्रोता को उसकी जानकारी मिल जाती है। संवाद ही कथानक को गतिशील बनाते हैं और पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन करते हैं।

जहाँ तक ध्वनि का प्रश्न है, उसके बिना रेडियो नाटक प्रभावहीन होता है। ध्वनि अनुकूल देशकाल तथा वातावरण का निर्माण करती है। आँधी, तूफान, सड़क, वर्षा, बादल, कारखाना, बाज़ार आदि की जानकारी भी ध्वनि से मिलती है। पुनः ध्वनि का सहयोग पाकर ही संवाद गतिशील होते हैं और कथानक को आगे बढ़ाते हैं। अतः संवादों के साथ-साथ ध्वनि प्रभाव का भी रेडियो नाटक में विशेष महत्त्व है।

**प्रश्न-6 रेडियो नाटक का स्वरूप क्या है ?**

उत्तर-सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में भी चरित्र होते हैं और इन्हीं संवादों के ज़रिये कहानी आगे बढ़ती है। सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में विजुअल्स अर्थात दृश्य नहीं होते हैं।

रेडियो पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है इसलिए रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा व रंगमंच के लेखन में थोड़ा भिन्न भी है और थोड़ा मुश्किल भी है।

कहानी का प्रत्येक अंश संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से संप्रेषित करना होता है। रेडियो में मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा नहीं है। साथ ही अभिनेता के चेहरे की भाव-भंगिमाएँ भी नहीं है। इसके अतरिक्त रेडियो नाटक जैसा ही है। रेडियो की कहानी का वही ढाँचा है – शुरूआत-मध्य-अंत, अर्थात परिचय-द्वंद-समाधान। यह सब प्रदर्शित करने का माध्यम सिर्फ आवाज़ है

**प्रश्न-7 रेडियो नाटक की कहानी का आवश्यक तत्त्व कौन सा है ?**

उत्तर- (i)कहानी ऐसी न हो जो पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती हो। क्योंकि रेडियो पर बहुत ज्यादा एक्शन सुनाना उबाऊ हो सकता है।

(ii) आमतौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 मिनट से 30 मिनट होती है। क्योंकि श्रव्य नाटक या वक्ता जैसे कार्यक्रमों के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15 से 30 मिनट ही होती है, इससे ज़्यादा नहीं।

(iii)कहानी ऐसी न हो जो पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती हो। क्योंकि रेडियो पर बहुत ज्यादा एक्शन सुनाना उबाऊ हो सकता है।

(iv)रेडियो पर निश्चित समय पर निश्चित कार्यक्रम आते हैं, इसलिए उनकी अवधि भी निश्चित होती है- 15 मिनट, 30 मिनट, 45 मिनट, 60 मिनट आदि समय।

(v)अवधि सीमित होने के परिणाम स्वरूप पात्रों की संख्या भी सीमित हो जाती है।

**प्रश्न-8 रेडियो को मनोरंजन का सबसे सस्ता और सुलभ साधन क्यों माना गया है?**

उत्तर-रेडियो एक छोटा यंत्र/मशीन है जिसे आप आसानी से कहीं भी ले जा सकते हैं एवं इसका उपयोग कर सकते हैं । पहले भारत का आम आदमी रेडियो के माध्यम से ही देश-विदेश की घटनाओं को जान पाता था, कृषि से जुड़ी विभिन्न जानकारियों को प्राप्त कर पाता था। अत: रेडियो भारत की कृषि प्रधान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए मनोरंजन का बहुत ही सस्ता एवं लोकप्रिय साधन था।

**प्रश्न-9 'कैप्टिव ऑडियंस' किसे कहते हैं ?**

उत्तर-सिनेमा या नाटक में दर्शक अपने घरों से बाहर निकलकर किसी अन्य सार्वजनिक स्थान पर एकत्रित होते हैं और इन आयोजनों के लिए प्रयास करते हैं। ये सभी लोग अनजान होते हुए भी एक समूह का हिस्सा बनकर एक साथ सिनेमा या नाटक देखते हैं। ये एक समय विशेष के लिए किसी एक प्रेक्षागृह में एक साथ बैठते हैं अर्थात् एक स्थान पर क़ैद किए गए होते हैं। इन्हीं कैद किए हुए दर्शकों को अंग्रेजी में 'कैप्टिव ऑडियंस' कहते हैं।

**प्रश्न-10 रेडियो नाटक के लिए संवाद लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।**

उत्तर-रेडियो नाटक एक श्रव्य माध्यम है। श्रव्य माध्यम में दृश्यों का अभाव होता है। अत: श्रव्य माध्यम होने के कारण रेडियो नाटक में सबकुछ संवादों के माध्यम से सम्पन्न होता है; इसलिए सभी पात्रों/ चरित्रों को अपने संवादों में एक-दूसरे को नाम से संबोधित किया जाना चाहिए। ऐसा करने से श्रोता रेडियो नाटक के संवादों के साथ रिश्ता कायम करते हुए नाटक का भरपूर रसास्वादन कर पाएगा।

# पाठ -13 नए एवं अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन

**प्रश्न 1: अप्रत्याशित लेखन से क्या तात्पर्य है?**

उत्तर: अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है दूसरे शब्दों में ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा भी न की हो उसपर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।

**प्रश्न 2: परंपरागत निबंध और अप्रत्याशित विषयों में क्या अंतर है?**

उत्तर: पारंपरिक विषय वो विषय होते हैं जो किसी मुद्दे, विचार, घटना आदि से जुड़ें होते हैं और अधिकतर सामाजिक और राजनीतिक विषय होते हैं ।इसमें आप अपनी व्यक्तिगत राय को उतनी प्राथमिकता न देकर सामूहिक विचार पर ज़ोर देते हैं जबकि अप्रत्याशित विषय पर लेखन में आपके अपने निजी विचार होते हैं। अप्रत्याशित लेखन में विषयों की संख्या परंपरागत लेखन की तुलना में अपरिमित होती हैं।

**प्रश्न 3: रटंत अथवा कुटेव को बुरी लत क्यों कहा गया है?**

उत्तर: रटंत को बुरी लत इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस विद्यार्थी अथवा व्यक्ति को यह लत लग जाती है, उसके भावों की मौलिकता खत्म हो जाती है। इसके साथ-साथ उसकी चिंतन शक्ति धीरे-धीरे क्षीण हो जाती है और वह किसी विषय को अपने तरीके से सोचने की क्षमता खो देता है। वह सदैव दूसरों के लिखे पर आश्रित हो जाता है। उसे अपनी बुद्धि तथा चिंतन शक्ति पर विश्वास नहीं रहता ।

**प्रश्न 4: नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना चाहिए ?**

उत्तर: नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

(i) जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए।

(ii) विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

(iii) विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए।

(iv) विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए।

(v) अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग करना चाहिए।

**प्रश्न 5: नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में क्या-क्या बाधाएँ आती हैं ?**

उत्तर-नए अथवा अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में अनेक बाधाएँ आती हैं जो इस प्रकार है-

**(i)** सामान्य रूप से लेखक आत्मनिर्भर होकर अपने विचारों को लिखित रूप देने का अभ्यास नहीं करता।

(ii) लेखक में मौलिक प्रयास तथा अभ्यास करने की प्रवृत्ति का अभाव होता है।

(iii) लेखक के पास विषय से संबंधित सामग्री और तथ्यों का अभाव होता है।

(iv) लेखक की चिंतन शक्ति मंद पड़ जाती है।

(v) लेखक के बौद्धिक विकास के अभाव में विचारों की कमी हो जाती है।

(vi) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन करते समय शब्दकोश की कमी हो जाती है।

**प्रश्न 6: विचारों को लेख की शक्ल देने में क्या कठिनाई आती है?**

उत्तर: विचारों को लेख की शक्ल देने में सबसे बड़ी कठिनाई यह आती है कि लोग आत्मनिर्भर होकर लिखित अभिव्यक्ति का अभ्यास नहीं करते हैं।अभ्यास के हर मौके को हम रटंत पर निर्भर होकर गँवा बैठते हैं। जिन विचारों को कह डालना हमारे लिए कठिन नहीं होता उसे लिख डालना एक चुनौती की तरह लगने लगता है।

**प्रश्न 7: लेखन यांत्रिक हस्तकौशल क्यों नहीं है?**

उत्तर: लेखन यांत्रिक हस्तकौशल इसलिए नहीं है क्योंकि लेखन का तात्पर्य है भाषा के सहारे किसी चीज़ पर विचार करने और उस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ सुसंगठित रूप में अभिव्यक्त करना है।

**प्रश्न 8: विचार करके अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया किन विषयों पर घटित नहीं हो पाती है और क्यों?**

उत्तर :विचार करने की प्रक्रिया निबंध के चिरपरिचित विषयों के साथ इसलिए घटित नहीं हो पाती है क्योंकि ऐसे विषयों पर पहले से ही तैयार सामग्री उपलब्ध रहती है और हम उसी पर निर्भर हो जाते हैं।

**प्रश्न 9: तैयारशुदा सामग्री का प्रयोग करने की आदत से क्या हानि है ?**

उत्तर :लेखन में तैयारशुदा सामग्री का प्रयोग करने से यह हानि है कि हम इन सामग्रियों पर पूर्ण रूप से निर्भर हो जाते हैं। इससे मौलिक प्रयास एवं अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास नहीं हो पाता है।

**प्रश्न10: लेखन शुरू करने से पूर्व क्या करना चाहिए?**

उत्तर :लेखन शुरू करने से पूर्व दो-तीन मिनट रुककर यह तय कर लेना चाहिए कि हम उसमें किस कोण से उभरने वाले विचारों को विस्तार दे सकते हैं। इसके बाद अच्छी शुरुआत पर विचार करना चाहिए।

**प्रश्न 11:लेखन का अक्षम्य दोष किसे माना जाता है ?**

उत्तर :लेखन का अक्षम्य दोष उस बात को माना जाता है जब लेखक की ही दो बातों का आपस में तालमेल न हो और वे एक-दूसरे का खंडन करती हुई प्रतीत होती है।

**प्रश्न 12:अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं' शैली पर प्रतिबंध क्यों नहीं होता है?**

उत्तर :अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं शैली' पर इसलिए प्रतिबंध नहीं होता है क्योंकि इससे लेख में व्यक्त विचारों में आत्मनिष्ठता और लेखक के व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक मिलती है।

## कुछ नए एवं अप्रत्याशित लेखन के उदाहरण

### (06 अंक वाले प्रश्नोत्तर )

### इम्तिहान का दिन

बड़े-बड़े भी कांपते हैं इम्तिहान के नाम से। इम्तिहान छोटों का हो या बड़ों का, पर डराता है सभी को। पिछले साल जब दसवीं की बोर्ड परीक्षा थी तब सारा वर्ष स्कूल में हमें बोर्ड परीक्षा के नाम से डराया गया था और घर में भी इसी नाम से धमकाया गया था। मन ही मन हम इसके नाम से भी डरते थे कि पता नहीं इस बार इम्तिहान में क्या होगा।पूरे वर्ष अच्छी तरह पढ़ाई की थी, बार-बार लिख लिखकर ध्यान दे-दे कर तैयारी की थी पर इम्तिहान के नाम से डर लगता था। जिस दिन इम्तिहान का दिन था, उससे पहली रात मुझे तो बिल्कुल नींद नहीं आई। पहला पेपर हिंदी का था और विषय पर मेरी अच्छी पकड़ थी पर 'इम्तिहान का भूत सिर पर इस प्रकार सवार था कि नीचे गिरने का नाम ही नहीं लेता था। मैं सुबह स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया। स्कूल बस में सवार हो गया तो हर रोज हल्ला करने वाले साथियों के हाथों में पकड़ी किताबें और उनकी जमी हुई आंखो ने मुझे और अधिक डरा दिया। सबके चेहरे पर खतरा-सा छाया था। खिलखिलाने वाले चेहरे आज सहमे हुए थे। मैंने भी मन ही मन अपने पाठों को दोहराना चाहा पर मुझे तो कुछ याद ही नहीं। सब कुछ भूलता जा रहा था। मैंने भी अपनी किताब खोली।डरते – डरते पाठ दोहराया । खैर, स्कूल पहुंचकर अपनी जगह पर बैठा, प्रश्नपत्र मिला । पत्र आसान लगा। ठीक समय पर पूरा पत्र हो गया। जब बाहर निकला तो सभी प्रसन्न थे पर साथ में चिंता आरंभ हो गई अगले पेपर की। अगला पेपर गणित का था। चाहे दो छुट्टियां हों, पर ऐसा लगता है कि ये तो बहुत कम हैं। वह कागज भी बीता पर चिंता समाप्त नहीं हुई। दिन बितते गए सभी पेपर खत्म होते गए पर ये सारे दिन बहुत व्यस्त गुजरे। इन दिनों न तो भूख लग रही थी और न खेलने की इच्छा ही हो रही थी। इन दिनों न तो मैं अपने किसी दोस्त के घर गया और न ही मेरे किसी दोस्त को मेरी सुध आई। इम्तिहान के दिन बड़े तनावपूर्ण थे।

## घर से विद्यालय का सफर

मैं प्रतिदिन घर से विद्यालय का सफर तय करता हूँ। यह सफर मैं पैदल ही तय करता हूँ। मेरा विद्यालय ठीक आठ से प्रारंभ हो जाता है। मेरा विद्यालय घर से दो किलोमीटर दूर है। इस दूरी को मैं बीस मिनट में तय कर लेता हूँ। मैं प्रातः ठीक साढ़े सात बजे घर से विद्यालय के लिए निकलता हूँ। मेरे साथ मेरे दो मित्र भी होते हैं। हम तीनों व्यक्ति पैदल चलकर विद्यालय जाना पसंद करते हैं। पैदल चलने का अपना ही आनंद है। इसका दोहरा लाभ है-एक, हमारी किसी वाहन पर निर्भरता नहीं रहती। दूसरा, हमारी प्रातः कालीन सैर भी सम्पन्न हो जाती है।

हम तीनों मित्र बातचीत करते हुए इस सफर को पूरा करते हैं। हमारे इस सफर में कहीं कोई बाधा नहीं आती। प्रात:काल हमें प्रकृति – सौंदर्य को निहारने और आनंद उठाने का पूरा-पूरा अवसर मिलता है। इस समय पक्षियों की चहचहाट बड़ी भली प्रतीत होती है। इस वातावरण को देखकर मैं प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत की यह कविता गुनगुनाने लगता हूँ :

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि। तूने कैसे पहचाना?

कहाँ-कहाँ हे बाल विहंगिनि ! पाया, तूने यह गाना ?

कूक उठी सहसा, तरूवासिनी गा तू स्वागत का गाना।

हमारे सफ़र के मध्य में एक बड़ा सा पार्क आता है। हम देखते हैं कि पार्क में अनेक व्यक्ति व्यायाम तथा यौगिक क्रियाएँ कर रहे होते हैं। रास्ते में एक हलवाई की दुकान भी आती है। इस पर प्रातः कालीन नाश्ते के लिए जलेबियाँ – कचौड़ियाँ बनाई जा रही होती हैं। पूरे रास्ते में चहल-पहल बनी रहती है। लोग समाचार पत्र पढ़ते हुए भी दिखाई देते हैं। सड़क पर स्कूलों की पीली बसें जा रही होती हैं। यह पूरा दृश्य बहुत ही मनोरम होता है। हमारा सफर कब बीत जाता है, कुछ पता ही नहीं चलता। हम ठीक 7.40 पर स्कूल पहुँच जाते हैं। यह सफ़र आनंदप्रद होता है।

## अगर मैं फ़िल्म बनाता

आज की चमक-दमक के वातावरण में फिल्म बनाना और फिल्म में काम करना सभी को आकर्षित करता है। मैं भी एक फिल्म बनाने का इरादा रखता हूँ। काश! मुझे फिल्म बनाने का अवसर मिल पाता। मैं इस तथ्य से भली-भाँति अवगत हूँ कि फिल्म बनाना इतना आसान काम नहीं है जितना लोग सोचते है। फिल्म बनाना बड़ा टेढ़ा और श्रम – साध्य कार्य है। फिल्म बनाने के लिए अनेक प्रकार की व्यवस्थाएँ करनी पड़ती हैं- कहानी का चुनाव करना पड़ता है, धन की व्यवस्था करनी पड़ती है, कलाकारों का चुनाव करना पड़ता है, लोकेशन ढूँढनी पड़ती है, सेट लगाने पड़ते है, पब्लिसिटी करनी पड़ती है। इन कामों में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस सारी स्थिति को मैं भली प्रकार समझता हूँ और इनका सामना करने को तैयार भी हूँ । मेरे मन में एक सार्थक फिल्म बनाने की इच्छा काफी समय से है। इसका प्लॉट भी मेरे दिमाग़ में घूमता रहता है।

मुझे काल्पनिक विषयों पर फिल्म बनाना कतई पसंद नहीं है। इन दिनों राष्ट्र के सम्मुख अनेक ज्वलंत मुद्दे हैं गरीबी है, बेरोजगारी है, शिक्षा की कमी है, नारी सुरक्षा में चूक है, बलात्कार की घटनाएँ बढ़ रही है, अराजकता की स्थिति है। मैं एक ऐसी फिल्म बनाता जिसमें राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया गया हो। यदि मैं फिल्म बनाता तो क्या-क्या काम करता? इसकी स्पष्ट रूप-रेखा मेरे मन-मस्तिक में है। मैं एक सशक्त पटकथा तैयार करता। लटके-झटके वाली फिल्म मुझे पसंद नहीं है। मेरी फिल्म का संदेश स्पष्ट होता। मैं अपनी फिल्म में नए कलाकारों को स्थान देता। इसके दो लाभ होते – एक तो उनके पास पर्याप्त समय होता। अतः शूटिंग निर्धारित समय में पूरी हो जाती। खर्च भी कम आता। मैं अपनी फिल्म में संगीत को स्थान तो देता, पर यह चालू किस्म का संगीत न होकर साहित्यिक, उच्च-स्तरीय होता। यह संगीत प्रेरणा देने वाला होता। मैं अपनी फिल्म को केवल दो महीने की शूटिंग में पूरा कर लेता। मैं अपनी फिल्म का निर्देशन भी स्वयं करता। इसे अपनी मनमर्जी के मुताबिक बनाता। काश ! मुझे फिल्म बनाने का अवसर मिलता !

## प्रकृति की गोद में जीवन के शाश्वत संदेश : एक अनुभव

मैं पहली बार हिमालय की गोद में, पहाड़ियों के सुरम्य आँचल में बसे एक गाँव की छटा देखने गया। मौन तपस्वी से खड़े ध्यानस्थ पर्वत-शिखर स्थिरता, दृढ़ता और अटल निष्ठा के भाव जगा रहे थे। मैंने हिमाच्छादित शिखरों पर झिलमिलाती स्वर्णिम सूर्य की रश्मियों का दर्शन प्रथम बार किया था। चोटी से नीचे उतरती धूप के साथ जैसे पहाड़ अँगड़ाई ले रहे हों, पूरी घाटी के बीच आलोकित हो रहा प्रकाश तथा पक्षियों का कलरव नए जीवन की चेतनता का संचार कर रहे थे। रास्ते में झरने और निर्मल जल धाराओं से होकर घाटी की चढ़ाई का आरोहरण कर रहा था। राह में पवन के झोंके, पक्षियों की चहचहाहट के बीच प्रकृति के रहस्यमय लोक में मैं विचरण करता रहा।

पवन के झोंकों में झूलते वृक्ष व पौधे हमें मस्ती से जीने का सबक सिखाते हैं। हिमालय का दर्शन तो साक्षात् शिव-शक्ति का विग्रह प्रतीत होता है। मैं उसके सान्निध्य में ध्यानस्थ होकर अपने अंतस की दिव्यता के भाव को प्रगाढ़ता से अनुभव कर रहा था। इस धारणा के साथ मैं ध्यान की गहराइयों में उतरता और अपने दिव्य स्वरूप की झलक पा रहा था।

यहाँ मुझे अनुभव हुआ कि प्रकृति के माध्यम से हम स्वयं परमात्मा को देख रहे हैं। हम जितना प्रकृति से जुड़ते हैं, उतना ही हम उस दिव्यता से भी जुड़ते हैं, जो वास्तव में हमारा मूल स्वरूप है। यहाँ वृक्ष मुझे मौन विषपायी शिव के समान प्रतीत हुए, जो स्वयं कार्बन-डाइऑक्साइड पीकर प्राणदायी ऑक्सीजन परिवेश में सतत छोड़ते रहते हैं। फलों से लदे वृक्ष मुझे विनीत जीवन का संदेश देते ऐसे प्रतीत हुए जैसे गुणों से लदा व्यक्ति विनम्र हो जाता है। घाटियाँ हमें जीवन के उतार-चढ़ाव भरे शाश्वत स्वरूप की याद दिलाती हैं, जहाँ राह अभी नीचे खाई की ओर जा रही है, तो अगले पल खाई से ऊपर शिखर की ओर बढ़ रही है। समय पर उदय-अस्त होते सूर्यदेव जहाँ हमें नियमितता – कर्तव्यपालन का संदेश देते हैं, वहीं दिन-रात के रूप में जीवन के विरोधाभासी स्वरूप के बीच जीवन का शाश्वत परिवर्तन चक्र लयबद्ध दिखाई देता है। यहाँ प्रकृति की नीरव गोद में मैंने अपने सोए संबंध पाए। प्रकृति के मध्य बिताए ये पल मेरे अंदर ऊर्जा का संचार करते रहे।

## प्रकृति से दूर होता हमारा जीवन

जीवन अत्यंत सुंदर और आकर्षक है। दुर्भाग्य से इस समय मनुष्यों के भीतर जीवन के सौंदर्य और आकर्षण को परखने व समझने की क्षमता में निरंतर गिरावट आ रही है। जिसके बारे में कभी सोचा भी नहीं गया था, आज वही दुर्गुण मनुष्यों पर भारी पड़ रहा है। दरअसल मनुष्य प्रकृति का अंश है, लेकिन प्रकृति के दो प्रमुख जीवनदायी तत्व वायु और जल निरंतर प्रदूषित हो रहे हैं। जंगल लगातार कम हो रहे हैं। गगनचुंबी इमारतें आसमान तक मनुष्य की नजरों को पहुँचने नहीं देतीं।

कुल मिलाकर मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। वर्षों पूर्व यदि कोई मनुष्य सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं की पीड़ाओं से गुजरता भी था तो उसे एकांत में प्रकृति का सहारा मिलता था। प्रकृति से जीवन के प्रति लगन बढ़ाने की आत्मप्रेरणा मिलती थी। वर्तमान में समाज, परिवार, शासन-प्रशासन और प्रकृति सभी व्यक्ति के लिए प्रतिकूल हो चुके हैं। अवसाद, तनाव, मनोभ्रम, मतिभ्रम, शारीरिक-मानसिक व्याधियाँ और सोचने-समझने की शक्ति के शून्य हो जाने जैसे रोग मनुष्य को बुरी तरह जकड़ चुके हैं। इन परिस्थितियों में कोई मनुष्य अपनी संवेदना को कैसे बनाए रखे, यह महत्त्वपूर्ण है।

संवेदना में अंतराल उत्पन्न होते ही मनुष्य की अंतर्दृष्टि क्षीण होने लगती है। मनुष्य का व्यवहार और आचरण असामान्य होने लगता है ऐसे में मनुष्य परिस्थिति जन्य दुर्गुणों और दुर्गतियों के वश में हो जाता है। उसका आत्मचिंतन नगण्य हो जाता है। उसकी आत्मिक चेतना अदृश्य हो जाती है। वह मौलिक विचारों और अनुभूतियों से रहित हो सर्वथा विध्वंसकारी गतिविधियों का सहज अंग बनने लगता है। आज चहुँ ओर देखने पर अधिसंख्य मनुष्य विध्वंसकारक गतिविधियों के ही अंग बने प्रतीत होते हैं। ऐसे में जीवन से लगाव रखने वाले, जीवन-सौंदर्य के के बोध से रंगानुभूत, जीवन से स्नेह रख उसे कोमलता से सहेजने वाले और प्रति क्षण जीवन के उदात्त भाव से संचित संचित रहने वाले मनुष्य संशयग्रस्त हैं।

# मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना

यों तो मेरे जीवन में प्रायः घटनाएँ घटित होती रहती हैं, पर कुछ घटनाएँ ऐसी होती हैं जो अविस्मरणीय बनकर रह जाती हैं। इनमें कुछ घटनाएँ सुखद होती हैं तो कुछ दुःखद। मैं दुःखद घटना सुनाकर आपको दुःखी नहीं करना चाहूँगा। अतः अपने जीवन की एक सुखद घटना बताता हूँ। यह घटना मेरे मानस पटल पर सदैव – सदैव के लिए अंकित हो गई है।

गंगा नदी में की गई नौका विहार की घटना मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना बनकर रह गई है। हम चार मित्र गंगा तट पर पहुँचे। शरद् पूर्णिमा का अवसर था। चारों ओर शुभ चाँदनी की छटा बिखरी हुई थी। मित्रों ने नौका विहार की योजना बनाई। फिर क्या था गंगा नदी के किनारे बँधी नावों से एक नौका किराए पर ली। उस समय की गंगा को देखकर मुझे पंत जी की ये काव्य पंक्तियाँ स्मरण हो आईं :

"सैकत शय्या पर दुग्ध धवल तन्वंगी गंगा

लेटी है श्रांत क्लांत निश्चल।"

नाविक ने हर-हर गंगे कहकर नाव खोल दी। हम नौका में सवार हो गए। वह कुशल नर्तकी के समान ठुमके लगाती हुई धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी। ऐसे लग रहा था कि नौका हँसिनी के समान तैर रही है। शुभ्र ज्योत्स्ना बिखरी हुई थी, पवन अठखेलियाँ करता जान पड़ रहा था। वातावरण शांत और स्निग्ध था। मन में गीत उमड़-घुमड़ रहे थे। मित्रों के आग्रह पर गीतों का सिलसिला शुरू हो गया। नौका मंथर गति से तैरती आगे बढ़ रही थी।

पतवार घुमा,

नौका घूमी विपरीत धार

डाँडों के चल करतल पसार, भर-भर कर मुक्ताफल फेन- स्फार,

बिखराती जल में तार- हार।

मन खुशियों से उछल रहा था। संगीत की मधुर ध्वनि कानों को भली प्रतीत हो रही थी। नाविक भी मस्ती के मूड में आ गया था। उसके हाथ की पतवार शीघ्रता से चल रही थी। हम लोग प्रसन्न मुद्रा में आकाश की ओर निहार रहे थे। हमारे देखते-देखते एक छोटी-सी बदली आकाश पर छा गईं। कालिमा गहराती जा रही थी। हमने विचार किया कि कहीं बारिश न होने लगे। हमने मल्लाह से शीघ्रता करने को कहा। तभी वर्षा की हल्की-हल्की बूँदें गिरने लगीं। मल्लाह तेज गति से चप्पू चला रहा था। बीच-बीच में बिजली चमक जाती थी। गंगा जल बीच-बीच में गोलाकार होकर भँवर आने की सूचना दे रहा था। कुछ ही क्षणों में हमारी नाव किनारे पर आ लगी। हमने नाव से कूदकर निकट के एक मंदिर में शरण ली। मल्लाह भी हमारे साथ था क्योंकि उसे अपना किराया लेना था। हम एक रिक्शे में बैठकर हॉस्टल की ओर लौट आए। उस समय सारा क्षेत्र निद्रा देवी की गोद में समा चुका था। चौकीदार ने हमें बड़ी खुशामद करवाकर अंदर आने दिया। उसने मुख्य द्वार खोला तो हम अंदर जा सके। यह घटना मुझे सदैव याद रहेगी।

# आदर्श प्रश्न पत्र - 1

**विषय- हिन्दी (आधार) – 302** **कक्षा - बारहवीं**

**निर्धारित समय : 3 घंटे** **अधिकतम अंक - 80 अंक**

==================================================

**सामान्य निर्देश**:-

- **निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए -**
- **इस प्रश्न पत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं |**
- **खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं|**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं | प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं|**
- **दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है |**
- **यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए |**

## खंड- अ (वस्तुपरक प्रश्न)

### अपठित बोध

**प्रश्न 1 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए – 10 x 1 =10**

मेरे विचार से सफलता प्राप्त करने के लिए जिन गुणों या वृत्तियों का होना आवश्यक है वे हैं – परिश्रम / कर्म , प्रसन्नता, प्रेम व पवित्रता । हम इनमें से सर्वप्रथम वृत्ति अर्थात काम करने की लगन या परिश्रम को लेते हैं , कहा गया है कि काम ही भगवान की भक्ति है इसका अभिप्राय यह है कि जब हम काम में लीन होतें है तो अपने आस –पास की सभी वस्तुओं के बारे में भूल जातें हैं, तभी काम में हमारी लगन के कारण हमें सफलता प्राप्त होती है। यह भी आवश्यक है कि परिश्रम या काम नि:स्वार्थ भाव से अर्थात बिना फल की प्राप्ति की इच्छा से किया जाना चाहिए ।

गीता का सर्वप्रसिद्ध श्लोक "कर्मण्येवाधिकारस्तु मा फलेषु कदाचन" इसी सत्य का द्योतक है। हम काम अथक व निर्बाध भाव से इस प्रकार करें, जिस प्रकार सरिता या नदी हर मौसम में बिना आराम किए अपने मार्ग के पत्थरों को काटती हुई चली जाती है। सूर्य भी फल की इच्छा के बगैर हर समय अपना प्रकाश फैलाता रहता है। हमें भी मन सदैव शांत रखना चाहिए। काम को ही आराम समझते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना ही सफलता का पहला रहस्य है ।

दूसरा साधन है –प्रसन्नता । जीवन में संघर्ष , बाधाएँ आती रहती हैं, परंतु धैर्यवान व्यक्ति हमेशा प्रसन्न रहता है । हमें हर समय प्रसन्न , मुस्कुराते हुए रहने की आदत डालनी चाहिए। प्रभु पर अटूट विश्वास रखते हुए बिना किसी भय ,चिंता या दु:ख के अपने काम में प्रसन्नतापूर्वक जुटे रहना तथा अपने मस्तिष्क को सदैव शांत रखना ही प्रसन्न रहने की कुंजी है। प्रसन्नता को कठिनाइयों या दु:खों की बेदी पर बलिदान करना आत्मघात के समान है।

**i) परिश्रम का क्या अर्थ है ?**

क- काम करने का तरीका
ख- कार्य करने की लगन
ग- कार्य को निर्धारित करना
घ- कार्य की योजना बनाना

**ii) भक्ति की क्या विशेषता बताई गई है ?**

क- काम में हमारी लगन के कारण हमें सफलता प्राप्त होती है ।
ख- नि:स्वार्थ भाव से कार्य करना
ग- मन सदैव शांत रखना
घ- काम में लीन होना

**iii) "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" से क्या तात्पर्य है ?**

क-लाभ को ध्यान में रखकर कार्य करना

ख-लाभ का ध्यान किए बिना कार्य करना

ग-बिना लाभ के कार्य नहीं करना करना

घ-इनमें से कोई नहीं

**iv) सफलता प्राप्त करने के लिए कौन से गुण आवश्यक हैं?**

क- परिश्रम

ख- प्रसन्नता

ग- पवित्रता

घ- सभी|

**v) नदी और सूर्य को देखकर हमें क्या शिक्षा मिलती है?**

क-सदैव आगे बढ्ने की

ख-परिश्रम करने की

ग-निस्वार्थ भाव से मेहनत करने की

घ- प्रसन्न रहने की

**vi) कार्य करने का सही तरीका क्या बताया गया है?**

क- मुस्कराते रहने की आदत डालनी चाहिए।

ख- प्रभु पर अटूट विश्वास रखते हुए बिना किसी भय ,चिंता या दु:ख के अपने काम करना

ग- हमें हर समय प्रसन्न रहना चाहिए

घ- हमें भी मन सदैव शांत रखना चाहिए।

**vii) धैर्यवान व्यक्ति की क्या विशेषता बताई गई है ?**

क-निर्वाध भाव से कार्य करने की

ख-संघर्षशील

ग-प्रसन्न रहना

घ-चिंता या दु:ख में रहना

**viii आत्मघात के समान किसे माना गया है?**

क- मुस्कुराते हुए रहने की आदत

ख- खुशियों को मुसीबतों के कारण खत्म करना

ग- लाभ को ध्यान में रखकर कार्य करना

घ- काम को ही आराम समझते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना

**ix नि:स्वार्थ शब्द का अर्थ निम्न में से है ?**

क-निम्न स्वार्थ

ख-स्वार्थपूर्ण

ग-बिना स्वार्थ के

घ-बिना कार्य के

**x निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**

कथन i परिश्रम या काम नि:स्वार्थ भाव से अर्थात बिना फल की प्राप्ति की इच्छा से किया जाना चाहिए|

कथन ii काम में हमारी लगन के आधार पर सफलता प्राप्त नहीं होती है।

कथन iii प्रभु पर अटूट विश्वास रखते हुए हमें आराम करना चाहिए|

कथन iv प्रसन्नता को कठिनाइयों या दु:खों की बेदी पर बलिदान करना आत्मघात के सामान है|

गद्यांश के अनुसार कौन सा कथन सही है

क- केवल कथन एक सही है
ख- केवल कथन दो सही है
ग- केवल कथन दो और तीन सही है
घ- केवल कथन एक और चार सही है

**प्रश्न 2 दिए गए पद्यांश पर आधारित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए – 5 x 1 =5**

मैं कब कहता हूँ, जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने ,
मैं कब कहता हूँ जीवन नन्दन कानन का फूल बने?
काँटा कठोर है, तीखा है, इसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घट कर प्रांतर का ओछा फूल बने।
मैं कब कहता हूँ, मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले
मैं कब कहता हूँ प्यार करू तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले।
मैं कब कहता हूँ विजय करू मेरा ऊँचा प्रासाद बने
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुंधली- सी याद बने।
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे
नेतृत्व न छिन जाए मेरा क्यों इसकी हो परवाह मुझे ।
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने
फिर उसी धूली का कण-कण भी मेरा गति रोधक शूल बने।

**i कवि संसार के विषय में क्या चाहता है ?**

क- संसार उसकी गति से चले
ख- संसार एक गति से चले
ग- संसार अपनी गति से चले
घ- संसार और उसकी गति में कोई समानता नहीं हो

**ii इस कविता में कवि चाहता कि वह प्रांतर का ओछा फूल बने , यह कथन**

क-सत्य है
ख-असत्य है
ग-आंशिक सत्य है
घ- आंशिक असत्य है

**iii निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए |**

कथन A :कवि चाहता है कि उसकी मिट्टी जनपद की धूल बने |
कारण R: कवि लोगों की श्रद्धा का पात्र उनकी यादों का हिस्सा बनना चाहता है |

क कथन A सही है कारण R गलत है
ख कथन A सही नहीं है कारण R सही है
ग कथन A तथा कथन R दोनों सही हैं किंतु कारण R उसकी सही व्याख्या नहीं करता|
घ कथन सही है तथा कारण और दोनों सही है कारण R कथन A की सही व्याख्या करता है|

**iv नेतृत्व छिन जाने का भय कवि को**

क-प्रभावित नहीं करता

ख-कवि को डराता है

ग-कवि विकल हो जाता है

घ-इनमें से कोई नहीं

**v कविता के अनुसार कवि किसी भी परिस्थिति के लिए**

क-सदैव तैयार है

ख-परिस्थितियों को अपने अनुकूल ढालना चाहता है

ग- कवि युद्ध से बचना चाहता है

घ- कवि अपना मार्ग प्रशस्त चाहता है

## अभिव्यक्ति और माध्यम

**प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए – 5 x 1 =5**

**i एडवोकेसी पत्रकारिता किसे कहते हैं ?**

क- खास मुद्दे या विचारधारा के पक्ष में जनमत बनाने

ख- सनसनीखेज समाचारों से संबंधित

ग- किसी विशेष क्षेत्र की विशेष जानकारी देते

घ- इनमें से कोई नहीं

**ii उल्टा पिरामिड शैली में मुख्य समाचार लिखा जाता है ।**

क-प्रारम्भ में

ख-मध्य में

ग-अंत में

घ- कहीं भी लिख सकते हैं ।

**iii गतिमान दृश्य के पीछे से आ रही आवाज क्या कहलाती है?**

क एडवोकेसी

ख वाईस ओवर

ग वांच-डाग

घ वैकल्पिक

**iv मनोरंजन के लिए लिखा जाने वाला सुव्यवस्थित आत्मनिष्ठ लेखन कहलाता है –**

क फीचर

ख पेजथ्री

ग आलेख

घ स्तंभ लेखन

**v छिपे कैमरे द्वारा रिकार्ड कर भ्रष्टाचार को उजागर करना कहलाता है**

क ब्रेकिंग न्यूज

ख स्टिंग ऑपरेशन

ग वायस ओवर

घ ये सभी

## पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2

**प्रश्न 4 निम्नलिखित काव्यांश के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए – 5 x 1=5**

दिन जल्दी- जल्दी ढलता है
हो जाए ना पथ में रात कहीं
मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी
जल्दी-जल्दी चलता है ।
बच्चे प्रत्याशा में होंगे
यह ध्यान परों में चिड़िया के भरता कितनी चंचलता है
दिन जल्दी जल्दी ढलता है

**i जल्दी-जल्दी क्या चल रहा है?**

क) दिन ख).रात ग) शाम घ) सुबह

**ii दूर क्या नहीं है?**

क) मंजिल ख) घोंसला ग) बच्चे घ) चिड़िया

**iii चिड़िया की गति के तेजी का कारण है?**

क) घर को लौट ना ख) बच्चों से मिलना
ग) भूख प्यास से व्याकुलता घ) इनमें से कोई नहीं

**iv प्रस्तुत पद्यांश के कवि हैं ?**

क) हरिवंश राय बच्चन ख) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
ग) तुलसीदास घ) फिराक गोरखपुरी

**v . दिन का पंथी जल्दी जल्दी क्यों चलता है ?**

क) दिन का पंथी ख) पथ में रात न हो जाए
ग) दिन जल्दी जल्दी ढलता है घ) पंथी थका है

**प्रश्न 5 निम्नलिखित गद्यांश के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए - 5 x 1 =5**

दोनों ही लड़के राज दरबार के भावी पहलवान घोषित हो चुके थे। अतः दोनों का भरण पोषण राज दरबार से ही हो रहा था। प्रतिदिन प्रात काल पहलवान स्वयं ढोलक बजा बजाकर दोनों से कसरत करवाता ।दोपहर में लेटे-लेटे दोनों को संसारी ज्ञान की भी शिक्षा देता -"समझे । ढोलक की आवाज़ पर पूरा ध्यान देना। हां, मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, है ढोल है समझे। ढ़ोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उतरकर सबसे पहले ढोलों को प्रणाम करना, समझे।" ऐसी ही बहुत सी बातें वह कहा करता। फिर मालिक को कैसे खुश रखा जाता है, कब कैसे व्यवहार करना चाहिए ,आदि की शिक्षा नित्य दिया करता था।

**निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए-**

**i कितने लड़के राज दरबार के भावी पहलवान घोषित किए गए थे ?**

क) दो ख) तीन ग) चार घ) पांच

**ii इन लड़कों को सांसारिक ज्ञान की शिक्षा कब दी जाती थी ?**

क) प्रातःकाल ख) दोपहर ग) शाम घ) रात्रि

**iii दंगल में उतरकर सबसे पहले प्रणाम करना ।**

क)मिट्टी को ख). गुरु को ग) ढोलक को घ) मंचासीन पदाधिकारी को

**iv इन लड़कों का भरण पोषण हो रहा था।**

क) गांव से　　ख) मालिकों से　　ग) राज-दरबार से　　घ) दंगलो से

**v .पहलवान दोनों लडकों को कसरत के साथ क्या शिक्षा देता था ?**

क) ढोलक का　　ख) तबला का　　ग) कुस्ती का　　घ) सांसारिक ज्ञान

## पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग 2

**प्रश्न 6 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए –10 x 1=10**

**i भूषण काम करता था।**

क) विज्ञापन एजेंसी में　　ख). पेपर के दफ्तर में

ग) टेलीफोन के दफ्तर में　　घ) शिक्षा कार्यालय में

**ii माँ के मर जाने के उपरांत यशोधर पंत किसके पास रहते थे ?**

क) चाची　　ख) बुआ　　ग) भाभी　　घ) दादी

**iii चंद्र दत्त तिवारी कौन थे?**

क). यशोधर पंत का भतीजा　　ख) यशोधर पंत का मित्र

ग). यशोधर पंत का ममेरा भाई　　घ). यशोधर पंत का अधीनस्थ कर्मचारी

**iv 'जूझ' कहानी के आधार पर आंनदा के चरित्र की विशेषताएँ निम्न में से नहीं है।**

क-पढ़ने की लालसा　　ख-आत्मविश्वासी एवं कर्मठ बालक

ग- झगड़ालू　　घ- वचनबद्धता

**v आनन्दा के पिता की भाँति आज भी अनेक गरीब व कामगार पिता अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते क्यों ? आपकी दृष्टि में इसका क्या कारण है ।**

क- अशिक्षित होने के कारण
ख- बच्चों के लड़ाई झगड़े के कारण
ग- स्कूल अच्छा नहीं होने से
घ- फीस ज्यादा होने के कारण

**vi यशोधर पन्त अपने गरीब सगे संबंधी की सहायता नहीं कर पाते थे क्योंकि -**

क यशोधर बाबू के पास धन का अभाव था |
ख यशोधर पन्त के रिश्तेदार सहायता लेना नहीं चाहते |
ग पंत जी की पत्नी एवं बच्चे आर्थिक रूप से मूर्खता पूर्ण कार्य मानते थे
घ डाक द्वारा पैसा समय पर नहीं पहुँच पाता |

**vii सिन्धु सभ्यता को लो-प्रोफाइल सभ्यता कहने के पीछे क्या कारण हैं?**

क- भव्यता का आडंबर नहीं झलकता
ख- टूटे-फूटे खण्डहर
ग- गरीबी के कारण
घ- सिन्धु घाटी के निवासी खेती करते थे

**viii हम सिन्धु सभ्यता को जल-संस्कृति कैसे कह सकते हैं ?**

क- सभी घरों में नलियां नहीं थी
ख- जल की अपर्याप्त व्यवस्था थी
ग- कुओं का प्रबंध नहीं था
घ- जल निकासी की उत्कृष्ट व्यवस्था

**ix सिन्धु सभ्यता की विशिष्ट पहचान क्या है?**

क- एक जैसे आकार की पक्की ईटों का प्रयोग

ख- नदी के किनारे ना होना

ग- जल निकासी की उत्कृष्ट व्यवस्था का अभाव

घ- नगर का बुरा नियोजन।

**x सिन्धु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य बोध है जो राजपोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया है?**

क- वह सबसे पुरानी सभ्यता है

ख- जल निकासी की उचित व्यवस्था थी

ग- वहाँ हथियारों और सेना के प्रमाण नहीं मिले

घ- वहाँ व्यापार के प्रमाण मिले

## खंड ब वर्णनात्मक प्रश्न

## जनसंचार और सृजनात्मक लेखन

**प्रश्न 7 निम्नलिखित दिए गए 3 विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए – 6 x 1 = 6**

क - स्कूल के पुराने दिन

ख - वर्ष 2023 में मेरी अपेक्षाएँ

ग - सोशल मीडिया का जाल

**प्रश्न 8 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए – 2 x 2 =4**

क) नाटक साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है कैसे स्पष्ट कीजिए?

अथवा

चरमोत्कर्ष से क्या अभिप्राय है? कहानी में चरमोत्कर्ष का क्या महत्त्व है ?

ख) रेडियो नाटक की प्रमुख विशेषताएँ बताइए|

अथवा

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन हमारी रचनात्मकता को बढाती है कैसे ?

**प्रश्न 9 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए - 3 x 2 =6**

क ) समाचार लेखन में छह ककारों का क्या महत्त्व है ?

ख ) विशेष रिपोर्ट किस पर आधारित होती है? इसके प्रकार कौन कौन से भेद या प्रकार हैं ?

ग ) पत्रकारीय लेखन से आप क्या समझते हैं ? पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

## पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2

**प्रश्न 10 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 3 x 2 =6**

क) नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है। उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है ? उषा कविता के आधार पर समझाइए

ख) 'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

ग) भाषा को सहूलियत से बरतना से क्या अभिप्राय है ?

**प्रश्न 11 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए – 2 x 2 =4**

क) अशनि-पात से शापित उन्नत शत –शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है ?

ख) शोक ग्रस्त माहौल में हनुमान जी के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आगमन क्यों कहा गया हैं ?

ग) कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने' के माने क्या होता है ?

**प्रश्न 12 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए- 3 x 2 = 6**

क) नीचे लिखे अंश में निहित अर्थ स्पष्ट कीजिए –

"काले मेघा दल के दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं|"

ख ) बाजारुपन से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं? अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है ?

ग ) हाय वह अवधूत आज कहाँ है ! ऐसा कह कर लेखक ने आत्मबल पर देह-बल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है , कैसे ?

**प्रश्न 13 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2 x 2 = 4**

क) जाति प्रथा को श्रम- विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं ?

ख) लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं,यही ढोल है?

ग) इन्दर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है ? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्त्व है ?

**प्रश्न 14 निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों का लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- 2 x 2 = 4**

क) कहानीकार के शिक्षित होने के संघर्ष में दत्ता जी राव देसाई के योगदान को स्पष्ट कीजिए|

ख) सिन्धु घाटी सभ्यता में कोठारों का क्या उपयोग होता था ?

ग) यशोधर बाबू को अपने बच्चों की आय समहाउ इम्प्रोपर क्यों लगती थी ?

==================================================

# आदर्श प्रश्न पत्र - 1

## अंक योजना-

सामान्य निर्देश :-

अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है |

खण्ड- 'अ' में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किए जाए |

खण्ड –'ब' में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं| वे सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं | यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिन्दुओं से भिन्न किन्तु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाए |

### खण्ड –अ वस्तुपरक प्रश्न

### अपठित बोध

**प्रश्न 1**

i ख- कार्य करने की लगन

ii घ- काम में लीन होना

iii ख- लाभ का ध्यान किए बिना कार्य करना

iv घ- सभी

v ग- निस्वार्थ भाव से मेहनत करने की

vi ख- प्रभु पर अटूट विश्वास रखते हुए बिना किसी भय ,चिंता या दु:ख के अपने काम करना

vii ग- प्रसन्न रहने की

viii ख- खुशियों को मुसीबतों के कारण खत्म करना

ix ग- बिना स्वार्थ के

x घ- केवल कथन एक और चार सही है

**प्रश्न 2**

i ग- संसार अपनी गति से चले

ii ख- असत्य है

iii क कथन A सही है कारण R गलत है

iv क-प्रभावित नहीं करता

v क-सदैव तैयार है

### अभिव्यक्ति और माध्यम

**प्रश्न 3**

i क- खास मुद्दे या विचारधारा के पक्ष में जनमत बनाने

ii क- प्रारम्भ में ।

iii ख वाईस ओवर

iv क फीचर

v ख स्टिंग ऑपरेशन

### पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2

**प्रश्न 4**

i क) दिन

ii क) मंजिल

iii ख) बच्चों से मिलना
iv क) हरिवंश राय बच्चन
v ख) पथ में रात न हो जाए

**प्रश्न 5**

i क) दो
ii ख) दोपहर
iii ग) ढोलक को
iv ग) राज-दरबार से
v घ) सांसारिक ज्ञान

## पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग 2

### खंड ब वर्णनात्मक प्रश्न

### जनसंचार और सृजनात्मक लेखन

**प्रश्न -6** 1 x 10 =10

1 क- विज्ञापन एजेंसी में
2 ख- बुआ
3 क- यशोधर पंत का भतीजा
4 ग- झगड़ालू
5 क- अशिक्षित होने के कारण
6 ग - पंत जी की पत्नी एवं बच्चे आर्थिक रूप से मुर्खता पूर्ण कार्य मानते थे|
7 क - भव्यता का आडंबर नहीं झलकता
8 घ - - जल निकासी की उत्कृष्ट व्यवस्था,
9 क - एक जैसे आकार की पक्की ईटों का प्रयोग
10 ग- वहाँ हथियारों और सेना के प्रमाण नहीं मिले

**प्रश्न 7**

आरम्भ - 1 अंक विषयवस्तु - 3 अंक प्रस्तुति – 1 अंक भाषा – 1 अंक

**प्रश्न 8**

क) नाटक और अन्य विधाओं में अंतर साहित्य की अन्य विधाएं अपनी लिखित रूप में ही निश्चित और अंतिम रूप को प्राप्त कर लेती है किन्तु नाटक लिखित रूप में एक आयामी होता है मंचन के पश्चात इसमें संपूर्णता आती है अतः साहित्य की अन्य विधाएं पढ़ने और सुनने तक की यात्रा तय करती हैं परन्तु नाटक पढने सुनने के साथ ही साथ देखने के तत्व को भी अपने में समेटे हुए हैं |

अथवा

चरमोत्कर्ष - जब कहानी पढ़ते -पढ़ते पाठक कौतूहाल जिज्ञासा की पराकाष्ठा चरम सीमा पर पहुंच जाए तब उसे कहानी का चरमोत्कर्ष या चरम सीमा चरम स्थिति कहते हैं कथानक के अनुसार कहानी चरमोत्कर्ष क्लाइमेक्स की ओर बढ़ती है कहानी का चरम उत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने और लेखक के पक्ष की ओर आने के लिए प्रेरित करें पाठक को यह भी लगे कि उसे स्वतंत्रता दी गई है और उसने जो निष्कर्ष निकाले हैं वह उसके अपने हैं।

ख ) रेडियो नाटक की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है - सिनेमा व रंगमंच की तरह रेडियो एक दृश्य माध्यम नहीं श्रव्य माध्यम है रेडियो की प्रस्तुति संवाद व ध्वनि प्रभाव के माध्यम से होती है रेडियो नाटक में एक्शन की कोई गुंजाइश नहीं होती है रेडियो नाटक की अवधि सीमित होती है इसलिए पात्रों की संख्या भी सीमित होती है पात्र संबंधी विविध जानकारी संवाद एवं संकेतों के माध्यम से उजागर होती है नाट्य आंदोलन के विकास में रेडियो नाटक की अहम भूमिका होती है।

अथवा

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन हमारी रचनात्मकता को बढ़ाती है| चिन्तन शक्ति को बढ़ाकर |सोचने की क्षमता को बढ़ाकर| भावों की मौलिकता को विकसित कर |दूसरे पर निर्भरता कम करके ।

**प्रश्न 9**

क )समाचार लेखन और छह ककार किसी भी समाचार के छह आधारभूत सवाल होते हैं जिन्हें हिन्दी में छह ककार कहा जाता है और अंग्रेजी में 6WH कहा जाता है किसी भी समाचार में इन 6 ककारों का होना सामान्यतः आवश्यक माना जाता है यह ककार निम्न है क्या अर्थात क्या घटित हुआ कब अर्थात घटना कब घटी कहाँ अर्थात घटना किस स्थान पर घटी यानी किस स्थान से संबंधित है कौन अर्थात घटना किससे संबंधित है क्यों अर्थात घटना क्यों घटी कैसे अर्थात घटना कैसे घटित हुई।

ख ) विशेष रिपोर्ट किसी घटना समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन विश्लेषण तथा व्याख्या से संबंधित होती है इसमें तथ्यों के विश्लेषण के माध्यम से उसके परिणामों प्रभावों तथा कारणों पर स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला जाता है ।

विशेष रिपोर्ट के निम्न तीन प्रकार होते हैं-

खोजी रिपोर्ट इस रिपोर्ट में रिपोर्टर उन सूचनाओं या तथ्यों को मौलिक शोध व छानबीन के माध्यम से सामने लाता है जो पहले सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं थी खोजी रिपोर्ट का प्रयोग घोटालों अनियमितताओं भ्रष्टाचार आदि को उजागर करने के लिए किया जाता है ।

इंडेक्स रिपोर्ट इस रिपोर्ट में सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तथ्यों सूचनाओं व आंकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है तथा उन पर आधारित घटनाओं को समस्याओं से संबंधित पहलुओं को सामने लाया जाता है ।

विश्लेषणात्मक रिपोर्ट इस रिपोर्ट के अंतर्गत किसी घटना या समस्या से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण व्याख्या की जाती है।

विवरणात्मक रिपोर्ट इस रिपोर्ट के अंतर्गत किसी घटना या समस्या का विस्तृत और सूक्ष्म रूप से विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है |

ग )समाचार पत्रों व समाचार के अन्य माध्यमों के पत्रकार अपने पाठको श्रोताओं तथा दर्शकों तक तथ्यों तथा सूचनाओं को पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का प्रयोग करते हैं इसे ही पत्रकारीय लेखन कहा जाता है ।

पत्रकार के प्रकार हैं

पूर्णकालिक पत्रकार -यह किसी समाचार संस्था में कार्य करने वाला नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होता है|

अंशकालिक पत्रकार - इसे स्ट्रिंगर भी कहा जाता है यह पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाला होता है।

फ्रीलांसर स्वतंत्र - पत्रकार का संबंध किसी विशेष समाचार संस्था या संगठन से नहीं होता बल्कि यह अलग-अलग अखबारों के लिए भुगतान के आधार पर लिखता है।

**प्रश्न 10**

क) नयी कविता में कोष्ठक,विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है यह नई कविता का विशेष गुण है । इस कविता में भी भोर के नभ में हल्की हल्की व्याप्त नमी के बिम्ब का सजीव वर्णन किया गया है | यह कविता में अतिरिक्त जानकारी को बताता है पाठक को सोचने का अवसर प्रदान करता है ।

ख ) कपास और बच्चों के मध्य गहरा सम्बन्ध कपास श्वेत रंग की स्वच्छ ,निर्मल और पवित्र होती है । साथ ही यह मुलायम और हलकी होती है इसी प्रकार बच्चों का बचपन भी स्वच्छ ,निर्मल ,कोमल और कल्पना लोक में उड़ान भरने वाला होता है ।अतः कवि ने दोनों की समानता दिखाई है ।

ग )भाषा को सहूलियत से बरतने का अभिप्राय है –बात को सहज रूप में प्रकट करने के लिए सहज भाषा का प्रयोग करना । अपने भावों ,विचारों ,अनुभूतियों और संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए सहज स्वाभाविक भाषा का प्रयोग करना |

**प्रश्न 11**

क) क्रांति के प्रतीक बादल जब व्रज के समान कठोर भयंकर गर्जना करते हुए मूसलधार वर्षा के साथ वज्रपात करते हैं तो बड़े –बड़े उन्नत और गर्वीले पर्वत भूमि पर गिर पड़ते हैं ।कवि यह कहना चाहता है कि क्रांति के समय बड़े –बड़े पूँजीपति (शोषक) वर्ग ही क्रांति से धराशायी हो जाते हैं ।

ख ) शोकग्रस्त वातावरण में लक्ष्मण की मृत्यु की आशंका से राम का विलाप प्रलाप में बदल जाता है । उनके प्रलाप को सुनकर समस्त वानर व्यथित हो उठते हैं । ऐसे वातावरण में हनुमान द्वारा संजीवनी लेकर अवतरित होने पर आशा और प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है । लक्ष्मण द्वारा पुनः खड़े होने पर राम सेना में वीरता का संचार हो जाता है ।

ग ) कविता के संदर्भ में ' बिन मुरझाए महकने' के माने है कि कविता का प्रभाव /असर कभी समाप्त नहीं होता सालों साल उसका असर हम पर रहता है जबकि फूल एक बार खिलने के बाद कुछ दिन बाद मुरझा जाते है ।

**प्रश्न 12**

क ) लेखक के अनुसार धन रूपी बादल खूब वर्षा करते हैं| देश में साधनों की भी कमी नहीं है| किन्तु भ्रष्टाचार के कारण आम जनता तक साधन ओर सहायता राशि नहीं पहुँचती | और गरीब व्यक्ति अभावों में ही जीवन व्यतीत करता है |

ख ) 'बाजारूपन' का तात्पर्य है –व्यक्ति का बाज़ार पर पूर्णतया निर्भर होना अथवा प्रदर्शन के लिए बाज़ार का उपयोग करना ही बाजारूपन है । बाज़ार को सार्थकता ऐसे व्यक्ति प्रदान करते हैं जो जानते हैं कि उन्हें बाज़ार से क्या लेना है ।बाज़ार की सार्थकता तभी है जब वह आवश्यकता के समय काम आए ।

ग ) यहाँ अवधूत 'गांधीजी' के लिए प्रयुक्त हुआ है । उन्होंने अपने आत्मबल से देह-बल को पराजित किया । आज आत्मबल पर देह –बल का वर्चस्व दिखाई दे रहा है । वर्तमान सभ्यता में आत्मबल के स्थान पर देह-बल के वर्चस्व में वृद्धि होने से स्थितियाँ बदल गई हैं । आज लोगों में स्वार्थ सिद्ध करने की प्रवृति व्याप्त है ।फलस्वरूप समाज में लूट-पाट,अशांति फ़ैल गई है ।

**प्रश्न 13**

क ) जातिप्रथा को श्रम विभाजन का एक रूप न मानने के पीछे डा आंबेडकर आपत्ति प्रकट करते हुए कहते है कि जातिप्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है।इस प्रकार का श्रम विभाजन जातिप्रथा एवं ऊँच - नीच को जन्म देता है। यह विभाजन मनुष्य को उसकी रूचि और क्षमता के अनुसार काम का अवसर नहीं देता। इस विभाजन के कारण मनुष्य जीवन भर एक पेशे में बंधकर रह जाता है।

ख ) लुट्टन पहलवान ने किसी गुरु से विधिवत कुश्ती के दाँव-पेंच नहीं सीखे थे ।श्यामनगर के मेले में ढोल की थापों से मार्गदर्शन पाकर उन्होंने चाँद सिंह को चित्त कर दिया ।ढोल की थापों ने उन्हें कुश्ती लड़ने की प्रेरणा दी और उसमें ऊर्जा का संचार किया । अतः जीतने के बाद उसने सबसे पहले ढोल को प्रणाम किया ।

ग ) भारत के इतिहास में गंगा का पौराणिक,धार्मिक और ऐतिहासिक महत्त्व है ।गंगा जैसी पवित्र नदी के बिना भारतवर्ष की कल्पना भी नहीं कर सकते यही कारण है कि इन्दर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती थी ।नदियों के किनारे मानव –सभ्यता फली –फूली है । भारत के बड़े –बड़े नगर तथा तीर्थ –स्थान नदियों के किनारे ही अवस्थित हैं ।यह भारतीय जीवन के आधार है ।

**प्रश्न 14**

क) कहानी कार के पिता शिक्षा के विरुद्ध थे वे अपने बेटे से खेतों पर मजदूरी करवाना चाहते थे| देसाई सरकार ने बच्चे का शिक्षा के प्रति लगाव देखकर योग्यता को परखकर उसके पिता पर उसे पढ़ाने का दबाव डाला |इस प्रकार कहानी कार की रुकी पढाई का रास्ता खुल गया |

(ख) सिन्धु घाटी सभ्यता में ऐसे कोठार पाए गए है जिनमें कर के रूप में प्राप्त अनाज जमा किया जाता था |इनमें नौ-नौ चौकियों की तीन कतारें हैं |उत्तर दिशा में एक गली है | जहाँ से बैल गाड़ियाँ आती जाती थीं|उन्हीं के माध्यम से अनाज की ढुलाई की जाती थी |

ग) अपने विवेक से उचित उत्तर दे |

*************************************************************************************

# आदर्श प्रश्न पत्र - 2

**विषय :हिन्दी (आधार)** **कक्षा 12 (2023-24 )**

**समय -3 घंटे** **अधिकतम अंक – 80**

## सामान्य निर्देश :-

**इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं। 'अ', और 'ब '।**

**खंड “अ ” में कुल 40 वैकल्पिक प्रश्नों में से 40 के ही उत्तर देने है |**

**खंड “ब ” में वर्णात्मक प्रश्नों के उत्तर देना है |**

**निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

### (खंड - अ)

**प्र.1 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए। 1x10=10** **10**

विज्ञान प्रकृति को जानने का महत्वपूर्ण साधन है। भौतिकता आज आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का स्तर निर्धारित करती है। विज्ञान केवल सत्य, अर्थ और प्रकृति के बारे में उपयोग ही नहीं बल्कि प्रकृति की खोज का एक क्रम है। विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह प्रकृति को जानने के विषय में हमें महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान देता है। व्यक्ति जिस बात पर विश्वास करता है वहीउसका ज्ञान बन जाता है। कुछ लोगों के पास अनुचित ज्ञान होता है और वह उसी ज्ञान को सत्य मानकर उसके अनुसार काम करते हैं। वैज्ञानिकता और आलोचनात्मक विचार उस समय जरूरी होते हैं जब वह विश्वसनीय ज्ञान पर आधारित हों। वैज्ञानिक और आलोचक अक्सर तर्कसंगत विचारों का प्रयोग करते हैं। तर्क हमें उचित सोचने पर प्रेरित करते हैं। कुछ लोग तर्क संगत विचारधारा नहीं रखते क्योंकि उन्होंने कभी तर्क करना जीवन में सीखा ही नहीं होता।

प्रकृति वैज्ञानिक और कवि दोनों की ही उपास्या है। दोनों ही उससे निकटतम संबंध स्थापित करने की चेष्टा करते है, किंतु दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है। वैज्ञानिक प्रकृति के बाल्य रूप का अवलोकन करता है और सत्य की खोज करता है, परंतु कवि बाह्य रूप पर मुग्ध होकर उससे भावों का तादात्म्य स्थापित करता है। वैज्ञानिक प्रकृति की जिस वस्तु का अवलोकन करता है, उसका सूक्ष्म निरीक्षण भी करता है। चंद्र को देखकर उसके मस्तिष्क में अनेक विचार उठते हैं उसका तापक्रम क्या है, कितने वर्षों में वह पूर्णतः शीतल हो जाएगा,ज्वार-भाटे पर उसका क्या प्रभाव होता है, किस प्रकार और किस गति से वह सौर मंडल में परिक्रमा करता है और किन तत्वों से उसका निर्माण हुआ है? वह अपने सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से उसको एक लोक ठहराता है और उस लोक में स्थित ज्वालामुखी पर्वतों तथा जीवनधारियों की खोज करता है। इसी प्रकार वह एक प्रफुल्लित पुष्प को देखकर उसके प्रत्येक अंग का विश्लेषण करने को तैयार हो जाता है। उसका प्रकृति-विषयक अध्ययन वस्तुगत होता है। उसकी दृष्टि में विश्लेषण और वर्ग विभाजन की प्रधानता रहती है। वह सत्य और वास्तविकता का पुजारी होता है। कवि की कविता भी प्रत्यक्षावलोकन से प्रस्फुटित होती है वह प्रकृति के साथ अपने भावों का संबंध स्थापित करता है। वह उसमें मानव चेतना का अनुभव करके उसके साथ अपनी आंतरिक भावनाओं का समन्वय करता है। वह तथ्य और भावना के संबंध पर बल देता है। उसका वस्तुवर्णन हृदय की प्रेरणा का परिणाम होता है, वैज्ञानिक की भाँति मस्तिष्क की यांत्रिक प्रक्रिया नहीं।कवियों द्वारा प्रकृति-चित्रण का एक प्रकार ऐसा भी है जिसमें प्रकृति का मानवीकरण कर लिया जाता है अर्थात प्रकृति के तत्त्वों को मानव ही मान लिया जाता है।

प्रकृति में मानवीय क्रियाओं का आरोपण किया जाता है। हिंदी में इस प्रकार का प्रकृति-चित्रण छायावादी कवियों में पाया जाता है। इस प्रकार के प्रकृति-चित्रण में प्रकृति सर्वथा गौण हो जाती है। इसमें प्राकृतिक वस्तुओं के नाम तो रहते हैं परंतु झंकृत चित्रण मानवीय भावनाओं का ही होता है। कवि लहलहाते पौधे का चित्रण न कर खुशी से झूमते हुए बच्चे का चित्रण करने लगता है |

(i) **विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि यह-** 1

(क) समग्र ज्ञान के साथ तादात्म्य स्थापित करता है

(ख) प्रकृति आधुनिक विज्ञान की उपास्या है

(ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है

(घ) आधुनिक वैज्ञानिक का स्तर निर्धारित करता है

(ii) **'वैज्ञानिक प्रकृति के बाह्य रूप का अवलोकन करते हैं यह कथन दर्शाता है कि वे** 1

(क) कवियों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ हैं

(ख) ज्वारभाटे के परिणाम से बचना चाहते हैं

(ग) वर्ग विभाजन के पक्षधर बने रहना चाहते हैं

(घ) प्रकृति से अविदूर रहने का प्रयास करते हैं

(iii) **सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से तात्पर्य है-** 1

(क) सौर मंडल को एक लोक और परलोक ठहराना

(ख) छोटी-छोटी सी बातों पर चिंता करना

(ग) बारीकी से सोचना व निरंतर देखना

(घ ) बारीकी से देखना और निरंतर सोचना

(Iv) **कौन अनवरत चिंतन करता है ?** 1

(क) सूक्ष्माचारी

(ख) विज्ञानोपासक

(ग) ध्यानविलीन योगी

(घ) अवसादग्रस्त व्यक्ति

(v) **कौन वास्तविकता का पुजारी होता है ?** 1

(क) यथार्थवादी

(ख) काव्यवादी

(ग) प्रकृतिवादी

(घ) विज्ञानवादी

(vi) **कवि की कविता किससे प्रस्फुटित होती है ?** 1

(क) विचारों के मंथन से

(ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से

(ग) भावनाओं की उहापोह से

(घ) प्रेम की तीव्र इच्छा से

(vii) **कवि के संबंध में इनमें से सही तथ्य है-** 1

(क)ज्वालामुखी के रहस्य जानता है

(ख) जीवधारियों की खोज करता है

(ग) सत्य का उपासक नहीं होता

(घ) प्रफुल्लित पुष्प का अध्ययनकर्ता

(viii) **लहलहाते पौधे का चित्रण न कर झूमते बच्चे का चित्रण करना दर्शाता है कि-** 1

(क) कवि भावावेश में विषय से भटक गए हैं

(ख) प्रकृति के तत्वों को मानव माना है

(ग) कवि वैज्ञानिक विचारधारा के पक्ष में है

(घ) कवि विकास स्तर पर ही है

(ix) **प्रकृति का मानवीकरण दर्शाता है कि-** 1

(क) कल्पना प्रधान व भावोन्मेशयुक्त कविता रची जा रही है

(ख) मानवीकरणअलंकार का दुरुपयोग हो रहा है

(ग) प्रकृति व मानव के सामंजस्य से उदित दीप्ति फैल रही है

(घ) मानव द्वारा प्रकृति का संरक्षण हो रहा है

(x) **उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है** 1

(क) कवि की सोच और वैज्ञानिकता

(ख) प्रकृति के उपासक-कवि और वैज्ञानिक

(गा वैज्ञानिक उन्नति और काव्य जगत

(घ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण-अतुलनीय

**प्र.2 निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए सही विकल्प का चयन कीजिए। 1x5=5** 5

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बड़ी है, निर्मम है,
वहां हवा में उसे
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूं तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहां कटोरी में भरा जल गटकना है।
बाहर दाने का टोटा है
यहां चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिये का डर है यहां निद्र्वंद्व कंठ स्वर है।
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी,
हर सू जो़र लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

(i) **पिंजरे के बाहर की धरती बड़ी है फिर भी उसे निर्मम क्यों कहा गया है?** 1

(क) चिड़िया के लिए चारा - पानी ना होने के कारण।

(ख) बहेलिया का डर होने के कारण।

(ग ) कमज़ोर द्वारा अपने जीवन के लिए संघर्ष किए जाने के कारण।

(घ ) उपरोक्त सभी

(ii) **कवि ने चिड़िया को संसार की किस वास्तविकता से परिचित कराना चाहा है?** 1

(क) जीवन बचाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

(ख) बाहर भोजन - पानी आसानी से नहीं मिलता है।

(ग ) वह निश्चित होकर डाली पर फुदक सकती है।

(घ ) क और ख दोनों

(iii) **'यहां निर्द्वंद्व कंठ स्वर है' कहकर कवि ने किस ओर संकेत किया है?** 1

(क) कवि के पास की दुनिया की ओर।

(ख) हरे-भरे जंगलों की ओर।

(ग ) बंद पिंजरे की ओर।

(घ ) पिंजरे के बाद की दुनिया की ओर।

(iv) **चिड़िया की अभिलाषा मुक्ति पाना है, क्यों?** 1

(क) पिंजरे में चारा पानी ना मिलने के कारण

(ख) जंगल के दर्शन करने की इच्छा होने के कारण

(ग ) स्वतंत्र जीवन जीने की अभिलाषा रखने के कारण

(घ ) मनुष्य से दूर रहने के स्वभाव के कारण

(v) **काव्यांश का मूल भाव क्या है?** 1

(क) चिड़िया की अभिलाषा बताना

(ख) स्वतंत्रता का महत्त्व बताना

(ग) संसार के खतरों से अवगत कराना

(घ) चिड़िया को सावधान करना

**प्र.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु सही विकल्प चुनिए 1x5=5** 5

(i) **जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन - सा है?** 1

(क) इंटरनेट (ख) रेडियो

(ग) दूरदर्शन (घ) मुद्रित माध्यम

(ii) **भारत में इन्टरनेट पत्रकारिता का पहला दौर कब शुरू हुआ था ?** 1

(क)1990 (ख) 1993

(ग) 1995 (घ) 1991

(iii) **डेडलाइन किसे कहते हैं?** 1

(क) समाचारों को लिखने की लाइनें

(ख) समाचार एकत्र करने की समय सीमा

(ग) समाचार छपने का समय सीमा

(घ ) समाचारों की शुद्धता की सीमा

(iv) **समाचार पत्र की आवाज किसे माना जाता है?** 1

(क) फीचर (ख) संपादक के नाम पत्र

(ग ) स्तंभ लेखन (घ ) संपादकीय

(v) **समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित वेतन भोगी पत्रकार को क्या कहते हैं?** 1

(क) फ्रीलांसर (ख) पूर्णकालिक

(ग ) अंशकालिक (घ ) अल्पकालिक

**प्र.4 निम्नलिखित पदयांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर हेतु सही विकल्प चुनिए-1x5=5** 5

दिन जल्दी - जल्दी ढलता है!
हो जाए ना पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं -
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है।

दिन जल्दी जल्दी ढलता है।

(i) **जीवन पथ पर चलते हुए किस कारण आशंकित हैं?** 1

(क). मंजिल बहुत दूर होने के कारण
(ख) मंजिल बहुत पास होने के कारण
(ग ) चलते-चलते रास्ते में रात हो जाने के भय से
(घ ) उसके साथ कोई सहयात्री ना होने के कारण

(ii) **कवि को जीवन - पथ पर जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने की प्रेरणा इनमें से किस से मिली है?** 1

(क) रात के होने की स्थिति आ जाना
(ख) अब उसका लक्ष्य ज्यादा दूर नहीं है
(ग ) थोड़ा आगे चलते ही उसे साथ देने वाला अन्य यात्री मिल जाएगा
(घ ) कवि का अपना शारीरिक बल एवं पथ्य

(iii) **कवि रात होने से पहले ही अपनी मंजिल पर क्यों पहुँच जाना चाहता है?** 1

(क) ताकि यात्रा आसानी से पूरी हो जाए
(ख) ताकि उसे रात के गहन अंधकार का सामना ना करना पड़े
(ग ) ताकि रात होने पर मंजिल की दूरी ना बढ़ जाए
(घ ) क और ख दोनों

(iv) **कवि को ऐसा क्यों लग रहा है कि दिन जल्दी - जल्दी ढलता जा रहा है?** 1

(क) मंजिल तक जल्दी पहुँचने की व्यग्रता, उत्सुकता व अधीरता के कारण
(ख) प्रकृति की अपनी स्वाभाविक विशेषता के कारण
(ग ) कवि को जल्दी से सोने का भ्रम होने के कारण
(घ ) नए पथ पर चलने से उत्पन्न जिज्ञासा के कारण

(v) **काव्यांश का मूल कथ्य है -** 1

(क) पंथी की गतिशीलता एवं कौशल दर्शाना
(ख) पंथी की चिंता, आतुरता एवं व्याकुलता दर्शाना
(ग ) जीवन - पथ की कठिनाइयों का उल्लेख करना
(घ ) प्रकृति की स्वाभाविक गतिविधियों से परिचित करवाना

**प्र.5 निम्नलिखित गदयांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर हेतु सही विकल्प चुनिए -1x5=5** 5

बाजार एक जादू है। वह जादू आँख की राह का काम करता है। वह रूप का जादू है जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन खाली हो, हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भर आना हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाजार की एक चीजों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूं, वह भी लूं। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाला होता है।

(i) **बाजार में जादू होने का आशय इनमें से क्या है?** 1

(क) बाजार में आकर्षक वस्तुएं होना
(ख) बाजार की अनुपयोगी वस्तुएं भी उपयोगी लगना
(ग ) आकर्षक वस्तुएं खरीदने की चाहत के वशीभूत हो जाना
(घ ) आकर्षक वस्तुएं कम दाम पर मिल जाना1

(ii) **बाजार के जादू की क्या मर्यादा होती है?** 1

(क). यह धनी - निर्धन सभी पर असर डालता है।

(ख) यह खाली जेब और मन भरा होने पर ज्यादा असर दिखाता है।

(ग)उन पर अधिक असर करता है जिनका मन और जेब दोनों भरी होती हैं|

(घ)उनपर अधिक असर करता हैजिनकी जेब भरी तथा मन खाली होता है।

(iii) **'मन खाली होना' ऐसे लोगों की विशेषता किस विकल्प से प्रतीत होती है -** 1

(क) ऐसे लोग विरक्ति के भाव से जीते हैं

(ख) ऐसे लोग आकर्षक वस्तुएं देखकर भी अपनी इच्छा- शक्ति दृढ़ रखते हैं

(ग ) ऐसे लोगों की इच्छा - शक्ति कमजोर होती है

(घ ) ऐसे लोगों के मन में पैसा पाने की लालसा होती है

(iv) **खाली मन होने का परिणाम क्या होता है?** 1

(क) व्यक्ति संयम से वस्तुएं खरीदता है

(ख) व्यक्ति अधिकाधिक वस्तुएं खरीद लेना चाहता है

(ग ) व्यक्ति निराश होकर खाली हाथ लौट आता है

(घ ) उपभोक्तावाद घटता जाता है

(v) **'मन खाली होना और जेब भरी होना' किसका कारण बन जाता है?** 1

(क) उपभोक्तावाद बढ़ जाने का

(ख) आत्म संतुष्टि बढ़ने का

(ग ) सामाजिक समरसता बढ़ने का

(घ ) धैर्य एवं विवेकपूर्ण खरीदारी करने की आदत बढ़ने का

**प्र.6 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु सही विकल्प चुनिए 1x10=10** 10

(i) **यशोधर बाबू का विवाह कब हुआ था ?** 1

(क) 6 फरवरी, 1947 (ख) 6 फरवरी, 1946

(ग ) 5 फरवरी, 1947 (घ ) 6 फरवरी, 1945

(ii) **यशोधर बाबू ने किस स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी ?** 1

(क) सरस्वती विद्यालय (ख) रेम्जे स्कूल, अल्मोड़ा

(ग ) शिष्यगण विद्यालय (घ ) अन्य

(iii) **यशोधर बाबू के बेटे भूषण ने उन्हें उनकी शादी की 25वीं वर्षगाँठ पर क्या उपहार दिया ?** 1

(क) कुर्ता पजामा (ख) ऊनी ड्रेसिंग गाउन

(ग ) आधुनिक घड़ी (घ ) इनमें से कुछ भी नहीं

(iv) **यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किससे प्रभावित था ?** 1

(क) किशनदा से (ख) अपने ताऊ जी से

(ग )अपने पिताजी से (घ )उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

(v) **आप ‘सिल्वर वैडिंग’ कहानी की मूल संवेदना किसे कहेंगे ?** 1

(क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

(ख) पीढ़ी का अन्तराल

(ग ) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(घ ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

(vi) **सिल्वर वैडिंग' कहानी के कथानायक का नाम क्या है?** 1

(क) यशोधर बाबू (ख) भूषण

(ग ) किशनदा (घ ) चड्ढा

(vii) **लेखक अपने दादा के सामने बोलने की हिम्मत क्यों नहीं करता था ?** 1

(क) वह अपने पिता से बहुत डरता था

(ख) उसके पिता बहुत गुस्सैल और हिंसक थे

(ग ) वह बात-बात पर लेखक पर नाराज़ होते थे

(घ ) उपर्युक्त सभी

(viii) **दादा ने लेखक को खेती के कार्य में क्यों लगा दिया ?** 1

(क) वह लेखक को खेती के कार्य सिखाना चाहता था

(ख) वह स्वयं स्वतंत्र रहकर नगर में घूमना चाहता था

(ग ) वह लेखक के भविष्य के बारे में सोचता था

(घ ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

(ix) **‘जूझ’ पाठ के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?** 1

(क) अकेलापन डरावना है (ख) अकेलापनअनावश्यक है

(ग ) अकेलापन उपयोगी है (घ ) अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है

(x) **आनंद के पिता का मुख्य व्यवसाय था ?** 1

(क) दूध बेचना (ख) कबाड़बेचना

(ग ) मवेशी चराना (घ ) कोल्हू से गुड़ तैयार करना

## ( खंड - ब )

**प्र.7 निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।**6x1=6 6

(क) छात्र जीवन की चुनौतियाँ (ख ) कामकाजी महिला

(ग) मेरे जीवन लक्ष्य (घ) महँगी शिक्षा

**प्र.8 निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :** 2x2=4 4

(क) विशेष लेखन क्या है ?उदहारण सहित लिखिए |

(ख) फ़ीचर लेखन की विशेषताओं को लिखिए |

(ग) संपादकीय लेखन से आप क्या समझते है?

**प्र.9 निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :** 3x2=6 6

(क) समाचार की उल्टा पिरामिड शैली से आप क्या समझते है ?

(ख ) समाचार लेखन की विशेषताए लिखिए

(ग ) समाचार के छः ककार क्या है ?

**प्र.10 निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :** 3x2=6 6

(क) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में ‘सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती हैं| कैसे?

(ख) परदे पर वक्त की कीमत हैं’ कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा हैं?

(ग) ‘उषा’ कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द-चित्र है-सोदाहरण प्रतिपादित कीजिए।

**प्र.11** **निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :** 2**x**2=4 4

(क) आत्मपरिचय' में कवि के कथन 'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' का विरोधाभास स्पष्ट करे।

(ख) पतगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं- बच्चों का उड़ान से कैसा सबध बनता हैं?

(ग) 'कैमरे में बंद अपाहिज'करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता हैं-विचार कीजिए।

**प्र.12** **निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :** 3x2=6 6

(क) भक्तिन की बेटी पर पंचायत दवारा ज़बरन पति थोपा जाना स्त्री के के मानवाधिकार को कुचलने की परंपरा का प्रतीक है। ।' इस कथन पर तर्कसम्मत टिप्पणी कीजिए?

(ख) 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते है ?

(ग) इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती हैं? नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व हैं?

**प्र.13** **निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :** 2x2=4 4

(क) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं?

(ख) बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता हैं?

(ग) जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

**प्र.14** **निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों का लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-** **2 x 2 = 4** 4

क ) यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

ख ) कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक आनंद यादव की धारणा में क्या बदलाव आया?

ग) सिद्ध कीजिए की सिन्धु सभ्यता एक जल सभ्यता थी ?

*****************************

# अंक योजना
## आदर्श प्रश्न पत्र-2

| | | | |
|---|---|---|---|
| **1** | | **अपठित गद्यांश(उत्तर)** | |
| | (i) | (ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है | 1 |
| | (ii) | (घ) प्रकृति से अविदूर रहने का प्रयास करते हैं | 1 |
| | (iii) | (घ)बारीकी से देखना और निरंतर सोचना | 1 |
| | (Iv) | (ख) विज्ञानोपासक | 1 |
| | (v) | (घ) विज्ञानवादी | 1 |
| | (vi) | (ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से | 1 |
| | (vii) | (घ) प्रफुल्लित पुष्प का अध्ययन कर्ता | 1 |
| | (viii) | (क) कवि भावावेश में विषय से भटक गए हैं | 1 |
| | (ix) | (ख) मानवीकरण अलंकार का दुरुपयोग हो रहा है | 1 |
| | (x) | (क) कवि की सोच और वैज्ञानिकता | 1 |
| **2** | (i) | (घ )उपरोक्त सभी | 1 |
| | (ii) | (घ ) क और ख दोनों | 1 |
| | (iii) | (क )कवि के पास कीदु निया की ओर। | 1 |
| | (Iv) | (ग )स्वतंत्र जीवन जीने की अभिलाषा रखने के कारण | 1 |
| | (v) | (ख )स्वतंत्रता का महत्व बताना | 1 |
| **3** | (i) | (घ )मुद्रित माध्यम | 1 |
| | (ii) | (ख ) 1993 | 1 |
| | (iii) | (ग )समाचार छपने का समय सीमा | 1 |
| | (Iv) | (घ )संपादकीय | 1 |
| | (v) | (ख )पूर्णकालिक | 1 |
| **4** | (i) | (ग )चलते-चलते रास्ते में रात हो जाने के भय से | 1 |
| | (ii) | (ख )अब उसका लक्ष्य ज्यादा दूर नहीं है | 1 |
| | (iii) | (घ )क और ख दोनों | 1 |
| | (Iv) | (क ) मंजिल तक जल्दी पहुँचने की व्यग्रता, उत्सुकता वअधीरता के कारण | 1 |
| | (v) | (ग ) जीवन - पथ की कठिनाइयों का उल्लेख करना | 1 |
| **5** | (i) | (ग ) आकर्षक वस्तुएं खरीदने की चाहत के वशीभूत हो जाना | 1 |
| | (ii) | (घ )उन पर अधिक असर करता है जिनकी जेब भरी तथा मन खाली होता है। | 1 |
| | (iii) | (ग ) ऐसे लोगों की इच्छा - शक्ति कमजोर होती है | 1 |
| | (Iv) | (ख )व्यक्तिअधिकाधिक वस्तुएं खरीद लेना चाहता है | 1 |
| | (v) | (क )उपभोक्तावाद बढ़ जाने का | 1 |
| **6** | (i) | (क )6 फरवरी, 1947 | 1 |
| | (ii) | (ख ) रेम्जेस्कूल, अल्मोड़ा | 1 |
| | (iii) | (ख ) ऊनी ड्रेसिंग गाउन | 1 |
| | (Iv) | (क ) किशनदा से | 1 |
| | (v) | (ख )पीढ़ी का अन्तराल | 1 |
| | (vi) | (क )यशोधरबाबू | 1 |

(vii) (घ )उपर्युक्त सभी 1

(viii) (घ )वह स्वयं स्वतंत्र रहकर नगर में घूमना चाहता था 1

(lx) (ग ) अकेलापन उपयोगी है 1

(x) (घ )कोल्हू से गुड़ तैयार करना 1

**7** रचनात्मक लेखन 6

आरंभ एवं समापन - 1 अंक

विषय वस्तु निरूपण – 4 अंक

शुद्ध भाषा एवं रचनात्मक प्रस्तुति – 1 अंक

**8** क) **विशेष लेखन –** समाचार पत्र सामान्य समाचारों के अलावा साहित्य , विज्ञान , खेल इत्यादि की भी पर्याप्त जानकारी देते हैं। इसी कार्य के अंतर्गत जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर लेखन किया जाए तो उसे विशेष लेखन कहते हैं। 3x2=6

(ख ) **फ़ीचर:** फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है।फ़ीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है।

(ग )**संपादकीय :** संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारात्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचारपत्र की राय भी कहा जाता है,संपादकीय कहते हैं । संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता।

**9** (क ) उल्टा पिरामिड शैली मे समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को बताया जाता है। अर्थात कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन खबर के प्रारंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है – १ इंट्रो २ बॉडी ३ समापन। 2x2=4

(ख) **समाचर लेखन**-- समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह यद्ध के दौरान हुआ। हुआ। इसमें महत्त्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके बाद महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत किया जाता है।समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं|

(ग **समाचार के छः ककार**- समाचार लिखते समय मुख्य रूप से छः प्रश्नों- **क्या, कौन, कहाँ, कब , क्यों और कैसे** का उत्तर देने की कोशिश की जाती है। इन्हें समाचार के **छः ककार** कहा जाता है। प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं ।

**10** (क ) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण उपयुक्त शब्दों का प्रयोग न करना होता है। मनुष्य अपनी भाषा को कठिन बना देता है तथा आडंबरपूर्ण या चमत्कारपूर्ण शब्दों से अपनी बात को कहने में स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। इससे वह अपनी मूल बात को कहने में असफल हो जाता है। मनुष्य को समझना चाहिए कि हर शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ होता है, भले ही वह समानार्थी या पर्यायवाची हो। शब्दों शब्दों के चक्कर में उलझकर भाव अपना अर्थ खो बैठते हैं। 3x2=6

(ख ) कवि कहना चाहता है कि मीडिया के लोग सहानुभूति अर्जित करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि अपंग व्यक्ति के साथ-साथ दर्शक भी रोने लगे। लेकिन वे इस रोने वाले दृश्य को ज्यादा देर तक नहीं दिखाना चाहते क्योंकि ऐसा करने में उनका पैसा बरबाद होगा। समय और पैसे की बरबादी वे नहीं करना चाहते।

(ग) कवि के नीले शंख, राख से लीपा हुआ गीला चौका, सिल, स्लेट, नीला जल और गोरी युवती की मखमली देह आदि उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है। इन्हीं उपमानों के माध्यम से कवि ने सूर्योदय का गतिशील वर्णन किया है। ये उपमान भी कविता को गति प्रदान करते हैं।

**11** (क) कवि की वाणी यद्यपि शीतल है, परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह प्रेम-रहित संसार को अस्वीकार करता है। अत: अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है। वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जाग्रत कर रहा है। 2x2=4

(ख) पतंग बच्चों की कोमल भावनाओं की परिचायिका है। जब पतंग उड़ती है तो बच्चों का मन भी उड़ता है। पतंग उड़ाते समय बच्चे अत्यधिक उत्साहित होते हैं। पतंग की तरह बालमन भी हिलोरें लेता है। वह भी आसमान की ऊँचाइयों को छूना चाहता है। इस कार्य में बच्चे रास्ते की कठिनाइयों को भी ध्यान में नहीं रखते।

(ग) यह कविता अपनेपन की भावना में छिपी क्रूरता को व्यक्त करती है। सामाजिक उद्देश्यों के नाम पर अपाहिज की पीड़ा को जनता तक पहुँचाया जाता है। यह कार्य ऊपर से करुण भाव को दर्शाता है परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही होता है। संचालक अपाहिज की अपंगता बेचना चाहता है। वह एक रोचक कार्यक्रम बनाना चाहता है ताकि उसका कार्यक्रम जनता में लोकप्रिय हो सके। उसे अपंग की पीड़ा से कोई लेना-देना नहीं है।

**12** (क ) नारी पर अनादिकाल से हर फैसला थोपा जाता रहा है। विवाह के बारे में वह निर्णय नहीं ले सकती। माता-पिता जिसे चाहे वही उसका पति बन जाता है। लड़की की इच्छा इसमें बिलकुल शामिल नहीं होता। लड़की यदि मान जाती है, तो ठीक वरना उसकी शादी जबरदस्ती करवा दी जाती है। उसे इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि वह किससे विवाह करे या किससे न करे। उसके इस मानवाधिकार को तो माता-पिता सदियों से कुचलते रहे हैं। 3x2=6

(ख) बाज़ारूपन से तात्पर्य है कि बाजार की चकाचौंध में खो जाना। केवल बाजार पर ही निर्भर रहना। वे व्यक्ति ऐसे बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं जो हर वह सामान खरीद लेते हैं जिनकी उन्हें ज़रूरत भी नहीं होती। वे फिजूल में सामान खरीदते रहते हैं अर्थात् वे अपना धन और समय

नष्ट करते हैं। लेखक कहता है कि बाजार की सार्थकता तो केवल ज़रूरत का सामान खरीदने में ही है तभी हमें लाभ होगा।

(ग) गंगा माता के समान पवित्र और कल्याण करने वाली है। इसलिए बच्चे सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलते हैं। भारतीय संस्कृति में नदी को माँ' की तरह पूजने वाली बताया गया है। सभी नदियाँ हमारी माताएँ हैं। भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में सभी नदियाँ पवित्रता और कल्याण की मूर्तियाँ हैं। ये हमारी जीवन की आधार हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारतीय समाज गंगा और अन्य नदियों को धारित्री बताकर उनकी पूजा करता है ताकि इनकी कृपा बनी रहे।

**13** (क ) भक्तिन देहाती महिला थी। शहर में आकर उसने स्वयं में कोई परिवर्तन नहीं किया। ऊपर से वह दूसरों को भी अपने अनुसार बना लेना चाहती है, पर अपने मामले में उसे किसी प्रकार का हस्तक्षेप पसंद नहीं था। उसने लेखिका का मीठा खाना बिल्कुल बंद कर दिया। उसने गाढ़ी दाल व मोटी रोटी खिलाकर लेखिका की स्वास्थ्य संबंधी चिंता दूर कर दी। अब लेखिका को रात को मकई का दलिया, सवेरे मट्ठा, तिल लगाकर बाजरे के बनाए हुए ठंडे पुए, ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे-हरे दानों की खिचड़ी व सफेद महुए की लपसी मिलने लगी। इन सबको वह स्वाद से खाने लगी। इसके अतिरिक्त उसने महादेवी को देहाती भाषा भी सिखा दी। इस प्रकार महादेवी भी देहाती बन गई। 2x2=4

(ख) जब बाज़ार का जादू चढ़ता है तो व्यक्ति फिजूल की खरीददारी करता है। वह उस सामान को खरीद लेता है जिसकी उसे ज़रूरत नहीं होती। वास्तव में जादू का प्रभाव गलत या सही की पहचान खत्म कर देता है। लेकिन जब यह जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि बाज़ार की चकाचौंध ने उन्हें मूर्ख बनाया है। जादू के उतरने पर वह केवल आवश्यकता का ही सामान खरीदता है ताकि उसका पालन-पोषण हो सके।

(ग) जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने के समर्थन में कई तर्क दिए जो निम्नलिखित हैं –

1. किसी से कुछ पाने के लिए पहले कुछ चढ़ावा देना पड़ता है। इंद्र को पानी का अध्य्र चढ़ाने से ही वे वर्षा के जरिये पानी देंगे।

2. त्याग भावना से दिया गया दान ही फलीभूत होता है। जिस वस्तु की अधिक जरूरत है, उसके दान से ही फल मिलता है। पानी की भी यही स्थिति है।

जिस तरह किसान अपनी तरफ से पाँच-छह सेर अच्छे गेहूँ खेतों में बोता है ताकि उसे तीस-चालीस मन गेहूँ मिल सके, उसी तरह पानी की बुवाई से बादलों की अच्छी फसल होती है और खूब वर्षा होती है।

**14** क ) यशोधर बाबू की पत्नी समय को अच्छी तरह पहचानती हैं। वह जानती है कि बच्चों की सहानुभूति तभी प्राप्त की जा सकेगी जब बच्चों की सोच के अनुसार चला जाए। व्यवहार भी यही कहता है। दूसरे उसके व्यक्तित्व के विकास पर किसी व्यक्तिविशेष या वाद का प्रभाव नहीं है। तीसरे, संयुक्त परिवार के साथ उसका अनुभव सुखद नहीं रहा। उसकी इच्छाएँ अतृप्त रही। ।" अब वह बेटी के कहने के हिसाब से कपड़े पहनती है। वह बेटों के मामले में भी दखल नहीं देती। 2x2=4

ख ) पहले लेखक को ढोर चराते हुए, पानी लगाते हुए, दूसरे काम करते हुए अकेलापन बहुत खटकता था। उसे ऐसा लगता था कि कोई-न-कोई हमेशा साथ में होना चाहिए। उसे किसी के साथ बोलते हुए, गपशप करते हुए, हँसी-मजाक करते हुए काम करना अच्छा लगता था। कविता के प्रति लगाव के बाद उसे उसे अकेला रहना अच्छा लगने लगा। इस स्थिति में वह ऊँची आवाज़ में कविता गा सकता था। वह अभिनय भी कर सकता था। वह थुई-थुई करके नाच भी सकता था। इस तरह अब उसे अकेलापन आनंद देने लगा था।

ग) अपने स्व विवेक से उपयुक्त उत्तर दीजिए |

*********समाप्त ***********

# आदर्श प्रश्न पत्र - 3

**विषय :हिन्दी (आधार)** **कक्षा 12 (2023-24 )**

**समय -3 घंटे** **अधिकतम अंक – 80**

========================================================

सामान्य और आवश्यक निर्देश-

- इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं-'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न 14 हैं।
- खंड-'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड-'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

## खंड-'अ (वस्तुपरक प्रश्न)

## अपठित गद्यांश

**1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए (1x10=10)** **10**

लोकतंत्र के मूलभूत तत्व को समझा नहीं गया है और इसलिए लोग समझते हैं कि सब कुछ सरकार कर देगी, हमारी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। लोगों में अपनी पहल से ज़िम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार विकसित नहीं हो पाया है। फलस्वरूप देश की विशाल मानव शक्ति अभी खर्राटे लेती पड़ी है और देश की पूँजी उपयोगी बनने के बदले आज बोझ-रूप बन बैठी है। लेकिन उसे नींद से झकझोर कर जागृत करना है। किसी भी देश को महान बनाते हैं उसमें रहने वाले लोग। लेकिन अभी हमारे देश के नागरिक अपनी ज़िम्मेदारी से बचते रहे हैं। चाहे सड़क पर चलने की बात हो अथवा साफ-सफाई की बात हो, जहाँ-तहाँ हम लोगों को गंदगी फैलाते और बेतरतीब ढंग से वाहन चलाते देख सकते हैं। फिर चाहते हैं कि सबकुछ सरकार ठीक कर दे।

सरकार ने बहुत सारे कार्य किए हैं, इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ खोली हैं, विशाल बाँध बनवाएँ हैं, फौलाद के कारखाने खोले हैं आदि बहुत सारे काम सरकार के द्वारा हुए हैं। पर अभी करोड़ों लोगों को कार्य में प्रेरित नहीं किया जा सका है।

वास्तव में होना तो यह चाहिए कि लोग अपनी सूझ-बूझ के साथ अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर खड़े हों औऱ अपने पास जो कुछ साधन-सामग्री हो उसे लेकर कुछ करना शुरु कर दें और फिर सरकार उसमें आवश्यक मदद करे। उदाहरण के लिए, गाँव वाले बड़ी-बड़ी पंचवर्षीय योजनाएँ नहीं समझ सकेंगे, पर वे लोग यह बात ज़रूर समझ सकेंगे कि अपने गाँव में कहाँ कुआँ चाहिए, कहाँ सिंचाई की ज़रुरत है, कहाँ पुल की आवश्यकता। बाहर के लोग इन सब बातों से अनभिज्ञ होते हैं।

**(क). लोगों में कर्तव्यपालन की भावना क्यों नहीं है?**

(i) लोग इसे सरकार की ज़िम्मेदारी मानते हैं

(ii) क्योंकि लोग इसे अपनी ज़िम्मेदारी मानते हैं

(iii) लोग कर्तव्य के बारे में नहीं जानते

(iv) सभी विकल्प सही हैं

**(ख). किसी भी देश को महान कौन बनाता है?**

(i) उसमें रहने वाले लोग

(ii) वहाँ की सरकार

(iii) वहाँ की वनस्पति

(iv) वहाँ के पहाड़

**(ग). गद्यांश के अनुसार किसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता?**

(i) जनता के कार्यों को

(ii) सरकार के कार्यों को

(iii) समाज के कार्यों को

(iv) सभी विकल्प सही हैं

**(घ). सरकारी व्यवस्था में किस कमी की ओर लेखक ने संकेत किया है?**

(i) अपने कर्तव्य का पालन न करना

(ii) गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को नकारना

(iii) गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को स्वीकारना

(iv) अपनी ज़िम्मेदारियों को स्वीकारना

**(ङ). गद्यांश के अनुसार लोगों को कौन-सी शक्ति को बढ़ाना है?**

(i) आंतरिक शक्ति को

(ii) सैन्य शक्ति को

(iii) राजनैतिक शक्ति को

(iv) आर्थिक शक्ति को

**(च). लोगों में क्या विकसित होना आवश्यक है?**

(i) खुद ज़िम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार

(ii) सरकार की आलोचना का भाव

(iii) नेतृत्व क्षमता का भाव

(iv) सरकार में आस्था का भाव

**(छ). समाज कैसे विकसित हो सकता है?**

(i) सरकारी मदद से

(ii) आंतरिक शक्ति के बल पर

(iii) स्वयंसेवी संस्था की मदद से

(iv) इनमें से कोई नहीं

**(ज). सरकार को क्या करना बाकी है?**

(i) औद्योगीकरण का विकास

(ii) बाँध बनाने के कार्य

(iii) प्रयोगशालाओं का वैज्ञानिकीकरण

(iv) लोगों को संबंधित कार्यों हेतु अभिप्रेरित करना

**(झ). निम्न कथनों पर विचार करें-**

*(अ) लोकतंत्र का मूल तत्व लोगों की समस्त कार्यों में सीधी भागीदारी है*

*(ब) लोकतंत्र में केवल सरकार लोगों के प्रति उत्तरदायी है*

*(स) लोकतंत्र में लोगों की अप्रत्यक्ष भूमिका है*

*(द) लोगों में लोकतंत्र की समझ तथा संकल्पना स्पष्ट नहीं है*

(i) केवल कथन (अ) सही है

(ii) केवल कथन (ब) सही है

(iii) कथन (अ), (ब) तथा (स) तीनों सही है

(iv) कथन (अ) तथा (द) दोनों सही है

**(ञ). निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में ले कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-**

कथन(A): देश की मानव-शक्ति सुषुप्तावस्था में है।

कारण (R): देश की जनता में स्वयं बदलाव हेतु कार्य करने की भावना का अभाव दिखाई पड़ता है।

(i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ii) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) सही है।

(iv) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

2. **निम्नलिखित पद्यांश के प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प-चयन द्वारा दीजिए- 1x5=5** 5

सूख रहा है समय
इसके हिस्से की रेत
उड़ रही है आसमान में
सूख रहा है
आँगन में रखा पानी का गिलास
पँखुरी की साँस सूख रही है
जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी
उससे अब हाँफने की आवाज़ आती है
हर पौधा सूख रहा है
हर नदी इतिहास हो रही है
हर तालाब का सिमट रहा है कोना
यही मनुष्य का कंठ सूख रहा है
वह जेब से निकालता है पैसे और
खरीद रहा है बोतल बंद पानी
बाकी जीव क्या करेंगे अब
न उनके पास जेब है न बोतल बंद पानी।

**(क). 'सूख रहा है समय' कथन का आशय क्या है?**

(i) जीवन-मूल्य समाप्ति के कगार पर है

(ii) समय सूखने लगा है

(iii) समय समाप्त हो रहा है

(iv) अभी समय बहुत है

**(ख). हर नदी के इतिहास होने का क्या तात्पर्य है?**

(i) नदी इतिहास में थी

(ii) नदियों का अस्तित्व समाप्त हो रहा है

(iii) नदियों में पानी कम बहता है

(iv) नदियों का बहाव अधिक है

**(ग). निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में ले कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-**

कथन (A): पंखुरी की साँस सूख रही है जो सुंदर चोंच मीठे गीत सुनाती थी

कारण (R): प्राकृतिक स्रोतों में तेज़ी से ह्रास हो रहा है।

(i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ii) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) सही है।

(iv) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

**(घ). कवि के दर्द का क्या कारण है?**

(i) प्रकृति पर संकट मँडरा रहा है

(ii) प्रकृति में हरियाली छाई हुई है

(iii) प्रकृति में निस्तब्धता छाई हुई है

(iv) प्रकृति अद्‌भुत है

**(ङ). 'बाकी जीव क्या करेंगे अब' कथन में निहित व्यंग्य है-**

(i) मनुष्य ने तो कृत्रिमता को अपना लिया है पर अन्य जीवों के पास कोई अन्य उपाय नहीं है

(ii) बाकी जीव कृत्रिमता को अपनाएँगे

(iii) मनुष्य प्रकृति को अपना रहा है

(iv) मनुष्य और जीव प्रकृति को अपना रहे हैं

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-(1x5=5)** 5

**(क). इनमें जनसंचार का श्रव्य माध्यम कौन-सा है?**

(i) रेडियो

(ii) पत्र-पत्रिका

(iii) इंटरनेट

(iv) ये सभी

**(ख). समाचार-लेखन में सबसे महत्वपूर्ण समाचार सबसे पहले किस शैली में लिखे जाते हैं?**

(i) कथात्मक शैली

(ii) उल्टा पिरामिड शैली

(iii) सीधा पिरामिड शैली

(iv) इनमें से कोई नहीं

**(ग). विचारपरक लेखन है**

(i) लेख

(ii) टिप्पणियाँ

(iii) संपादकीय

(iv) ये सभी

**(घ). कहानी के नाटक रूपांतरण में कथानक का वर्गीकरण किस आधार पर किया जाता है?**

(i) पात्रों के आधार पर

(ii) कथानक के आधार पर

(iii) समय और स्थान के आधार पर

(iv) चरित्र-चित्रण के आधार पर

**(ङ). किस नाटक में कोई अंक नहीं होते हैं?**

(i) रेडियो नाटक

(ii) एकांकी

(iii) धारावाहिक

(iv) इनमें से कोई नहीं

4. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए-(1x5=5)** 5

फिर-फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर वज्र-हुंकार।
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर,
क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा धीर।

**(क). बादल किस प्रकार धरती पर बरस रहे हैं?**

(i) बार-बार गर्जन करके

(ii) मूसलाधार रूप में

(iii) (i) और (ii) दोनों

(iv) क्षत-विक्षत रूप में

**(ख). बादलों की गर्जना का संसार पर क्या प्रभाव पड़ता है?**

(i) संसार में प्रसन्नता छा जाती है

(ii) संसार भयभीत होकर हृदय थाम लेता है

(iii) संसार दुःखों से मुक्त हो जाता है

(iv) संसार पर कोई प्रभाव नहीं होता

**(ग). बादलों का शरीर किससे आहत हो रहा है?**

(i) बिजली रूपी तलवारों से

(ii) वायुयानों के आवागमन से

(iii) उच्च वर्ग की महत्वाकांक्षाओं से

(iv) निम्न वर्ग के संताप से

**(घ). बादलों की गर्जना को किसके समान बताया गया है?**

(i) वज्र के समान

(ii) दुःख के समान

(iii) योद्धा के समान

(iv) प्रलय के समान

**(ङ). अलंकार की दृष्टि से कौन-सा विकल्प सही है?**

(i) बार-बार- पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

(ii) वज्र-हुंकार- उपमा अलंकार

(iii) क्षत-विक्षत-हत- यमक अलंकार

(iv) अशनि पात- अनुप्रास अलंकार

5. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए-(1x5=5)** 5

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है। पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है, तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं हुई उस वक्त जेब भरी, तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फैंसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती हैं। थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाती है पर इससे अभिमान की गिल्टी को और खुराक ही मिलती है। जकड़, रेशम के स्पर्श के कारण क्या वह जकड़ कम होगी?

**(क). लेखक के अनुसार, बाज़ार के जादू की क्या मर्यादा है?**

(i) वह केवल, उन लोगों पर असर करता है, जिनके मन खाली होते हैं

(ii) वह केवल उन लोगों पर असर करता है, जो वस्तु खरीदने आते हैं

(iii) वह केवल अमीर लोगों पर असर करता है

(iv) वह केवल गरीब लोगों पर असर करता है

**(ख). बाज़ारवाद को कौन बढ़ावा देता है?**

(i) मन का खालीपन

(ii) मन का भरा होना

(iii) जेब का खालीपन

(iv) धन का अधिक होना

**(ग). बाज़ार का जादू उतरने पर क्या पता चलता है?**

(i) आकर्षक चीज़ें उपयोगी होती हैं

(ii) आकर्षित करने वाली चीज़ें हमारे जीवन में महत्व नहीं रखती हैं

(iii) आकर्षित करने वाली चीज़ें स्वाभिमान को बचाती हैं

(iv) आकर्षण ही व्यक्ति को जीना सिखाता है

**(घ). निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-**

कथन (A): बाज़ार का जादू उतरने पर वस्तु खरीदने की व्यर्थता का पता चलता है।

तर्क (R): बाज़ार का जादू आँखों के माध्यम से हमें आकर्षित करता है।

(i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ii) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(iii) कथन (A) तथा कारण (R) सही है।

(iv) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

**(ङ). गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-**

(अ). सभी आकर्षित करने वाली वस्तुएँ उपयोगी होती हैं।

(ब). बाज़ार का जादू उसके रूप का जादू है।

(स). बाज़ार का जादू टूटने पर व्यक्ति को अफसोस होता है।

(द). वस्तुओं को खरीदने से तात्कालिक रूप से व्यक्ति को आत्मसंतोष प्राप्त होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा / कौन-से कथन सत्य हैं-

(i) (अ) और (ब)

(ii) (स) और (द)

(iii) सभी कथन सत्य हैं

(iv) (अ) को छोड़कर सभी कथन सत्य हैं

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-(1x10=10)** 10

**(क). 'सिल्वर वेडिंग' पाठ के अनुसार आधुनिकीकरण का किस पर प्रभाव पड़ रहा है?**

(i) मानवीय मूल्य

(ii) बड़े-बुजुर्गों के प्रति समान भाव

(iii) अपनों के प्रति आत्मीयता

(iv) उपर्युक्त सभी

**(ख). यशोधर बाबू के व्यक्तित्व निर्माण में किशन दा ने कैसे योगदान दिया?**

(i) नौकरी लगाने के साथ जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर दिशा-निर्देश देकर

(ii) रूढ़िवादी विचारों को अपनाकर

(iii) अपने अनुभवों का वर्णन करके

(iv) जीवन के केवल सुखद समय में साथ देकर

**(ग). यशोधर बाबू जल्दी घर क्यों नहीं पहुँचना चाहते?**

(i) अपनी आदत के कारण

(ii) पत्नी और बच्चों से मतभेद के कारण

(iii) ऑफिस में व्यस्त रहने के कारण

(iv) आध्यात्मिक चेतना के कारण

**(घ). यशोधर बाबू को अपने बच्चों की कौन-सी बात आपत्तिजनक लगती थी?**

(i) अत्यधिक प्रगतिशील रवैया

(ii) घर पर नयी वस्तुओं का लाना

(iii) आधुनिक सुविधाओं के जुटाने के कारण

(iv) मानवीय संबंधों और संस्कारों की उपेक्षा

**(ङ). 'जूझ' कहानी के आधार पर आनंदा विद्यालय क्यों नहीं जाता था?**

(i) आवारागर्दी के कारण

(ii) पढ़ने की इच्छा न होने के कारण

(iii) उसके पिता के विरोध के कारण

(iv) उपर्युक्त सभी

**(च). 'जूझ' कहानी के अनुसार लेखक खेती के बारे में क्या विचार रखता है?**

(i) वह जानता है कि खेती से जीवनभर कुछ हाथ नहीं आएगा

(ii) वह अपने पिता की तरह खेती नहीं करना चाहता

(iii) वह खेती जैसी चीज़ों पर परिश्रम नहीं करना चाहता

(iv) वह खेती को तुच्छ समझता है

**(छ). 'जूझ' कहानी का क्या उद्देश्य है?**

(i) जीवन में संघर्ष की महत्ता प्रतिपादित करना

(ii) जीवन में शिक्षा की महत्ता प्रतिपादित करना

(iii) ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों का उल्लेख करना

(iv) जीवन में शिक्षक की भूमिका दर्शाना

**(ज) सिंधु घाटी के नगर नियोजन, वास्तुकला, शिल्प, सड़क निर्माण आदि से क्या ज्ञात होता है?**

(i) ये केवल खंडहर ही थे

(ii) ये विकसित सभ्यता के प्रमाण हैं

(iii) ये केवल बाह्य आडंबर थे

(iv) ये किसी समाज को व्याख्यायित नहीं करते हैं

**(झ). सिंधु सभ्यता को जल-संस्कृति किस आधार पर कहा है?**

(i) वर्षा अधिक होने के कारण

(ii) नदी, कुएँ, कुण्ड, स्नानागार और बेजोड़, जल-निकासी के कारण

(iii) केवल नदियों के किनारे बसी होने के कारण

(iv) जल की बर्बादी को रोकने के कारण

**(ञ). मुअनजोदड़ो के बारे में क्या धारणा सत्य है?**

(i) अपने दौर में यह घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा

(ii) अपने दौर में यह सबसे कम प्रसिद्ध क्षेत्र रहा होगा

(iii) अपने दौर में यह सीमित जनसंख्या वाला क्षेत्र रहा होगा

(iv) अपने दौर में यह मुर्दों का टीला मात्र रहा होगा

## खंड-'ब' – (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. **दिए गए 4 अप्रत्याशित विषयों में से किसी 1 विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए- (6x1=6)** 6

(क) गुम होता बचपन
(ख) चुनावी वादे और सच्चाई
(ग) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
(घ) अमर्यादित राजनीति

8. **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-(2x2=4)** 4

(क) रेडियो नाटक तथा सामान्य नाटक में अंतर स्पष्ट करें।

(ख) कहानी के नाट्य रूपांतरण में दृश्य-विभाजन कैसे किया जाता है?

(ग) नाट्य प्रदर्शन की क्या सीमाएँ हैं?

9. **निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए-(3x2=6)** 6

(क) फीचर लेखन क्या है? स्पष्ट करें।

(ख) समाचार लेखन में इंट्रो क्या है? इसे लिखने में किन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए?

(ग) टी.वी. खबरों के विभिन्न चरण के बारे में समझाइए।

10. **काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 60 शब्दों में लिखिए- (3x2=6)** 6

(क) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'- पाठ के आधार पर बताएँ कि कवि अपने घर लौटने के लिए उत्साहित क्यों नहीं है?

(ख) "लक्ष्मण-मूर्च्छा प्रसंग" पाठ के आधार पर सिद्ध करें कि यहाँ राम का सहज मानवीय व्यक्तित्व उभर कर सामने आया है?

(ग) "बात सीधी थी पर" के आधार पर बताइए कि लोगों की वाह-वाही का कवि पर क्या प्रभाव पड़ता है?

11. **काव्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों में लिखिए- (2x2=4)** 4

(क) 'उषा' कविता के आधार पर 'भोर के नभ' का सौंदर्य अपने शब्दों में व्यक्त करें।

(ख) 'परदे पर वक्त की कीमत है'- यह कथन मीडिया की किस मानसिकता को स्पष्ट करता है?

(ग) फिराक की रुबाइयों में आम जीवन की सजीव झलक मिलती है- स्पष्ट करें।

12. **गद्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर 60 शब्दों में लिखिए- (3x2=6)** 6

(क) लुट्टन पहलवान की बाल्यावस्था पर प्रकाश डालिए?

(ख) इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को लेखक अंधविश्वास कहता हैं परंतु जीजी किन तर्कों से उसे खंडित करती है? स्पष्ट कीजिए।

(ग) भक्तिन के चारित्रिक दुर्गुणों के रेखांकित कीजिए।

13. **गद्य-खंड पर आधारित निम्नलिखित 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर 40 शब्दों में लिखिए- (2x2=4)** 4

(क) हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी ने शिरीष की तुलना किस महान व्यक्तित्व से की है और क्यों?

(ख) बाज़ार दर्शन पाठ के आधार पर बताएँ कि इस युग में भगत जी के व्यक्तित्व से क्या सीख सकते हैं?

(ग) बाबा साहेब अंबेडकर ने आदर्श समाज के लिए किन तीन आवश्यक तत्वों को आवश्यक माना है? स्पष्ट करें।

14. **निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों का लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए- (2 x 2 = 4)** 4

(क). यशोधर बाबू को किशन दा का मानस-पुत्र भी कहा जा सकता है- सिद्ध कीजिए।

(ख). 'जूझ' कहानी के शीर्षक का औचित्य सिद्ध कीजिए।

(ग) सिन्धु सभ्यता कला प्रधान थी अथवा शक्ति प्रधान ? तर्क सहित उत्तर दीजिए |

******************************************************************************

# आदर्श प्रश्न पत्र - 3
# अंक योजना

सामान्य निर्देश-

- **अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।**
- **खंड-अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए।**
- **खंड-ब में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक-योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।**
- **यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ।**
- **मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।**

## खंड-'अ (वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर)

| | | | |
|---|---|---|---|
| **1.** | **(क)** | (i) लोग इसे सरकार की ज़िम्मेदारी मानते हैं | 1 |
| | **(ख)** | (i) उसमें रहने वाले लोग | 1 |
| | **(ग)** | (ii) सरकार के कार्यों को | 1 |
| | **(घ)** | (ii) गाँव से जुड़ी समस्याओं के निदान में ग्रामीणों की भूमिका को नकारना | 1 |
| | **(ङ)** | (i) आंतरिक शक्ति को | 1 |
| | **(च)** | (i) खुद ज़िम्मेदारी उठाने और निभाने का संस्कार | 1 |
| | **(छ)** | (ii) आंतरिक शक्ति के बल पर | 1 |
| | **(ज)** | (iv) लोगों को संबंधित कार्यों हेतु अभिप्रेरित करना | 1 |
| | **(झ)** | (iv) कथन (अ) तथा (द) दोनों सही है | 1 |
| | **(ञ)** | (i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। | 1 |
| **2.** | **(क)** | (i) जीवन-मूल्य समाप्ति के कगार पर है | 1 |
| | **(ख)** | (ii) नदियों का अस्तित्व समाप्त हो रहा है | 1 |
| | **(ग)** | (i) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। | 1 |
| | **(घ)** | (i) प्रकृति पर संकट मँडरा रहा है | 1 |
| | **(ङ)** | मनुष्य ने तो कृत्रिमता को अपना लिया है पर अन्य जीवों के पास कोई अन्य उपाय नहीं है | 1 |
| **3.** | **(क)** | (i) रेडियो | 1 |
| | **(ख)** | (ii) उल्टा पिरामिड शैली | 1 |
| | **(ग)** | (iv) ये सभी | 1 |
| | **(घ)** | (iii) समय और स्थान के आधार पर | 1 |
| | **(ङ)** | (i) रेडियो नाटक | 1 |
| **4.** | **(क)** | (iii) (i) और (ii) दोनों | 1 |
| | **(ख)** | (ii) संसार भयभीत होकर हृदय थाम लेता है | 1 |
| | **(ग)** | (i) बिजली रूपी तलवारों से | 1 |
| | **(घ)** | (i) वज्र के समान | 1 |
| | **(ङ)** | (i) बार-बार- पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार | 1 |

**5.** **(क)** (i) वह केवल, उन लोगों पर असर करता है, जिनके मन खाली होते हैं **1**

**(ख)** (i) मन का खालीपन **1**

**(ग)** (ii) आकर्षित करने वाली चीज़ें हमारे जीवन में महत्व नहीं रखती हैं **1**

**(घ)** (iv) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है। **1**

**(ङ)** (iv) (अ) को छोड़कर सभी कथन सत्य हैं **1**

**6.** **(क)** (iv) उपर्युक्त सभी **1**

**(ख)** (i) नौकरी लगाने के साथ जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर दिशा-निर्देश देकर **1**

**(ग)** (ii) पत्नी और बच्चों से मतभेद के कारण **1**

**(घ)** (iv) मानवीय संबंधों और संस्कारों की उपेक्षा **1**

**(ङ)** (iii) उसके पिता के विरोध के कारण **1**

**(च)** (i) वह जानता है कि खेती से जीवनभर कुछ हाथ नहीं आएगा **1**

**(छ)** (i) जीवन में संघर्ष की महत्ता प्रतिपादित करना **1**

**(ज)** (ii) ये विकसित सभ्यता के प्रमाण हैं **1**

**(झ)** (ii) नदी, कुएँ, कुण्ड, स्नानागार और बेजोड़, जल-निकासी के कारण **1**

**(ञ)** (i) अपने दौर में यह घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा **1**

## खंड 'ब' – (वर्णनात्मक प्रश्न)

**7.** किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख-**(6x1=6)** **6**

आरंभ- 1 अंक

विषयवस्तु- 3 अंक

प्रस्तुति- 1 अंक

भाषा- 1 अंक

**8.** **कोई दो प्रश्न (2x2=4 अंक)** **4**

(क) 1. रेडियो नाटक श्रोताओं के लिए प्रसारित सामान्य नाटक मंच के लिए।

2. रेडियो नाटक अंकों में विभाजित नहीं होते, सामान्य नाटक होते हैं।

3. रेडियो नाटक में श्रोताओं की असीमित संख्या होती है, सामान्य नाटक में दर्शक की संख्या प्रेक्षागृह पर निर्भर है।

4. रेडियो नाटक में मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, मेक-अप आदि की आवश्यकता नहीं है, सामान्य नाटक के लिए यह अनिवार्य है।

(ख) कहानी के नाट्य रूपांतरण के लिए कहानी के कथानक को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है तथा घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है। इसके बाद संबंधित वातावरण की व्यवस्था, ध्वनि-प्रकाश की व्यवस्था, मंच-सज्जा, संगीत-निर्माण आदि करने के बाद द्वंद्व को अभिनय व संवादों के अनुसार ढाला जाता है।

(ग) विचारों तथा भावों का अभिनय द्वारा प्रदर्शन, पात्रों के माध्यम से प्रस्तुति, ध्वनि प्रभाव, प्रकाश व्यवस्था आदि द्वारा कल्पना जगत की सृष्टि, मौखिक तथा अमौखिक दोनों प्रकार की अभिव्यक्ति, मानसिक द्वंद्व की अभिनय प्रस्तुति का माध्यम आदि।

**9.** **कोई दो प्रश्न (3x2=6) अंक** **6**

(क) फीचर लेखन का अर्थ है- मनोरंजनपूर्ण समाचार। जब लेखक किसी सूचना या समाचार को इस सजीव या रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है कि उसका चेहरा या विशेषता पूरी तरह से उभर आए तो उसे फीचर कहते हैं। इसका आरंभ कलात्मक, उत्सुकतापूर्ण और आकर्षक होना

चाहिए तथा अंत में भविष्य की संभावनाओं को स्पष्ट करना चाहिए। फीचर-लेखन में लेखन की वैयक्तिकता की अहम भूमिका होती है तथा इसकी शैली चित्रात्मक होती है।

(ख) इंट्रो(प्रस्तावना) समाचार का पहला अनुच्छेद है, जिसमें क्या हुआ के प्रश्न का उत्तर मिलता है। इसे मुख्य समाचार कहा जा सकता है।

इंट्रो लिखते समय उसे सारगर्भित, संक्षिप्त और ठोस रखना चाहिए, इसका आकार 30-30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। किंतु, परंतु जैसे शब्दों से बचना चाहिए।

(ग) फ्लैश या ब्रेकिंग न्यूज़, ड्राई एंकर, फोन इन, एंकर विज़ुअल, एंकर बाइट, लाइव और एंकर पैकेज।

**10.** **कोई दो प्रश्न (3x2=6) अंक** **6**

(क) संसार के सभी प्राणी घर जाने को व्याकुल हैं क्योंकि घर में कोई-न-कोई उनकी प्रतीक्षा कर रहा है किंतु कवि एकाकी है तथा उसके मन का एकाकीपन उसके मन में निराशा तथा निरुत्साह का भाव भरता है तथा वह घर जाने में किसी भी प्रकार का उत्साह नहीं दिखाता है।

(ख) राम भाई के शोक में रहते हुए समस्त सामाजिक मर्यादा का परित्याग करते हैं। वे पिता की बात न मानने, नारी की हानि को कम बताने की बात करते हैं। इस प्रकार की बात नरलीला में समीचीन नहीं है। इसे परिस्थितिजन्य मानवीय अनुभूति ही कहा जा सकता है।

(ग) लोगों की बेतुकी तथा निरर्थक वाह-वाही का कवि पर प्रतिकूल असर पड़ता है वह अपनी बात को बेबाकी तथा सरलता से प्रस्तुत करने के स्थान पर आलंकारिकता के जाल में फँसता ही चला जाता है और श्रोता अपनी वाह-वाही से उसे और फँसाते चले जाते हैं। अंततः अपने उद्देश्य से भटककर वह अपनी अभिव्यक्ति को उचित प्रकार से करने में असफल होता है।

**11.** **कोई दो प्रश्न (2x2=4 अंक)** **4**

(क) ग्रामीण उपमानों द्वारा ग्रामीण भोर का जीवंत तथा परिवर्तनशील चित्रण, आकाश को राख से लीपा गया चौका बताकर शुचिता का वर्णन हुआ है। काले सिल में केसर पीसना एक गतिशील बिंब उपस्थित करता है। काले स्लेट पर लाल खड़िया मलना तथा गौर झिलमिल देह जैसे गतिशील बिंबों का प्रयोग, गाँव की प्रातःकालीन क्रियाकलाप का सजग चित्रण आदि।

(ख) मीडिया कहता है कि अधिक समय तक दिव्यांग को परदे पर दिखाने पर उनका पैसा बरबाद होगा तथा उन्हें उस अनुपात में लाभ नहीं होगा।

परोक्ष रूप से कवि समझाना चाहता है कि परदे पर किसी की भावना, संवेदना, दुःख-दर्द, मान-अपमान तथा अन्य बातों का कोई मूल्य नहीं है। कवि इसकी निंदा करता है तथा मीडिया से संवेदनशील व्यवहार की अपेक्षा करता है।

(ग) इन रूबाइयों में घरेलू जीवन के मोहक चित्र हैं-

जैसे प्यारे शिशु को लेकर आँगन में खड़ा होना तथा उससे खेलना,झुलाना, नहलाना आदि। इसी प्रकार रक्षाबंधन व दीपावली के पर्व के स्वाभाविक चित्र को स्पष्ट करना आदि।

**12.** **कोई दो प्रश्न (3x2=6) अंक** 6

(क) लुट्टन पहलवान के माता-पिता बचपन में ही चल बसे थे। छोटी उम्र में उसकी शादी हो गयी थी उसका पालन-पोषण सास ने किया था। गाँव के लोग उसकी सास को परेशान करते थे जिससे बचने के लिए ही उसने पहलवानी का अभ्यास शुरु किया। नियमित कसरत करने से ही वह किशोरावस्था में ही गठीले शरीर वाला बन गया था।

(ख) "जब हम कुछ पाना चाहते हैं तो पहले कुछ चढ़ावा करना पड़ता है पानी फेंककर वस्तुतः पानी का अर्घ्य चढ़ाया जाता है"।"मनुष्य को पहले त्याग करना चाहिए उसके बाद फल की कामना करनी चाहिए" "जिस प्रकार फसल पाने के लिए बीज को डालना होता है उसी प्रकार वर्षा के लिए पानी की बुवाई करनी पड़ेगी।"

(ग) भक्तिन में कई दुर्गुण थे-

पैसों को लेखिका से छिपाकर इधर-उधर रख देना।

अकारण तर्क-वितर्क करना।

महादेवी जी के सामने झूठ कहना।

शास्त्रों की असंगत तथा अनर्गल व्याख्या करना।

**13.** **कोई दो प्रश्न (2x2=4 अंक)** 4

(क) शिरीष की तुलना महात्मा गाँधी से की गयी है। शिरीष कोमलता के साथ कठोरता का गुण धारण करता है। गाँधीजी में भी ये गुण थे। शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर कोमल और कठोर बनता है, उसी प्रकार गाँधीजी भी जनसामान्य के साथ कोमलता का व्यवहार करते हुए भी देश के हित में अत्यधिक कठोर बन जाते थे।

(ख) भगत जी जैसे व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं। उनके व्यक्तित्व के प्रभावित होकर हम मिथ्या के प्रतिस्पर्द्धा तथा ईर्ष्या के भाव से बच सकते हैं। आवश्यकता के अनुसार, उद्देश्यों से युक्त होकर बाज़ार से वस्तुएँ क्रय करते हुए उसे सच्ची सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। इससे आपसी कलह दूर होगा तथा शांति का वातावरण स्थापित होगा।

(ग) बाबा साहेब अंबेडकर ने तीन तत्वों को अपने आदर्श समाज के लिए आवश्यक माना है- स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृता

**14.** **कोई दो प्रश्न** (2x2**=4)** 4

(क) यशोधर बाबू के हर कार्य में किशन दा की छाप है। वे छोटी-छोटी बात में उनका अनुकरण करते हैं। दफ्तर हो या घर, हर स्थान पर किशन दा द्वारा किए व्यवहार को दुहराते हैं। उनके चलने, हँसने, बोलने सबपर किशन दा का प्रभाव दिखता है। उनके परंपरागत बातों को अपनाना, रिटायर होने पर गाँव में बसने की बात, जन्यो-पून्यो का त्योहार आदि मनाने की बात सब कुछ किशन दा के अनुसार ही किया जाता है। यहाँ तक कि वे किशन दा पर इतने निर्भर हैं कि उनकी मृत्यु हो जाने पर भी वे मन-ही-मन उनका मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। इसके आधार पर उन्हें किशन दा का मानस-पुत्र कहा जा सकता है।

(ख) जूझ का अर्थ है-संघर्ष। इस पाठ की कथा के केन्द्र में लेखक का जीवन-पर्यन्त किया गया संघर्ष शामिल है। आनंद ने पाठशाला जाने, अपने अस्तित्व को बचाए रखने तथा धीरे-धीरे साहित्य प्रेमी बनकर एक सफल साहित्यिक बनने की यात्रा में संघर्ष का ही सहारा लिया। दादा के मना करने पर माँ तथा राव साहब की सहायता से संघर्ष की बात हो या विद्यालय में अपने सहयोगी तथा शिक्षक की सहायता से संघर्ष की बात। उसने न कभी अपनी आर्थिक स्थिति को अपनी सफलता में बाधक बनने दिया न ही किसी और कमी के आगे समर्पण किया। अपनी लगन औऱ परिश्रम के आधार पर संघर्ष करते हुए वह दूसरों के बराबर और उसके बाद उनसे अधिक सम्मान का भागीदार बना। अतः इस कहानी को 'जूझ' शीर्षक देना बिलकुल उचित है।

(ग) अपने विवेक से उपयुक्त उत्तर दे |

*******************

## सन्दर्भ एवं साभार

1. www.ncert.nic.in/textbook
2. www.cbseacademic.nic.in
3. www.learncbse.in>ncert-solutions- for class 12-hindi
4. https://keepinspringme.in>question
5. www.studyrankers.com>ncert
6. www.cbsetuts.com>ncert-solutions
7. open source/Internet

*******************